

ॐ अह

जिनागम-शुद्धमासा १ प्रथमाङ्क २९

[परमश्रद्धेय गुरुदेव पूज्य श्रीजोरावरमलजी महाराज को पुण्य-स्मृति में आयोजित]

श्रुतस्यधिरप्रणीत उपाङ्गसूत्रद्वय

सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति

[मूलपाठ, प्रस्तावना तथा परिशिष्ट युक्त]

प्रेरणा

(स्व) उपप्रवक्तक शासनसेवी स्वामी श्री अजलालजी महाराज

आद्यसंयोजक तथा प्रधान सम्पादक

(स्व०) युवाचार्य श्री मिथीभलजी महाराज 'मधुकर'

सम्पादक

मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'

मुख्य सम्पादक

स्व प शीमाचन्द्र भारिल्ल

प्रकाशक

श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर (राजस्थान)

निर्देशन

अध्यात्मयोगिनी महासती साध्वी श्री उमरावकु वरजी 'अध्वना'

सम्पादकमण्डल

अनुयोगप्रयत्नक मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'
भ्राचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री
श्री रतनमुनि

सम्प्रेरक

मुनि श्री यिनयकुमार 'मीम'

द्वितीय संस्करण

वीरनिर्वाण सद्यत् २५२२
विक्रम सद्यत् २०५२
जून, १९९५

प्रकाशक

श्री आगम प्रकाशन समिति,
श्री राज-मधुकर स्मृति भवन
पीपलिया बाजार, ब्यावर (राजस्थान)
ब्यावर—३०५९०१
फोन ५००८७

मुद्रक

सतीशचन्द्र शुक्ल
व्यविक यन्त्रालय,
केसरगज, अजमेर—३०५००१

मूल्य ३५७) रुपयके 65/-

Published on the Holy Remembrance occasion
of
Rev Guru Shri Joravarmalji Maharaj

Śuryaprajnapti—Chandraprajnapti

[Original Text, Introduction and Appendices]

□

Inspiring Soul

Up-pravartaka Shasansevi (Late) Swami Shri Brijlalji Maharaj

□

Convener & Founder Editor

(Late) Yuvacharya Shri Mishramalji Maharaj 'Madhukar'

□

Editor

Muni Shri Kanhaiyalalji 'Kamal'

□

Chief Editor

(Late) Pt Shobhachandra Bharilla

□

Publishers

Shri Agam Prakashan Samiti

Beawar (Raj)

Direction

Sadhvi Shri Umravkunwarji 'Archana'

Board of Editors

Anuyogapravartaka Muni Shri Kanhaiyalalji 'Kamal'
Acharya Shri Devendra Muni Shastri
Shri Ratan Muni

Promotor

Munishri Vinayakumar 'Bhima'

Second Edition

Vir-Nirvana Samvat 2522
Vikram Samvat 2052,
June, 1995

Publisher

Shri Agam Prakashan Samiti,
Shri Brij Madhukar Smriti Bhawan
Pipaliya Bazar, Beawar (Raj) [India]
Pin—305 901
Phone 50087

Printer

Satish Chandra Shukla
Vedic Yantralaya
Kesarganj, Ajmer

Price ~~Rs. 30/44/55~~ 65/-

प्रकाशकीय

श्री जिनागम ग्रन्थमाला के २९वें ग्रन्थाङ्क का द्वितीय संस्करण आगमप्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इसमें सूपप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति दो आगमों का समावेश किया गया है। दोनों का एक साथ मुद्रण कराने का हेतु क्या है, इस विषय में आगम-अनुयोग-प्रवक्तव्य मुनि श्री कन्हैयालालजी म 'कमल' ने अपने सम्पादकीय में विस्तृत चर्चा की है, अतएव यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

प्रस्तुत दोनों आगम मूलपाठ एवं परिशिष्ट आदि के साथ ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। अथ-विवेचन आदि नहीं दिये गये हैं। इसका कारण यह है कि इनमें आए कतिपय पाठों और उनके अर्थ में मतभेद नहीं हो सका है। इसके प्रतिरिक्त इनका विषय ज्योतिष है जो सर्वसाधारण के लिए दुर्लभ है। इस विषय की चर्चा भी सम्पादकीय में की गई है।

प्रस्तुत प्रकाशन के अनेक आगम कालिंजी और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित किये गए हैं। अतएव यह आवश्यक समझा गया कि इनकी उपलब्धि निरन्तर बनी रहे। इस कारण समस्त आगमों में जिनकी प्रतियाँ समाप्त हो रही हैं, उनके द्वितीय संस्करण प्रकाशित करा दिए गए हैं।

संतोष का विषय है कि ग्रन्थमाला के इन प्रकाशनों का समाज एवं विद्वद्गण ने पर्याप्त आदर किया है। आशा है भविष्य में इनका और अधिक प्रचार-प्रसार होगा और श्री आगम प्रकाशन समिति का प्रयास अधिक सफल और सुफलप्रदायक सिद्ध होगा।

अतः में आगम-अनुयोग के विशाल कार्य में व्यस्त होते हुए भी मुनिश्री कन्हैयालालजी म 'कमल' ने मूलपाठ का सम्पादन कर व डाक्टर श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी ने महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना लिखकर जो सहयोग प्रदान किया उसके लिए आदरपूर्वक आभार मानते हैं। साथ ही स्व प शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने इसका आद्योपात्त भवलोकन किया एवं सहयोगी वाचक-सामर्थियों से सहयोग प्राप्त हुआ तदर्थ उनके भी हम आभारी हैं।

निवेदक

रतनचन्द्र मोदी
कार्यवाहक अध्यक्ष

अमरचन्द्र मोदी
मंत्री

सायरमल चौरडिया
महामंत्री

श्री आगम प्रकाशन-समिति ब्यावर

उदार सहयोगी परिचय

सेठ श्री किशनलालजी बैताला

सेठ श्री किशनलालजी बैताला निष्ठावान धर्मप्रेमी एन उदारमना श्रावक हैं। आप मे समाजसेवा की विशेष भावना शुरू से रही है। आपका जीवन मानवीय सद्गुणों से भ्रोज-भ्रोज रहा है। सेवा और परोपकार-वृत्ति आपके वृण-वृण मे बसी हुई है। आप श्वे० स्था० समाज की धनकानिक सस्थाया से जुडे हुए हैं।

आपने अपने पुरुषाय बल से विपुल लक्ष्मी का उपाजन किया और पवित्र मानवीय भावना से भ्रोज-भ्रोज होकर धर्म तथा समाज की सेवा के लिए उस लक्ष्मी का सदुपयोग भी किया। शिक्षा एव साहित्य-प्रचार मे आपकी एव आपने समस्त परिवार की विशेष रुचि प्रारम्भ से ही रही है।

आपके पिता पू० श्री पूनमचंद जी बैताला एव माता श्रीमती राजीबाई बैताला बहुत ही शांत, धर्मशील एव सतमुनिराजो की सेवा करने मे तत्पर रहने थे।

आपके चार भ्राता हैं—सवश्री दुलीचंदजी, माणवचंदजी मदनलालजी एव कवरलालजी। सभी बहु उद्योग एव व्यवसाय मे कुशल, अमय-संपन्न एव धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों मे तन-मन धन से सहयोग करते रहे हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी बैताला बड़ी सुशीला, सेवाभावी, धर्मशीला नारी हैं। आपने चार पुत्र हैं—सर्वश्री प्रकाशचंदजी श्रीचंदजी, प्रेमचंदजी एव राजेन्द्रजी।

मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नयामालाओं के प्रकाशन मे भी आपके परिवार का काफ़ी योगदान रहा है।

आप पूज्य स्वामीजी श्री हजारीमलजी म० सा०, श्री ब्रजलालजी म० सा० एव पूज्य युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० सा० तथा पू० महासती श्री उमरावकु वरजी म० सा० 'अचना' के प्रति अत्यधिक भक्ति, निष्ठा एव भावदर भावना रखते हैं।

आपने इस ग्रंथ के प्रकाशन मे श्री आ० प्र० स० को अपना महत्त्वपूर्ण हादिक सहयोग प्रदान किया है एतदथ समिति आपकी आभारी है एव अपेक्षा रखती है कि भविष्य में भी आपका इसी प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

मन्त्री

श्री आगम प्रकाशन-समिति, ध्यावर

सम्पादकीय

ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति अर्थात् चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति

[प्रथम संस्करण से]

सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्रपाठ

पूर्व प्रकाशित सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्रों से प्रस्तुत सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्र यदि घटकर मिलाया जाये तो नहीं मिलेंगे। क्योंकि इस संस्करण के सूत्रों को कई पूरक वाक्यों से पूरित किया है, फिर भी सूत्रपाठों की प्रामाणिकता यथावत है।

प्रागमो के विशेषज्ञ ही सूत्रपाठों की व्यवस्था व शीघ्रता को समझ सकेंगे।

सामान्य अक्षर के अतिरिक्त चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति सव्या समान हैं, इसलिए एक के परिचय से दोनों का परिचय स्वतः हो जाता है।

उपागद्वय परिचय

संस्करणकर्ता द्वारा निर्धारित नाम—ज्योतिषगणराजप्रज्ञप्ति है।

प्रारम्भ में समुक्त प्रचलित नाम—चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति रहा होगा। बाद में उपागद्वय के रूप में विभाजित नाम—चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति हो गये हैं, जो अभी प्रचलित हैं।

प्रत्येक प्रज्ञप्ति में बीस प्रागृत हैं और प्रत्येक प्रज्ञप्ति में १०८ सूत्र हैं।

तृतीय प्रागृत से नवम प्रागृत पर्यंत अर्थात् सात प्रागृतों में और ग्यारहवें प्रागृत से बीसवें प्रागृत पर्यंत दस प्रागृतों में "प्रागृत-प्रागृत" नहीं हैं।

केवल प्रथम, द्वितीय और दसवें प्रागृत में "प्रागृत-प्रागृत" हैं।

समुक्त संख्या के अनुसार सतरह प्रागृतों में प्रागृत प्रागृत नहीं हैं। केवल तीन प्रागृतों में प्रागृत प्रागृत हैं।

उपलब्ध चन्द्र-सूर्य प्रज्ञप्ति का विषयानुक्रम वर्गीकृत नहीं है। यदि इनके विविध विषयों का वर्गीकरण किया जाए तो जिनामु जगत अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकता है।

वर्गीकृत विषयानुक्रम

चन्द्रप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

- | | |
|-----------------------------|--------------------------------|
| १ चन्द्र का विस्तृत स्वरूप | २ चन्द्र का सूर्य से संयोग |
| ३ चन्द्र का ग्रहों से संयोग | ४ चन्द्र का नक्षत्रों से संयोग |
| ५ चन्द्र का ताराओं से संयोग | |

सूयप्रज्ञप्ति के विषयानुक्रम की रूपरेखा—

१ सूय का विस्तृत स्वरूप	१ ग्रहों के सूय
२ सूर्य का चन्द्र से संयोग	२ नक्षत्रों के सूय
३ सूर्य का ग्रहों से संयोग	३ ताराओं के सूय
४ सूय का नक्षत्रों से संयोग	१ काल के भेद प्रश्ने
५ सूर्य का ताराओं से संयोग	२ ग्रहीरात्र के सूय
१ चन्द्र, सूय के समुक्त सूय	३ सप्तमर के सूय
२ चन्द्र, सूय, ग्रह के समुक्त सूय	४ धौपमिष काल के सूय
३ चन्द्र, सूय, ग्रह, नक्षत्र के समुक्त सूय	५ काल और धन के सूय
४ चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, ताराओं के समुक्त सूय	

दोनों प्रज्ञप्तिर्यों की नियुक्ति आदि व्याख्याएँ

द्वन्द्व उपांगों के वर्तमान माय त्रय में चन्द्रप्रज्ञप्ति छूटा और सूयप्रज्ञप्ति सातवाँ उपांग है—इतीन्द्र माषाय मलयगिरि ने पहले चन्द्रप्रज्ञप्ति की वृत्ति और बाद में सूयप्रज्ञप्ति की वृत्ति उभी हागी।

यदि माषाय मलयगिरिचन्द्र चन्द्रप्रज्ञप्ति वृत्ति नहीं से उपनय है तो उसका प्रकाशन हुआ है या नहीं? या माषय किसी के द्वारा की गई नियुक्ति, पूर्णिमा या टीका प्रकाशित हो तो भावेपनीय है।

माषाय मलयगिरि ने सूयप्रज्ञप्ति की वृत्ति में लिया है—सूयप्रज्ञप्तिनियुक्ति नष्ट हो गई है^१ पर पुत्र वृषा से वृत्ति की रचना कर रहा हूँ।^२

नामकरण और विभाजन

सभी अय-उपांगों के आदि या धन में वही न वही उनके नाम उपनय हैं किन्तु इन दोनों उपांगों की उत्पत्ति या उपसंहार में चन्द्रप्रज्ञप्ति या सूयप्रज्ञप्ति का नाम क्यों नहीं है? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

दो उपांगों के रूप में इनका विभाजन कब और क्या हुआ? यह शोध का विषय है।

ग्रह, नक्षत्र, तारा ज्योतिष देव हैं—इनके इन्द्र है चन्द्र-सूय—य दोनों ज्योतिषमन्त्र हैं।

उत्पत्ति और उपसंहार के मध्य-पक्ष सूत्रों में “ज्योतिषमन्त्रप्रज्ञप्ति” नाम ही उपनय है किन्तु इन नाम से ये उपांग प्रख्यात न होकर चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूयप्रज्ञप्ति नाम से प्रख्यात हुए हैं।

“ज्योतिष-मन्त्र प्रज्ञप्ति” का महत्त्ववत्ता अथ के प्रारम्भ में “ज्योतिष मन्त्र प्रज्ञप्ति” इन एक नाम से की गई स्वतन्त्र सचलित वृत्ति को ही नहीं की प्रतीति करता है।

इसका अग्रगण्य आधार चन्द्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में दो हुई गृहीय और सप्तम माषा है।^३

१ अस्या नियुक्तिरभूत्, पूष श्री मद्रवाहुरिचिता।

कनियोयात् छात्रेणद् व्याषसे केवल सूत्रम् ॥

२ सूयप्रज्ञप्तिमह गुरुपदमानुसारत द्विषित्।

विषयानि यथागति स्पष्टं स्वयंवाचकाराय ॥

—सूय० प्र० वृत्ति० प्र० १

३ गार्हपत्ये—पुत्र-विषय-वागदत्त, मुच्छं पुत्रसुय-नार-निरस्य ॥

सूत्रम मन्त्रोवदत्त ओद्गणनराय-वर्णित ॥३॥

नामय इदमूदित गोवमो मन्त्रिण विविहणं ॥

पुत्रपद विषयवदत्त ओ-मन्त्राय-वर्णित ॥४॥

इसी प्रकार चंद्र और सूर्य प्रज्ञप्ति के घात में दी हुई प्रशस्ति-गाथाओं में स प्रथम गाथा के दो पदों में सक्लनकर्त्ता न कहा है—“इम भगवती ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का मैंने उत्कीर्तन किया है।”

इस ग्रन्थ के रचयिता ने कही यह नहीं कहा कि “मैं चंद्रप्रज्ञप्ति या सूर्यप्रज्ञप्ति का कथन करूंगा,” किंतु “ज्योतिष राज-प्रज्ञप्ति” यही एव नाम इसने रचयिता ने स्पष्ट कहा है, इस सन्दर्भ में यह प्रमाण पर्याप्त है।

यह उपाग एव उपाग के रूप में कत्र माना गया ? और इसके दो प्रथमो अथवा दो धृतस्कंधो को दो उपागो के रूप में कत्र से मान लिया गया ? ऐतिहासिक प्रमाण व श्रभाव में क्या कहा जाय।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति के सकलनकर्त्ता

प्रश्न उठता है—“ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति” के सकलनकर्त्ता कौन थे ?

इस प्रश्न का निश्चित समाधान सम्भव नहीं है, क्योंकि सकलनकर्त्ता का नाम कही उपलब्ध नहीं है।

चंद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति को कइयों ने गणधरकृत लिखा है। सम्भव है इसका माध्याय चंद्रप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ की अनुसंधान^२ को मान लिया गया है। किंतु इस गाथा में गौतम गणधरकृत है, यह कैसे सिद्ध हो सकता है ?

इसके सकलनकर्त्ता काद पूर्वधर या श्रतधर स्थविर हैं, जो यह कह रहे हैं कि “इन्द्रभूति” नाम के गौतम गणधर भगवान् महावीर का तीन याग स बटना करके “ज्योतिष राज प्रज्ञप्ति” के सम्बन्ध में पुछते हैं।

इस गाथा में “पुच्छद्” क्रिया का प्रयोग धर्म किसी सकलनकर्त्ता ने किया है।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति का सकलनकाल

भगवान् महावीर और निमुक्तिकार श्री भद्रबाहुसूरि—इन दोनों के बीच का समय इस ग्रन्थराज का सकलन काल कहा जा सकता है क्योंकि भद्रबाहुसूरिखन “सूर्यप्रज्ञप्ति की निमुक्ति” वक्तिकार आचार्य मलयगिरि के पूर्व ही नष्ट हो गई थी ऐसा वे सूत्रप्रज्ञप्ति की वक्ति में स्वयं लिखते हैं।

ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति एक स्वतंत्र कृति है

सकलनकर्त्ता चंद्रप्रज्ञप्ति की द्वितीय गाथा^३ में पाँच पदा की वचन करता है और तृतीय गाथा^४ में वह कहता है कि पूर्वधृत का सार निम्न-द-भरना रूप स्पृष्ट विकट सूक्ष्म गणित को प्रकट करने के लिए “ज्योतिष-राज-प्रज्ञप्ति” को कहूँगा। इससे स्पष्ट ध्वनित होता है—यह एव स्वतंत्र कृति है।

१ गाथा—इय एस पागडत्था धम वजणहियय दुल्लभा इणमो।

उत्तिकत्तिया भगवती, ओइसरायस्स पण्णत्ती ॥३॥

२ नामेण इदंभूइत्ति, गीयमी वदिऊण तिजिहेण।

पुच्छद् जिणवरवमह, ओइसरायस्स पण्णत्ति ॥४॥

३ नमिऊण सुट्-धमुट् महल-धुयणपरिवदिए गयकित्तेमे।

धरिहे सिद्धायरिए उवजभाय सवसाहू य ॥२॥

४ फुड-वियड पागडत्थ, वुच्छ पुच्चसुय सारणिस्सद।

सुहम गणिणोवइट्ठ जाणसगणराय-पण्णत्ति ॥३॥

पादप्रणति और मूयप्रणति के प्रत्येक मूत्र के प्रारम्भ में "ता" का प्रयोग है। यह "ता" का प्रयोग स्वतंत्र वृत्ति सिद्ध करने के लिए प्रबल प्रमाण है।

इस प्रकार का "ता" का प्रयोग किसी भी अंग उपांगों के मूर्तों में उपमाय नहीं है।

पाद मूय प्रणति के प्रत्येक प्रथममूत्र के प्रारम्भ में "भते ।" का और उत्तर मूय के प्रारम्भ में गोपना का प्रयोग नहीं है। जबकि अंग-उपांगों के मूर्तों में भते । और गोपना ' का प्रयोग प्रायः सार्वत्रिक है पर यह मायना निर्विवाद है कि यह वृत्ति पूर्ण रूप से स्वतंत्र संकलित वृत्ति है।

प्रायः एक, उत्पत्तिकारण दो

ज्याति-राज-प्रणति की एक उत्पत्तिकारण पादप्रणति के प्रारम्भ में दो हुई मायनों की है और एक उत्पत्तिकारण गद्य मूर्तों की है।

इन उत्पत्तिकारणों का प्रयोग विभिन्न प्रतियों के सापेक्षों में विभिन्न रूपों में किया है—

१. किसी न दोनों उत्पत्तिकारणों की है।
२. किसी में एक गद्य-मूर्तों की उत्पत्तिकारणों की है।
३. किसी में गद्य-मायना की उत्पत्तिकारणों की है।

इसी प्रकार प्रकृति मायनों पादप्रणति के अंत में और मूयप्रणति के अंत में भी दी है। जबकि गद्य-मायनों ज्योतिष-राज-प्रणति के अंत में दी गई थीं।

सम्भव है ज्योतिष-राज-प्रणति की जो दो उपांगों का रूप में विभाजित किया गया होगा, उद्योग दोनों उपांगों का अंत में समान प्रगतिमायनों दे दी गई हैं।

ज्योतिष-राज प्रणति की सार्वजनिक-शाली

चिर अतीत में ज्योतिष-राज प्रणति का सार्वजनिक रूप में रहा होगा ? यह तो सामान्य ऐतिहासिक-विशेषणों का विषय है किन्तु वनमायनों उपांगों पादप्रणति तथा मूयप्रणति के प्रारम्भ में दी गई विना निर्देशक समान मायनों में प्रथम प्राभूत का प्रमुख विषय "मूयप्रणतियों में मूय की गति का गणित" सूचित किया गया है, किन्तु दोनों उपांगों का प्रथम मूत्र मूर्तों की हानि-वृद्धि का है।

मूय सम्बन्धी गणित और पाद सम्बन्धी गणित का समी मूत्र पत्र-तंत्र विभाग है। यह, मूय और ताराओं का मूत्रा का भी व्यवस्थापन प्रथम नहीं है। अतः अंगों के विशेषण सम्बन्धक समान या साधुत्वात् इन उपांगों की साधुत्वात् सम्पादन करने में सम्पादित करें ता गणित की प्रागोक्त वृद्धि हो सकती है।

प्रथम प्राभूत के पौषके प्राभूत-प्राभूत में दो मूत्र हैं। दोनों मूत्र में मूय की गति का सम्बन्ध में दो मायनों की पौष प्रतिपत्तियाँ हैं और सत्रहवें में समायाता का प्रकल्प है।

इस प्रकार अंग मायना का और स्वमायना का दो विभिन्न मूर्तों में विभाग प्रकल्प नहीं है।

सार्वजनिक

पाद अंग अंगों का मूत्रांगों के रूप में प्रकल्पित करना है और सुदृष्ट स्पष्ट अंगों को अंग में संकलित करने है। यह संकलन का साधुत्वात् निर्विवाद है।

अग्न्यागमो को सकलित करने वाला गणधर एक होना है और उपाग्न्यागमो को सकलित करने वाले श्रुतधर विभिन्न वान में विभिन्न होते हैं अतः उनकी धारणाएँ तथा सकलन पद्धति समान समभव नहीं है।

स्थानाग्न्यागम है। इसके दो सूत्रों में चन्द्र-सूय प्रणप्ति के नामों का निर्देश दुर्घिषाजनक है, क्योंकि स्थानाग्न्याग्न के पूर्व चन्द्र-सूय-प्रणप्ति का सकलन होने पर ही उनका उत्सव निर्देश सम्भव हो सकता है।

इस विपरीत धारणा के निवारण के लिए बहुश्रुतों को समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, किन्तु समाधान प्रस्तुत करने से पूर्व उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए—यह सक्षिप्त याचना की सूचना नहीं है—ये दोनों अलग-अलग सूत्र हैं।

नक्षत्र-गणनाक्रम में परस्पर विरोध है

चन्द्र सूय प्रणप्ति दशम प्राभूत के प्रथम प्राभूत-प्राभूत में नक्षत्र-गणनाक्रम की स्वमायता का प्ररूपण है—तन्नुसार अभिज्ञित के उत्तराषाढा पयत २८ नक्षत्रों का गणनाक्रम है किन्तु स्थानाग्न्याग्न २, ३, सूत्रांक १५ में तीन गाथाएँ नक्षत्र गणनाक्रम की हैं और यही तीन गाथाएँ धनुषयोगद्वारा के उपक्रम विभाग में सूत्र १८५ में हैं। इनमें कृत्तिका से भरणी पयत नक्षत्रों का गणनाक्रम है।

स्थानाग्न्याग्न अग्न्यागम है—इसमें कहा गया नक्षत्र-गणनाक्रम यदि स्वमायता के अनुसार है तो सूयप्रणप्ति में कहे गए नक्षत्र-गणनाक्रम को स्वमायता का कैसे माना जाय ? क्योंकि उपाग्न्याग्न की अपेक्षा अग्न्यागम की प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है।

यदि स्थानाग्न्याग्न में निर्दिष्ट नक्षत्र-गणनाक्रम को किसी व्याख्याकार ने अथवा मायता का मान लिया होता तो परस्पर विरोध निरस्त हो जाता किन्तु जवूदीपप्रणप्ति आदि के आगमपाठों से स्वमायता का प्रथम अभिज्ञित से उत्तराषाढा पयत का है अथवा प्रथम मायता के हैं।

प्राभूत पद का परमायं

सूयप्रणप्ति-वृत्ति के अनुसार प्राभूत शब्द के अर्थ

इष्ट पुरुष के लिए देशकाल के योग्य हितकर दुर्लभ वस्तु अर्पित करना

अथवा जिस पदार्थ से मन प्रसन्न हो ऐसा पदार्थ इष्ट पुरुष को अर्पित करना, ये दोनों शब्दार्थ हैं।

१ (व) स्थानाग्न्याग्न २, ३, सू १६० (ख) स्थानाग्न्याग्न ४, ३, सू २७७

२ (क) अथ प्राभूतमिति व शब्दाथ ?

उच्यते—इह प्राभूत नाम लोके प्रसिद्ध यदभीष्टाय पुरुषाय देश-कालोचित दुर्लभ-वस्तु-परिणाम-मुदरमुपनीयते।

(क) प्रथम आ-समा-ता-प्रियने-योष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानेनेति प्राभूतम्।

(ग) विवक्षिता षधि च अथपठतय परमदुर्लभा परिणाममुदराश्चामीष्टस्यो विनयादिपुणव्रित्तेभ्य शिष्येभ्यो दश-कालोचिरयनोपनीयते।

—सूय सू ६ वृत्ति पत्र ७ का पूर्वभाग श्वेताश्वर परम्परा में चन्द्र-सूय प्रणप्ति के अध्ययन आदि विभागों के लिए "प्राभूत" शब्द प्रयुक्त है।

दिगम्बर परम्परा के कयापपाण्डु आदि सिद्धांत ग्रन्थों के लिए प्रयुक्त 'पाण्डु' शब्द के विभिन्न अर्थ—
१—जिसके पद स्फुट—ध्वत्त हैं वह 'पाण्डु' कहा जाता है।

२—जो प्रकृत पुरुषोत्तम द्वारा आभूत—प्रस्थापित है वह "पाण्डु" कहा जाता है।

३—जो प्रकृत पानियों द्वारा आभूत—धारण किया गया है अथवा परम्परा से प्राप्त किया गया है वह "पाण्डु" कहा जाता है।
—जनेद्र निदान्त बोध से उद्धृत

षट्प्रणलि और मूर्धप्रणलि के प्रवेश मूल के प्रारम्भ में "ता" का प्रयोग है। यह "ता" का प्रवेश दसवीं स्वप्नान्न वृत्ति विहित करने के लिए प्रयत्न प्रमाण है।

इस प्रकार का "ता" का प्रयोग किसी भी अग्न उपसर्गों के मूर्धों में उपलब्ध नहीं है।

षट्-मूल प्रणलि के प्रवेश प्रथममूल के प्रारम्भ में "भते !" का और उत्तर मूल के प्रारम्भ में 'दा' का प्रयोग नहीं है। जबकि धातु अग्न-उपसर्गों के मूर्धों में भते ' और भोयसा ' का प्रयोग प्रायः सम्भव है परन्तु यह मानना निर्विवाद है कि यह वृत्ति पूरा रूप से स्वप्नान्न सङ्घटित वृत्ति है।

प्राय एव, उत्पानिकारण दो

ज्योतिष-राज प्रणलि की एव उत्पानिकारण षट्प्रणलि के प्रारम्भ में या हुई गाथाओं की है और एव उत्पानिकारण मूल मूर्धों की है।

इन उत्पानिकारण का प्रयोग विभिन्न प्रतियों के सम्पादन में विभिन्न रूपों में किया है—

- १ किसी ने दोनों उत्पानिकारण दो हैं।
- २ किसी ने एव मूल-मूर्धों की उत्पानिकारण दो है।
- ३ किसी ने पद्य-भाषा का उत्पानिकारण दो है।

इस प्रकार प्रकृत गाथाओं षट्प्रणलि के अन्त में और मूलप्रणलि के अन्त में भी दो हैं। जबकि दो गाथाएँ ज्योतिष-राज-प्रणलि के अन्त में दी गई थी।

संभव है ज्योतिष-राज-प्रणलि को जब दो उपसर्गों के रूप में विभाजित किया गया होगा, उक्त धमक दोनों उपसर्गों के अन्त में सारा प्रकृतगाथाएँ दे दी गई हैं।

ज्योतिष-राज प्रणलि की सङ्घटन-शैली

बिच प्रतीक में ज्योतिष-राज-प्रणलि का सङ्घटन किध रूप में रहा होगा ? यह तो धामक ज्योतिष-राज इतिहास-विशेषणों का विषय है किन्तु यत्रमात्र में उपलब्ध षट्प्रणलि तथा मूलप्रणलि के प्रारम्भ में दो मूल प्रणलि-निर्देशक समान गाथाओं में प्रथम प्रामुख्य का प्रमुख विषय 'मूलमण्डलों में मूल की गति का गणित' मूलित किया गया है, किन्तु दोनों उपसर्गों का प्रथम मूल मूर्धों की हानि-सृष्टि का है।

मूल सम्बन्धी गणित और षट् सम्बन्धी गणित का समी मूल यत्र-तत्र विधीय है। यह, मूल और उत्पानिकारण के मूर्धों का भी अवस्थित प्रथम नहीं है। अतः धामकों के विशेष मन्त्रा-धमक या मन्त्रा-धमक इन उपसर्गों का धामकिक सम्पादन नहीं म सम्पादित करें ता गणित की धामकिक सृष्टि हो सकती है।

प्रथम प्रामुख्य के पार्श्व प्रामुख्य-प्रामुख्य में दो मूल हैं। सो-हमें मूल में मूल की गति का सम्पादन में धमक मा-धमकों की पार्श्व प्रतिवर्तनी है और सङ्घटन में स्वमायता का प्रकृत है।

इस प्रकार धमक मा-धमक का और स्वमायता का दो विभिन्न मूर्धों में निरूपण सम्भव नहीं है।

सङ्घटन-शैली

ज्योतिष-राज अग्न धामकों की मूर्धमूर्धों के रूप में पहले गणित करता है और मूलप्रणलि स्वप्नान्न उत्पानिकारण का सम्पादन करता है। यह सङ्घटन का धामकिक विधिवाद है।

अग आगमों को सकलित करने वाला गणधर एव होता है और उपाग आगमों को सकलित करने वाले श्रुतधर विभिन्न काल में विभिन्न होने हैं अतः उनकी धारणाएँ तथा सकलन पद्धति समान संभव नहीं है।

स्थानाग अग आगम है। इसके दो सूत्रों में चन्द्र-सूय प्रनप्ति के नामों का निर्देश दुविधानक है, क्याकि स्थानाग के पूर्व चन्द्र-सूय-प्रनप्ति का सकलन होने पर ही उनका उसमें निर्देश सम्भव हो सकता है।

इस विपरीत धारणा के निवारण के लिए बहुश्रुता को समाधान प्रस्तुत करना चाहिए, किन्तु समाधान प्रस्तुत करने से पूर्व उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए—यह सक्षिप्त वाचना की सूचना नहीं है—ये दोनों अलग-अलग सूत्र हैं।

नक्षत्र गणनाक्रम में परस्पर विरोध है

चन्द्र सूय प्रनप्ति दशम प्राभूत के प्रथम प्राभूत-प्राभूत में नक्षत्र-गणनाक्रम की स्वमायता का प्ररूपण है—तदनुसार अभिज्ञित के उत्तरपाठा पयत् २८ नक्षत्रों का गणनाक्रम है किन्तु स्थानाग अ २, उ ३, सूत्राक १५ में तीन गाथाएँ नक्षत्र गणनाक्रम की हैं और यही तीन गाथाएँ अनुयोगद्वार के उपक्रम विभाग अ सूत्र १८५ में हैं। इनमें वृत्तिका से भरणी पयत् नक्षत्रों का गणनाक्रम है।

स्थानाग अग आगम है—इसमें कहा गया नक्षत्र-गणनाक्रम यदि स्वमायता के अनुसार है तो सूयप्रनप्ति में कहे गये नक्षत्र-गणनाक्रम को स्वमायता का कैसे माना जाय ? क्योंकि उपाग की अपेक्षा अग आगम की प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है।

यदि स्थानाग में निर्दिष्ट नक्षत्र-गणनाक्रम को किसी व्याख्याकार ने अथ मायता का मान लिया होता तो परस्पर विरोध निरस्त हो जाता किन्तु जड़द्वीपप्रनप्ति आदि के आगमपाठों से स्वमायता का जन्म अभिज्ञित से उत्तरपाठा पयत् का है अथ अथ अथ मायता के हैं।

प्राभूत पद का परमाय

सूर्यप्रनप्ति-वृत्ति के अनुसार प्राभूत शब्द के अर्थ

इष्ट पुरुष के लिए देशकाल के योग्य हितकर दुर्लभ वस्तु अर्पित करना

अथवा जिस पदार्थ से मन प्रसन्न हो ऐसा पदार्थ इष्ट पुरुष को अर्पित करना, ये दोनों शब्दाय हैं।

१ (क) स्थानाग अ २ उ २, सू १६० (ख) स्थानाग अ ४, उ १, सू २७७

२ (क) अथ प्राभूतमिति क शब्दाय ?

उच्यते—इह प्राभूत नाम लोके प्रसिद्ध यदभीष्टाय पुर्याय दश-कालोचित दुर्लभ-वस्तु-परिणाम-सुदरमुपनीयते।

(क) प्रकर्षेण आ-सम-ताद् त्रियते-पोष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्थानेति प्राभूतम्।

(ग) विवक्षिता अथि च अथपद्धतय परमदुर्लभा परिणाममुदराश्याभीष्टभ्यो विनयादिगुणकलितभ्य शिष्येभ्यो दश-कालीचित्तेनोपनीयते।

—सूय सू ६ वृत्ति पत्र ७ का पूर्वभाग

ध्वताम्बर परम्परा में चन्द्र-सूय प्रनप्ति के अध्ययन आदि विभागों के लिए 'प्राभूत' शब्द प्रयुक्त है।

दिगम्बर परम्परा के कपायपाहुड आदि सिद्धांत ग्रन्थों के लिए प्रयुक्त 'पाहुड' शब्द के विभिन्न अर्थ—

१—जिसके पद स्पष्ट—व्यक्त हैं वह "पाहुड" कहा जाता है।

२—जो प्रकृत पुरुषोत्तम द्वारा प्राप्त = प्रस्थापित है वह "पाहुड" कहा जाता है।

३—जो प्रकृत जानियों द्वारा प्राप्त—धारण किया गया है अथवा परम्परा से प्राप्त किया गया है वह "पाहुड" कहा जाता है।

—जनेन्द्र सिद्धांत कीय से उक्तम्

घट्ट-सूय प्रकृति से सम्बन्धित ध्य

विनयादि गुण गणना लिप्या क ति ए दश-बाताखायी सुभक्तप्र कृत्तम द प स्वाध्याय इतु मेन ।
यही दश-बातोपयोगी' विगणन विरुध ध्यान दन धाय है ।

कालिक और उत्कालिक

नारीसूय मे लमिक को "उत्कालिक" और धयमिक को "कालिक" कहा है ।

दृष्टिवाद लमिक है ।^१ दृष्टिवाद का मृतीय विभाग सूयगत है^२ उसी सूयगत से ज्योतिषशास्त्र-दृष्टि (घट्टप्रकृति सूयप्रकृति) का निरूपण किया गया है, तथा घट्टप्रकृति की उत्कालिका की मृतीय लया व झात जाता है ।

अग-उत्काली का एक दूमेरे से सम्बन्ध है, य सब धयमिक है, घन से सब कालिक है ।

उसी नारीसूय के धनुसार घट्टप्रकृति कालिक है^३ और सूयप्रकृति उत्कालिक है ।^४

घट्टप्रकृति और सूयप्रकृति के कतिपय गण-वच सुनों क प्रतिरिक्त सभी गुण प्रक्षरण समान है पर एक कालिक और एक उत्कालिक विग धाधार पर ना। गण है ?

यदि इन दिना उपांगा में से एक कालिक और एक उत्कालिक निरिषा है तो "दशक सभी गुण समान नहीं व यह मानना ही उचित प्रतीत होता है, बात क विकराम धानराय में इन उपांगा क सुय सूय विधिदय हो गये और सुय विकीण हो गये हैं ।

मूल अक्षिप्त और अर्थ भिन्न

घट्टप्रकृति और सूयप्रकृति के मूल सुनों में कितना साम्य है ? यह तो दोषों के धाय, तात धनवाहन ग स्वय लान हो जाता है कि सुयप्रकृति के सभी सुनों की धट्टपरक ध्याध्या और सूयप्रकृति के सभी सुनों की सूयपरक ध्याध्या धनीत मे उपलब्ध थी । यह कथा कितना धयाध है, कहा नहीं जा सकता है क्योंकि लया विद्या टीका, निरुक्ति ध्यादि में कहीं कहा नहीं है । यदि इस प्रकार का उत्तर विगी टीका, निरुक्ति धर् में दखने से धया हो ना विद्वज्जन प्रकाशित करें ।

एक इतोन या एक गामा क धनेक धय धमन्मय नहीं है । डिगधात, पधमधात गानमंघान धाि काल धनमान में उपलब्ध है । इनमे प्राररु इतक की विभिन्न कधापरक टीकाएँ देयी जा सकती हैं । किन्तु घट्टप्रकृति और सूयप्रकृति के गणध में विना दिगी प्रथम प्रमाण क विनाध कहना उचित प्रतीत नहीं होता ।

१ नारीसूय, लमिक धयमिक सुय सूय ४४

२ नारीसूय, दृष्टिवाद सुय सूय १०

३ नारीसूय, उत्कालिक सुय सूय ४४

४ नारीसूय, कालिक सुय सूय ४४

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इमका विशेषण शुभाशुभ जानने में सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानन की होती है क्योंकि वह इष्ट वा सयोग एव काय की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रशस्ति और भूमप्रशस्ति ज्योतिष विषय के उपांग हैं—यद्यपि इनमें गणित अधिक है और फलित प्रत्यक्ष है, फिर भी इनका परिपूर्ण पाता शुभाशुभ निमित्त वा पाता माना जाता है—बहु धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के द्योनक हैं अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक संबंध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की प्रगाध धृष्टा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रों के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेत्तर प्राणी-जगत् से चन्द्र प्राणि ज्योतिषी देवा का शाश्वत संबंध है। क्योंकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वयं प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों का प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिषी लोक और मानव लोक का प्रकाश प्रकाशक भाव सर्व ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि ब्राह्मदने धातु से “चद्र” शब्द सिद्ध होता है।

चद्रब्राह्मद मिमीते निर्भिमीते इति चद्रमा

प्राणिजगत के ब्राह्मद का जनक चद्र है, इसलिए चद्रदशन की परम्परा प्रचलित है।

चद्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमें कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिनसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थों में एव पुरुषों से चद्र का प्रगाढ संबंध सिद्ध है।

कुमुदबाधव—जलाशया में प्रफुल्लित कुमुदिनी का बधु चद्र है इसलिए “कुमुदबाधव” कहा जाता है।

बलानिधि चद्र के पर्याय हिमाशु, शुभ्राशु, सुधाशु की अमृतमयी कलाओं से कुमुदिनी का सीधा सम्बन्ध है।

इसकी गाथी है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल में बसे कुमुदिनी, चन्द्रा बसे जाकारा।

जो जाहू के मन बसे, सो ताहू के पास ॥

ओपधीश—जल की जडी बूटियाँ “ओपधि” हैं—उनमें रोग निवारण का अद्भूत सामर्थ्य सुधाशु की सुधामयी रश्मियों से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है, वह ओपधिया से प्राप्त होता है—उसलिए ओपधीश चद्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति —चद्र है।

घट्ट-सूय-प्रसक्ति से सम्बन्धित अर्थ

विनयादि मूक गणपति लिप्या न सिद्ध्ये दश-नागादयमागी सुमयनप्रदं कुम्भं ध्वज इत्यादिमानं ह्यु देवा ।
यशो दत्त-जातोदयमागी" विद्येयन् विद्येयन् ध्यानं दत्ते मायु है ।

कालिक और उत्कालिक

नारीसूय न समिक न। "उत्कालिक" और समिक को "कालिक" कहा है ।

दष्टिवाट समिक है ।^१ दष्टिवाट का तृतीय विभाग पूर्वगत है,^२ उसी पूर्वगत से पञ्चोपदेवद्वारा "रत्न" (सम्प्रति-सूयप्रसक्ति) का निरूपण किया गया है, तथा सम्प्रति की उत्कालिका की तृतीय भागा से रूपन होता है ।

अग-उपागों का एक दूसरे न सम्बन्ध है, न सब समिक है अतः ये सब कालिक हैं ।

उसी नारीसूय न अनुसार सम्प्रति कालिक है^३ और पूर्वप्रसक्ति उत्कालिक है ।^४

सम्प्रति और सूयप्रसक्ति के अनियम गण-वत् सूयों न परिचित सभी सूय समान समान है अतः एक कालिक और एक उत्कालिक किम साधारण पर माने गए हैं ?

यदि इन बिना उपागा में से एक कालिक और एक उत्कालिक परिचित है तो "इसके सभी सूय समान नहीं थे" यह मानना न उचित प्रतीत होता है काल के विचरण अन्तराल में इन उपागा न कुछ सूय निर्दिष्ट हो गए और कुछ विहीन हो गये हैं ।

मूल अभिन्न और अर्थ भिन्न

सम्प्रति और पूर्वप्रसक्ति न मूल सूयों में कितना मायु है ? यह तो दोनों न सादृश्यता धरकर ही माना जा सकता है, कि तु सम्प्रति न सभी सूयों की सम्पूर्ण व्याख्या और पूर्वप्रसक्ति के सभी सूयों की मूलपरक व्याख्या समीप में उपलब्ध थी । यह कथन कितना सत्य है, कहा नहीं जा सकता है क्योंकि तथा किसी टीका, निरूपण आदि न वहीं कहा नहीं है । यदि इस प्रकार का उल्लेख किसी टीका, निरूपण आदि न तथा में पाया हो तो निश्चयन प्रकटित करें ।

एक उपाग या एक भागा न अनेक अर्थ प्राप्त कर सकते हैं । द्विगुणन पञ्चगुणन सप्तगुणन आदि नाम वचनान न उपलब्ध हैं । इतना अन्वय उपाग की भिन्न न्यायपरक टीकाएँ देनी या उक्तनी है । किन्तु सम्प्रति और सूयप्रसक्ति के मध्य न बिना किसी प्रकार प्रमाण न सिद्धात कहना उचित प्रतीत नहीं होता ।

१ नारीसूय, समिक कालिक सूय सूय ४४

२ नारीसूय, दष्टिवाट धन सूय १०

३ नारीसूय उत्कालिक सूय सूय ४४

४ नारीसूय, कालिक सूय सूय ४४

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इगका विशेषतः शुभाशुभ जानने में सफल हो सकता है।

मानव की सर्वाधिक जिज्ञासा भविष्य जानने की होती है क्योंकि वह इष्ट का संयोग एवं कार्य की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रपत्ति और मृगप्रज्ञप्ति ज्योतिष विषय के उपाग हैं—यद्यपि इनमें गणित भविष्य है और फलित भवत्य है, फिर भी इनका परिपूर्ण नाता शुभाशुभ निमित्त का नाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के चोकर है अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक संबंध है।

निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की प्रगाध श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रों के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवत्तर प्राणी-जगत से चन्द्र मन्त्रि ज्योतिषी देवों का प्रायवत् संबंध है। क्योंकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वयं प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों को प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिष लोक और मानव लोक का प्रवाश्य-प्रवाशक भाव संबंध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चंद्रि भ्राह्मणाने धातु से “चद्र” शब्द सिद्ध होता है।

चन्द्रभाह्मणद मिमीते निमिमीते इति चन्द्रमा

प्राणिजगत् के भ्राह्मण का जनक चन्द्र है, इसलिए चन्द्रदशन की परम्परा प्रचलित है।

चन्द्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमें कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिसे इस पृथ्वी के समस्त पदार्थों में एव पुरुषा से चन्द्र का प्रगाढ संबंध सिद्ध है।

कुमुदवाद्यव—जलाशयों में प्रफुल्लित कुमुदिनी का बंधु चन्द्र है इसलिए “कुमुदवाद्यव” कहा जाता है।

कलानिधि चन्द्र के पर्याय हिमाशु शुभ्राशु, सुधाशु की अमृतमयी कलाशयों से कुमुदिनी का सोघा सम्बन्ध है।

इसकी माक्षी है राजस्थानी कवि की शक्ति—

दोहा—जल में बसे कुमुदिनी, चन्द्रा बसे आकाश।

जो जाह्नू के मन बसे, सो ताहू के पास ॥

औपघोष—जगत् की जड़ी बूटियाँ “औपघि” हैं—उनमें राग निवारण का अदभूत सामर्थ्य सुधाशु की सुधामयी रश्मियों से आता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है वह औपघिया से प्राप्त हाना है—उसलिए औपघोष चन्द्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति—चन्द्र है।

घट्ट-सूय प्रज्ञानि से सम्बन्धित घट्ट

विनयानि दुग्ग सम्पन्न विष्णो व मिए दत्त-वत्तानयामी सुभक्कमदु दुग्गम वयं स्वाध्याय देवु देवा ।
महो दत्त-वत्तानयामी विनेय विनेय ध्यान देव योग्य है ।

कालिक और उत्कालिक

मन्त्रीसूत्र म कालिक व "उत्कालिक" घोर घट्टिक को "कालिक" कहा है ।

दल्लिवाट कालिक है ।^१ दल्लिवाट का कृतीय विभाग प्रवर्ण है,^२ उगी प्रवर्ण से प्रवर्णिकपरक प्रवर्ण (धर्मप्रवर्ण-सूयप्रज्ञानि) का विद्वृष्ट किया गया है । तैसा धर्मप्रज्ञानि की उत्कालिका की कृतीय भाषा से कहा जाता है ।

धर्म-उत्तारों का एक दूत म सम्बन्ध है, उ मय घट्टिक है । घट्ट के मय कालिक है ।

उगी मन्त्रीसूत्र व धनुसार धर्मप्रज्ञानि कालिक है^३ घोर सूयप्रज्ञानि उत्कालिक है ।^४

धर्मप्रज्ञानि घोर धर्मप्रज्ञानि के कालिक मय पद्य मया व कालिक मयी सूय घट्टिक ममान है । घट्ट एक कालिक घोर एक उत्कालिक विम घट्टिक पर मान मये है ?

यदि इन विना उत्तारों में से एक कालिक घोर एक उत्कालिक निश्चित है तो 'दत्त मयी सूत्र ममान गरी म यट्ट मानना ही उचित प्रतीत होता है, काल व विकराल घट्टिक ममें इन उत्तारों व कृत्त सूय विभिन्न हा मय घोर कृत्त विकी-हा मये है ।

मूल अमिन्न और अयं मिन्न

धर्मप्रज्ञानि घोर सूयप्रज्ञानि व मूल सूयों में विनय मय्य है ? यह तो दोनों के धारानाम्य धर्ममोहन म स्वतः ज्ञात हो जाता है । किन्तु धर्मप्रज्ञानि व मया सूयों की धर्मपरक धारणा घोर सूयप्रज्ञानि के मयी सूयों की मूलपरक धारणा धर्मम म उत्तम्य थी । यह कथन विना मया है, कहा नहीं जा सकता है, क्योंकि एसा किसी टीका, तिनुमि धारि म नहीं कहा नहीं है । यदि हम प्रकार का उत्तम्य किसी टीका, तिनुमि धारि म उत्तम में धारणा हो तो विद्वत्ता प्रकालिक करें ।

एक कथन या एक भाषा के धोक मय धर्ममय नहीं हैं । द्विसंज्ञान, वंसंज्ञान, मन्मज्ञान धारि कालिक ममान म उत्तम्य है । इनम धारणा कथन की विभिन्न कथनरक टाका देधी जा सकता है । किन्तु या धर्मम घोर सूयप्रज्ञानि के संकथ म विना किसी प्रथम प्रमाण व विप्राम कहा उचित प्रमाण नहीं होगा ।

- १ मन्त्रीसूत्र कालिक धर्मप्रज्ञानि मूल सूत्र ४४
- २ मन्त्रीसूत्र, दल्लिवाट धर्म सूत्र १०
- ३ मन्त्रीसूत्र उत्कालिक मूल सूत्र ४४
- ४ मन्त्रीसूत्र, कालिक धर्म सूत्र ४४

ज्योतिषशास्त्र निमित्तशास्त्र माना गया है। इगका विशेषज्ञ शुभाशुभ जानने में सफल हो सकता है। मानव की सर्वाधिक जिनासा भविष्य जानने की होती है क्योंकि वह इष्ट का संयोग एव काय की सिद्धि चाहता है।

चन्द्रप्रणति और सूर्यप्रणति ज्योतिष विषय के उपाग हैं—यद्यपि इनमें गणित अधिक है और फलित परत्यल्प है, फिर भी इनका परिपूर्ण ज्ञाता शुभाशुभ निमित्त का ज्ञाता माना जाता है—यह धारणा प्राचीनकाल से प्रचलित है।

ग्रह-नक्षत्र मानवमात्र के भावी के जीवन हैं अतएव इनका मानव जीवन के साथ व्यापक संबंध है। निमित्तशास्त्र के प्रति जो मानव की प्रगाथ श्रद्धा है, वह भी ग्रह-नक्षत्रों के शुभाशुभ प्रभाव के कारण ही है।

ज्योतिषी देवों का जीव-जगत् से सम्बन्ध

इस मध्यलोक के मानव और मानवेत्तर प्राणी-जगत से चन्द्र ग्रन्थि ज्योतिषी देवों का शाश्वत संबंध है। क्योंकि वे सब इसी मध्यलोक के स्वयं प्रकाशमान देव हैं और वे इस भूतल के समस्त पदार्थों का प्रकाश प्रदान करते रहते हैं।

ज्योतिष लोक और मानव लोक का प्रकाश्य-प्रकाशक भाव सम्बन्ध इस प्रकार है—

(१) चन्द्र शब्द की रचना

चदि भ्राह्मिदने धातु से “चद्र” शब्द सिद्ध होता है।

चद्रमाह्लाद मिमीते निमिमीत इति चद्रमा

प्राणिजगत के भ्राह्मिद का जनक चद्र है, इसलिए चद्रदशन की परम्परा प्रचलित है।

चद्र के पर्यायवाची अनेक हैं उनमें कुछ ऐसे पर्यायवाची हैं जिनसे इस पृथ्वी के समस्त वन्यों में एव पुरुषों में चद्र का प्रगाढ संबंध सिद्ध है।

कुमुदबाधव—जलाशया में प्रफुल्लित कुमुदिनी का बधु चद्र है इसलिए “कुमुदबाधव” कहा जाता है।

कलानिधि चद्र के पर्याय हिमाशु, शुभ्राशु, सुधाशु की अमृतमयी कलाओं से कुमुदिनी का सोधा सम्बन्ध है।

इसकी माधो है राजस्थानी कवि की सूक्ति—

दोहा—जल में बसे कुमुदिनी, चद्रा बसे आकाश।

जो जाहू के मन बसे, सो ताहू के पास ॥

औषधीय—जगल की जड़ी बूटिया “औषधि” हैं—उनमें रोग-निवारण का अद्भुत सामर्थ्य सुधाशु की सुधामयी रश्मियों से प्राता है।

मानव आरोग्य का अभिलाषी है, वह औषधियों से प्राप्त होता है—उसलिए औषधीय चद्र से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

निशापति—निशा = रात्रि का पति -चद्र है।

धमनीकी दिव म "धम" करते हैं और रात्रि में विषाम करते हैं। साधारणतः कष्ट की स्थिति में विषमि त सेवक मानव स्वस्थ हो जाता है इसलिये मानव का निराशास्य से प्रति निरुद्ध का सत्यतः सिद्ध होता है। अंततः म कष्ट क एव "शक्ति" पर्याय की ही व्याख्या है।

(२) सूर्य शब्द की रचना

सु श्रेष्ठे प्रायु से "सूय" शब्द सिद्ध हुआ है।

सुयति श्रेयसति कर्मणि सोऽद्या इति सूय — जो प्राणिमात्र की कर्म करो व निष्प्रेरित करता है व सुय है।

सूरज—प्राणीय जन "सूय" को "सूरज" कहते हैं।

सु+ऊज से सूज या सूरज उच्चारण होता है।

सु श्रेष्ठ—ऊज = ऊर्जा = शक्ति।

सूय म शब्द शक्ति प्राप्त हानी है।

सूय व पर्याय शक्त है। इतने कुछ एत पर्याय है, जिनसे सूय का मातृक के साथ सहज सम्बन्ध सिद्ध होता है।

सहस्रसु—सूय की सहस्र रश्मियों से प्राणियों को जो "ऊष्मा" प्राप्त होती है, वही सूर्य के जीवों का जीवन है।

प्रत्येक मानव शरीर में जब तक ऊष्मा = गर्मी रहती है, तब तक जीवन है। ऊष्मा समाप्त होने के साथ ही जीवन समाप्त हो जाता है।

भास्कर, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, सुमनि, सहस्रनि, मातृ प्राणि पर्यायों से 'सूय' प्रकाश देने का शक्त है।

मातृ की सभी प्रवृत्तियों प्रकाश म ही हानी है। प्रकाश के बिना वह शक्तिविह्वल है।

१ सभी सूर्य विगिद्धसु

प्र से के-टटेण मते ! एव सुकचई—खंडे सती, खंडे सती ?

उ गोचमा ! अदसत न जाइविदसत ओइसरणो निमर विमाने, बला इवा कताभा देयोऽपि कस्युं सत्ये सत्य-सुम शंभसतोऽवरणादं, अप्पत्ता वि य नं खडे जोतितादे जोतिगराया सत्य कते सुय-विमरणे सुचये.

से के-टटेण गोचमा ! एव सुकचई—"खंडे सती, खंडे सती"।

—सत्य म १२, उ ६, सु ५

शक्ति शक्त का विगिद्धार्थ

प्र । भावत् ! खंडे को "शक्ति" विगिद्धार्थ से कहा जाता है ?

उ हे शीरम ! खंडे-विदसत ओइसरणो निमर विमाने, बला इवा कताभा देयोऽपि कस्युं सत्ये सत्य-सुम शंभसतोऽवरणादं, अप्पत्ता वि य नं खडे जोतितादे जोतिगराया सत्य कते सुय-विमरणे सुचये.

बाला, सुयम, विमरणे एवं सुय है।

हे शीरम ! एत कारण से खंडे को "शक्ति" (या शक्त) कहा जाता है।

सूय के ताप से धनेव रोगी की चिकित्सा होती है ।

सौर ऊर्जा से धनेक यत्र शक्तियों का विवास हो रहा है ।

इस प्रकार मानव का सूय से शाश्वत सम्बन्ध है ।

जैनाग्रमों में सूय के एक "आदित्य" पर्याय की व्याख्या द्वारा सभी कालविभागों का आदि सूय कहा

गया है ।

(३) गृह-ग्रह की रचना

ग्रह उपादाने घातु से यह ग्रह शब्द सिद्ध होता है ।

जनाग्रमों में छह ग्रह और आठ ग्रह का उल्लेख है ।^२

चन्द्र-सूय को ग्रहपति माना है, शेष छ को ग्रह माना है, राहु-केतु को भिन्न न मानकर एक केतु को ही माना है ।

षट्ठासी ग्रह भी माने हैं ।

अथ ग्रहों के नौ ग्रह माने हैं ।

ग्रहों के प्रभाव के सम्बन्ध में वशिष्ठ और बृहस्पति नाम के ज्योतिर्विदाचार्य ने इस प्रकार कहा है—

वशिष्ठ—ग्रहा राज्य प्रयच्छति, ग्रहा राज्य हरति च ।

ग्रहेस्तु व्यापित सर्वं, श्रेतोभ्य सचराचरम् ॥

बृहस्पति—ग्रहाधीन जगत्सर्व, ग्रहाधीना नरामरा ।

काल ज्ञान ग्रहाधीन, ग्रहा कमफलप्रदा ॥

(३२वा गोचर प्रकरण—बृहद्देवनरजन, पृ ८४)

(४) नक्षत्र और नरसमूह

नक्षत्र शब्द की रचना

१ न क्षदते हिनस्ति "क्षद" इति सोमो घातु हिसाय आत्मनेपदी । ष्टन (उ ४/१५९) नघ्राणपाद् (६/३/७५) इति नज प्रकृतिभाव ।

१ सूर सहस्त्र त्रिसिद्धत्यो—

प्र से केणटठेण भते ! एव बुच्चइ—“सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे” ?

उ गोयमा ! सुरादीया स मयाइ वा, आवलियाइ वा, जाव ओसपिणीइ वा, उत्सपिणीइ वा ।

से तेणटठेण गोयमा ! एव बुच्चइ—“सूरे आदिच्चे सूरे आदिच्चे ।”—भाग स १२, उ ६, सु ५

सूय शब्द का विशिष्टार्थ

प्र हे भयवन ! सूय को "आदित्य" किस अभिप्राय से कहा जाता है ?

उ हे गौतम ! समय, भावतिका यावत् भवसपिणी, उत्सपिणी काल का आदि कारण सूय है ।

हे गौतम ! इस कारण से सूय "आदित्य" कहा जाता है ।

२ छ तारगहा पण्णत्ता, तजहा—

१ सुबको, २ बुहे, ३ बृहस्पति, ४ अगारके, ५ सणिच्छरे, ६ केतू ।

—ठाणं अ ६, सु ४८

अटठ महग्गहा पण्णत्ता तजहा—

१ चद, २ सूरे, ३ सुबके, ४ बुहे, ५ बृहस्पति, ६ अगारके, ७ सणिच्छरे, ८ केतू । —ठाण ८, सु ६/३

गणितानुयोग का गणित सम्यक्श्रुत है

मिथ्याश्रुतों की नामावली में गणित को मिथ्याश्रुत माना है^१, इसका यह भ्रमिप्राय नहीं है कि—“सभी प्रकार के गणित मिथ्याश्रुत हैं।”

घात्मशुद्धि की साधना में जो गणित उपयोगी या सहयोगी नहीं है, केवल वही गणित ‘मिथ्याश्रुत’ है, ऐसा समझना चाहिए। यहाँ ‘मिथ्या’ का भ्रमिप्राय ‘अनुपयोगी’ है, भ्रंश नहीं।

वैराग्य की उत्पत्ति के निमित्तों में लोकभावना अर्थात् लोकस्वरूप का विस्तृत ज्ञान भी एक निमित्त है^२, अतः भ्रंश और ऊर्ध्व लोक से सम्बन्धित सारा गणित ‘सम्यक् श्रुत’ है, क्योंकि वह गणित भ्राजोविका या भ्रंशाय सावध श्रियामों का हेतु नहीं हो सकता है।

स्यानाग, समवायाग और व्याख्याप्रज्ञप्ति—इन तीनों अर्थों में तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति—इन तीनों उपागों में गणित सम्बन्धी जितने सूत्र हैं वे सब सम्यक्श्रुत हैं। क्योंकि अग, उपाग सम्यक्श्रुत हैं।

अग्य मान्यताओं के उद्धरण—स्वमायताओं का प्ररूपण

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति में अनेक मान्यताओं के उद्धरण दिये गये हैं, साथ ही स्वमायताओं के प्ररूपण भी किये गये हैं।

अग्य मान्यताओं का सूचक “प्रतिपत्ति” शब्द है।

चन्द्र-सूर्यप्रज्ञप्ति में जितनी प्रतिपत्तियाँ हैं, उनकी सूची इस प्रकार है—

सूर्यप्रज्ञप्ति में प्रतिपत्तियों की सख्या

प्राप्त	प्राप्त-प्राप्त	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या	प्राप्त	प्राप्त-प्राप्त	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या
१	४	१५	६ प्रतिपत्तियाँ	१	८	२०	३ प्रतिपत्तियाँ
१	५	१६	५ प्रतिपत्तियाँ	२	१	२१	८ प्रतिपत्तियाँ
०	०	१७	स्वमत कथन	२	२	२२	२ प्रतिपत्तियाँ
१	६	१८	७ प्रतिपत्तियाँ	२	३	२३	४ प्रतिपत्तियाँ
१	७	१९	८ प्रतिपत्तियाँ	३	०	२४	१२ प्रतिपत्तियाँ
			“एक के समान स्वमायता”	४	०	२५	१६ प्रतिपत्तियाँ

प्राप्त	प्राप्त-प्राप्त	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या	प्राप्त	प्राप्त-प्राप्त	सूत्र	प्रतिपत्ति सख्या
५	०	२६	२० प्रतिपत्तियाँ	१०	१	३२	५ प्रतिपत्तियाँ
६	०	२७	२५ प्रतिपत्तियाँ	१०	२१	५९	५ प्रतिपत्तियाँ
७	०	२८	२० प्रतिपत्तियाँ	१७	०	८८	२५ प्रतिपत्तियाँ
८	०	२९	३ प्रतिपत्तियाँ	१८	०	९९	२५ प्रतिपत्तियाँ
९	०	३०	३ प्रतिपत्तियाँ	१९	०	१००	१२ प्रतिपत्तियाँ

१ नदीसूत्र

२ जगत्कायस्वभावो च सवेग वैराग्यार्थम् । —तरयाधसूत्र अ ७

स्व पूज्य श्री पासीलालजी म ने इस भोजन सूत्र को प्रक्षिप्त सिद्ध किया है और कतिपय मासनिष्पन्न भोजनो को वनस्पतिनिष्पन्न भोजन भी सिद्ध किया है। ये दोनों परस्पर विरोधी बात हैं।

नक्षत्रभोजन वा यह सूत्र यदि प्रक्षिप्त है तो मासनिष्पन्न भोजनो को वनस्पत्यादि निष्पन्न भोजन सिद्ध करने से लाभ ही क्या है ? क्योंकि सूत्रप्रज्ञति के प्ररूपक लौकिक कार्यों की सिद्धि क लिए साव्य विधि वा प्ररूपण ही नहीं कर सकते और सूत्रागमो वा गु धन करने वाले गणधर ऐसे भ्रामक शरणो का प्रयोग भी नहीं करते, यह निश्चित है। इसलिए हमारे बहुश्रुतो को इस सूत्र के सम्बन्ध मे सबसम्मत निगम घोषित करना ही चाहिए।

जनागमों में नक्षत्र गणना का क्रम भ्रमिजित से प्रारम्भ होकर उत्तराषाढा पयत का है। प्रस्तुत प्राभूत वे इस सूत्र में नक्षत्रों वा क्रम वृत्तिका से प्रारम्भ होकर भरणी पयत वा है।^१ उपलब्ध अनेक ज्योतिष ग्रन्थो मे भी यह नक्षत्र गणना वा क्रम विद्यमान है—प्रत यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत नक्षत्रभोजनविधान वा क्रम भ्रम्य किसी ज्योतिष ग्रन्थ से उद्धृत है।^२

१ चन्द्र-सूय-प्रज्ञति के सबलनवर्ता श्रुतधर स्वविर ने नक्षत्र गणना क्रम की पाँच विभिन्न मायताओं का निरूपण करके स्वमायता का प्ररूपण किया है।

पाँच भ्रम्य मायताओं का निरूपण—

- अद्वितीय नक्षत्रो का गणना क्रम —
- १—वृत्तिका नक्षत्र से भरणी नक्षत्र पयत २८ नक्षत्र
 - २—मघा नक्षत्र से अश्लेषा नक्षत्र पयत २८ नक्षत्र
 - ३—घनिष्ठा नक्षत्र से श्रवण नक्षत्र पयत २८ नक्षत्र
 - ४—अश्विनी नक्षत्र से रेवती नक्षत्र पयत २८ नक्षत्र
 - ५—भरणी नक्षत्र से अश्विनी नक्षत्र पयत २८ नक्षत्र
- स्वमायता का प्ररूपण—

भ्रमिजित नक्षत्र से उत्तराषाढा नक्षत्र पयत २८ नक्षत्र।

—चन्द्र-सूय प्रज्ञति, दशम प्रागत, प्रथम प्राभूत प्राभूत, सूत्रांक ३२ सम्पादित एव प्रकाशित चन्द्र-सूय प्रज्ञतियों के अनुवादको प्रादि ने इस सम्बन्ध मे स्पष्टीकरण लिखकर व्यापक श्रान्ति के निराकरण के लिए सत्साहस नहीं किया।

- २ कुल्माषास्तिलताडलानपि तथा मायाश्व गम्य दधि।
 त्वाज्य हुधमयणमासमपर तस्यैव रक्त तथा।।
 पाष्टिवय च प्रियश्वपुपमयवा चित्राण्डजान सत्फलम्।।
 कोम सारिवगोधिक च फल शाल्य हविष्य ह्या।
 शक्षे स्वाह्वरानमुदमपिना मिष्ट यवानो तथा।।
 मत्तयान खलु चित्रिमयवा दधमृमेव प्रमात।
 भक्ष्याऽभक्ष्यमिद विचाय मतिमान् भक्षेत्तयाऽऽजीवयत्।।

पण्डित साहू श्री गोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने समय-समय पर अनेक उपयोगी सुझाव देकर प्रस्तुत सस्करण के सम्पादन में सक्रिय सहयोग किया है ।

श्री रुद्रदेवजी त्रिपाठी न सूयप्रशस्ति की प्रस्तावना लिखकर जिज्ञासु ज्योतिषियों को सूयप्रशस्ति के स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया है ।

आगम समिति के सूयधार सज्जन श्रावकों ने मरे धर्म की सफलता के लिए जिज्ञासु जनो में इस सस्करण को वितरित किया है ।

३१ जनवरी' ८९

—श्री प्र भुनि कन्हैयालाल 'कमल'

—श्री वधमान महावीर केन्द्र,

बान्ना पवत—३०७ ५०३

प्रस्तावना

(सप्तम संस्करण)

डॉ० ए.ए. शर्मा

शांति-साधन-साहित्य-संस्थान

एम ए (संस्कृत एवं हिन्दी), पी एच डी, डी लि
दिल्ली

बनमोहन विद्यापीठ काठ, बनारस (उ.प्र.)

१. धर्मत्रियेषो श्रीर उमका सवमाय साहित्य

भारत के गिळ हवन्नी मानदण्टा महर्षि श्रीर महान् त्यागी-विरागिनी द्वारा प्रदत्त शास्त्रीय के ज्ञान को सुरक्षित रखत हुए उसकी समृद्धि बि दुष्ठा को प्राणिमान के सम्मान के बिच विनिरत करन मान्य व्रत शास्त्र एवं ऋषिभाषा मे जिन प्राणिम/गवमाय साहित्य को पुरस्कृत किया, उसकी समता विषय के समता बिधी कागर्हित म उपाय नही होती है। 'अन मागम, अक्षय नव तथा बौद्ध विष्णु' के मन मे अत्यन्त विषय-प्रदत्ता को विषय मे अन-अन के धरन का उग्वन बनाने बात हन गवमाय साहित्य का हमारे पूर्वाचारो मे विमुक्तकार के लोभ करमान की भावना मे ही उदात्त किया था, यही कारण है कि यह सुदीर्घ काग मे पूरे अन्त के शास्त्रकार के मान्यमान हुआ है जो रहा है श्रीर विरागण तक होग रह्या। धर्म के समान नारी की सम्पत्ति को बि विषय रखने वाला यह साहित्य भारत को योग्य प्रणत कराया है, मानव भाव को मान्य के दान की प्रदत्त देता है समुचित माग का निर्णय करता है, कलधर्माध्यय का विवेक विद्याता है श्रीर सांसारिक-व्यथो के मुक्त होकर मा मान्य का अधिक बनने के साथ तक पहुँचाता है।

२ एक सत्य 'मोक्ष प्राप्ति' श्रीर उत्तमे अभिक सावभ

साया, भाव, बदन की विविधता, बला की घोर इत्या की भिन्नता एवं भोग संदृष्टता को धनेकता के रहते हुए भी सायन, सर बयना विविधता के सांसारिक उत्तमा मे। इन विषय मुक्ति है। अन्त साहित्य सिद्धांतों के दर्शन—१ कम विषय, २ सांसार-बन्धन श्रीर ३ मुक्ति मुक्तक तक ही भोग को मुक्ति करता है, यह है—सत्यको का लय करने मोक्ष की प्राप्ति। भोग विषयका धनेकता है? यह प्राण को मुक्ति के प्रत्येक मे महत्व उठता है या इगका सभी साधनकारों का एक ही उत्तर होता है साया का। यह सत्य के प्रामाण्य क्या है? यह प्रत्येक उठता भी स्वाभाविक हो गया, तब सभी दर्शनकारों ने इन सत्यको के धनेकी धारी दष्टि मे 'प्रामाण्य विनय' को प्राप्ति प्रस्तुत की। इन प्रक्रियाओं के प्रणय, धा की सांसारिक के मन्त्र में मुक्ति परम्परा प्राप्ति हुई श्रीर अन्त, बौद्ध एवं वैदिक तथा इनके सांसारिक धनय विषयों के समान प्राप्ति एवं समीक्षा का समय साधन की। सांसारिक श्रीर साहित्य के परम्परा-कोष धनेकी बहुरागा के साधन

चारोंके जहाँ प्रत्यय को ही प्रमाण मानकर 'भूततमवाद और देहात्मवाद' को जन्म दिया वहीं उनके सूक्ष्मरूप से 'मन आत्मवाद, इन्द्रियात्मवाद (एकेन्द्रियात्मवाद तथा सभूहात्मवाद), प्राणात्मवाद, पुत्रात्मवाद, अर्थात्मवाद' व सिद्धान्त भी उभर आये। इसी प्रकार बर्दिन-विचारको मे वेद, ब्राह्मण, स्मरण्यक, उपनिषद, न्याय बशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा एव ब्रह्म वेदांत के द्वारा भी विभिन्न ऊहूपोह-पूवक आत्मा की ढोज मे 'धम, चेतन, कम, देव, माया, ब्रह्म, जीव, जह, पुरुष, प्रकृति' आदि अनेक तत्त्वों की साङ्गोपाङ्ग मीमांसा की गई।

जैन-दशन मे 'अतति/गच्छति इति आत्मा' इस ध्युत्पत्ति को लक्ष्य म रखकर, मननाथक धातु को नानाथक भी मानने की ध्याकरण-सम्मत व्यवस्था को स्वीकृत करते हुए यह व्याख्या प्रस्तुत की कि जो 'ज्ञान आदि गुणों मे आ-सामतात रहता है, भयवा उत्पाद, ध्यय और द्रौघ्यरूप त्रिक के साथ समप्ररूप मे रहता है, वह 'आत्मा' है।^१

जनदशनचारों ने आत्मा के सम्प्रय मे अनेक दृष्टियों से विचार किया है, इसीलिये जैनदशन का अग्र-नाम 'अनेकातदशन' भी प्रसिद्ध है। 'चतयस्वरूप' यह आत्मा का मुख्य विशेषण है। जनमतानुसार अय विशेषण इस प्रकार है—

'चतयस्वरूप परिणामी कर्ता साक्षाद् भोक्ता वेदपरिमाण प्रतिक्लेश भिन्न पौद्गलिकादृष्टवात्चायम्'^२

३ आत्मा का पर्याय 'जीव' तथा उसका भौलिक विश्लेषण

जैनदशन वा 'आत्मशास्त्र' अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी विचारणा सम्पूर्ण वैज्ञानिक है। विभिन्न दशनकार आत्मा का अस्तित्व तो मानते हैं किन्तु उनमे स कुछ आत्मा का अनेक-व नित्यत्व भयवा कर्तृत्व मोधादि' नहीं मानते हैं किन्तु जनदशन मे आत्मा को नित्य और अविनाशी माना है। आत्मा के अस्तित्व के बारे मे 'जीवो उवओपलवज्जणो'^३ सूत्र द्वारा बधमान महावीर ने उसकी पहचान का माप दिखलाया है।

जैन शास्त्रकार आत्मा के पर्याय रूप मे 'जीव' शब्द का प्रयोग करते हैं और वह जीवन, प्राणशक्ति एव चेतना का श्रोतक है। त्रैकालिक जीवन-गुण से युक्त होने के कारण आत्मा की 'जीव' सभा साथक है। 'जीवन' के आधार दशविध 'प्राण' बतलाये गये हैं। यह व्यवहारदृष्टि है। निश्चयदृष्टि स जितम 'चेतना' पायी जाए वह 'जीव' है।^४ जीव का लक्षण जनदशन के अनुसार 'उपयोग' है। उपयोग, चेतना का अनुविधायी परिणाम होता है। इसन 'ज्ञान' और 'दशन' नाम से दो भेद हैं तथा इन दोनों के धारक को 'जीव' कहते हैं। जीव मे अचेतन पराणों की तरह 'प्रदेश' धोर 'अवयव' भी माने गये हैं उसे इसी कारण 'अस्तिकाय' कहा गया है।^५ उसमे प्रतिलक्षण परिणमन क्रिया होनी रहती है फिर भी वह अपने मूलरूप/गुण को नहीं छोडता। ये 'उत्पाद, ध्यय और

१ [क] नाण च दसण चैव चरित्त च तवो तथा।

वीरिय उवओगो य एय जीवस्स लक्खण ॥

—उत्त अ २८, गा ११

[ख] बहुद द्रव्यसग्रह-५७

२ प्रमाणनय-तत्त्वालोक, ७-५६

३ क उत्त अ २८, गा १०

ख उपयोगो लक्षणम् — तत्त्वार्थसूत्र अ २, सू ८

४ तत्त्वायराजवात्तिक, १४७

५ तत्त्वायराजवात्तिक, २८१

नहीं होती। इसीलिए जैन दृष्टि से समस्त जगत् जीव और अजीव ऐसे दो पदार्थों में विभक्त है^१ और अजीव में विविध परिणमनरूप में प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला यह समस्त जगत् नवनवत्वात्मक स्वरूप से सत् है।^२ जिसरी किसी भी काल में किसी से उत्पत्ति नहीं हुई और जिसका किसी भी काल में भ्रामूल-सवधा विनाश भी नहीं है, ऐसे अनादि-अनन्त, उत्पाद-व्यय-धोय परिणामी पाचो अस्तिकाय द्रव्यों में कालादि भेद से जी-जी चित्र-विचित्र पर्याय परिणमन होते हैं, वे सभी 'स्वत और परत' सहेतुक होते हैं। अतः उनसे सम्बद्ध काय-कारणभाव का यथाय स्वरूप जानना आवश्यक है।

धमास्तिकायादि पदाय लोकावाश रूप जगत में ही व्याप्त है। इसी जगत् में जीवों की स्थिति है और जगत के समस्त जीवों को अनाज्वाल से मुख और शान्ति की अपेक्षा रहती ही प्राप्ति है। सुख और शान्ति के लिए तड़पते हुए जीवों को सुख शान्ति का वास्तविक माग बतलाने की दृष्टि से ही परम कर्णामूर्ति अरिहन्त तीर्थंकर धर्मतीर्थ की प्रवृत्ति करते हुए कहते हैं कि जिन आत्माओं को सुख एवं शान्ति की अभिलाषा हो, उन्हें अपनी आत्मा में मोक्षाभिन्नापरूप सवेगभाव तथा सासारिक सुख के प्रति अनासक्त भाव रूप 'निर्वेद' प्रकट करना चाहिए तभी वे सुख शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। इसीलिए वाचकप्रवर श्री उमास्वाति ने भी सवेग-निर्वेद की उपपत्ति का उपाय बतलाते हुए कहा है कि—'जगत कायस्वभावो च सवेग वराग्यायम्' और उसी 'तत्त्वायमूत्र' में तथा नवतत्त्व में आत्मा में सवरभाव प्रकट करने के लिये बारह भावनाओं के भावने की बात कही गई है। उसमें 'लोक-स्वभाव भावना भी एक है। यह 'लोक-स्वभाव-भावना तभी भावित कर सकता है, जबकि उसे लोक का स्वरूप ज्ञात है।

'जगत का अवर-पर्याय 'लोक' है। लोक का अर्थ दश्यादय 'क्षेत्र' भी होता है। अतः धमास्तिकायादि द्रव्य जिस आकाश में विलसित हो रहे हैं, उस क्षेत्र को भी 'लोक' कहते हैं। इसी लोक स्वरूप-परिणाम करने की आना अनामग तथा अय शास्त्रों में दी गई है। "आचारामूत्र" में कहा गया है

'विदिता लोग वता लोगसण से मइम परिवकमेज्जाति'^३ इसके अनुसार लोकविषयक ज्ञान के अन्तर ही विषयासक्ति में त्याग के पराश्रम निदिष्ट है। इस प्रकार—

'द्वीप समुद्र पवत क्षेत्र-सरित प्रमति विशेष सम्यक सकल-नगमादि-नयेन ज्योतिषा प्रवचन-भूलमूत्रज-य-मानेन कयमपि भावविदभि सदभि स्वय पूर्वापरशास्त्राय पर्यालोचनेन प्रवचन पदाय विदुषासनेन चाभिसोगादि विशेषविशेषेण वा प्रपचेन परिवेद्य इति।'^४ कथन द्वारा श्लोकवार्तिककार ने भी लोक-विषयक सभी पदार्थों के

१ (क) दुवे रासी पणत्ता

त जहा—१ जीवरासी य, २ अजीवरासी य। —सम सू १४८

(ख) अस्थि जीवा अस्थि अजीवा, —उव मु ५६

(ग) के अय लोगे ? जीवच्चेव, अजीवच्चेव। के अणता लोगे ? जीवच्चेव अजीवच्चेव। व सासया लोगे ? जीवच्चेव अजीवच्चेव। —ठाण अ २, उ ५, सू ११४

२ जीवाजीवा य बधो य पुण्ण-पावासवा सहा।

सवरो निज्जारा मोक्खो सतेए तहिया नव ॥१८॥ उत अ २८, गा १४

३ आचारामूत्र—भूत १, अ ३, उ १, सू २४

४ तत्त्वायमूत्र ३/७० पर श्लोकवार्तिक

‘पयसि ण एमहालयसि लोणसि नत्थि वेइ परमाणुणोगलमेत्ते वि पणसे जत्थ ण अय जीवे ण जाए वा न मए वा वि ।’
—विया स १२, उ ७, सु ३/१२

अर्थात् इस लाक वा ऐसा कोई प्रदेश नहीं है, जहाँ अनब बार जीव उत्पन्न हुआ और मरा नहीं। जिस लोक में मानव उत्पन्न हुआ है, उसके स्वरूप परिज्ञान से वह सावने समता है कि ‘इस लाक के प्रत्येक प्रदेश में मेरे अनन्तवार जन्म और मरण हुए हैं, अतः इस पुनः पुनः जन्म-मरण के चक्र से मुझे मुक्त होना चाहिये।’ उसकी यह जागरूकता उसे विभिन्न पुण्य-पाप, सत्कर्म दुष्कर्म आदि से परिचित कराती है और उनक स्वरूपों से परिचिन होकर असतकर्मों से निवृत्ति एवं सतकर्मप्रवृत्तिपूर्वक अपने निरापन्न गन्तव्य का निर्धारण करने में तत्पर हो जाता है। यदि समस्त लोक तथा पृथ्वी पर स्थित द्वीपादि का निरूपण शास्त्रों में नहीं होता तो जीव अपने स्वरूप के परिचय से अपरिचित ही रह जाता और वैसी स्थिति में आत्मज्ञान के प्रति श्रद्धान तथा नानादि की सम्भावनाएँ भी बिलुप्त हो जाती।

जो जीव वि न याणाति अजीवे वि न याणति ।
जीवाऽजीवे अयाणतो क्ह सो नाहीइ सजम ॥ ३५ ॥
जो जीवे वि वियाणाति अजीव वि वियाणति ।
जीवाऽजीवे वियाणतो सो हु नाहीइ सजम ॥ ३६ ॥
जया जीवमजीवे य दो वि एए वियाणई ।
तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई ॥ ३७ ॥
तया गइ बहुविह सत्रजीवाण जाणई ।
तया पुण्ण च पाव च वध मोक्ख च जाणई ॥ ३८ ॥
जया पुण्ण च पाव च वध मोक्ख च जाणई ।
तया निब्बिदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ ३९ ॥
जया निब्बिदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ सजोग सर्ज्जमतरवाहिर ॥ ४० ॥
जया चयइ सजोग सर्ज्जमतरवाहिर ।
तया मुडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिय ॥ ४१ ॥
जया मुडे भवित्ताण पव्वइए अणगारिय ।
तया सवरमुक्किटठ धम्म फासे अणुत्तर ॥ ४२ ॥
जया सवरमुक्किटठ धम्म फासे अणुत्तर ।
तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ॥ ४३ ॥
जया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ।
तया सवत्तग माण दसण चाभिगच्छई ॥ ४४ ॥
जया सवत्तग माण दसण चाभिगच्छई ।
तया नोगमनोग च जिणो जाणइ वेवली ॥ ४५ ॥

५ १३ शतक, ४ उद्देशक ।^१ तथा प्राय सूत्रों में प्रासंगिक रूप से चर्चित विषयों का प्रथमयन विधा जाये तथा—

२ लोक के आकार-ज्ञान के लिये—

१ आचारांगसूत्र श्रुत १ श ८, उ ।२। द्रष्टव्य हैं ।

लोक विषयक विचारणा का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है । जैन आगमों में लोक का अभिप्रेताय “रज्जुलोक” है, क्योंकि यह चौदह विभागों में विभाजित है, अतः इसे “चौदह रज्जुलोक” के नाम से भी पहचाना जाता है । वैसे बहिन धमग्रन्थों में भी ‘चौदह रज्जुलोक’ की भाष्यता एव ध्वनि मिलते हैं ।

एक रज्जुलोक का प्रमाण— कोई देव एक हजार भार वाले लोह के गोले की अपनी समग्र शक्तिपूर्वक आकाश से ऊँचे और वह लोहगोलक ६ माह ६ दिन, ६ घड़ी, ६ पल में जितना क्षीन हो जाय, उतना क्षत्र

उ गीयमा । असमेज्जइविहे पणत्ते,

त जहा—जबुदीवनिरियलोयसेत्त लोए जाय सयभुरमणसमुदितिरियलोयसेत्तलोए ।

प्र उडडलोयसेत्तलोए ण भते । बइविहे पणत्ते ?

उ गीयमा । पणरसविहे पणत्ते,

त जहा—सोहम्मकप्पउडडलोयसेत्तलोए जाय भन्वुयउडडलायसेत्तलोए ।

गेवज्जविमाणउडडलोयसेत्त लोए भणुत्तरविमाणउडडलोयसेत्तलोए

इसिपन्भारपुत्तविउडडलोयसेत्तलोए ।

—विया स ११, उ १०, सु २६

१ प कहि ण भत । लोगस्स आयाममज्जे पणत्त ?

उ गीयमा । इमीसे रयणप्पभाए पुडवीए ओवासतरस्स असमेज्जइभाग एत्थ ण लोगस्स आयाममज्जे पणत्ते ।

प बहि ण भते । भहेलोगस्स आयाममज्जे पणत्ते ?

उ गीयमा । उउदीए पवप्पभाए पुडवीए ओवासतरस्स साइरेय भद्ध ओगाहिता, एत्थ ण भहेलोगस्स आयाममज्जे पणत्ते ।

प कहि ण भते । उडडलोगस्स आयाममज्जे पणत्ते ?

उ गीयमा । उप्पि सणकुमार-काहिदाण कप्पाण हेटिठ वभलोए कप्पे टिट्ठे विमाणपत्थे, एत्थ ण उडड-लोगस्स आयाममज्जे पणत्ते ।

प बहि ण भत । तिरियलोगस्स आयाममज्जे पणत्ते ?

उ गीयमा । जम्बुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बह्मज्ज्जेतभाए इमीसे रयणप्पभाए पुडवीए उवरिभहेट्टि-ल्लेसु खुड्डमपयरेसु, एत्थ ण तिरियलोगमज्जे भट्टपएसिए क्यए पणत्ते, जप्पो ण इमाओ दस दिसाओ पव्वहति,

त जहा—पुरस्सिमा पुरस्सिमादाहिणा एव जहा दसमसते जाय नामधेज्ज त्ति ।

—विया स १३, उ ४, सु १० १५

२ भत्थि लोए, णत्थि लोए, सुवे लोए, भसुवे लोए, सादिए लोए, अणादिए लोए, सपज्जवसिण लोए, अपज्जवसिण लोए, सुक्खं ति वा दुक्खं ति वा कल्लाणं ति वा पावए ति वा साधू ति वा असाधू ति वा सिद्धी ति वा असिद्धी ति वा निरए ति वा अनिरए ति वा ।

—आचा धु १, अ ८, उ १, सु २००

सक्रियता को समयमयीदा निश्चित करने का एक मात्र आधार बाल-द्रव्य है। सामान्यतः जगत में "काल" नामक कोई स्वतन्त्र पदार्थ नहीं है तथापि उपयुक्त जड़ और चेतन पदार्थ के सम्बन्ध में अत्यन्त उपकारक होने से शास्त्र-कारों ने इसको द्योपचारिक द्रव्य भी कहा है। काल का प्रथम यहाँ समय (सेकण्ड, मिनिट, घण्टे, दिन पक्ष, मास और वर्ष आदि) का सूत्रक है। इस समय को यदि कोई भी निश्चित कर देने वाले साधन हैं, तो वे हैं "सूर्य-चन्द्र"।

अनन्तपानी तीर्थकर परमात्मा ने सूर्य-चन्द्र दोनों ही असंख्य बने हैं और इनमें परस्पर तनिक भी 'सूना-शिवता' नहीं है। वस्तुतः ये चार प्रकार के देवों में "ज्योतिषी देव" हैं। इनके विमानों में जटित विशिष्ट रत्न का प्रकाश से जगत् के सब पदार्थ प्रकाशित होते हैं। सूर्यविमान के रत्नों में वतमान एकेन्द्रिय जीवा को घ्रातप नामक से उष्ण प्रकाश का अनुभव होता है और चन्द्र विमान के रत्नों में वतमान एकेन्द्रिय जीवों को उद्योत नामक से शीत प्रकाश का अनुभव होता है।

असंख्य सूर्य ज्योतिषी-निकाय के द्रव्य हैं और इन असंख्य सूर्य द्रव्यों के रहने के विमान भिन्न-भिन्न होते हैं। उनी प्रकार चन्द्रों के भी विमान भिन्न भिन्न हैं। सूर्य का प्रत्येक विमान पूर्वदिशा में ४००० सिंहा रूप, दक्षिण में ४००० हस्ति रूप, पश्चिम में ४००० वृषभ रूप तथा उत्तर में ४००० अश्व रूप इस प्रकार कुल १६००० प्राभियोगिक (सर्वकारि) देव इन विमानों का बहन करते हैं। सूर्य के विमान पृथ्वी से ८०० योजन ऊँचे हैं तथा वे शाश्वत हैं। शाश्वत पदार्थों का १ योजन ३६०० मील जितना होता है। जम्बूद्वीप और उससे बाद वाले असंख्य द्वीप समुद्रों में सूर्य-चन्द्र सत्ता हर समय प्रकाश फला रहे हैं। यथा—

जम्बूद्वीप में	२ सूर्य	—	२ चन्द्र
लवणसमुद्र में	४ सूर्य	—	४ चन्द्र
घातकीखण्ड में	१२ सूर्य	—	१२ चन्द्र
कालोदधिमुद्र में	४२ सूर्य	—	४२ चन्द्र
अथ पुष्करद्वीप में	७२ सूर्य	—	७२ चन्द्र
	<u>१३२ सूर्य</u>	—	<u>१३२ चन्द्र</u>

इन सूर्य-चन्द्रों के सम्बन्ध में अथ ज्ञातव्य इस प्रकार है—

मनुष्यलोक के सूर्य-चन्द्र

- १ स्थिर (परिभ्रमणशील)
- २ इनके विमान की पीठिका अथ कोष्ठकाकार
- ३ चन्द्र विमान ३३ योजन (सम्बाह-चौडाई)
- ४ चन्द्र विमान की ऊँचाई ३३ योजन
- ५ सूर्य विमान ३३ योजन (सम्बाह चौडाई)
- ६ सूर्य विमान की ऊँचाई ३३ योजन।

मनुष्यलोक से बाहर के सूर्य-चन्द्र

- १ स्थिर (परिभ्रमणरहित)

- २ चतुरस्र इष्टकाकार
- ३ चन्द्र विमान ३५ याजन (सम्बाई चौडाई)
- ४ चन्द्र विमान की ऊँचाई ३५ योजन
- ५ सूर्य विमान ३५ याजन (सम्बाई-चौडाई)
- ६ सूर्य विमान की ऊँचाई ३५ याजन ।

जम्बूद्वीप में एक चन्द्र, एक सूर्य ४८ घण्टे में प्रत्येक मण्डल को घूम करता है। जम्बूद्वीप में एक सूर्य दक्षिणदिशा में भरतद्वीप में होता है तब दूसरा सूर्य उत्तरदिशा में—ऐरवत क्षेत्र में रहता है। उसी समय एक चन्द्र सूर्य महाविन्धु में होता है तब दूसरा चन्द्र पश्चिम महाविन्धु में रहता है। जहाँ सूर्य होता है वही दिन और जहाँ चन्द्र होता है वहाँ रात्रि होती है। अतः प्रत्येक क्षण में जो सूर्य-चन्द्र भाज दिशाई देता है, व दूसरे दिन नहीं दिशाई देता। इस प्रकार सूर्य चन्द्र का परिभ्रमण मात चालू है। अर्थाई द्वीपवर्ती सभी सूर्य-चन्द्र द्वीपवर्ती भेषधन; व चारों ओर सतत परिभ्रमण कर रहे हैं। इस प्रकार कुल १३२ सूर्य-चन्द्र अर्थाई द्वीपों के मध्यस्थ मद की परिभ्रमा कर रहे हैं, व जो विभाग में विभक्त ६६-६६ सध्या में रहते हैं और इनकी पक्ति सदा एक साथ ही परिभ्रमा करनी है। सूर्य परिभ्रमण करत हुए जैसे-जैसे भाग बढ़ता है वग उस क्षेत्र में सूर्योदय बहलता है और वह गति करता हुआ पिछल क्षेत्र में अन्तिम दिशाई देता है तब सूर्योदय बहलता है।

वस्तुतः जैन धर्मशास्त्रों में वर्णित सूर्य-चन्द्राणि ज्योतिष्क दया की विचारणा इतनी महत्त्वपूर्ण एवं सूक्ष्मता में परिपूर्ण है कि उसका वर्णन करना यहाँ सम्भव नहीं है। भगवतीसूत्र, जीवाभिगम, सूर्य-प्रज्ञप्ति, पात्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष्परण्डव क्षेत्रलोचनप्रकाश, बहसप्रण्वी, क्षेत्रसमाप्त (सधु एवं बहत्) तथा त्रिलोकसारदि में यह विषय विस्तार से समझाया गया है।

इतना ही नहीं, अथ धर्मों के प्रमुख ग्रन्थों में भी सूर्य की सर्वोपरि सत्ता को बहुत ही आदर के साथ सराहा गया है। वदा में सूर्य को “प्राण प्रजानामुत्पत्त्येव सूर्य, विद्याट, वृत्त, विरथाय दुते सूर्यम, सूर्य आत्मा जगत्सत्सुप्यव” और “आच्छन्नेन रजसा यतमातो नियेशयस्रमूत मत्वश्च। हिरण्येन सविता रपन सवो धानि मुक्तानि पश्यन्” इत्यादि धनक मन्त्रों में विविधरूप में व्यक्त किया है। सर्वोपर्य मायत्री मन्त्र में भी सवित्रु देवता की ही महिमा और प्राधन्य है। सूर्य व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अनेक विवेचन वैदिक मन्त्रों में अभिभ्यक्त है, जिनके भाष्यों में धाराधनों व पूजातिमूढम परीक्षणामक प्रयोगों के निर्देश भी मिले हैं।

सूर्य सत्ताश्रय में स्थित होकर जगत् को प्रकाशित करता है। ऋग्वेद में “सत्त्व पुञ्जन्ति रवमश्चक्र” कहते हुए जगत् को सत्त्वर्वा ही बनलाया है। ये सत्त्व वग—पृथ्वी जल, तेज, वायु आकाश, दिव और रात हैं। और परिवार व नौ सदस्य नवग्रह हैं। सूर्य धानि ग्रहों व विम्ब; का व्याम, गति, युति, ग्रहण आदि के वर्णन पुराणों तथा ज्योतिष ग्रन्थों में व्यापकरूप से प्राय है। “सुद गगमहिता” म “महासत्तिलाध्याय” के उत्तराध में “ग्रहो पाध्याय, नभश्चकमगणाध्याय” धानि म वैज्ञानिक विषयों का विस्तृत वर्णन भी दशनीय है। इस प्रकार सूर्य की अखण्ड सत्ता सनातन धर्मग्रन्थों में भी विस्तार से स्वीकृत है।

एसी ही सूर्य की सावत्रिक महिमा का वैज्ञानिक दृष्टि से समर्थित चिन्तन-प्रधान प्रसाधारण विवेचन व द्वारा व्यक्त करा वाला एक महान् ग्रन्थ ‘सूर्य-प्रज्ञप्ति’ है। जिसका परिचय इस प्रकार है—

७ सूर्य प्रज्ञप्ति का आगम साहित्य में स्थान

जैन आगम साहित्य प्राचीनतम वर्गीकरण के अनुसार ‘सूर्य’ और ‘अथ’ के रूप में वर्गीकृत हुआ था त्रिग अमण भगवान् महावीर से सूर्यवर्ती बतलाया है। इसका पश्चात् ‘सूर्यधृत’ को सरत रूप में ग्रथित कर उसमें ‘दृष्टिवा’

नित करने से आचारदि ग्यारह अंगों को 'द्वादशांगी' कहा गया। आचारंग आदि के प्ररूपक महावीर की आराधि 'बौद्ध पूव' अथवा 'दृष्टिवाद' के नाम से पहचानी जाती थी। इसका वर्गीकरण 'अग्रप्रविष्ट' और 'अग्रबाह्य' के दो भागों में किया गया। इनमें प्रथम 'गणधर द्वारा मृत में निर्मित' और द्वितीय 'स्वविरकृत' समाविष्ट हैं। इनके अतिरिक्त एक और सूत्र विवेचन करते हुए नदीसूत्र में "आवश्यक, आवश्यक-व्यतिरिक्त, कालिक और उत्कालिक" रूप में आंगम की सम्पूर्ण शाखाओं का परिचय दिया है। इनके अतिरिक्त दिग्म्बर मान्यता के अनुसार "अग्रप्रविष्ट" आंगमों का एक वर्गीकरण दृष्टिवाद के १ परिक्रम, २ सूत्र, ३ प्रथमानुयोग, ४ पूवगत एवं ५ चूलिका के रूप में हुआ है। श्री गणधरसिन ने आंगमों को अनुयोगों के अनुसार चार भागों में विभाजित किया जिनके '१ धरण-धरणांनुयोग, २ धमकथानुयोग, ३ गणिनानुयोग तथा ४ द्विमानुयोग' ये नाम दिये हैं। इन्हीं के व्याख्याक्रम की दृष्टि से १ अणुयक्त्वानुयोग और २ पुण्यक्त्वानुयोग के रूप में आंगमों के दो रूप भी बतलाये। इन सबके अतिरिक्त नदीसूत्र की चूणि में एक दृष्टि और उद्धाटित हुई जिसमें द्वादशांगी को "श्रुत पुरुष" के अंगों की सजा से अभिहित किया गया। साथ ही द्वादश उपांगों का भी विनियोग हुआ और प्रत्येक अंग के साथ एक एक उपांग (अंगों में बड़े गये अंगों का स्पष्ट बोध कराने वाले सूत्र) भी निर्धारित हुए।

इन और ऐसे ही अंग अंशों में श्रुतस्वविर-विरचित "सूय प्रज्ञप्ति" सूत्र प्रथम अंग, दृष्टिवाद, अग्रबाह्य, आवश्यक व्यतिरिक्त में उत्कालिक, दृष्टिवाद का प्रथम भेद परिक्रम गणिनानुयोग, पुण्यक्त्वानुयोग और श्रुतपुरुष के शाताधमकथानुयोग के उपांग में अपना स्थान रखती है। बत्तीस आंगमों के क्रम में यह उपांगगत २२वाँ सख्या पर है। कुछ अंशों में इसे पाचवाँ और कहीं छठा उपांग बतलाया गया है।

८ सूय प्रज्ञप्ति का स्वरूपात्मक परिचय

जैन आंगम बाइस मय में "सूय और ज्योतिष्कचक्र" का व्यवस्थित दिग्दशन कराने वाला यह उपांग अथ प्रथम ज्ञान एवं विज्ञान की सक्लिष्ट पद्धति से विचारों को व्यक्त करता है। गणित और ज्योतिष की महत्त्वपूर्ण विवेचना इसमें अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी रचना में १०८ गद्य-सूत्र और १०३ पद्य-गाथाएँ प्रयुक्त हैं। इसमें एक अध्यायन, २० प्रामृत और उपलब्ध भूलपाठ २२०० श्लोक परिमाण है।

"सूय प्रज्ञप्ति" अति प्राचीन ग्रन्थ है, क्योंकि इसका उल्लेख श्वेताम्बर, दिग्म्बर और स्थानकवासी-तीनों में माय रहा है। इसी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि इसकी स्थिति तीनों के विभाजन से पूर्व थी। इसका समय विक्रम पूव का होना चाहिए।

विषय विस्तार की दृष्टि से इसके २० प्रामृतों में खगोलशास्त्र की जितनी सूक्ष्म विचारणाएँ प्रस्तुत हुई हैं, जितनी आयु, वही एक साथ प्रस्तुत नहीं हुई हैं। इसका उपक्रम मिथिला नगरी में जितेश्वर के राज्य में नरेश वाहू मणिभद्र, तत्पुत्र में अद्यमान महावीर के पधारने पर, धर्मोपदेश के पश्चात् गणधर गौतम की जिज्ञासा के सम्मान, इत हुआ है। इसमें "मण्डलगतिसख्या, सूय का तियक् परिभ्रमण, प्रकाश्य धान परिमाण, प्रकाश संस्थान, शेष्या प्रतिघात, भोज सत्पिति, सूर्यावरक उदयसंस्थिति, पौष्पी छायाप्रमाण, योगस्वरूप, सवत्सरो के आदि और अन्त, सवत्सर के भेद, चन्द्र की वृद्धि अणुवृद्धि, ज्योत्स्नाप्रमाण, शीघ्रगति निर्णय, ज्योत्स्ना लक्षण, व्यवहन और उपांग, अर्धसूर्य आदि की ऊँचाई, उनकी परिमाण एवं अर्धदि के अनुभव आदि विषयों की विवेकपूर्ण चर्चा है। अतः यह ग्रन्थ खगोलशास्त्र के चिन्तकों के लिये पर्याप्त उपयोगी तथ्य उपस्थापित करता है।

उपांगाय श्रीभदेवेद्रमुनि शास्त्री ने अपने महनीय ग्रन्थ "जैन आंगम साहित्य अन्वय आचार्यशास्त्र" में "सूर्य-अभिहित" का विस्तृत परिचय देते हुए लिखा है। इस प्रकार है—

प्रथम प्राप्त में—“दिन व रात्रि में ३० मुहूर्त, मद्यमास, सूयमास, चन्द्रमास और ऋषुमास व मुहूर्तों की वृद्धि, प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल पचमत् सूय की गति के चान का प्रतिपादन एवं अन्तिम मण्डल में सूय की एक बार तथा शेष मण्डला म सूय की दो बार गति होना, आदित्य सवस्तर व दक्षिणायन और उत्तरायन में महोरात्र के जपय तथा उत्कृष्ट मुहूर्त एवं महोरात्र के मुहूर्तों की हानिवर्द्धि व वारण भरत और ऐरावत क्षेत्र के सूय का उदात्त क्षेत्र, आदित्यसवस्तर के दोनों भयना म प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम पचमत् एवं सूय की गति का अन्तर, अन्तर के सम्बन्ध म छह अय मायताएँ, सूय द्वारा द्वोपसमुद्रा के भयनाहन सम्बन्ध म एक महोरात्र म सूय के परिभ्रमण का परिमाण एवं मण्डलों की रचना तथा विस्तार वर्णित है।”

द्वितीय प्राप्त में—“सूय के उदय और अस्त का वणन करने अयतीविका के मर्तों का उत्पन्न किया है, जिसम—

- १ सूय का पूर्वदिशा म उदित होकर आकाश में घटा जाना,
- २ सूय को गालावार किरणों का समूह घतलाकर छाया में नष्ट होना,
- ३ सूय को देवता घतलाकर उसका स्वभाव में उदयास्त होना
- ४ सूय के देव होने से उसकी सनातन स्थिति रहना,

५ प्रात पूर्वदिशा मे उदित होकर साय पश्चिम म पहुँचना तथा वहाँ से अघोनीक को प्रवाहित करने हुए नीचे की ओर लीट जाना आदि प्रमुख हैं। अत में ‘सूय के तत्र मण्डल से दूसरे मण्डल म गमन का और वह एक मुहूर्त मे कितने क्षेत्र में परिभ्रमण करता है ? इसका विचार व्यक्त करते हुए स्वमत का भी प्रतिपादन हुआ है। अयधर्मावलम्बी वृष्टी का आकार गोल मानते हैं किन्तु जैनधर्म की मान्यता उससे भिन्न है, यह भी इससे संकेतित है।”

तृतीय प्राप्त में—चन्द्र, सूय द्वारा प्रकाशित किये जाा वाले द्वीप एवं समुद्रों का वणन है। इसी प्रसंग में बारह मतान्तरों का भी निर्देश हुआ है।

चतुर्थ प्राप्त में—चन्द्र और सूय के १ विमान सन्धान तथा २ प्रवाहित क्षेत्र व सन्धान और उाये सम्बन्ध में १६ मतान्तरों का उल्लेख है। यही स्वमत से प्रत्येक मण्डल म उद्योत तथा साय क्षेत्र का सन्धान बतलाकर अघवार के क्षेत्र का निरूपण किया गया है। सूय के ऊच्य, अघ एवं तियक ताप-क्षेत्र के परिमाण भी यहीं वर्णित है।

पाचवें प्राप्त में—सूय की लेखाया का वणन है।

छठे प्राप्त में—सूय का अघ वर्णित है अर्थात् सूय गदा एवं रूप में अवस्थित रहता है अथवा प्रतिगण परिवर्तित होता रहता है ? इस सम्बन्ध में २५ प्रतिपत्तियाँ हैं। जन्वृष्टि से व्यक्त किया है कि अमूद्रीप म प्रतिव्य केवल ३० मुहूर्त तत्र सूय अवस्थित रहता है तथा शेष समय म अत्रस्थित रहता है। क्योंकि अनेक मण्डला पर एवं सूय ३० मुहूर्त रहता है। इसमें जिस-जिस मण्डल पर वह रहता है, उस दृष्टि से वह अवस्थित है और दूसरे मण्डल की दृष्टि से वह अनवस्थित है, यह स्पष्ट किया है।

सातवें प्राप्त में—सूय धपने प्रवाग से मेरुपर्वतादि को और अय प्रदेशों को प्रवाहित करता है, यह बतलाया है।

आठवें प्राप्त में—जो सूर्य पूर्व दक्षिण में उदित होता है, वह मघ के दक्षिण म स्थित भरवादि धानों को प्रकाशित करता है और जो मघ के पश्चिम-उत्तर म उदित होता है, वह मघ के उत्तर में स्थित ऐरावतादि क्षेत्रों

को प्रवाहित किया है। इस प्रकार दो सूर्यों की सत्ता प्रतिपादित हुई है और इसी से दिन-रात्रि की व्यवस्था स्पष्ट की गई है। साथ ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की भ्रमणा उत्सर्पिणी-भ्रवसर्पिणी काल का कथन भी इसी प्राभूत में वर्णित है।

नीचें प्राप्त मे—पौष्यो छाया का प्रमाण बतलाते हुए सूर्य के उदयास्त के समय ५९ पुरुष-प्रमाण छाया होती है यह बतलाया है और इस सम्बन्ध में अनेक मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमतानुसार पौष्यो-छाया के सम्बन्ध में स्थापना की है।

दसवें प्राभूत मे—नक्षत्रों में आवलिका क्रम, मुहूर्त की सख्या, पूव पश्चिम भाग तथा उभयभागों से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, युगारम्भ मे योग करने वाले नक्षत्रों का पूर्वादि विभाग, नक्षत्रों के कुल उपकुल तथा कुलोपकुल, १२ पूणिमा और प्रभावस्यामो मे नक्षत्रों के योग, समान नक्षत्रों के योग वाली पूणिमा तथा प्रभावस्या, नक्षत्रों के सस्थान, उनके तारे, वर्षा, हेमन्त और शीष्म ऋतुष्रा म मासक्रम के नक्षत्रों का योग तथा पौष्यो प्रमाण, दक्षिण-उत्तर एव उभयभाग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, नक्षत्र रहित चन्द्रमण्डल, सूर्यरहित चन्द्रमण्डल, नक्षत्रों के देवता, ३० मुहूर्तों के नाम, १५ दिन, रात्रि और तिथियों के नाम, नक्षत्रों के गोत्र, नक्षत्रों मे भोजन का विधान, एक युग मे चन्द्र व सूर्य के साथ नक्षत्रों का योग, एक सवत्सर के महीने और उनके लौकिक तथा लोकोत्तर नाम, पाँच प्रकार के सवत्सर, उनके ५-१ भेद और प्रतिम शनश्चर-सवत्सर के २० भेद, दो चन्द्र, नक्षत्रों के द्वार, दो सूर्य और उनके साथ योग करने वाले नक्षत्रों के मुहूर्त परिमाण, नक्षत्रों की सीमा तथा विष्कम्भ आदि का प्रतिपादन विस्तार के साथ इससे २२ उप-भ्रमणायो मे हुआ है।

ग्यारहवें प्राभूत मे—सवत्सरो के आदि, अन्त और नक्षत्रों के योग का वर्णन है।

बारहवें प्राभूत मे—नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिर्वाचित ५ सवत्सरो का वर्णन, छह ऋतुष्रा का प्रमाण, ६-६ क्षमाधिक तिथियों, एक युग मे सूर्य और चन्द्र की आवृत्तियाँ और उस समय नक्षत्रों के योग और योगकाल आदि का वर्णन है।

तेरहवें प्राभूत मे—कृष्ण और शुक्ल पक्ष मे चन्द्र की हानि-वृद्धि, ६२ पूणिमा तथा ६२ प्रभावस्यामो मे चन्द्र-सूर्यों का साथ राहु का योग, प्रत्येक अयन में चन्द्र की मण्डल-गति आदि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें प्राभूत मे—कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ज्योत्स्ना और अघकार का प्रमाण वर्णित है।

पन्द्रहवें प्राभूत मे—चन्द्रादि ज्योतिष्क देवों की एक मुहूर्त की गति है, यह बतलाकर नक्षत्रमास मे चन्द्र, सूर्य, ग्रहादि की मण्डल गति और ऋतुमास तथा आदित्यमास मे भी मण्डल गति का निरूपण किया है।

सोलहवें प्राभूत मे—चन्द्रिका, आतप और अघकार के पर्याया का वर्णन है।

सत्रहवें प्राभूत मे—सूर्य के व्यवन तथा उपपात के सम्बन्ध मे अय २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करने के पश्चात् स्वमत का स्थापन किया है।

अठारहवें प्राभूत मे—भूमि से सूर्य-चन्द्रादि की ऊँचाई का परिमाण बताते हुए अय २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करके स्वमत का प्रतिपादन किया है। चन्द्र-सूर्य के विमानों के नीचे ऊपर तथा सम विभाग म तारास्रा के विमान होने के कारण एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और तारास्रा का परिवार, मेरुपर्वत से ज्योतिष्चक्र का अन्तर, जम्बूद्वीप मे सर्वे ब्राह्म-भ्राह्मन्तर, ऊपर-नीचे चलने वाले नक्षत्र, चन्द्र-सूर्यादि के सस्थान, आयाम, विष्कम्भ और

प्रथम प्राभृत में—“दिन व रात्रि में ३० मुहूर्त, ऋतुमास, सूर्यमास, चन्द्रमास और ऋतुमास के मुहूर्तों की वृद्धि, प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम मण्डल वयन्त सूक्ष्म की गति के बाल का प्रतिपादन एवं अन्तिम मण्डल में सूर्य की एक बार तथा शेष मण्डलों में सूर्य की दो बार गति होना, आदित्य रावत्सर के दक्षिणाधन और उत्तराधन में अहोरात्र के जपय तथा उत्कृष्ट मुहूर्त एवं अहोरात्र व मुहूर्तों की हानिवृद्धि के कारण भरत और एतवत क्षत्र के सूर्य का उद्योत होना, आदित्यसवत्सर के दोनों अयना में प्रथम से अन्तिम और अन्तिम से प्रथम अयना एक सूर्य की गति का अन्तर, अन्तर व सम्बन्ध में द्वादश भाग मापताएँ, सूर्य द्वारा द्वीपसमुद्रों व भवनाहन सम्बन्ध में एक अहोरात्र में सूर्य व परिभ्रमण का परिमाण एवं मण्डलों की रचना तथा विस्तार वर्णित है।”

द्वितीय प्राभृत में—“सूर्य व उदय और अस्त का अणन करके अयतीषिकों व गतों का उत्सव किया है, जिसमें—

- १ सूर्य का पूर्वदिशा में उदित होकर प्राक्काण में चला जाना,
- २ सूर्य की गोलानार निरणी का समूह बतलाकर सध्या में णट होना,
- ३ सूर्य की देवता बतलाकर उसका स्वभाव में उदयास्त होना,
- ४ सूर्य के देव होने से उगकी सनातन स्थिति रहना,

५ प्रात पूर्वदिशा में उदित होकर साय पश्चिम में पहुँचना तथा वहाँ स अधोलोक का प्रवागित करने हुए नीच की ओर लोट जाना आदि प्रमुख हैं। अतः “सूर्य के एक मण्डल से दूसरे मण्डल में गमना का और वह एक मुहूर्त में बिना ही भेद व परिभ्रमण करता है ? इसका विचार व्यक्त करते हुए स्वमत का भी प्रतिपादन हुआ है। अययमविसम्बन्धी पृथ्वी का आकार गोल मानते हैं किन्तु जैनधर्म की मान्यता उससे भिन्न है, यह भी इसमें उल्लेखित है।”

तृतीय प्राभृत में—चन्द्र, सूर्य द्वारा प्रवागित किये जाने वाले द्वीप एवं समुद्रों का अणन है। इसी प्रणय में बारह मतांतरों का भी निर्देश हुआ है।

चतुर्थ प्राभृत में—चन्द्र और सूर्य व १ विमान संस्थान तथा २ प्रवागित क्षेत्र के संस्थान और उनके सम्बन्ध में १६ मतान्तरों का उल्लेख है। यहीं स्वमत से प्रत्येक मण्डल में उद्योत तथा क्षय क्षेत्र का संस्थान बतलाकर अघरात्र व क्षेत्र का निरूपण किया गया है। सूर्य के ऊपर, अग्र एवं तिर्यक क्षय-क्षेत्र के परिमाण भी यहीं वर्णित है।

पाँचवें प्राभृत में—सूर्य की सेव्यायों का अणन है।

छठे प्राभृत में—सूर्य का क्षेत्र वर्णित है अर्थात् सूर्य सदा एक रूप में अवस्थित रहता है अथवा प्रतिगण परिवर्तित होता रहता है ? इस सम्बन्ध में २५ प्रतिपत्तियाँ हैं। जनदृष्टि से व्यक्त किया है कि प्राग्द्वीप में प्रतिवय केवल ३० मुहूर्त तक सूर्य अवस्थित रहता है तथा क्षेत्र समय में अावस्थित रहता है। क्योंकि प्रत्येक मण्डल पर एक सूर्य ३० मुहूर्त रहता है। इसमें जिस जित मण्डल पर वह रहता है, उस दृष्टि से वह अवस्थित है और दूसरे मण्डल की दृष्टि से वह अवनवस्थित है, यह स्पष्ट किया है।

सातवें प्राभृत में—सूर्य अपने प्रवाग से मेरुवर्षादि की ओर अग्र्य प्रदशा की प्रवागित करता है, यह बतलाया है।

आठवें प्राभृत में—जो सूर्य पूर्व-वदिशा में उदित होता है, वह अग्र व दक्षिण में स्थित भरतादि क्षेत्रों को प्रकाशित करता है और जो अग्र के पश्चिम-उत्तर में उदित होता है, वह अग्र के उत्तर में स्थित एरावतादि क्षेत्रों

को प्रमाणित किया है। इस प्रकार दो सूयों की सत्ता प्रतिपादित हुई है और इसी से दिन-रात्रि की व्यवस्था स्पष्ट की गई है। साथ ही भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की अपेक्षा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल का कथन भी इसी प्राप्त म वर्णित है।

नीचें प्राप्त म—पोरुपी छाया का प्रमाण बतलाते हुए सूय के उदयास्त के समय ५९ पुरुव-प्रमाण छाया होती है, यह बतलाया है और इस सम्बन्ध में अनेक मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए स्वमतानुसार पौष्पी-छाया के सम्बन्ध में स्थापना की है।

दसवें प्राप्त म—नक्षत्रों में धावलिका क्रम, मुहूर्त की सख्या, पूर्व-पश्चिम भाग तथा उभयभागों से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, युगारम्भ में योग करने वाले नक्षत्रों का पूर्वादि विभाग, नक्षत्रों के कुल, उपकुल तथा कुलोपकुल १२ पूर्णिमा और अमावस्याओं में नक्षत्रों के योग, सप्तम नक्षत्रों के योग वाली पूर्णिमा तथा अमावस्या, नक्षत्रों के सस्थान, उनके तारे, वर्षा, हेमन्त और शीष्म ऋतुओं में मासक्रम के नक्षत्रों का योग तथा पौरुपी प्रमाण, दक्षिण-उत्तर एवं उभयभाग से चन्द्र के साथ योग करने वाले नक्षत्र, नक्षत्र रहित चन्द्रमण्डल, सूर्यरहित चन्द्रमण्डल, नक्षत्रों के देवता, ३० मुहूर्तों के नाम, १५ दिन, रात्रि और तिथियों के नाम, नक्षत्रों के गोत्र, नक्षत्रों में भोजन का विधान, एक युग में चन्द्र व सूय के साथ नक्षत्रों का योग, एक सवत्सर के महीने और उनके लौकिक तथा लोकोत्तर नाम, पाँच प्रकार के सवत्सर, उनके ५-५ भेद और अंतिम शनैश्चर-सवत्सर के २८ भेद, दो चन्द्र, नक्षत्रों के द्वार, दो सूय और उनके साथ योग करने वाले नक्षत्रों के मुहूर्त परिमाण, नक्षत्रों की सीमा तथा विष्कम्भ आदि का प्रतिपादन विस्तार के साथ इसके २२ उप प्रख्याओं में हुआ है।

ग्यारहवें प्राप्त म—सवत्सरों के भादि, अत और नक्षत्रों के योग का वर्णन है।

बारहवें प्राप्त म—नक्षत्र, चन्द्र, ऋतु, आदित्य और अभिवर्धित ५ सवत्सरों का वर्णन, छह ऋतुओं का प्रमाण ६-६ क्षमाधिक तिथियों, एक युग में सूय और चन्द्र की भावसिंघा और उस समय नक्षत्रों के योग और योगबाल आदि का वर्णन है।

त्रहरवें प्राप्त म—कृष्ण और शुक्ल पक्ष में चन्द्र की हानि-वृद्धि, ६२ पूर्णिमा तथा ६२ अमावस्याओं में चन्द्र-सूयों के साथ राहु का योग, प्रत्येक अयन में चन्द्र की मण्डल-गति भादि का वर्णन किया गया है।

चौदहवें प्राप्त म—कृष्ण और शुक्ल पक्ष की ज्योत्स्ना और अंधकार का प्रमाण वर्णित है।

पन्द्रहवें प्राप्त म—चन्द्रादि ज्योतिष्क देवा की एक मुहूर्त की गति है, यह बतलाकर नक्षत्रमास में चन्द्र सूय प्रहादि की मण्डल गति और ऋतुमास तथा आदित्यमास में भी मण्डल गति का निरूपण किया है।

सोलहवें प्राप्त म—वदिका, आतप और अंधकार के पर्यायों का वर्णन है।

सत्रहवें प्राप्त म—सूय के अवन तथा उपपात के सम्बन्ध में अय २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करने के परवात् स्वमत का स्थापन किया है।

अठारहवें प्राप्त म—भूमि से सूर्य-चन्द्रादि की ऊँचाई का परिमाण बताते हुए अय २५ मत-मतान्तरों का उल्लेख करके स्वमत का प्रतिपादन किया है। चन्द्र-सूय के विमानों के नीचे, ऊपर तथा सम विभाग में ताराका के विमान होने के कारण एक चन्द्र का ग्रह, नक्षत्र और ताराओं का परिवार, मेग्नवत से ज्योतिष्कचक्र का अंतर, जम्बूद्वीप में सर्व बाह्य-प्राग्वन्तर, ऊपर-नीचे चलने वाले नक्षत्र, चन्द्र-सूर्यादि के सस्थान, आयाम, विष्कम्भ और

यद्यपि ग्रन्थिकाश आचार्य, जि होने भागम-ग्रन्थो पर भाष्य, नियुक्ति, चूर्ण या टीकाएँ लिखने में पर्याप्त उदारता व्यक्त की है, परन्तु सूय-चन्द्र सम्बन्धी प्रज्ञप्तियों पर प्रायः नहीं लिखा है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि सीधे ग्रन्थ्यात्म एव आचार्य उपासना जैसे विषयों के प्रति उनकी रुचि विशेष रही होगी। ग्रन्थका यह भी बहा जा सकता है कि इन प्रज्ञप्तियों के विषय विज्ञान के इतिहासिक होने से निरलप्ट जानकर छोड़ दिये हो।

उत्तरकाल में कुछ आचार्यों ने इस कमी को समझा और पुनः इस पर टीका लिखने का उपक्रम किया। इनमें स्थानकवासी आचार्य मुनि धर्मासहजो (१२वीं शती) ने "सूय प्रज्ञप्ति के ग्रन्थ" निमित्त किये और इसी परम्परा के ग्रन्थ आचार्य श्री धर्मालालजी महाराज ने ३२ भागों पर जो संस्कृत भाषा में टीकाएँ लिखी हैं उनमें सूय-प्रज्ञप्ति पर "प्रमेयबोधिनो" /सूय प्रज्ञप्ति-प्रकाशिका नामक टीका/व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। इसमें आचार्य श्री न मूलसूय की संस्कृत छाया और संस्कृत व्याख्या की है। इसका हिन्दी और गुजराती भाषा में अनुवाद दो भागों में प्रकाशित भी हुआ है, जिसका नियोजन पण्डित मुनि श्री कल्याणलालजी ने किया है। हिन्दी और गुजराती अनुवादकर्ताओं का नामोत्प्लेख नहीं हुआ है। आचार्य श्री प्रभोतकभद्रपित्री ने भी प्रज्ञप्ति का हिन्दी अनुवाद किया है इसका प्रकाशन हैदराबाद में हुआ है तथा और भी कुछ विद्वान् आचार्यों ने इस पर विवेचन किये हैं।

सूय-प्रज्ञप्ति के सम्बन्ध में देश-विदेश में विचारक मनीषियों ने भी बहुत से अभिमत भिन्न-भिन्न लेखों में व्यक्त किये हैं। भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र में बहुमान्य बराहमिहिर^१ नियुक्तिवार भद्रराहु के प्राप्ता ये, उन्होंने अपने ग्रन्थ "बराहसंहिता" में सूय-प्रज्ञप्ति के इतिहास विषयों को आधारा बनाकर उन पर लिखा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिषविद भास्कर ने सूय-प्रज्ञप्ति की कुछ मायताओं को लेकर अपने ज्योतिषात्मक विचार व्यक्त किये हैं जो "सिद्धांतशिरोमणि" ग्रन्थ में द्रष्टव्य है। इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त ने "रफुट सिद्धांत" ग्रन्थ में भी ज्योतिष का आधार बनाया है। किन्तु इस युग में वैदेशिक विद्वानों ने सूय-प्रज्ञप्ति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इस विज्ञान का ग्रन्थ माना है, डॉ. विक्टरनिरज उनमें प्रथम हैं। डा. शुब्रिग ने तो यहाँ तक कहा है कि "सूय प्रज्ञप्ति के अध्ययन के बिना भारतीय ज्योतिष के इतिहास को सही रूप से नहीं समझा जा सकता।" डेवर ने सन् १८६८ में "डेवर की सूय प्रज्ञप्ति" नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया था। डॉ. सिबो ने "ऑन द सूय प्रज्ञप्ति" नामक अपने शोधपूर्ण लेख में ग्रीक लोगों के भारतवर्ष में आगमन से पूर्व वहाँ "दो सूय और दो चन्द्र" का सिद्धांत सवमाय था, ऐसा प्रतिपादित किया है तथा उन्होंने इतिहासीक ज्योतिष के इतिहास के साथ सूय-प्रज्ञप्ति के सिद्धांतों की समानता भी बतलाई है।

१० प्रस्तुत प्रकाशन और कुछ प्रश्न कुछ समाधान

उपयुक्त "सूय प्रज्ञप्ति" की गरिमा से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि ऐसे ग्रन्थ का सर्वाधिक स्वाध्याय हो, मनन हो और गम्भीरता-पूर्वक इसमें वर्णित विषयों का स्व-पर कल्याण की दृष्टि से पुनः पुनः विचार हो। सम्भवतः इसी कल्याणमयी भावना से इसका प्रकाशन किया गया है, जो कि अभिनन्दनीय है।

यद्यपि यह ग्रन्थ मूल रूप में ही प्रकाशित है किन्तु इसके सम्पादनकर्ता मुनि श्री कल्याणलालजी "बमल" ने परिश्रमपूर्वक इसमें पाठों को विशुद्धरूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। साथ ही पाठ टिप्पणियों में अपने-अपने कौमो भी उठाया है तथा उनमें समुचित समाधानों की कामना भी की है। मैंने जब इसका प्रवर्तन किया

१ द्रष्टव्य, गच्छाचार की वृत्ति

आहुत्य, उनको बहा करने वाले देवों की सख्या और उनके दिशाक्रम से रूप, गीत गति, अन्वयगुण, चन्द्र मूय की अग्रमहिषिया का परिवार, विभुवना, शक्ति एवं दक-देवियों की अग्रम उच्छृष्ट स्थिति आदि विषयों पर विस्तार से विचार हुआ है।

उत्तरोत्तरे प्राप्त मे—चन्द्र और मूय सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करते हैं अथवा लोक के एक विभाग को ? यह प्रश्न उठाकर इस सम्प्रदाय में बारह मत-अनान्तर्कों का उल्लेख करते हुए स्वमत का निरूपण किया है। साथ ही तनयसमुद्र का प्रायाम, विष्णुम्भ और चन्द्र मूय, नक्षत्र एवं ताराओं का वणन है। उत्तरी प्रकार धातुहीचन्द्र के सत्पान बालोदधिसमुद्र और पुष्कराधदीप तथा मनुष्य क्षेत्र आदि का विवरण प्रस्तुत हुआ है। इसी प्रायाम में यह भी बतलाया गया है कि—चन्द्र के अभाव में ध्यवस्था, चन्द्र का जपय और उच्छृष्ट विरहकाल, मनुष्य क्षेत्र में बाहर चन्द्र की उन्नति और गति तथा अतः म स्वयम्भूरमण समुद्र तक द्वीपसमुद्रों के प्रायाम, विष्णुम्भ परिधि आदि का वणन है।

दोसरे प्राप्त में—चन्द्रादि का स्वरूप, राहु का वणन, राहु के दो प्रकार तथा जपय उच्छृष्ट काल का वणन है। यहाँ चन्द्र को शक्ति और मूय को आदित्य बहने का कारण बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि ज्योतिषियों में चन्द्र—चन्द्र का मूय (शश) के चिह्नवाला 'मृगाशु-विमान' है और मूय समय, भावतिष्ठा आदि से तेकर प्रथम पिणो-उत्सविणी पान का आदि-बर्ता है। चन्द्र और मूय की अग्रमहिषियों और चन्द्र-मूय के वामभोगों की मानवीय वामभोगों के साथ तुलना भी यहाँ प्रस्तुत हुई है तथा अतः में वचन यहाँ के नाम बताये गये हैं। इन प्रायामों के भी अग्रम सप्त प्रायामों के रूप में विभाजन है।

उपयुक्त विषयों के अवलोकन से सहज ही यह अनुमान किया जा सकता है कि मूय-प्रज्ञप्ति का प्रायाम में म मवल मूय और उत्तरे सम्बद्ध विषयों का ही इसमें विमल हुआ है, अतितु समग्र ज्योतिष्य-परिवार का प्रमगानुसार मूय एवं स्तुत विमल ममावृत हो गया है। इतना ही नहीं, यहाँ प्राचीन ज्योतिष्य-सम्बन्धी मूय मायताओं का भी उद्धृत भा गया है। इसमें अचित विषय अग्रमय धर्मों के माय-प्रकाश में अचित विषयों से भी कुछ अर्थों में साम्य रखते हैं।

९. मूय प्रज्ञप्ति की नियुक्ति एवं अग्रम्य विवेचनाएँ

मूय-अग्रमि के व्यापक विषय-विवरण से प्रभावित होकर नियुक्तिवार श्री भद्रबाहु ने दस आयामों पर नियुक्तियों की रचना की थी, उतम मूय-अग्रमि भी थी। किन्तु दुर्भाग्य से अब यह अनुपलब्ध है। किन्तु आचार्य मत्तमगिरि की रचित म इतना निर्णय हुआ है। उन्होंने यहाँ लिखा है—“भद्रबाहुगिरि शत नियुक्ति का गात्र हो जाते से भी बेवक मूल मूय का ही व्याख्यान करेगा।” इतने बीच के काल में अग्रम्य और मूयियों की विधि नहीं किन्तु मूय-अग्रमि पर किसी ने विचार ही, ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता।

आचार्य मत्तमगिरि का स्थितिकाल १५वीं शती माना जाता है। इनके द्वारा जित गये ग्रन्थों में “मूर्धप्रज्ञपयुपाङ्ग टीका” १५०० श्लोक प्रमाण उपलब्ध होती है। इसी का अन्वयगत “मूर्धप्रज्ञपयुपाङ्ग” प्रवर्णन है। आचार्य ने यहाँ प्रारम्भ में मिथिला नगरी, मणिमन्त्र परत, जिज्ञानु राजा, धारिणी देवी और अग्रमय महावीर का साहित्यिक वर्णन किया है। तदनन्तर मणधर चन्द्रभूति गोवम का वणन है। यह मूर्धप्रज्ञप्ति का बीसों प्रायामों का विवरण मन्त्रीय है और उसमें मय-अग्रमि विशिष्ट विचार, आलोचना एवं स्वमत-निष्पन्न को भी स्पष्ट किया है।

यद्यपि अधिकांश आचार्य, जि होने आगम-ग्रंथों पर भाष्य, नियुक्ति, चूर्ण या टीकाएँ लिखने में पर्याप्त उदारता व्यक्त की है, परंतु सूय-चंद्र सम्बन्धी प्रवृत्तियों पर प्रायः नहीं लिखा है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि सीधे ग्रन्थात्मक एवं आचार-उपासना जैसे विषयों में प्रति उनकी रुचि विशेष रही होगी। अथवा यह भी कहा जा सकता है कि इन प्रवृत्तियों के विषय विज्ञान के अतिनिकट होने से विलम्ब जानकर छोड़ दिये हैं।

उत्तरकाल में कुछ आचार्यों ने इस कमी को समझा और पुनः इस पर टीका लिखने का उपक्रम किया। इनमें स्थानकवासी आचार्य मुनि धर्मसिंहजी (१८वीं शती) ने "सूय-प्रवृत्ति के ग्रन्थ" निमित्त किये और इसी परम्परा के अग्र आचार्य श्री दासोत्तलालजी महाराज ने ३२ भागों पर जो सख्त भाषा में टीकाएँ लिखी हैं उनमें सूय-प्रवृत्ति पर "प्रमेयबोधिनी" / सूय-प्रवृत्ति-प्रकाशिका नामक टीका/व्याख्या महत्त्वपूर्ण है। इसमें आचार्य श्री ने मूलसूय की संस्कृत छाया और संस्कृत व्याख्या की है। इसका हिन्दी और गुजराती भाषा में अनुवाद दो भाषा में प्रकाशित भी हुआ है, जिसका नियोजन पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी ने किया है। हिन्दी और गुजराती अनुवादकर्ताओं का नामोल्लेख नहीं हुआ है। आचार्य श्री अमोलकरूपिजी ने भी प्रवृत्ति का हिन्दी अनुवाद किया है इसका प्रकाशन हैदराबाद से हुआ है तथा और भी कुछ विद्वान् आचार्यों ने इस पर विवेचन किये हैं।

सूय-प्रवृत्ति के सम्बन्ध में देश विदेश में विचारक मनीषियों ने भी बहुत से अभिमत भिन्न-भिन्न लेखों में व्यक्त किये हैं। भारतीय ज्योतिष के क्षेत्र में बहुमाय बराहमिहिर' नियुक्तिवार भद्रगुरु के ज्ञाता थे, उन्होंने अपने ग्रन्थ "बराहसंहिता" में सूय-प्रवृत्ति के कतिपय विषयों को आधार बनाकर उन पर लिखा है। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिषविद भास्कर ने सूय-प्रवृत्ति की कुछ मायताओं को लेकर अपने खण्डनात्मक विचार व्यक्त किये हैं जो "सिद्धांतशिरोमणि" ग्रन्थ में द्रष्टव्य हैं। इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त ने "स्फुट सिद्धांत" ग्रन्थ में भी खण्डन का आधार बनाया है। किंतु इस युग में वैदेशिक विद्वानों ने सूय-प्रवृत्ति के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे विज्ञान का अग्र माना है, डॉ. बिन्टरनिज़न उनमें प्रथम हैं। डा. शुब्रिग ने तो यहाँ तक कहा है कि "सूय-प्रवृत्ति के अध्ययन के बिना भारतीय ज्योतिष के इतिहास को सही रूप से नहीं समझा जा सकता।" वेबर ने सन् १८६८ में "जवेर डी सूय-प्रवृत्ति" नामक निबन्ध प्रकाशित किया था। डॉ. सिबो ने "ऑन द सूय-प्रवृत्ति" नामक अपने शोधपूर्ण लेख में ग्रीक लोगों के भारतवर्ष में आगमन से पूर्व वहाँ "दो सूय और दो चंद्र" का सिद्धांत सर्वमाय था, ऐसा प्रतिपादित किया है तथा उन्होंने अतिप्राचीन ज्योतिष के वेदांग ग्रन्थ की मायताओं के साथ सूय-प्रवृत्ति के सिद्धान्तों की समानता भी बतलाइ है।

१० प्रस्तुत प्रकाशन और कुछ प्रश्न कुछ समाधान

उप्युक्त "सूय-प्रवृत्ति" की गरिमा से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि ऐसे ग्रन्थ का सर्वाधिक स्वाध्याय ही, मनन ही और गम्भीरता-पूर्वक इसमें वर्णित विषयों का स्वर-पर कल्याण की दृष्टि से पुनः पुनः विचार ही। सम्भवतः इसी कल्याणमयी भावना से इसका प्रकाशन किया गया है, जो कि अभिन्नानीय है।

यद्यपि यह ग्रन्थ मूल रूप में ही प्रकाशित है किंतु इसके सम्पादनकर्ता मुनि श्री कन्हैयालालजी "कमल" में परिश्रमपूर्वक इसके पाठों को विशुद्धरूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। साथ ही पाद-टिप्पणियाँ में अनेक प्रश्नों को भी उठाया है तथा उनके समुचित समाधानों की कामना भी की है। मैंने जब इसका अवलोकन किया

“जन-साहित्य मे प्रयुक्त मास-मत्स्यादि शब्दो के वास्तविक अर्थ” आधुनिक व्यवहार मे प्रचलित अर्थ कथमपि नहीं हैं, यह निश्चित है। इस तथ्य को “मानव-भोज्य मीमासा” अर्थ के द्वितीय प्रकरण में अल्पत विस्तार से पचास श्लोक कल्याणविजयजी गणी ने स्पष्ट किया है। प्रसिद्धाय और अप्रसिद्धाय का विवेक नहीं रखने से ही अल्पत्रय जग ऐसी दुर्भावनाएँ फैलाते हैं। सूय-प्रनक्ति मे “नक्षत्र-भोजन” की बात नक्षत्रो के दोष से मुक्त होने के लिये उनको वृष्टि करने वाले पदार्थों क भोजन से सम्बद्ध है। ज्योतिषशास्त्र मे वारदोष, तिथिदोष, ग्रहदोष, शकुनदोष, दुर्योग आदि की निवृत्ति के लिये ऐसे उपाय बहुधा दिखाये गये हैं, उही को यहाँ भी उदाहरण के रूप मे प्रसङ्गपूर्वक संक्षेप मे दिया होगा। यह धारण अवश्य ही स्वीकरणीय है।

“भूहृत चित्तामणि” मे भी ऐसे नक्षत्रो के दोष स छूटकारा पाने के लिये छाद्य-वस्तुओं का कथन हुआ है। उनमे भी “मांस” शब्द प्रयुक्त है। किन्तु उसके प्रसिद्ध टीकाकार गोविन्द ज्योतिर्वित् ने अपनी “पीयूषधारा” टीका मे स्पष्ट लिखा है कि—“नक्षत्रदोहद कुल्मापनित्यादिकमिदं भक्ष्याभक्ष्य वणभेदेन देशभेदेन वा भक्ष्यभेदतदभक्ष्य-मिति विचाय भक्ष्यसम्भवे भक्ष्यत अक्षयमसम्भवे आलोकयेत् पश्येत् स्पृशेद वेत्यपि ध्येयम्। (पृ० ३९०, निष्पसागर बम्बई प्रकाशन)। इसका सारांश यह है कि—‘नक्षत्रदोहद के पालन म वणभेद और देशभेद के आधार पर भक्ष्याभक्ष्य का विचार करने जैसा उचित हो वह करे। यदि भक्ष्य न हो तो उसको देने अथवा स्पृश करे’—वही नारद के किसी ग्रन्थ का तथा वसिष्ठ, कश्यप, श्रीपति और भट्ट उत्पल द्वारा भी नक्षत्र-दोहद कथन का संकेत दिया है। अपने कथन के प्रमाण म टीकाकार ने “गुरु” के वचनों को उद्धृत करते हुए बतलाया है कि—“अथ यदभक्ष्य दुष्प्राप वा तत स्मृत्वा दष्ट्वा दत्त्वा गतव्यमित्याह गुरु।” इससे स्पष्ट है कि ये दोहद-भक्ष्य जनसाधारण को लक्ष्य मे रखकर सूचित किये थे और उनमे विवेक को प्रधानता दी थी।

आचार्य श्रीमलधमिगिरि ने इस प्रसंग की व्याख्या म सामान्य अर्थ के रूप मे “कृत्तिका मे प्रारब्ध काय निर्विघ्न सिद्ध हो, तदथ दधिभिश्चित भोदन का भोजन किया जाता है” इतना कहकर “शेष सूत्रो मे देखें” कह दिया है।

आचार्य श्री धासीलालजी महाराज ने अपनी व्याख्या प्रमेय-बोधिनी मे (दशम प्रामृत के सत्रहवें प्रामृत-प्रामृत मे) नामकदेशग्रहणेन नामग्रहण भवतीति नियमात्’ कहकर “वपममास म धतूरे का सार अथवा चूण ग्रहण है” एसा बतलाया है तथा मृगमास का अर्थ इन्द्रावहणी वनस्पति, दीपकमास = भजवाइन का चूण, मण्डूकमास = मण्डूकपर्णी का चूण नखीमास = वाधनखी का चूण वराहमास = वाराहीकन्द का चूण, जलचरमास = जलचर कुम्भिका का चूण तिलिणीकमास = इमली का चूण—ऐसे अर्थ स्पष्ट किये हैं।^१

आचार्य श्री अमोलकश्रियंजी ने भी अपनी व्याख्या मे ऐसे ही अर्थों को व्यक्त किया है जिसकी तालिका इस प्रकार है—

नक्षत्र भोजन-तालिका

१ कृत्तिका	दही	दधि
२ रोहिणी	वसहमस	घृत
३ मिगशिर	निगमस	कस्तूरी
४ भाद्रा	णवणीय	नवनोत (मक्खन)

१ द्रष्टव्य, टीका अर्थ, पृ १०४८ से १०५२ तक। श्री सूयप्रनक्तिमूत्रम् (प्रथम भाग), अ भा अवं स्या जन शास्त्रोद्धार समिति, महमदाबाद से प्रकाशित।

५	पुनवगु	घय	पुत
६	पुष्य	घोर	-
७	घरमेया	वीरघमग	बदचरितग घयवा बगल
८	मघा	बघारि	नगर (?) घयवा केदार
९	पुवाकाल्मुनी	मेउममस	एतामपी घयवा झालू
१०	उत्तराफाल्मुनी	णविघमस	समूणकंद घयवा झालू
११	हस्त	वरयाणिएग	सिपाहा
१२	चित्रा	मगमूण	मू ग पी दात
१३	स्वाति	पल	
१४	विशाखा	घातिघिया	घाठली घयवा शान
१५	अनुराधा	मागा करेण	निघ कुरो घाय
१६	ज्येष्ठा	बोलठिय	बोला-बदू
१७	मूल	मूलब	मूली घयवा भोगर वा शान
१८	पूर्वाषाढा	घामलग	घावला
१९	उत्तराषाढा	विल्ल	विन्व पल घयवा परवा मीठू
२०	श्रमिजित	पुष्य	पुष्य
२१	श्रवण	घोर	
२२	घनिष्ठा	जूत	घरेला घयवा सन्नर कोया
२३	घातमिया	तुम्बरात	तू बा
२४	पूर्वाभाद्रपदा	घारियए	घरेला
२५	उत्तरभाद्रपदा	घराहमस	बपूर
२६	रवती	जलघरमस	जलघर पूलन घयवा वानी
२७	श्रमिणी	नित्तरमस	सीतापरा
२८	भरणी	निल संदुल	नित्ती वा तल घयवा भावत

इस तरह अठारह नामों का भोजन का विषय जैसा घय स्थान में देखो या धारा है वैसा ही निघा है । टीकाकार श्री मलयगिरि धापाय ने इसकी टीका नहीं की है । तत्त्व वैचरितगम्य ।

— धापाय धर्मोत्तरादि श्री म

धापाय श्री हस्तीमन्त्री महाराज, द्वारा सम्पादित—मूयप्रज्ञप्ति वा १० अक्षरवाक्य-१७ पृ २२०-२२३

११ उपसंहार एव कृतव्य-बोध

इन सब विजयों का द्वारा हम एक ही निष्पत्ति पर पहुँचते हैं कि "विषय को सर्वोत्तम म तयज्ञ ही जानते हैं । बुद्धिजीवी जगत् इगरी मयप्रज्ञा को पहचानने में सबक घयघन ही रहा है । दुर्बिधम धार्मिकीतिक धर्मों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए धार्मिक-विन धीर, धार्मिकीतिक धूमिकाकृत हुए जिना जीव-जगत् की विज्ञाना पुन मरती गकरनी । धर्मोक्ति संस्कारगम्य घयवा गत्य वा साक्षात्कार धामनों का द्वारा ही, धर्मज्ञ है । यही कारण है कि विषय विद्याया के निधान धामनों का प्रारंभ धरार सभी के विचारबहुताय है । सबक की वाणी होत स उमका प्रगर धम सय है यज्ञेय है धीर संशय है धीर साय ही यज्ञेय है धीर ध्यातव्य है कि ' धार्मिक-धार्मिक के धार्मिक धर्मों को धर्मों के उच्च मित-मनुष्य मनीषियों ने प्रारम्भिक संस्कारवाक का ज्ञान प्राप्त करना, धार्मिक, धर्मोत्तर, धर्मोत्तर धुप जान करने है । मूय-प्रज्ञप्ति भी एक ऐसा ही धामन घय है, जिसके रहस्यवाक्य का परिज्ञान धार्मिक-परिधायी

की अपेक्षा प्राचीन गणितिक एव खगोलीय परिभाषाओं को समझे बिना चुप-कुट्टन के समान ही निष्फल हो सकता है ।

अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि भारतीय सस्कृति के इन अपूर्व अय-रत्नों के चिरन्तन सत्य के परिचायक तत्त्वों की खोज में विद्वान् भवेपको एव चिन्तकों को जैन, बौद्ध और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थों का समुक्त रूप से परिशीलन करना चाहिये, क्योंकि ये तीनों धाराएँ प्रारम्भ से ही एक ही लक्ष्य से बहीं हैं किन्तु बीच के साम्प्रतिक काल में कुछ ती स्वयं के दुराग्रहों से और कुछ पराये लोगों के बहुकावे के कारण विभू खलित हो गई हैं । जब तक परस्पर मिलकर एक-दूसरे की यूनताओं को पूरा नहीं किया जाएगा तब तक पूणता की प्राप्ति आकाश-मुष्प ही बनी रहेगी । अत —

यूय यूय वयमिह वय सर्वदेव युवदिम-
हृता हृन्ताग्रह-निपतितन्न शित नैव किं किम् ।
सञ्चित्यात् पुनरपि निज स्वत्वमुददुभार्या,
यूय ये ते वयमिति मिथ स्वात्मना सर्वदत्तु ॥

मही निवेदन है, कामना है और प्रायना है ॥३५॥



५ पुनर्वसु	घम	पुत
६ पुष्य	धीर	
७ भरमेषा	दीवगमस	बवर्षसिग भयवा रुमन
८ मघा	वसतिरि	बेजर (?) भयवा कसार
९ पूर्वफाल्गुनी	मेउगमस	एलायची भयवा भासू
१० उत्तराफाल्गुनी	पविप्रमस	समूपाकद भयवा भासू
११ हस्त	यत्थाणिएग	सिपाडा
१२ चित्रा	मगमूए	मू ग बी दास
१३ स्वाति	फल	
१४ विशाखा	धातिसिया	धाठसी भयवा शाह
१५ धतुराधा	मासा करण	गिय कुरी घान्य
१६ ज्येष्ठा	बोसठिठय	बोसा-बद्दू
१७ मूल	मूलव	मूसी भयवा भोगरे का शाह
१८ पूर्वाषाढा	भामलय	धावसा
१९ उत्तराषाढा	विल्ल	विन्व फल भयवा पत्रका नीसू
२० श्रमिजित	पुण्फ	पुण्य
२१ श्रवण	धीर	
२२ धनिष्ठा	जूस	करेसा भयवा लखनर कोला
२३ शतभिषा	सुम्बरस	सू बा
२४ पूर्वाभाद्रपदा	कारियए	करेसा
२५ उत्तरभाद्रपदा	यराहमस	बपूर
२६ रवती	जलयरमस	जमधर फूमन भयवा पागी
२७ श्रमिनी	तिसारमस	सीतापन
२८ भरणी	विल लहुन	तिलनी का सेव भयवा पायस

इस तरह बट्टाईस तारों के भोजन का विषय जैसा प्राय स्थान में देखा में पाया है वया ही लिया है । टीकाकार श्री मलयगिरि आचार्य ने इसकी टीका यहाँ की है । तत्त्व वेवतिगम्य ।

—आचार्य रामानुजचरित्र नाम
आचार्य श्री हल्लीमानजी महाशयन, द्वारा सम्पादित—मूलप्रतियि पा १०, मन्तरापाहद-१७ पृ ३२०, ३२१, ३२२, ३२३ ।

११ उपसंहार एव, वर्तुष्य-बोध

इन सब विवेचनों के द्वारा हम एक ही निष्पत्ति पर पहुचने हैं कि " विषय को सार्थक में सर्वेष्ट ही मानने हैं । बुद्धिबोधी जगत् हमकी समग्रता को पहचानने में सक्षम प्रथम ही रहा है । बुद्धिबोध आधिभौतिक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आधिभौतिक धीरे प्राप्यादिभक्त भूमिकाकृत् हुए बिना जीव-जगत् की प्रज्ञाया पूरा नहीं हो सकती । समोक्तिव शस्त्रोपसंक्षि भयवा मत्स्य का सासारकाद आगमों के द्वारा ही, सम्पन्न है । यही कारण है कि विश्व-विद्यालयों के विद्या आगम का प्रारंभ अथवा समाप्त सभी के लिए अनुमान्य है । सर्वत्र स्वाभाविक ही ग उठका प्रत्येक अंग साथ है अर्थात् है "मोर्तुष्येण है" मोर्तु साथ ही यह भी उच्यते है कि "आधिभौतिक के आधुनिक तत्त्वों को समझना उचित नित्य समझ मसीधियों के आधुनिक समग्रताया का ज्ञान प्राप्त करना, आदि, सभी हम कृप्य जान सकते हैं । मूल प्रतियि भी एक ऐसा ही आगम प्राय है, जिसके रहस्योक्त का परिज्ञान प्राधुनिक-परिवर्तनाधी

की अपेक्षा प्राचीन गणितीय एवं खगोलीय परिभाषाओं को समझे बिना तुल्य-कुट्टन के समान ही निष्फल हो सकता है ।

अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि भारतीय संस्कृति के इन प्रमुख ग्रन्थ-रत्नों के चिरन्तन सत्य के परिचायक तत्वों की खोज में विद्वान् गवेषकों एवं चिन्तकों को जैन, वैदिक और बौद्ध परम्परा के ग्रन्थों का समुक्त रूप से परिशीलन करना चाहिये, क्योंकि ये तीनों धाराएँ प्रारम्भ से ही एक ही लक्ष्य से बड़ी हैं किन्तु बीच के साम्प्रतिक काल में कुछ तो स्वयं के दुराग्रहों से और कुछ पराये लोगों के बहुवादे के कारण विश्रुत खलित हो गई हैं । जब तक परस्पर मिलकर एक-दूसरे की गूँथताओं को पूरा नहीं किया जाएगा तब तक पूणता की प्राप्ति आकाश-गुण ही बनी रहेगी । अतः —

यूय यूय वयमिह वय सर्वदेव बुधदिभ-
हता हन्ताग्रह-निपतिसन्न शित नैव कि किम ।
सञ्चित्यात् पुनरपि निज स्वत्वमुद्धतु भार्या,
यूय ये ते वयमिति मिथ स्वात्मना सर्वदत्तु ॥

यही निवेदन है, कामना है और प्रायना है ॥३॥



विषयानुक्रम

प्रथम प्रामुत

प्रथम प्रामुतप्रामुत

वीररघुई

पद्यपद्यन्तं जोइतरामपण्णतिपरुवणपइणा य

पाहुडान विसयपरुवण

पइमपाहुडंगय अट्टुपाहुडपाहुडमुत्ताण विसयपरुवणं

पइमपाहुडम्स पइवतिसया

वितियपाहुडम्स विसयपरुवण

” पइवतिसया

दसमे पाहुडे बावीतं पाहुडपाहुडान विसयपरुवण

मामम्स मूहुत्ताणं अडीअवडी

सम्भूरमइलमम गूरम्स गमणागनणे राइदिप्यमाण

गूरमइलेगु गूरम्स मइ दुवयुत्तो वा चार

आइअसवअदरे अहोरत्ताणमाणं

उपसहारमुत्तं

द्वितीय प्रामुतप्रामुत

गूरम्स दाहिणा अट्टमइलसठिई

गूरम्स उत्तरा अट्टमइलसठिई

तृतीय प्रामुतप्रामुत

गूरियाण सचरण-धेत्तं

अधुयं प्रामुतप्रामुत

गूरियाणं अणामण्यम्स अतरपारं

चतुर्थ प्रामुतप्रामुत

गूरम्स दीवत्तमुद्द-अवगाहणातर चार

पष्ठ प्रामुतप्रामुत

गूरम्स एगममे राइदिण् मइनायो मंइवत्तंअणपेत्तचारं

नवम प्रामुतप्रामुत

अट्ट-गूरमइल-सठिई

अष्टम प्रामुतप्रामुत

गूरम्स मध्यमइलानं बाह्म्सं धायाम विसयंअ-गरिषयेव य

सम्भूरमइलानं बाह्म्सं अतरं अट्टापमाणं य

द्वितीय प्रामृत

प्रथम प्रामृतप्रामृत	
सूर्याण वैरिच्छयर्द	३०
द्वितीय प्रामृतप्रामृत	
सूरस्स मडलाओ मडला तरसकमण	३२
तृतीय प्रामृतप्रामृत	
सूरस्स सुहुत्तगदयमाण	३३

तृतीय प्रामृत

चदिम-सूरियाण भोभाससेत्त उज्जोयसेत्त पगाससेत्त च	३८
---	----

चतुर्थ प्रामृत

सेयाते सठिई	४१
चदिम-सूरियसठिई	४१
सूरियस्स ताववसेत्तसठिती	४३
ताववसेत्तसठिइण बाहाओ	४४

पचम प्रामृत

सूरियस्स लेस्सापडियायया पव्वता	४८
--------------------------------	----

षष्ठ प्रामृत

सूरियस्स ओयसठिई	५१
-----------------	----

सप्तम प्रामृत

सूरिएण पगासिया पव्वया	५६
-----------------------	----

अष्टम प्रामृत

सूरस्स उदयसठिई	५७
वासा उड	६३
हेमत उड	६३
गिम्ह उड	६४
अणणाइ	६४
उस्सप्पिणी-ओसप्पिणी	६५
लवणसमुदो	६५
घायइसडो	६५
अन्मतरपुक्खरडो	६६

नवम प्रामृत

पोरिसिच्छायनिव्वत्तण	६७
पोरिसिनिवत्तण	६७
पोरिसिपमाण	७१

प्रथम प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम आषट्ठिन्या-विवायजोगो म	७५
द्वितीय प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम चन्द्रेण जोगबाली	७५
पञ्चसप्ततम मूरण जोगबाली	७६
तृतीय प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम पुष्पाद्भागो गत-बालप्यमाण म	७७
चतुर्थ प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम चन्द्रेण जोगारमबाली	७८
पञ्चम प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम कृत्वीवकुत्ताद्	८५
षष्ठ प्रामृतप्रामृत	
दुवास्तसामु पुष्पमासिणीमु कुत्ताद्-पञ्चसप्त-जोगसद्या	८७
दुवास्तसामु अमावास्यामु पञ्चसप्तजोगसद्या	९०
दुवास्तसामु अमावास्यामु कुत्ताद्-पञ्चसप्त-जोगसद्या	९१
सप्तम प्रामृतप्रामृत	
दुवास्तस पुष्पिणामु अमावास्यायु म चन्द्रेण-पञ्चसप्तजोगो	९५
अष्टम प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम सटार्ण	९५
नवम प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम सारणसद्या	९८
दशम प्रामृतप्रामृत	
बाग-श्रेयस गिम्ह-राष्ट्रिमाण	१०१
एकादश्यां प्रामृतप्रामृत	
षडमगो पञ्चसप्तजोगसद्या	१०७
रवि मणि-पञ्चसप्तोद्दि अविरेहियाणं, विरेहियाण सामभ्याण म षडमदमान तीर्ण	१०८
द्वादश्यां प्रामृतप्रामृत	
पञ्चसप्ततम देवया	११०
त्रैदश्यां प्रामृतप्रामृत	
सुदुत्तम नामाद्	१११
षोडश्यां प्रामृतप्रामृत	
विवासरार्ण नामाद्	११५

पद्रह्वा प्रामतप्रामृत	
तिहीण णामाह	११५
सोलह्वा प्रामृतप्रामृत	
णवखत्ताण गोत्ता	११६
सत्तरह्वा प्रामतप्रामृत	
णवखत्ताण भोयण कञ्जसिद्धी य	११९
अठारह्वा प्रामृतप्रामृत	
एगे जुगे भादिच्च-चदचारसखा	१२१
उत्तीसवां प्रामृतप्रामृत	
एगसवच्छरस्स भासा	१२२
बीसवा प्रामृतप्रामृत	
सदच्छराण सखा लकखण च	१२३
सकखणसवच्छरस्स भेया	१२४
इक्कीसवा प्रामृतप्रामृत	
णवखत्ताण दाराइ	१२५
बावीसवां प्रामतप्रामृत	
णवखत्ताण सख्खवरुवण	१२८
णवखत्तमडलाण सीमाविक्खमो	१३०
णवखत्ताण चदेण जोगो	१३१
चदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो	१३२
सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो	१३३
चदस्स भमावासासु जोगो	१३४
सूरस्स भमावासासु जोगो	१३५
पुण्णिमासिणीसु चदस्स य सूरस्स य णवखत्ताण जोगो	१३६
भमावासासु चदस्स य सूरस्स य णवखत्ताण जोगो	१३७
चदेण च सूरेण य णवखत्ताण जोगकालो	१३८
चद-सूर-गह-णवखत्ताण गइसमावण्णत	१३९
चद-सूर-गह-णवखत्ताण जोगो	१४०

ग्यारह्वा प्रामृत

पचह् सवच्छराण पारम-पज्जवसाणकाल, चद-सूरणि-णवत्तसजोगकालो च	१४१
पढम चदसवच्छर	१४१
वितिय चदसवच्छर	१४१
ततिय भभिवड्ढिय सवच्छर	१४२
षट्ठय चदसवच्छर	१४२
पचम भभिवड्ढिय सवच्छर	१४३

बीसवा प्राञ्जल

चंदिन-भूरिपानं धनुभावो	१९७
राहु-बन्धन-पत्र	१९८
राहुन्ध पत्र पामाद्	१९९
राहु-स विनाया पत्रवन्ता	१९९
राहुस्य दुविहस	२००
अदत्त सती-प्रमिहाण	२०१
भूरस्त धादृचामिहाणं	२०१
अद-भूरार्द्रं पं काम-भोगपत्रवपं	२०१
अदृतीर्द्रं महृगहा	२०५
संगहृणीमाहाभो	२०५
उपसहारी	२०६
सुयसविरपशीय पत्रवन्तासिमुत्तं	२०७
परिसिष्ट	
श्री भूय-अदृप्रभित्तिभूय वा गणितविभाग	२१०
भूयप्रभित्ति भूय २० व २४ वा परिनिष्ट	२१९



सुयथेरविरइय उवग

सूरिअपण्णत्तिसुत्तं
चंदपण्णत्तिसुत्तं

धुतस्यविरविरचित उपाग

सूर्यप्रज्ञापितिसूत्र
चन्द्रप्रज्ञापितिसूत्र

प्रथम प्रामृत

[प्रथम प्रामृतप्रामृत]

वोरत्युई

जयइ नव-नलिन-कुवलय, वियसिय-सयवत्त पत्तल-दलच्छो ॥
वीरो गइद-मयगल, सललिय-गयविवकमो भयव ॥ १ ॥

पच्च-पय-वदण जोइसगणराय-पण्णत्ति-परूवण-पइण्णा य

नमिऊण असुर-सुर-गळल-भुयग-परिवदिए गयकिलेसे ॥
अरिहे सिद्धायरिय-उवञ्जाए सव्वसाहू य ॥ २ ॥

फुड-वियड पागडत्य, वुच्छ पुव्व-सुप-सार-णिस्सेद ॥
सुहुमं गणिणोवइदुठ, जोइसगणराय पण्णत्ति ॥ ३ ॥

नामेण "इदभूइ" त्ति, गोयमो वदिऊण तिथिहेण ॥
पुच्छइ जिणवरवसह, जोइसरायस्स पण्णत्ति ॥ ४ ॥

१-२ तेण कालेण तेण समएण "मिहिला" णाम णयो होत्या, वण्णओ ।
तोसे ण मिहिलाए णयोए बहिया उत्तरपुरत्थिये दिसिभाए, एत्य ण "माणिमइ" णाम
चेइए होत्या, वण्णओ ।

तोसे ण मिहिलाए "जिएसत्तू" राया परिवसइ, वण्णओ ।
तस्स ण जियसत्तुस्स रण्णो "धारिणी" णाम देवी होत्या, वण्णओ ।
तेण कालेण, तेण समएण तमि भाणिमइ चेइए सामी समोसदे, वण्णओ ।

[क] परिस्ता णिगया, धम्मो कहिओ ।

[ख] परिस्ता पडिगया ।

[ग] राया जामेव दिसि पाउवण्णए, तामेव दिसि पडिगए ।

तेण कालेण, तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी "इदभूइ" णाम अण-
गारे जाव पजलिउडे पञ्जुवासमाणे एव धयासी—

बीस पाहुलाण विसयपरुवण

- ३ गाहाभो—१ बह मडलाइ वच्चइ, २ तिरिच्छा वि च गच्छइ ॥
 ३ भोमासइ बेवइय, ४ तोयाइ वि ते सठिई ॥ १ ॥
 ५ बहि पडिहया लेसा, ६ बहि ते भोपसठिई ॥
 ७ बे सूरिय वरयति, ८ बह ते उदयमठिई ॥ २ ॥
 ९ बह बट्टा पोरिसिच्छाया, १० जोफे कि ते व भाहिए ॥
 ११ वि ते सवच्छरेणाई, १२ बह सवच्छाराइ य ॥ ३ ॥
 १३ बह चदमसो घुट्टो, १४ बया ते दोसिणा घू ॥
 १५ बे सित्तगई युत्ते, १६ बह दोसिण-त्तवण ॥ ४ ॥
 १७ चयणोववाय, १८ उच्चत्ते, १९ सूरिया बह भाहिआ ॥
 २० अणुभाये के व सवुत्ते, एममेमाइ वोतई ॥ ५ ॥

पढमपाहुडगय अट्टपाहुडपाहुडमुत्ताण विसयपरुवण

- ४ गाहाभो—१ बड्डो बड्ठी मुत्ताण, २ मडमडल-सठिई ॥
 ३ के ते चिण्ण परियरइ, अतर वि घरति य ॥ १ ॥
 ४ भोगाहइ बेवइय, ६ बेवइय च विरपइ ॥
 ७ मडलाण य सठाणे, ८ विवणभो अट्ट पाहुटा ॥ २ ॥

पढमपाहुडस्स पडिवत्तिसाया

- ५ गाहा — ४ छ, ५ प्पच य, ६ सत्तेय य, ७ अट्ट, ८ तिणिय हवति पडिवत्ती ॥
 पढमस्स पाहुडस्स, हवति एयाठ पडिवत्ती ॥ १ ॥

चित्तियपाहुडस्स विसय-परुवण

- ६ गाहाभो—पडिवत्ताभो उदण, तह अत्तमणेषु य ॥
 २ भेयघाए बण्णवना, ३ मुत्ताण गती ति य ॥ १ ॥
 निरघममाणे सित्तगई, पविसते मदगई इय ॥
 घुत्तसोइ सय पुरिगाण, तेमि च पडिवत्तीभो ॥ २ ॥

पडिवत्तिसाया

- गाहा—१ उदयमि अट्ट भणिया, २ भेयघाए दुये य पडिवत्ती ॥
 ३ अत्तारि मुत्तगईए, हति तदयमि पडिवत्ती ॥ ३ ॥

दसमे पाहुडे बावीस पाहुड-पाहुडाण विसयपरूवण

७ गाहाओ--१ आबलिय, २ मुहुत्तगो, ३ एव भागा य, ४ जोगस्त ॥
 ५ कुलाइ, ६ पुण्णमासी य, ७ सन्निवाए य न सठिई ॥ १ ॥
 ९ तारगग, च, १० नेता य, ११ चदमग्गत्ति, यावरे ॥
 देवता य अज्जभयणे, १३ मुहुत्ताण नामाइ य ॥ २ ॥
 १४ विवसा राइवुत्ताय, १५ तिहि, १६ गोत्ता, १७ भोयणाणिय ॥
 १९ आइच्चचार, १९ मासा य, २० पच सवच्छराइ य ॥ ३ ॥
 २१ जोइस्स य, दाराइ, २२ नखत्ता विजये वि य ॥
 दसमे पाहुडे एए, बावीस पाहुड-पाहुडा ॥ ४ ॥

“मासस्स” मुहुत्ताण वड्ढोऽवद्धी

न ता कह ते वड्ढोऽवद्धी मुहुत्ताण आहिए त्ति, वदेज्जा ?

ता अट्ट एण्णवीसे मुहुत्तसए सत्तावीस च सट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिए त्ति वदेज्जा ।

१ (क) मुहुत्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र यहाँ कैसे दिया गया है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है ।

सूयप्रज्ञप्ति के प्रारम्भ में उदयानिका के बाद बीस प्राभूतों के प्राथमिक विषयों की प्ररूपक पाच गाथाएँ हैं । उनमें से प्रथम गाथा में प्रथम प्राभूत के प्रथम प्राभूतप्राभूत की प्राथमिक विषयसूचक गाथा का “वइ मडलाइ चच्चवइ” यह प्रथम पद है । इसके अनुसार “एक वष में सूय कितने मडलों में एक बार और कितने मण्डला में दो बार गति करता है ।” यह विषय है ।

वक्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करते हैं— ‘प्रथमे प्राभूते—सूर्यो वषमध्ये कति मण्डलायेकवार, कति वा मण्डलानि द्वि कृत्वा अजतीत्यतिररूपणीयम् । किमुक्त भवति ? एव गौतमेन प्रश्ने कृते तदनन्तरं सव तद्विषय निवचनं प्रथमे प्राभूते वक्तव्यमिति ।’ किन्तु प्रथम प्राभूत का अठ प्राभूतप्राभूतों की विषयप्ररूपक दो गाथाओं में से प्रथम गाथा के प्रथम पद में ‘वड्ढोऽवद्धी मुहुत्ताण’ यह पद है । इसके अनुसार प्रथम प्राभूत के प्रथम प्राभूतप्राभूत में प्रथम सूत्र में वृत्तिकार के अनुसार चार प्रकार के मासों के मुहुत्तों की हानि-वृद्धि का प्ररूपण है ।

वक्तिकार श्रीमलयगिरि उक्त पद की व्याख्या इस प्रकार करने हैं— ‘प्रथमस्य प्राभूतस्य सत्के प्रथमे प्राभूतप्राभूत मुहुत्तानां दिवस-रात्रिगतानां वृद्धयपवद्धी वक्तव्ये ।’

विषयप्ररूपक सप्रहणी गाथाओं की रचना के पूर्व एव वक्तिकार के पूर्व यह व्युत्पन्न हो गया है ।

वृत्तिकार स्वयं उक्त व्युत्पन्न की उपेक्षा कर गए तो अथ सामान्य श्रुतधरो का तो कहना ही क्या ?

यह सूत्र क्रमानुसार वहाँ होना चाहिए, इस सम्बन्ध में आगे क्याम्यान लिखने का सकल्प है ।

(ख) मुहुत्तों की हानि-वृद्धि का यह सूत्र भी खण्डित प्रतीत होता है, क्योंकि प्रस्तुत सूत्र के प्रश्नसूत्र में मुहुत्तों की हानि-वृद्धि का प्रश्न है किन्तु उत्तरसूत्र में केवल नक्षत्रमामा के मुहुत्तों का ही कथन है ।

सव्यसूरमंडलमग्रे सूरस्त गमणागमण-राईदियप्पमाण

१ ता जया ण सूरिए सव्यम्भतराग्रे मडलाग्रे सव्यवाहिर मंडल उयसकमिता चार घरइ
सव्यवाहिराग्रे मडलाग्रे सव्यम्भतर मडल उयसकमिता चार घरइ,
एस ण भद्रा बेयइय राईदियग्रे ण आहिते त्ति वदेज्जा ?

ता तिण्णि छावट्ठे राईदियसए राईदियग्रे ण आहिते त्ति वदेज्जा ।

सूरमडलेमु सूरस्त सइ दुक्कत्तो या चार

१० ता एताए भद्राए सूरिए कति मडलाइ घरइ ?

ता घुलत्तोय मंडलसय घरइ ।

यासोइ मडलसय दुक्कत्तो घरइ, त जहा—णिवत्तममाणे चेय, पयेसमाणे चेय ।

दुवे य छलु मडलाइ सइ घरइ, त जहा—सव्यम्भतर चेय मडल, सव्यवाहिर चेय मडल ।

आइच्चसवच्छरे अहोरत्तप्पमाण

११ जइ छलु तसोय आइच्चस्त सयच्छरस्त सइ भट्टारसमुहत्ते दियसे भयइ सइ भट्टारस
मुहत्ता राई भयइ,

सइ दुवालसमुहत्ते दियसे भयइ, सइ दुवालसमुहत्ता राई भयइ,

पट्टमे छम्मासे-अत्तिय भट्टारसमुहत्ता राई भयइ,

नत्तिय भट्टारसमुहत्ते दियसे,

अत्तिय दुवालसमुहत्ते दियसे, नत्तिय दुवालसमुहत्ता राई भयइ ।

बोच्चे छम्माणे अत्तिय भट्टारसमुहत्ते दियसे भयइ,

नत्तिय भट्टारसमुहत्ता राई,

अत्तिय दुवालसमुहत्ता राई, नत्तिय दुवालसमुहत्ते दियसे भयइ ।

पट्टमे छम्माणे वा बोच्चे छम्माणे वा नत्तिय पणारसमुहत्ते दियसे भयइ, नत्तिय पणारसमुहत्ता

राई भयइ ।

तन्ध ण क हेउ वदेज्जा ?

ता अपण्ण जयुद्धोये दोये सव्यदीय-समुहाण सव्यम्भतराए सव्यपुहागे वट्टे जाव जोयण
सयसहसमायाम विषत्तमे ण, तिन्नि जोयण-सयसहसमाइ बोत्ति य सत्तायोते जोयणगए निन्नि कते,
अट्टावीम च धणुसय तेरा य अणुताइ, अट्टंगुल, च किञ्चि वितेगाहिए परिचये ण पणत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्यम्भतर-मण्डल उयसकमिता चार घरइ, तया न उयसकमुहत्ते
उयसकेसए भट्टारसमुहत्ते दियसे भयइ, जहण्णिपा दुवालसमुहत्ता राई भयइ,

ते निषत्तममाणे सूरिए नव सवच्छर अपमाणे पट्टमति अट्टारसति अग्निभतरातर मंडलं
उयसकमिता चार घरइ,

ता जया ण सूरिए अरिभतराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहि एगसट्ठिभाग मुहुत्तोहि ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि अरिहिया,

से निवखममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अरिभतर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अरिभतर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि अरिहिया,

एव खलु एएण उवाएण निवखममाणे सूरिए तयाणतराणतर मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे दो दो एगट्ठिभाग मुहुत्ते एगमेगे मडले दिवसखेतस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे रयणिलेत्तस्स अरिभुड्ढेमाणे अरिभुड्ढेमाणे सव्ववाहिरमडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्ववभतराओ मडलाओ सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण सव्ववभतर मडल पणिहाय एगे ण तेसीए ण राइदियसए ण तिणिण छावट्ठे एगसट्ठि भागमुहुत्तसए दिवस खेतस्स णिवुड्ढेत्ता रयणिलेत्तस्स अरिभुड्ढेत्ता चार चरइ तथा ण उत्तमकट्टपत्ता उवकोत्तिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल उवसक मिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि अरिहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगसट्ठिभागमुहुत्तोहि अरिहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे दो दो एगसट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मडले रयणिलेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे णिवुड्ढेमाणे दिवसखेतस्स अरिभुड्ढेमाणे अरिभुड्ढेमाणे सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिराओ मडलाओ सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ, तथा ण सव्ववाहिर मडल पणिहाय एगे ण तेसीए ण राइदियसए ण तिणिण छावट्ठे एगसट्ठिभागमुहुत्तसए रयणिलेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेतस्स अरिभुड्ढेत्ता चार चरइ तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोत्तिए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एत ण दोच्चे छम्मासे, एत ण बुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।
एत ण भ्रादिच्चे सवच्छरे एत ण भ्रादिच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।

उपसहारसुत्त

एय खतु तस्सेव भ्रादिच्चस्स सवच्छरस्स सइ भट्टारसमुहत्ते दियसे भयइ, सइ भट्टारसमुहत्ता
राई भयइ, सइ दुयालसमुहत्ते दियसे भयइ, सइ दुयालसमुहत्ता राई भयइ,
पढमे छम्मासे—अत्थि भट्टारसमुहत्ता राई भयइ,
नत्थि भट्टारसमुहत्ते दियसे,
अत्थि दुयालसमुहत्ते दियसे भयइ, नत्थि दुयालसमुहत्ता राई ।
दोच्चे वा छम्मासे—अत्थि भट्टारसमुहत्ते दियसे भयइ,
नत्थि भट्टारसमुहत्ता राई ।
अत्थि दुयालसमुहत्ता राई, नत्थि दुयालसमुहत्ते दियसे भयइ,
पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे—अत्थि पणरसमुहत्ते दियसे भयइ, अत्थि पणरस-
मुहत्ता राई भयइ, अत्थि राइदियाण षट्ठोयड्ठोए, मुहत्ताण वा सपोयचएण जण्णस्य वा अणुवायणए,
गाहाणो भाणियव्याणो ।'



१ एत भयवारीणादीनां चित्ता कस्या तत्र सूर्यसंहितासंस्कृतस्य वा विदुषि इति उक्तं तत्र उक्तं एत एत
कारणं इत्यन्तरमुक्तं तत्र उक्तं एत एत 'अत्थि' इति उक्तं तत्र उक्तं एत एत उक्तं तत्र उक्तं
अत्थि' इत्यन्तरमुक्तं तत्र उक्तं एत एत उक्तं तत्र उक्तं एत एत उक्तं तत्र उक्तं । —सूर्य टीका

प्रथम प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दाहिणा अद्धमडलसठिई

१२ ता कह ते अद्धमडलसठिई आहिताति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे वुवे अद्धमडलसठिई पणत्ता, त जहा—

१ दाहिणा चेव अद्धमडलसठिई, २ उत्तरा चेव अद्धमडलसठिई ।

ता कह ते दाहिणा अद्धमडलसठिई आहिताति वदेज्जा ?

ता अयण्ण जयुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाण सव्ववभतराए सव्वखुड्डागे वट्टे जाव जोयणसय-
सहस्समायाम—विबखभेण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोन्नि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे
अट्टावीस च धणुसय तेरस य अगुलाइ अद्धगुल च किञ्चिविसेसाहिए परिकखेवेण पणत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर दाहिण अद्धमडलसठिई उवसकमिता चार चरइ, तथा ण
उत्तमकट्टपत्ते उवकोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिणा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निवखममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए
तत्सादिपदेसाए अम्भितरागतर उत्तर अद्धमडल सठिइ उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अम्भितराणतर उत्तर अद्धमडलसठिइ उवसकमिता चार चरइ, तथा ण
अट्टारसमुहुत्तेहि दिवसे भवइ दोहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि अहिया ।

से निवखममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तत्सादिपदेसाए
अम्भितर तच्च दाहिण अद्धमडलसठिई उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अम्भितर तच्च दाहिण अद्धमडलसठिई उवसकमिता चार चरइ, तथा ण
अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणे ।

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि अहिया ।

एव खलु एएण उवाएण निवखममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतरमडलस्स तसि

तमि देससि त त अद्धमडलसठिंति सक्ममाणे सक्ममाणे बाहिणाए अतराए भागाए तस्साविपदेसाए
सव्यबाहिर उत्तर अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ ।

ता जया ण सूरिए सव्यबाहिर उत्तर अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ, तया
उत्तमवट्टपत्ता उवयोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणाए दुयालसमुहुत्ते विवमे भवइ ।

एस ण पडमे छम्मासे, एस ण पडमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पडमसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए
तस्साविपदेसाए बाहिराणतर बाहिण अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर बाहिणअद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ, तया
अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऋणा,

दुयालसमुत्ते विवसे भवइ, दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिणाए अतराए भागाए तस्साविपदेसाए बाहिर
रतर तच्च उत्तर अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च उत्तर अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ, तया
अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऋणा,

दुयालसमुहुत्ते विवसे भवइ, चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए,

एय एल्लु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतरमि तति तति
देससि त त अद्धमडलसठिंति सक्ममाणे सक्ममाणे उत्तराए अतराए भागाए तस्साविपदेसाए सव्यबाहिर
बाहिण अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ ।

ता जया ण सूरिए सव्यबाहिर बाहिण अद्धमडलसठिंति उवसक्ममिता धार चरइ, तया
उत्तमवट्टपत्ते उवयोगए अट्टारसमुहुत्ते विवमे भवइ, जहणिया दुयालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मागरम पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चये सवच्छरे, एस ण आइच्चम्म सवच्छरम्म पज्जवसाणे ।

सूरस्स उत्तरा अद्धमडलसठिंति

१३ ता च्च ते उत्तरा अद्धमडलसठिंति बाहिणेति चरेज्जा ?

ता अयण जयुहोये होये मव्यदोय-समुहाण सव्यवजराए सव्यवट्टागे वट्टे प्राव ज्ञोयव-
सव्यवट्टम्ममायाम विचउंभेण, तिज्जा ज्ञोयवसव्यवट्टसाई, होणि य गत्तावीते ज्ञोयवणए, तिज्जा च्च
अट्टावीस च एणुत्तप तेरस य अगुनाइ, अट्टगुत्त च विधि विसेसाहिए परिवत्तवण एणुत्त,

ता जया ण सूरिए सव्वभतर उत्तर अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ तथा ण
उत्तमकट्ठपत्ते उवकोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

से निवखममाणे सूरिए णव सव्वच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए
तस्साइपएसाए अम्भतराणतर दाहिण अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अम्भतराणतर दाहिण दाहिण अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ,
तथा ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निवखममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए तस्साइपएसाए
अम्भतराणतर तच्च उत्तर अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरई ।

ता जया ण सूरिए अम्भतराणतर तच्च उत्तर अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ तथा
ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया,

एव खलु एएण उवाएण निवखममाणे सूरिए तथाणतराओ मडलाओ तथाणतर मडल
सकममाणे सकममाणे तसि तसि वेत्तसि त त अद्दमडलसठिइ सकममाणे सकममाणे उत्तराए अतराए
भागाए तस्साइपएसाए सव्वबाहिर दाहिण अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर दाहिण अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ, तथा ण
उत्तमकट्ठपत्ता उवकोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि दाहिणाए अतराए भागाए
तस्साइपएसाए बाहिराणतर उत्तर अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर उत्तर अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ तथा ण
अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि उत्तराए अतराए भागाए तस्साइपएसाए बाहिर
तच्च दाहिण अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च दाहिण अद्दमडलसठिइ उवसकमिन्ता चार चरइ तथा ण
अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए,

एष धनु एएण उघाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतरामो मइतामो तयाणतर मइ
 सक्कममाणे सक्कममाणे तसि तसि वेससि त तं अइमइत्तसिण्हि सक्कममाणे सक्कममाणे दाहिणाए अतर
 भागाए तस्साइपएसाए सव्यम्भतर उत्तर अइमइत्तसिण्हि उयसक्कित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्यम्भतर उत्तर अइमइत्तसिण्हि उयसक्कित्ता चार चरइ, तया ण
 उत्तमक्कट्ठपत्ते उक्कतोसए अट्टारसमुत्तं दिवसे भवइ, जट्ठिया दुयात्तसमुत्ता राई भवइ,

एस ण बोच्चे छम्माते, एस ण बोच्चस्स छम्मात्तस्स पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



प्रथम प्राभृत [तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरियाण सचरण-खेत्त

१४ ता कि ते चिण्ण पडिचरति आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पण्णत्ता, त जहा—भारहे चेव सूरिए । एरवए चेव सूरिए ।

ता एए ण दुवे सूरिया पत्तेय पत्तेय—

तीसाए तीसाए मुहुत्तेहि एगमेग अद्धमडल चरइ,

सट्ठीए सट्ठीए मुहुत्तेहि एगमेग मडल सघातयति ।

ता निक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरति,

पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरति त सयमेग चोयाल,

प—तत्थ ण को हेतु, ति वदेज्जा ?

उ—ता अयण्ण जब्बुहीवे दीवे सब्बदीव-समुद्दाण सब्बभतराए सब्बखुब्बहागे वट्ठे जाव

जोयणसयसहस्समायाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोभि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे अट्ठावीस च घणुसय, तेरस य अगुलाइ, अद्धगुल च किंचि वित्तेसाहिए परिवत्तेवेण पण्णत्ते ।

तत्थ ण अय भारहए चेव सूरिए जब्बुहीवस्स दीवस्स पाईणपडोणाययाए उदीण-वाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता दाहिण-पुरत्थिमिल्लसि चउन्मागमडलसि घाणउत्तिय सूरियम-याइ जाइ सूरिए अण्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

उत्तर-पच्चत्थिमिल्लसि चउन्मागमडलसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अण्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्थ ण अय भारहे सूरिए एरवयस्स सूरियस्स जब्बुहीवस्स दीवस्स पाईण-पडोणाययाए उदीण-वाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लसि चउन्मागमडलसि घाणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

वाहिण-पच्चत्थिमिल्लसि चउन्मागमडलसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्थ ण अय एरवए चेव सूरिए जब्बुहीवस्स दीवस्स पाईणपडोणाययाए उदीण-वाहिणाययाए जीवाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता उत्तर-पुरत्थिमिल्लसि चउन्मागमडलसि घाणउइय सूरिय-मयाइ जाइ सूरिए अण्पणा चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

वाहिन-पुरत्विमिल्लसि चउरुभागमडलसि एवकाणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अण्णत्ता वेव
चिण्णाइ पडिचरइ,

तय ण अय एरवए सूरिए भारहसस सूरियसस जमुहोयसस होवसस पाईण-पडोणामयाए
उदीण-वाहिणापयाए जीयाए मडल चउवीसएण सएण देत्ता वाहिण-पचरिपिमिल्लसि चउरुभाग
मडलसि वाणउइय सूरियमयाए जाइ सूरिए परसस वेव चिण्णाइ पडिचरइ,

उत्तर-पुरत्विमिल्लसि चउरुभागमडलसि एवकाणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए परसस वेव
चिण्णाइ पडिचरइ,

ता निवचममाणा षलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णसस चिण्ण पडिचरंति ।

पयिसमाणा षलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णसस चिण्ण पडिचरंति सममेग घोयालं ।



प्रथम प्राभृत [चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

सूरियाण अण्णमण्णस्स अतर-चार

१५ ता केवइय एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति, आहितेति वदेज्जा ?
तत्थ खलु इमाओ छ पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ तत्थ एगे एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार
चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु ।

२ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च चोत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति,
आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

३ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च पणतीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार
चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

४ १ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग दोव, एग समुद्द अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा,
एगे एवमाहसु,

५-२ एगे पुण एवमाहसु—

ता दो बीवे, दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा,
एगे एवमाहसु,

६-३ एगे पुण एवमाहसु—

ता तिण्णि दोवे, तिण्णि समुद्दे, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु सूरिया चार चरति, आहितेति
वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिमागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर
अभिवड्ढेमाणा वा, निवड्ढेमाणा वा सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

वाहिण-पुरतियमिल्लसि चउम्भागमडलसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए अम्पणा चेव
चिण्णाइ पडिचरइ,

तत्य ण अय एरवए सूरिए भार्हस्स सूरियस्स जवुद्दीवस्स दीवस्स पाईण-पडोणाययाए
उदीण-वाहिणाययाए जीयाए मडल चउवीसएण सएण छेत्ता वाहिण-पच्चतियमिल्लसि चउम्भाग
मडलसि वाणउइय सूरियमयाए जाइ सूरिए परस्स चेव चिण्णाइ पडिचरइ,

उत्तर-पुरतियमिल्लसि चउम्भागमडलसि एक्काणउइय सूरियमयाइ जाइ सूरिए परस्स चेव
चिण्णाइ पडिचरइ,

ता निवळममाणा खलु एए दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरति ।

पयिसमाणा खलु एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्ण पडिचरंति सयमेग बोयालं ।



प्रथम प्राभृत [चतुर्थ प्राभृतप्राभृत]

सूरियाण अण्णमण्णस्स अतर-चार

१५ ता केवइय एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु चार चरति, आहितेति वएज्जा ? तत्थ खलु इमाओ छ पडिबत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१ तत्थ एगे एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु ।

२ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च चोत्तीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

३ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग जोयणसहस्स एग च पणतीस जोयणसय अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

४-१ एगे पुण एवमाहसु—

ता एग दीव, एग समुद्द अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

५-२ एगे पुण एवमाहसु—

ता दो दीवे, दो समुद्दे अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

६-३ एगे पुण एवमाहसु—

ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे, अण्णमण्णस्स अतर कट्ठु सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता पच पच जोयणाइ पणतीस च एगद्धिमागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर अभिवड्ढेभाणा वा, निवड्ढेभाणा वा सूरिया चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तस्य ण को हेड ? आहितेति वदेज्जा,

ता अय ण जयुद्दीये वीये सव्यदीव-समुद्गाण सव्यम्भतराए सव्यथुड्ढागे वट्टे जाय जोयणसय सहस्समायाम विवखभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे भट्टावीस च धणुसय तेरसय-अगुत्ताइ भट्टगुत्तल च किञ्चि वितेसाहिए परिवत्तेवेण पण्णत्ते,

१ ता जया ण एते बुवे सूरिया सव्यम्भतर मडल उयसवमिता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ, एच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर वट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुद्दत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवात्तसमुद्दत्ता राई भवइ,

२ ते निवखममाणा सूरिया णव सवच्छर अयमाणा पढमसि अट्टोरत्तसि अम्भितराणतर मडल उयसवमिता चार चरति,

ता जया ण एते बुवे सूरिया अम्भितराणतर मडल उयसवमिता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ एच्च पणयाले जोयणसए पणतोस च एगट्ठिभागे जोयणस अण्णमण्णस्स अतर वट्टु चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्टारसमुद्दत्ते दिवसे भवइ, दोहि एगट्ठिभाग मुद्दत्तोहि ऊणे,

दुवात्तसमुद्दत्ता राई भवइ दोहि एगट्टिरागमुद्दत्तोहि अहिया,

३ ते निवखममाणा सूरिया दोच्चसि अट्टोरत्तसि अम्भितर तच्च मडल उयसवमिता चार चरति,

ता जया ण एते बुवे सूरिया अम्भितर तच्च मडल उयसवमिता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ एच्च इक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस अण्णमण्णस्स अतर वट्टु चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्टारसमुद्दत्ते दिवसे भवइ चउहि एगट्ठिभागमुद्दत्तोहि ऊणे,

दुवात्तसमुद्दत्ता राई भवइ चउहि एगट्ठिभागमुद्दत्तोहि अहिया,

एय एत्तु एएण उवाएण निवखममाणा एते बुवे सूरिया तयाणतराभा मडसाधो तयाणतर मडल सवममाणा सवममाणा पच पच जोयणाइ पणतोस च एगट्ठिभागे जोयणस अण्णमण्णस्स अतर अम्भिवट्टेमाणा अम्भिवट्टेमाणा, सव्यवाहिर मडल उयसवमिता चार चरति,

ता जया ण एते बुवे सूरिया सव्यवाहिर मडल उयसवमिता चार चरति,

ता ण एग जोयणसयसहस्स एच्च सट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर वट्टु चार चरति,

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोगिया अट्टारसमुद्दत्ता राई भवइ जहण्णए दुवात्तसमुद्दत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एम ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

२ ते पविसमाणा सूरिया दोच्च छम्मास अथमाणा पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया बाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरति,

तया ण एग जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पण्णे जोयणसए छत्तीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए,

३ ते पविसमाणा सूरिया दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमिता चार चरति,

ता जया ण एते दुवे सूरिया बाहिर तच्च मडल उवसकमिता चार चरति,

४ ता ण एग जोयणसयसहस्स छच्च अडयाते जोयणसए बायण च एगट्ठिभागे जोयणस्स, अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगट्ठिभागमुहुत्तेहि अहिए,

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणा एते दुवे सूरिया तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणा सकममाणा पच्च पच्च जोयणाइ पणतीसे च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले अण्णमण्णस्स अतर निवड्ढेमाणा निवड्ढेमाणा सब्बभतर मडल उवसकमिता चार चरति,

ता जया ण दुवे सूरिया सब्बभतर मडल उवसकमिता चार चरति,

तया ण णवणउइ जोयणसहस्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर कट्टु चार चरति,

तया ण उत्तमकट्टुपत्ते, उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिघा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस ण दोच्चे छम्मासे एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



तस्य ण को हेउ ? आहितेति वदेज्जा,

ता अय ण जयुदीये दीये सव्यदीय-समुद्वाण सव्यवभतराए सव्यखुड्ढागे वटटे जाय जोयणसय
सहस्रमायाम विक्खमणेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ दोण्णि य सत्तायोसे जोयणसए, तिण्णि कोसे
अट्टावीस च घणुसय तेरसय-अगुलाइ अद्धगुलल च किंचि विसेसाहिए परिक्खेयेण पण्णत्ते,

१ ता जया ण एते दुये सूरिया सव्यवभतर मडल उयसकमिता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ, छच्च चत्ताले जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर षट्ठ
चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण उत्तमवट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहत्ते विवसे भवइ जण्णिमा बुवालसमुहत्ता राई
भवइ,

२ ते निक्खममाणा सूरिया णव सवच्छर अयमाणा पडमसि अहोरत्तसि अम्भितराणतर
मडल उयसकमिता चार चरति,

ता जया ण एते दुये सूरिया अम्भितराणतर मडल उयसकमिता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ छच्च पणयाले जोयणसए पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस
अण्णमण्णस्स अतर षट्ठ चार चरति आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्टारसमुहत्ते विवसे भवइ, दोहि एगट्ठिभाग मुहत्तोहि ऊणे,

बुवालसमुहत्ता राई भवइ दोहि एगट्ठिरागमुहत्तोहि अहिया,

३ ते निक्खममाणा सूरिया दोच्चसि अहोरत्तसि अम्भितर तच्च मडल उयसकमिता चार
चरति,

ता जया ण एते दुये सूरिया अम्भितर तच्च मडल उयसकमिता चार चरति,

तया ण णयणउइ जोयणसहस्साइ छच्च इक्कायण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस
अण्णमण्णस्स अतर षट्ठ चार चरति, आहितेति वदेज्जा,

तया ण अट्टारसमुहत्ते विवसे भवइ चउहि एगट्ठिभागमुहत्तोहि ऊणे,

बुवालसमुहत्ता राई भवइ चउहि एगट्ठिभागमुहत्तोहि अहिया,

एय छत्तु एएण उवाएण निक्खममाणा एते दुये सूरिया तयाणतराणां मडलाओ तयाणतर
मडल सवममाणा सवममाणा पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्ठिभागे जोयणस एणमेगे मडे
अण्णमण्णस्स अतर अमियट्ठेमाणा अमियट्ठेमाणा, सव्यवाहिर मडल उयसकमिता चरे चरति,

ता जया ण एते दुये सूरिया सव्यवाहिर मडल उयसकमिता चार चरति,

ता ण एग जोयणसयसहस्स छच्च मट्ठे जोयणसए अण्णमण्णस्स अतर षट्ठ चार चरति,

तया ण उत्तमवट्टपत्ता उक्कोमिया अट्टारसमुहत्ता राई भवइ जण्णो बुवालसमुहत्ते
विवसे भवइ,

तया ण जब्बुदीव दीव एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ,
तया ण लवणसमुद्द एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता चार चरइ,
तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

२ एव चउत्तीसेऽवि जोयणसय,
३ पणतीसेऽवि एव चेव भाणियव्व,
४ तत्य ण जे ते एवमाहसु—
ता अथइड दीव वा, समुद्द वा, ओगाहिता सूरिए चार चरइ,
ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,
तया ण अथइड जब्बुदीव दीव ओगाहिता सूरिए चार चरइ,
तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्ववाहिरे मडलेऽवि, णवर—“अथइड लवणसमुद्द” तया ण “राइदिय” तहेव,^१
५ तत्य ण जे ते एवमाहसु—
ता नो किंचि दीव वा समुद्द वा ओगाहिता चार चरइ,
ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,
तया ण नो किंचि दीव वा, समुद्द वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ,
तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एव सव्ववाहिरे मडले वि, णवर—“नो किंचि लवणसमुद्द ओगाहिता सूरिए चार चरइ,
राइदिय तहेव”,

१ ऊपर अंकित सूत्र के समान है ।

२ ऊपर अंकित सूत्र के समान है ।

प्रथम प्राभृत

[पचम प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स दीव-समुद्-ओगाहणाणतर चार

१६ १७ ता केवइय ते दीव या समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, भाहितेति यवेज्जा ?

तत्थ छलु इमाओ पच पडियतीओ पणत्ताओ त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एग जोयण-सहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय, दीव या समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार, चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता एग जोयण-सहस्स, एग च चउत्तीस जोयणसय, दीव या समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता एग जोयण-सहस्स, एग च पणत्तीस जोयणसय दीव या समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता अरवइद दीव या, समुद् वा, ओगाहिता सूरिए चार चरइ एगे एवमाहसु,

५ एगे पुण एवमाहसु—

ता नो किंचि एग जोयणसहस्स एग च तेत्तीस जोयणसय दीव या, समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

तत्थ जे ते एवमाहसु—

१ ता एग जोयणमहरस एग च तेत्तीस जोयणसय, दीव या समुद् वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

ते एवमाहसु—

२ ता जया ण सूरिए सव्वइभतर मइल उयसकमिता चार चरइ,

तया ण ज्वुद्दीव दीव एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ख—ता जया ण सूरिए सब्बवाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण लवणसमुद्द एग जोयणसहस्स, एग च तेत्तीस जोयणसय ओगाहिता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

२ एव चउत्तीसेऽवि जोयणसय,

३ पणतीसेऽवि एव चेव भाणियव्व,

४ तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता अक्कड्ढ दीव वा, समुद्द वा, ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सब्बभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण अक्कड्ढ ज्वुद्दीव दीव ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता

राई भवइ,

एव सब्बवाहिरे मडलेऽवि, णवर—“अक्कड्ढ लवणसमुद्द” तया ण—“राइदिय” तहेव,^१

५ तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

ता नो किंचि दीव वा समुद्द वा ओगाहिता चार चरइ,

ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सब्बभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण नो किंचि दीव वा, समुद्द वा ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता

राई भवइ,

एव सब्बवाहिरे मडले वि, णवर—“नो किंचि लवणसमुद्द ओगाहिता सूरिए चार चरइ, राइदिय तहेव”,

१ ऊपर अंकित सूत्र के समान है ।

२ ऊपर अंकित सूत्र के समान है ।

यम पुण एव धयामो—

क—ता जया ण सूरिए सव्यम्भतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण जवुद्धीव दीव असीम जोयणसम ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमक्कट्टपत्ते उवयोसए अट्टारसमुहुत्ते वियसे भवइ, जहण्णया दुवातसमुहुत्ता

राई भयइ,

ख - ता जया ण सूरिए सव्यम्भाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ;

तया ण लयणसमुद्द तिण्णि तीसे जोयणसए ओगाहिता सूरिए चार चरइ,

तया ण उत्तमक्कट्टपत्ता उवकोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भयइ, जहण्णए दुवातसमुहुत्ते

दियसे भवइ, गाहाओ भाणियव्याओ ।



प्रथम प्रामृत .

[छठा प्रामृतप्रामृत]

सूरस्त एगमेगे राइदिए मडलाओ मडलसकमणखेत्तचार

१८ ता केवइय ते एगमेगे ण' राइदिए' ण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, 'आहितेति वदेज्जा ?

तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिबत्तीओ पण्णताओ, त जहा—
तत्थेणे एवमाहसु—

१ ता दो जोयणाइ अट्टदुच्चत्तालीसे तेसीइ सयभागे जोयणस्त एगमेगेण, 'राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता अट्टदाइज्जाइ जोयणाइ एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ,
एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

३ ता तिभागूणाइ तिभि जोयणाइ एगमेगेणे राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

४ ता तिण्णि जोयणाइ अट्टसीतालीस च तेसीइसयभागे जोयणस्त' एगमेगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

५ ता अट्टधुट्ठाइ जोयणाइ एगमेगेण 'राइदिएण' 'विकपइत्ता' 'विकपइत्ता' सूरिए चार' चरइ,
एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

६ ता चउम्भागूणाइ चत्तारि जोयणाइ एगमेगेण 'राइदिएण' 'विकपइत्ता' 'विकपइत्ता' सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

७ ता चत्तारि जोयणाइ अट्टवावण्ण च तेसीइसयभागे 'जोयणस्त' 'एगमेगेण' 'राइदिएण' 'विकपइत्ता' 'विकपइत्ता' सूरिए चार चरइ, एगे एवमाहसु,

यय पुण एय थयामो—

ता दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्त एगमेग मडल एगमेगेय राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता सूरिए चार चरइ,

तय ण थो हेऊ ? इति थदेज्जा ।

ता अय ण जयुद्दीवे दीवे सव्वदीय समुहाण सव्वभतराए सव्वएहुहागे वट्ठे जाय जोयणसम सहुत्समायामविवथभेण, तिणिण जोयणसयसहुत्साइ, दोणिण य सत्तावीसे जोयणसाए, तिणिण थोरे अट्टावीस च घणुसय तेरस अणुसाइ, अट्टगुल च किंचि वितेसाहिए परिकसेवेण पणत्ते ।

१ ता जया ण सूरिए मध्यभतर मडल उवसकमिता चार चरइ—

तया ण उत्तमपट्टपत्ते उवकोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भयइ, जहणिया दुयात्तसमुहुत्ता राई भयइ,

२ से निवज्जममाणे सूरिए णय सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तमि अग्नितराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अग्नितराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्त एगेण राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भयइ, थोहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणे,

दुयात्तसमुहुत्ता राई भयइ, थोहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि अहिया ।

३ से निवज्जममाणे सूरिए थोच्चसि अहोरत्तसि अग्नितर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अग्नितर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण पच जोयणाइ पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस्त थोहि राइदिएण विकपइत्ता विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भयइ, चउहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि ऊणे,

दुयात्तसमुहुत्ता राई भयइ चउहि एगट्टिभागमुहुत्तेहि अहिया,

एय खलु एएण उवाएण निवज्जममाणे सूरिए तयाणतराधो मडलाधो तयाणतर मडल मध्यममाणे सव्वममाणे थो दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणसम एगमेग मडल एगमेगेण राइदिएण विकपमाणे विकपमाणे सव्वयाहिए मडल उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए सव्वभतराधो मडलाधो सव्वयाहिए मडल उवसकमिता चार चरइ, तया ण सव्वभतर मडल पणियाय एगेण नेतीएण राइदियसाएण पचदसुत्तरजोयणमण विकपइत्ता विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१ से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण दो दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगेण राइदिएण विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ बोहिं एगट्टिभागमुहुत्तोहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ बोहिं एगट्टिभागमुहुत्तोहिं अहिए,

२ से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण पचजोयणाइ पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस्स दोहिं राइदिएहिं विकपइत्ता विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण अट्टारसम हुत्ता राई भवइ, चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तोहिं ऊणा,

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहिं एगट्टिभागमुहुत्तोहिं अहिए,

एव खुलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सवभमाणे सकभमाणे दो जोयणाइ अडयालीस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगमेण मडल एगेमेगेण राइदिएण विकपमाणे विकपमाणे सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिराओ मडलाओ सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण सव्ववाहिर मडल पणिहाय एगे ण तेसोए ण राइदियसएण पचदसुत्तरे जोयणसए विकपइत्ता चार चरइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



प्रथम - प्रामृत

[सप्तम प्रामृतप्रामृत]

घद-सूर-मडल-सठिई

१९ - ता कह ते मंडल-सठिई घाहृतेति वदेज्जा ?

तत्प छलु इमाओ भद्र पडियत्तोओ पणत्ताओ, त जहा—

तरयेगे एवमाहमु—

१ ता सव्या वि ण मडलायता समचउरस-सठोणसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु

एगे पुण एवमाहमु—

२ ता सव्या वि ण मडलायता विसमचउरस-सठोणसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु,

एगे पुण एवमाहमु—

३ ता सव्या वि ण मडलायता समचउवओणसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु,

एगे पुण एवमाहमु—

४ ता सव्या वि ण मडलायता विसमचउवओणसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु—

एगे पुण एवमाहमु—

५ ता सव्या वि ण मडलायता समचउववात्तसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु,

एगे पुण एवमाहमु—

६ ता सव्या वि ण मडलायता विसमचउववात्त-मठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु—

एगे पुण एवमाहमु—

७ ता सव्या वि ण मडलायता चउवउववात्तसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु

एगे पुण एवमाहमु—

८ ता सव्या वि ण मडलायता उतागारसठिया पणत्ता, एगे एवमाहमु—

तत्प जे ते एवमाहमु—

ता सव्या वि ण मडलायता उतागारसठिया पणत्ता,

एएण णएण जादम्भ, णो सेव ण इपरेह । पाहुइगाहाओ भाणियप्पाओ ।



प्रथम प्रामृत

[अष्टम प्रामृतप्रामृत]

सूरस्त सव्वमडलाण बाहल्ल आयाम-विक्खम-परिक्खेव च

२० ता सव्वा वि ण मडलवया—

केवइय बाहल्लेण ?

केवइय आयाम-विक्खभेण ?

केवइय परिक्खेवेण ? आहितेति वदेज्जा ।

तत्थ खलु इमा तिण्णि पडिवत्तीओ पणत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु —

१—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण,

एग जोयणसहस्स एग तेत्तीस जोयणसय आयाम-विक्खभेण,

तिण्णि जोयणसहस्साइ तिण्णि य णवणउई जोयणसए परिक्खेवेण पणत्ता एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण

एग जोयणसहस्स एग च चउत्तीस जोयणसय आयाम विक्खभेण,

तिण्णि जोयणसहस्साइ चत्तारि विउत्तराइ जोयणसयाइ परिक्खेवेण पणत्ता, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु —

३—ता सव्वा वि ण मडलवया जोयण बाहल्लेण

एग जोयणसहस्स एग च पणत्तीस जोयणसय आयाम विक्खभेण,

तिण्णि जोयणसहस्साइ चत्तारि पचुत्तराइ जोयणसयाइ परिक्खेवेण पणत्ता, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो —

ता सव्वा वि ण मडलवया अडपालीस एगट्ठिभागे जोयणस्त बाहल्लेण,

अणियया आयाम विक्खम-परिक्खेवेण, आहितेति वदेज्जा,

सत्थ ण को हेऊ ? ति वदेज्जा ।

ता अय ण जवुहीवे दीवे सव्वदीय-समुद्दाण सव्वन्भतराए सव्वधुङ्गागे वट्ठे जाय जोयण-

सहस्तमायाम-विक्रमभेग, तिणिण जोयणसयसहस्ताइ, दोणिण य सत्तावीते जोयणसए, तिणिण होमे, अट्टावीस च घणुसय, तेरस य अगुलाइ, अट्टगुल च किंचि वितेसाहिए परिकमेवेणं पणाले,

१ ता जया ण सूरिए सव्वभतर मडल उयसकमित्ता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अट्टयात्तीस एगट्टिमाणे जोयणसस बाहल्लेण,

णवणउइ जोयणसहस्ताइ छच्च चत्ताले जोयणसयाइ धायाम विवयभेण,

तिणिण जोयणसयसहस्ताइ पण्णरस जोयणसहस्ताइ एगुणणउई जोयणाइ किंचि वितेसाहिए परिकमेवेण,*

तया ण उत्तमवट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते वियसे भवइ, जहणिया दुवात्तसमुहुत्ता राई पवइ ।

२ से निक्कम्ममाणे सूरिए णव सव्वच्छर अयमाणे पडमसि अट्टोरत्तसि अग्मितराणत्तं मडल उयसकमित्ता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अग्मितराणतर मडल उयसकमित्ता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अट्टयात्तीस एगट्टिमाणे जोयणसस बाहल्लेण,

णवणउई जोयणसहस्ताइ छच्च पणयाले जोयणसए पणत्तीस च एगट्टिमाणे जोयणाइ धायाम विवयभेण,

तिणिण जोयणसयसहस्ताइ पण्णरस जोयणसहस्ताइ एग चउत्तर जोयणसय किंचि वितेसाहिए परिकमेवेण,

१ सूत्रप्रति तया जम्बुद्वीपप्रति य सूत्रो म सूत्रमण्डलं वा धायाम-विच्छम्बं क्वा गता है किन्तु तदर्थं सूत्रं य नवन विच्छम्बं ही क्वा गता है । इतका गताधानं यत् है कि यत्ताकार का धायाम विच्छम्बं तयां हाणा है, सूत्रमण्डलं यत्ताकार है, अतः क्वचन विच्छम्बं क्वा मे धायाम धीर विच्छम्बं तोरो मय्यं मे चादिह ।

सूत्रप्रति में सूत्रमण्डलं का बाह्य एव योत्रनं च इवगट्टं भागां य म धरणातीमं भागं विजयां क्वा गता है ।

जम्बुद्वीपप्रति म सूत्रमण्डलं का बाह्य एव योत्रनं के इवगट्टं भागो म म धरणातीमं भागं विजयां क्वा गता है ।

इत दो प्रकार के बाह्य प्रमाणो म मे कीनं ता वास्तविक है यह शोध का विषय है ।

सूत्रप्रति म सूत्रमण्डलं का धायाम विच्छम्बं धीर परिधिं बाह्याभ्यन्तरं मण्डलों ही धारणां क्वा गता है तथा निवा है किन्तु जम्बुद्वीपप्रति में सूत्रमण्डलं का धायाम, विच्छम्बं धीर परिधिं क्वा गता मही निवी है ।

जम्बुद्वीपप्रति म सूत्रमण्डलं का धायाम विच्छम्बं धीर परिधिं ता क्वा है यह धारणां का क्वा मण्डलों ही है ? क्वोचि सूत्रप्रति में क्वचन बाह्याभ्यन्तरं मण्डलों के धायाम विच्छम्बं धारणां के जम्बुद्वीप प्रतिक्रिये धायाम विच्छम्बं परिधिं का प्रमाणं विजयां क्वा है ।

तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहि एगट्टिभागमुहुत्तोह ऊणे,
दुवालसमुहुत्ता राई भवइ दोहि एगट्टिभागमुहुत्तोह अहिया,

३ से निवखम्ममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अग्मितर तच्चं मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए अग्मितर तच्चं मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्टिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,

णयणउइ जोयणसहस्साइ छच्च एकावन्ने जोयणसए णव य एगट्टिभागे जोयणस्स प्रायाम-
विषखभेण,

तिणिण जोयणसयसहस्साइ पण्णरस जोयणसहस्साइ एग च पणवोस जोयणसय परिवत्तेवेण
पण्णत्ते,

तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगट्टिभागमुहुत्तोह ऊणे,

दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहि एगट्टिभागमुहुत्तोह अहिया,

४ एव एल्लु एएण उवाएण निवखम्ममाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल
सकममाणे सकममाणे पच पच जोयणाइ पणतोस च एगट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले विषखभवुड्डि
अभिवड्डेमाणे अभिवड्डेमाणे अट्टारस अट्टारस जोयणाइ परिरयवुड्डि अभिवड्डेमाणे अभिवड्डेमाणे
सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्टिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,

एग च जोयणसयसहस्साह छच्चसट्ठे जोयणसए प्रायामविषखभेण,

तिणिण जोयणसयसहस्स अट्टारस सहस्साइ तिणिण य पण्णरसुत्तरे जोयणसए परिवत्तेवेण,

तया ण उत्तमकट्टुपेत्ते उषकोसिमा अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणिए दुवालसमुहुत्ते
दिवसे भवइ,

एस ण पढमे छम्मासे एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे,

१ से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणतर मडल
उवसकमिता चार चरइ,

ता जया ण सूरिए बाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ,

तया ण सा मडलवया अडयालीस एगट्टिभागे जोयणस्स बाहल्लेण,

एग जोयणसयसहस्स छच्च चउप्पणे जोयणसए छव्वोस च एगट्टिभागे जोयणस्स प्रायाम-
विषखभेण,

तिणिण जोयणसयसहस्साइ अट्टारस सहस्साइ दोणिण य सत्ताणउए जोयणसए परिवत्तेवेण
पण्णत्ते,

तथा ण अट्टारसमुहता राई भयइ दोहि एगट्टिभागमुहत्तेहि ऊणा,
दुयालसमुहत्ते दिवसे भयइ, दोहि एगट्टिभागमुहत्तेहि अहिए,

२ से पयिसमाणे मूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उयसकमिता चार चरा
ता जया ण मूरिए बाहिर तच्च मडल उयसकमिता चार चरइ,
तथा ण सा मडलवया अट्टयालीस एगट्टिभागे जोयणस बाहत्तेण,
एग जोयणसयसहत्स छच्च अट्टयाले जोयणसए चायण च एगट्टिभागे जोयणस बायम
विषयभेण,

निणिण जोयणसयसहत्साइ अट्टारसहत्साइ दोणिण य एगुणामीण जोयणसए परिवणरत्त
पणत्ते,

तथा ण अट्टारसमुहता राई भयइ चर्जाहि एगट्टिभागमुहत्तेहि ऊणा,
दुयालसमुहत्ते दिवसे भयइ चर्जाहि एगट्टिभागमुहत्तेहि अहिए,

एय एतु एएण उयाएण पयिसमाणे मूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल
मासमाणे सवसमाणे पच पच जोयणाइ पणतीस च एगट्टिभागे जोयणस एगमेगे मडले विषयभयुं
निवुड्डेमाणे निवुड्डेमाणे अट्टारस जोयणाइ परिवयसिइ निवुड्डेमाणे निवुड्डेमाणे सवसभतर
मडल उयसकमिता चार चरइ,

ता जया ण मूरिए मव्यभतर मडल उयसकमिता चार चरइ,

तथा ण सा मडलवया अट्टयालीस एगट्टिभागे जोयणस बाहत्तेण,

पवणउइ जोयणसहत्साइ छच्च चत्ताले जोयणसए बायाम विषयभेण,

तिणिण जोयणसयसहत्साइ पणारसहत्साइ एगुणउइ च जोयणाइ किचि विगेताहि
परिवगेण पणत्ते,

तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवरोत्तए अट्टारसमुहत्ते दिवसे भयइ अट्टिणिया दुयालसमुहता
राई भयइ,

एग ण दोच्चे छम्मासे, एम ण दोच्चसि छम्मासम पजयताणे,

एग ण आइच्चे सवचरे एम ण आइच्चसि सवचरस पजयताणे ।

मव्यमूरमडलाण बाहत्स अतर अट्टा पमाण च

ता मव्या पि ण मडलवया अट्टयालीस च एगट्टिभागे जोयणस बाहत्तेण,

माया पि ण मडलतरिया हो जोयणाइ विषयभेण,

एस ण अट्टा तंगीय मवपट्टपण पचसमुत्त मायसम बाहिए ति वाग्गजा,

ता अम्भितराओ मडलवयाओ बाहिर मडलवय बाहिराओ वा मडलवयाओ अम्भितर
मडलवय, एस ण अट्ठा केवइय आहिण्णं त्ति वदेज्जा ?

ता पचदसुत्तरे जोयणसए आहिण्णं त्ति वएज्जा,

अम्भितराए मडलवयाए बाहिरा मडलवया—एस ण अट्ठा केवइय आहिण्णं त्ति वएज्जा ?

ता पचदसुत्तरे जोयणसए अट्ठयालीस च एगट्ठिभागे जोयणस्स अहिया,

ता अम्भितराओ मडलवयाओ बाहिरमडलवया बाहिराओ मडलवयाओ अम्भितर-
मडलवया - एस ण अट्ठा केवइय आहिण्णं त्ति वदेज्जा ?

ता पचनवुत्तरे जोयणसए तेरस एगट्ठिभागे जोयणस्स आहिण्णं त्ति वदेज्जा,

अम्भितराओ मडलवयाओ बाहिरा मडलवया, बाहिराए मडलवयाए अम्भितर-मडलवया—
एस ण अट्ठा केवइया आहिण्णं त्ति वदेज्जा ?

ता पचदसुत्तरे जोयणसए आहिण्णं त्ति वदेज्जा ।



द्वितीय प्रामृत

[प्रथम प्रामृतप्रामृत]

मूराण तेरिच्छगई

२१ ता बह ते तेरिच्छगई आहिए ? ति वएग्जा ।

तत्य चलु इमाओ अठु पडिवत्तोओ पणाताओ, त जहा—

तत्पेगे एवमाहमु—

१ ता पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मरोओ आगासति उटठेइ, ते न इम सोप तिरियं बरेइ, बरिता पच्चत्थिमसि सोपतति सायमि आगासति विडसइ एगे एवमाहमु ।

एगे पुण एवमाहमु—

२ ता पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए आगासति उटठेइ, ते न इम सोप तिरियं बरेइ, बरिता पच्चत्थिमसि सोपतति साय मूरिए आगासति विडसइ एगे एवमाहमु ।

एगे पुण एवमाहमु—

३ ता पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए आगासति उटठेइ, ते न इम सोप तिरियं बरेइ, बरिता पच्चत्थिमसि सोपतति साय मूरिए आगास अणुपवितइ, अणुपवितित्ता अट्टे पडियाणच्छ पडियाणच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए आगासति उटठेइ एगे एवमाहमु ।

एगे पुण एवमाहमु—

४ ता पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए पुडविओ उटठेइ, ते न इम तिरियं बरेइ, बरिता पच्चत्थिमसि सोपतति साय मूरिए पुडविओवति विडसइ, एगे एवमाहमु ।

एगे पुण एवमाहमु—

५ ता पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए, पुडवीओ उटठेइ, ते न इम सोप तिरियं बरेइ, बरिता पच्चत्थिमसि सोपतति साय मूरिए पुडविओवति अणुपवितइ अणुपवितित्ता अट्टे पडियाणच्छ पडियाणच्छित्ता पुणरवि अवरभू-पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए पुडवीओ उटठेइ एगे एवमाहमु ।

एगे पुण एवमाहमु—

६ ता पुरतियमाओ सोपताओ पाओ मूरिए आउवापमि उटठेइ, ते न इम साय तिरियं बरेइ, बरिता पच्चत्थिमसि सोपतति साय मूरिए आउवापमि विडसइ एगे एवमाहमु ।

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता पुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, से ण इम लोय तिरिय करेइ करित्ता पच्चत्थिमसि लोयतसि साय सूरिए आउकायसि पविसइ, पविसित्ता अहे पडियागच्छइ पडियागच्छित्ता पुणरवि अवरभू पुरत्थिमाओ लोयताओ पाओ सूरिए आउओ उट्ठेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

८ ता पुरत्थिमाओ लोयताओ बहइ जोयणाइ बहइ जोयणसयाइ बहइ जोयणसहस्साइ उड्ड दूर उप्पइत्ता एत्य ण पाओ सूरिए आगाससि उट्ठेइ, से ण इम दाहिणइ लोय तिरिय करेइ, करित्ता उत्तरइ लोय तमेव राओ, से ण इम उत्तरइ लोय तिरिय करेइ, करित्ता दाहिणइ लोय तमेव राओ, से ण इमाइ दाहिण-उत्तरइ लोयाइ तिरिय करेइ, करित्ता पुरत्थिमाओ लोयताओ बहइ जोयणाइ बहइ जोयणसयाइ, बहइ जोयणसहस्साइ उड्ड दूर उप्पइत्ता, एत्य ण पाओ सूरिए आगाससि उट्ठेइ, एगे एवमाहसु ।

वय पुण एय वयामो—

ता जबुद्धीवस्स दीवस्स पाईण पडोणायय उदीण दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता दाहिण पुरत्थिमसि उत्तर पच्चत्थिमसि य चउव्वभाग मडलसि इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए बहसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसयाइ उड्ड उप्पइत्ता एत्य ण पाओ दुवे सरिया आगासाओ उत्तिट्ठति,

ते ण इमाइ दाहिणुत्तराइ जबुद्धीव भागाइ तिरिय करेति, करेत्तिता पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइ जबुद्धीव भागाइ तामेव राओ,

ते ण इमाइ पुरत्थिम पच्चत्थिमाइ जबुद्धीवभागाइ तिरिय करेति, करेत्तिता दाहिणुत्तराइ जबुद्धीवभागाइ तामेव राओ,

ते ण इमाइ दाहिणुत्तराइ पुरत्थिम-पच्चत्थिमाइ जबुद्धीवभागाइ तिरिय करेति, करेत्तिता जबुद्धीवस्स दीवस्स पाईण पडोणायय-उदीण दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता दाहिण पुरत्थिमसि उत्तर पच्चत्थिमसि य चउव्वभाग-मडलसि इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए बहसमर-मणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठ जोयणसयाइ उड्ड उप्पइत्ता एत्य ण पाओ दुवे सरिया आगाससि उत्तिट्ठति ।



द्वितीय प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्त मडलाओ मडलातर-सकमण

२२ ता बहु ने मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए धार धारइ धारिए ? ति यएउजा,

तत्य धनु इमाओ दुवे पडियतोओ पणताओ त जहा—

तत्येगे एवमाहमु—

१ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयघाएण गकागइ, एगे एवमाहमु,

एगे पुण एवमाहमु—

२ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ, एगे एवमाहमु,

तत्य ण जे ते एवमाहमु—

१ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयघाएण^१ गकागइ, तेति ण झय

बोते,

“ता जेणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे भेयघाएण सकमइ एवइय ष णं धउं पुरओ न गच्छइ, पुरओ पुरओ भ्रगच्छमाणे मडलवाल परिह्वेइ^२” तेति ण झय बोमे ।

तत्य ण जे ते एवमाहमु—

२ ता मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ, तेति षं झय वितोते,

ता जेणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कणाकल^३ नित्येडेइ, एवइय ष षं झउं पुरओ

गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मडलवाल न परिह्वेइ, तेति ण झय वितोते,

तत्य ण जे ते एवमाहमु -

मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ एएण णएण षेयउं, षो षेय ष इयरेण

१ मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयघाएण गकागइ, एगे एवमाहमु, एगे पुण एवमाहमु—
 २ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ, एगे एवमाहमु, तत्य ण जे ते एवमाहमु—
 ३ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कणाकल^३ नित्येडेइ, एवइय ष षं झउं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मडलवाल न परिह्वेइ, तेति ण झय वितोते,
 तत्य ण जे ते एवमाहमु -
 मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ एएण णएण षेयउं, षो षेय ष इयरेण
 १ मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयघाएण गकागइ, एगे एवमाहमु, एगे पुण एवमाहमु—
 २ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ, एगे एवमाहमु, तत्य ण जे ते एवमाहमु—
 ३ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कणाकल^३ नित्येडेइ, एवइय ष षं झउं पुरओ गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मडलवाल न परिह्वेइ, तेति ण झय वितोते,
 तत्य ण जे ते एवमाहमु -
 मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कणाकल नित्येडेइ एएण णएण षेयउं, षो षेय ष इयरेण

द्वितीय प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मुहुत्त-गइ-पमाण

२३ ता केवइय ते तेत्त सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ? आहिए ति वएज्जा ।

तत्थ खलु इमाओ चत्तारि पडिबत्तीओ पणत्ताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु —

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु —

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण, मुहुत्तेण गच्छइ,

एगे एवमाहसु ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वम्भतर मडल उवसकमिक्का चार चरइ, तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवयोसए

अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि एग जोयणसयसहस्स अट्ट य जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिक्का चार चरइ तथा ण उत्तमकट्टपत्ता

उवयोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ जहनए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च दिवससि वावत्तारि जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते, तथा ण छ छ जोयणसहस्साइ

सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्वम्भतर मडल उवसकमिक्का चार चरइ तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवयोसए

अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

द्वितीय प्राभृत

[द्वितीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मडलाओ मडलातर-सकमण

२२ ता कह ते मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए चार चरइ ब्राहिए ? ति वएज्जा,

तत्य खलु इमाओ दुवे पडिवतीओ पणत्ताओ त जहा—
तत्येगे एवमाहसु—

१ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयघाएण सकामइ, एगे एवमाहंसु,
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए कण्णकल निव्वेडेइ, एगे एवमाहसु,
तत्य ण जे ते एवमाहसु—

१ ता मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे सूरिए भेयघाएण^१ सकामइ, तेसि ण अय बोसे,

“ता जेणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे सकममाणे भेयघाएण सकामइ एवंइय च ण अइ पुरओ न गच्छइ, पुरओ पुरओ अगच्छमाणे मडलकाल परिह्वेइ” तेसि ण अय बोसे ।

तत्य ण जे ते एवमाहसु—

२ ता मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कण्णकल निव्वेडेइ, तेसि ण अय विसेसे,
ता जेणतरेण मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कण्णकल^२ निव्वेडेइ, एवइय च ण अइ पुरओ

गच्छइ, पुरओ गच्छमाणे मडलकाल न परिह्वेइ, तेसि ण अय विसेसे,

तत्य ण जे ते एवमाहसु—

मडलाओ मडल सकममाणे सूरिए कण्णकल निव्वेडेइ एएण णएण पोयव्व, णो चेव ण इयरेण,

१ मण्डलादपरमण्डल सत्रामन् सत्रमितुमिच्छन् सूर्यो भेदघातन सत्रामति, भेदो मण्डलस्य मण्डलस्वापातरालं तत्र घातो—गमन, एतच्च प्रागवाप्त, तेन सत्रामति किमुक्त भवति ? विप्रदिशे मण्डले सूर्येणापूरितं सति तद तरमपा तरालगमनं द्वितीय मण्डल सत्रामति सत्रम्य च तस्मिन् मण्डले चार चरति ।

२ मण्डला मण्डल सत्रामान् सत्रमितुमिच्छन् सूर्यस्तदधिष्ठित मण्डलं प्रथमशणादूर्ध्वमारभ्य कण कल निर्वेष्टयति मुचति

इयमत्र भावना- भारत ऐरावता या सूर्य स्व-स्वस्थाने उद्भव

सन् अपरमण्डलगत कर्णं प्रथमबौटिभागरूप लक्ष्मीरूप शनैः शनरधिष्ठित

मण्डल तथा कयाचनापि कल्पया मुचन चार चरति^१ या तस्मिन्प्रहोरात्रेऽनित्रान्तं सति अपरान तरमण्डलस्यारभ्य वतत इति ।

कणकलमिति च श्रियाविशेषण द्रष्टव्य तच्चैव भावनीय—कर्णं-अपरमण्डलगतप्रथमबौटिभागरूप सूर्यो दृश्याधिष्ठितमण्डलं प्रथमशणादूर्ध्व एते क्षण कल्पयाऽनित्रान्तं यथा भवति तथा निर्वेष्टयतीति । —सूर्य टीका

द्वितीय प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

सूरस्स मुहुत्त-गइ-पमाण

२३ ता केवइय ते तेत्त सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ? आहिए त्ति वएज्जा ।
तत्थ खलु इमाओ वत्तारि पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

तत्थेये एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण, मुहुत्तेण गच्छइ,

एगे एवमाहसु ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(१) ता छ छ जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ, तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोत्तए

अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया बुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि एग जोयणसहस्साइ अट्ट य जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण उत्तमकट्टपत्ता

उवकोत्तिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ जहनए बुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च दिवससि वावत्तारि जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पण्णत्ते, तथा ण छ जोयणसहस्साइ

सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

(२) ता पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोत्तए

अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया बुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि नउइ जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तथा ण उत्तमवट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च ण दिवससि सत्तिंठ्ठि जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते, तथा ण पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्य ण जे ते एवमाहसु—

(३) ता चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तथा ण उत्तमवट्टपत्ता उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि वावत्तारि जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ तथा ण उत्तमवट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च ण दिवससि अडयालीस जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते, तथा ण चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तत्य ण जे ते एवमाहसु—

(४) ता छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, ते एवमाहसु—

ता सूरिए ण उगमणमुहुत्तसि य, अत्यमणमुहुत्तसि य सिन्धगई भवइ, तथा ण छ छ जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

मज्झिम तावक्खेत्ते समासाएमाणे समासाएमाणे सूरिए मज्झिमगई भवइ, तथा ण पच पच जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

मज्झिम तावक्खेत्ते सपत्ते सूरिए मदगई भवइ, तथा ण चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइ एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ तथा ण उत्तमकट्ठे उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च दिवससि एक्काणउइ जोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तथा ण उत्तमवट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

तसि च ण दिवससि एगट्ठिजोयणसहस्साइ तावक्खेत्ते पणत्ते तथा ण छ वि, पच वि, चत्तारि वि जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ, एगे एवमाहसु ।

वय पुण एव वयामो—

ता साइरेगाइ पच पच जोयणसहस्साइ सूरिए एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

प्र — तस्य को हेऊ ? त्ति वएज्जा ।

उ — ता अयण जवुहीवे दीवे सव्वदीव-समुद्धान मव्वभतराए सव्वखुड्डागे वट्ठे जाव जोयणसयसहस्समायाम-विकखभेण, तिन्नि जोयणसयसहस्साइ दोनि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि कोमे, अट्टावीस च धणुसय, तेरस य अगुलाई, अद्दगुल च किच्चिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

ता जया ण सूरिए सव्वभतर मडल उवसकमिक्का चार चरइ तथा ण पच पच जोयण-सहस्साइ दोणि य एक्कावण्णे जोयणसयाइ एगूणतीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स मीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहिं य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागोहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवात्तसमुहुत्ता राई भवइ ।

से निक्खममाणे सूरिए णव सवच्छर अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि अग्निभतराणतर मडल उवसकमिक्का चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अग्निभतराणतर मडल उवसकमिक्का चार चरइ, तथा ण पच पच जोयणसहस्साइ दोणि य एक्कावण्णे जोयणसए सीयालीस च सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणासीए य जोयणसए सत्तावण्णाए सट्ठिभाएहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता एगूणवीसाए चुण्णिआभागोहिं सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ दोहिं एगट्ठिभाग मुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवात्तसमुहुत्ता राई भवइ दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया ।

से निक्खममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अग्निभतर तच्च मडल उवसकमिक्का चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अग्निभतर तच्च मडल उवसकमिक्का चार चरइ, तथा ण पच पच जोयणसहस्साइ दोणि य बावण्णे जोयणसए पच य सट्ठिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहुत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउईए य जोयणोहिं नेत्तीसाए य सट्ठिभागोहिं जोयणस्स सट्ठिभाग च एगट्ठिहा छेत्ता दोहिं चुण्णिआभागोहिं सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे ।

दुवालसमुहृत्ता राई भवइ, चर्जाह एगट्टिभागमुहृत्तेहिं अरहिया ।

एव खलु एएण उवाएण निक्खममाणे सूरिए तयाणत्तगओ मडलाओ तयाणत्तर मडल सवममाणे सकममाणे अट्टारस अट्टारस सट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले मुहृत्तगइ अभिवुडडेमाण अभिवुटडेमाणे चुलसीइ चुलसीइ सीयाइ जोयणाइ पुरिसच्छाय निच्चुडडेमाणे निच्चुडडेमाणे सव्ववाहिर मडल उवसकमिक्का चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिक्का चार चरइ तया ण पच पच जोयण सहस्साइ तिन्नि य पचुत्तरे जोयणसए पण्णरस य सट्टिभागे जोयणस्स एगमेगेण मुहृत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्टाहिं एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए य सट्टिभाएहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ ।

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उक्कोसिया अट्टारसमुहृत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसेमुहृत्ते दिवसे भवइ ।

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि बाहिराणत्तर मडल उवसकमिक्का चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए बाहिराणत्तर मडल उवसकमिक्का चार चरइ, तया ण पच पच जोयण सहस्साइ तिण्णि य चउरत्तरे जोयणसए सत्तावण्ण च सट्टिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहृत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहिं य सोत्तमुत्तरेहिं जोयणसएहिं एगूणचत्तालीसाए सट्टिभागोहिं जोयणस्स सट्टिभाग च एगट्टिहा छेत्ता सट्टीए चुण्णिया भागेहिं, सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ ।

तया ण अट्टारसमुहृत्ता राई भवइ, दोहिं एगट्टिभागमुहृत्तेहिं ऊणा ।

दुवालसमुहृत्ते दिवसे भवइ, दोहिं एगट्टिभागमुहृत्तेहिं अरहिए ।

से पविसमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि बाहिर तच्च मडल उवसकमिक्का चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए बाहिर तच्च मडल उवसकमिक्का चार चरइ, तया ण पच पच जोयण सहस्साइ तिन्नि य चउरत्तरे जोयणसए एगूणचत्तालीस च सट्टिभाए जोयणस्स एगमेगेण मुहृत्तेण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स एगाहिंएहिं वत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एगूणपण्णाए य सट्टिभाएहिं जोयणस्स सट्टिभाग च एगट्टिहा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ ।

तया ण अट्टारसमुहृत्ता राई भवइ चर्जाह एगट्टिभागमुहृत्तेहिं ऊणा ।

दुवालसमुहृत्ते दिवसे भवइ चर्जाह एगट्टिभागमुहृत्तेहिं अरहिए ।

एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे अट्टारस अट्टारस मट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे मडले मुहुत्तगइ निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे साइरेगाइ पचासीइ पचासीइ जोयणाइ पुरिसच्छाय अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्ववभतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए सव्ववभतर मडल उवसकमित्ता चार चरइ तया ण पच पच जोयणसहस्साइ दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अट्टतीस च सट्टिभागे जोयणस्स एगमेगे ण मुहुत्ते ण गच्छइ ।

तया ण इहगयस्स मणूसस्स सीयात्तीसाए जोयणसहस्सेहिं शोहिं य दोवट्ठोहिं जोयणसएहिं य एक्कवीसाए य सट्टिभागोहिं जोयणस्स सूरिए चवखुप्फास हव्वमागच्छइ ।

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



तृतीय प्राभृत

चदिम-सूरियाण ओभासखेत्त उज्जोयखेत्त तावखेत्त पगासखेत्त च

२४ प -ता षेवइय खेत्त चदिम-सूरिया ओभासति, उज्जोवेति तवेति पगासेति ? आहिएत्ति वएज्जा,

उ तत्य छलु इमाओ वारस पडिचत्तीओ पणत्ताओ त जहा—
तत्येगे एवमाहसु—

१ ता एग दीव एग समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति उज्जोवेति तवेति, पगासेति^१ एगे
एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता तिण्णि दीवे, तिण्णि समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति जाव पगासेति एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

३ ता अद्दचउत्थे दीवे, अद्दचउत्थे समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति जाव पगासेति, एगे
एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता सत्तदीवे, सत्तसमुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति, जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

५ ता दसदीवे, दससमुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

६ ता वारसदीवे, वारससमुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति, जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

७ ता बायालीस दीवे, बायालीस समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति जाव पगासेति एगे
एवमाहसु,

१ अत्रभासयन्ति, तत्रावभासो गानस्यापि व्यवहियते अतस्त्नद्व्यवच्छेदायमाह-उद्योतयति, स जोद्योतो यद्यपि सोवे भेदेन प्रसिद्धो यथा सूयगत धातप इति च-द्रगत प्रकाश इति तथाप्यातपशब्दश्च द्रप्रभायामपि वतते, मद्रुतम् 'त्रिक्रा वीमुनी ज्वात्सना, तथा च-द्रगत स्मृत इति' प्रकाशश्च सूयप्रभायामपि, एतच्च प्रायो बहूना मुप्रतीत-तन एतदथप्रतिपत्त्यधुमयसाधारण भूयोऽप्येवापवद्वयमाह सापयन्ति प्रकाशयति आर्यायाता इति ।

एगे पुण एवमाहसु—

८ ता वावत्तरि दीवे, वावत्तरि समुद्दे चदिम-सूरिया ओभासेति जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु,

९ ता बायालीस दीवसय बायालीस समुद्दसय चदिम-सूरिया ओभासति जाव पगासेति, एगे एवमाहसु—

एगे पुण एवमाहसु—

१० ता वावत्तरि दीवसय वावत्तरि समुद्दसय चदिम-सूरिया ओभासेति, जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

११ ता बायालीस दीवसहस्स, बायालीस समुद्दसहस्स चदिम-सूरिया ओभासेति जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१२ ता वावत्तर दीवसहस्स, वावत्तर समुद्दसहस्स चदिम-सूरिया ओभासति जाव पगासेति, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो—

ता अय ण जवुद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाण सव्वन्भतराए सव्वएउद्दामे वट्टे जाव जोयणसय-सहस्समायाम—विषखभे ण तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्टावीस च धणुसप, तेस्स य अगुलाइ अट्टगुल च किंचि वित्तेसाहिए परिषेवेण पणत्ते,

से ण एगाए जगईए सव्वओ समता सपरिविषत्ते सा ण जगई अट्ट-जोयणाइ उड्ड उच्चत्तेण पणत्ता,

एव जहा जवुद्दीवपणत्तीए जाव,^१

एवामेव सपुच्चावरे ण जवुद्दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पण च सलिलासहस्सा भवतीति-मख्खाय,

जवुद्दीवे ण दीवे पच चक्कमागसठिए ? आहिएत्ति वएज्जा,

प—ता कह जवुद्दीवे दीवे पच चक्कमागसठिए ? आहिए त्ति वएज्जा,

१ जम्बूद्वीपप्रतिपत्ति व प्रथम वगम्कार सूत्राव ४ स पल्ल वक्षन्तरार सूत्रान १२५ पयन्त व सभो सूत्रो व पाठ यहाँ समझने की सूचना है ।

उ—ता जया ण एए दुये सूरिया सव्वभतर मडल उवसकमिता चार चरति तया ण जवुहीवस्स दीवस्स तिण्णि पच्च चक्कभागे ओभासेति जाव पगासेति, त जहा—

ता एगे वि सूरिए एग दिवडड पच्च चक्कभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एग दिवडड पच्च चक्कभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवमे भवइ जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ,

ता जया ण एए दुये सूरिया सव्वबाहिर मडल उवसकमिता चार चरति तया ण जवुहीवस्स दीवस्स दोण्णि पच्च चक्कभागे ओभासेति जाव पगासेति,

ता एगे वि सूरिए एग पच्च चक्कवालभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

ता एगे वि सूरिए एग पच्च चक्कवालभाग ओभासेइ जाव पगासेइ,

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उवकोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ जहणिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।



चतुर्थ प्राभृत

सेयाते सठिई

प —ता कह ते सेआते^१ सठिई^२ आहिताति बदेज्जा ?

उ —तत्य खलु इमा दुविहा सठिती पणत्ता, त जहा—

१ —चदिम-सूरियसठिती य ।

२ —तावखेत्तसठिती य ।

चदिम-सूरियसठिई

प —ता कह ते चदिम सूरियसठितो आहिताति बदेज्जा ?

उ —तत्य खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पणत्ताओ ।

१ —तत्येगे एवमाहसु—

ता समचउरससठिया चदिम सूरियसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

२ —एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचउरससठिया चदिम-सूरियसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

३ —एगे पुण एवमाहसु—

ता समचउयकोणसठिया चदिम सूरियसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

४ —एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचउक्कोणसठिया चदिम-सूरियसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

५ —एगे पुण एवमाहसु—

ता समचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

६ —एगे पुण एवमाहसु—

ता विसमचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

१ वत्तिकार ने श्वेतता' की व्याख्या इस प्रकार की है—

इह श्वेतता चन्द्र-सूयविमानानामपि विद्यते तत्कृततापक्षेऽस्य च तत श्वेततायोगादुभयमपि श्वेतताणो नोच्यते ।

२ चन्द्र-सूय विमाना के सस्थान प्रापत्र बहे गये हैं । अतः चन्द्र-सूय विमानों की स्थिति के सम्बन्ध में प्रश्नकर्ता के अभिप्राय का स्पष्टीकरण वत्तिकार ने इस प्रकार किया है—

'इह चन्द्र-सूयविमानाना सस्थानम्पा सस्थिति प्रागवाभिहिता तन इह चन्द्र-सूयविमान-संस्थितिवचुपर्यापि श्वेत्यनरूपा पृष्ठा द्रष्टव्या ।'

- ७ — एगे पुण एवमाहसु—
ता चक्कद्वचक्कवालसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु ।
- ८ — एगे पुण एवमाहसु—
ता छत्तागारसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु ।
- ९ — एगे पुण एवमाहसु—
ता गेहसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १० — एगे पुण एवमाहसु—
ता गेहावणसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु,
- ११ — एगे पुण एवमाहसु—
ता पासायसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु,
- १२ — एगे पुण एवमाहसु—
ता गोपुरसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु,
- १३ — एगे पुण एवमाहसु—
ता पेच्छाघरसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु,
- १४ — एगे पुण एवमाहसु—
ता बलभोसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु,
- १५ — एगे पुण एवमाहसु—
ता हम्मियतलसठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु,
- १६ — एगे पुण एवमाहसु—
ता बालगपोतियासठिया^१ चदिम-सूरियसठितो पणत्ता, एगे एवमाहसु ।
तत्य जे ते एवमाहसु—
ता समचउरस-सठिया चदिम-सूरियसठितो पणत्ता,
एएण णएण णेयध्व णो चेव ण इयरेहि^२ ।

१ वामाप्रपोतिकाशब्दे दशीशब्दत्वात्कागतभागमध्य व्यवस्थित श्रीढा-स्नान लघुप्रासादम् । --सूय बति
२ परतीपिका की इन सोलह प्रतिपत्तिया म स नवल एक प्रतिपत्ति सूत्रकार की मायतातुगार है—इत विषय में
वृत्तिकार का कथन यह है—
'तत्पेत्पादि-नत्र तेषां पाठशानां परतीपिकाना मध्ये ये त वाग्नि एवमाहू'—समचतुरंगसरिता चन्दमूय-
सस्थिति प्रगप्ता इति,
एतेन नयेन नेतव्य एतनाभिप्रायेणास्म मनेऽपि चन्द्र-सूयसम्बन्धिनिरवधार्येति भाव , तथाहि—'इह सर्वेऽपि
बालविशेषा सुयमगुयमान्यो युगमूला ।
(नेप चमते पृष्ठ पर)

सूरियस्स तावक्खेत्तसठिती

प —ता कह ते तावक्खेत्तसठिती ? आहिइत्ति वएज्जा ।

उ —तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिबत्तीओ पणत्ताओ, त जहा—तत्थ ण -

१ —एगे एवमाहसु—

ता गेहसठिता तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

२ —एगे पुण एवमाहसु—

गेहावणसठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

३ —एगे पुण एवमाहसु—

पासायसठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

४ —एगे पुण एवमाहसु—

गोपुरसठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

५ —एगे पुण एवमाहसु—

पिच्छाघरसठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

६ —एगे पुण एवमाहसु—

वलभीसठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

७ —एगे पुण एवमाहसु—

हम्मियतलसठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

८ —एगे पुण एवमाहसु—

बालगपोतियासठिया तावक्खेत्तसठिती पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

युगस्य चादौ श्रावणे मास बहुलपक्षप्रतिपदि प्रातरुदयसमय एवसूर्या दक्षिणपूर्वस्या दिशि वतते, तदद्वितीमस्त्व-
परोत्तरस्या,

चन्द्रमा अपि तत्समये एको दक्षिणापरस्या दिशि वतत, द्वितीय उत्तरपूर्वस्यामत एतेष युगस्यादौ चन्द्र सूर्या
समचतुरस्रसंस्थिता वतते ।

यत्त्वन मण्डलकृत्न वषम्य यथा सूर्या सर्वाभ्यन्तरमण्डले वतते, चन्द्रमसौ सबवात्से इति तदल्पमितिवृत्वा न
विवक्ष्यते ।

तदेव यत सकलकालविशेषाणा सुपमासुपमादिस्पाणामादिभूतस्य युगस्यादौ समचतुरस्रसंस्थिना सूर्य-चन्द्रमसौ
भवंति, ततस्तथा संस्थितिं समचतुरस्रसंस्थानेनोपवर्णिता, अथवा वा यथासम्प्रदाय समचतुरस्रसंस्थितिं
परिभाषनीयति ।

नो चेव ण इयरेहि ति—नो चेव नव इतरं—शेषेनयैश्चन्द्र-सूर्यसंस्थितिर्भाष्या

तेषा मिथ्यारूपत्वात् तदेवमुक्ता चन्द्र मूपसंस्थिति ।

- ९ — एगे पुण एवमाहसु—
जस्सठिए जवुट्टीवे तस्सठिए तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १० — एगे पुण एवमाहसु ।
जस्सठिए भारहे वासे तस्सठिए तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- ११ — एगे पुण एवमाहसु—
उज्जाणसठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १२ — एगे पुण एवमाहसु—
निज्जाणसठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १३ — एगे पुण एवमाहसु—
एगधो गिसधसठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १४ — एगे पुण एवमाहसु—
दुह्मो गिसधसठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १५ — एगे पुण एवमाहसु—
सेयणगसठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
- १६ — एगे पुण एवमाहसु—
सेयणगपट्टसठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता एगे एवमाहसु ।
यय पुण एव वदामो—
ता उट्ठीमुहकल्लुवुआपुप्फनठिया तावक्खेत्तसठित्ती पण्णत्ता ।
अतो सकुच्चिया, वाहि वित्थडा ।
अतो वट्टा, वाहि पिधुला ।
अतो अकमुहसठिया,^१ वाहि सत्थियमुहसठिया ।^२

तावक्खेत्तसठिइए दुवे बाहाओ

उभओ वासेण तीसे दुवे वाहाओ भवट्टियाओ^३ भवति, पणयालीस पणयालीस जोयणसरहसाइ
आयामेण ।

१ अतर्भेदविधि अंन पघातनोपविष्टस्वोत्सगरूप आसननघ तस्य मुग्र घटभागोद्धवलमाहारत्तस्येव सस्थितं सस्याय यस्य सा ।

२ तथा बहिलवपविधि स्वस्तिरमुग्रसस्थिता, स्वस्तिव सुप्रतीत तस्य मुग्रम् ध्रुवभाग तस्येवानिविस्तीर्णतमा सस्थित-सस्याय मस्या सा ।

३ 'य दे बाहे त आयामेन-जम्बुद्वीपगतमायाममार्जित्यावस्थित भवत । गूरिय सति

तीसे दुवे बाह्याभ्रो अणवद्विभ्रो^१ भवति, त जहा—

१ —सव्वन्नतरिया चेव बाहा ।

२ —सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

प —तत्तय को हेउ त्ति ? वएज्जा ।

उ —ता अयण्ण जवुद्दीवे दीवे—

सव्वदीव समुद्दाण सव्वन्नतरिया, सव्वसुद्धाए ।

वट्ठे तेत्तापूय-सठाण-सठिए ।

वट्ठे रहक्कवाल सठाण सठिए ।

वट्ठे पुक्खरकणिया-सठाण सठिए ।

वट्ठे पडिपुण्णचद-सठाण-सठिए ।

एग जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण ।

तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि य कोसे, अट्ठावीस च धणुसय, तेरस अणुलाइ अद्द गुल च किंचि विसेसाहिय परिवलेवेण पण्णत्ते ।

तावक्खेत्तसठिइए परिवलेवो

ता जया ण सुरिए सव्वन्नतर मडल उवसकमिता चार चरति, तया ण उट्ठीमुहकलबुभ्रा पुप्फसठिया तावक्खेत्तसठिइं आहिताति वएज्जा, अतो सकुडा, बाहि वित्यडा, अतो वट्ठा, बाहि पि थुला, अतो अकमुहसठिया, बाहि सत्थियमुहसठिया, दुहभ्रो पासेण तीसे तहेव जाव सव्वबाहिरिया चेव बाहा ।

(क) तीसे ण सव्वन्नतरिया बाहा = मदरपव्वय तेण णव जोयणसहस्साइ चत्तारि य छलसीए जोयणसए णव य दसभागे जोयणस्स परिवलेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प —ता से ण परिवलेवविसेसे कम्मो ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ —ता जे ण मदरस्स पव्वयस्स परिवलेवे त परिवलेव, तिहिं गुणित्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे = एस ण परिवलेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

१ 'द्वे च बाहे अणवस्थिते भवत

तद्यथा सर्वाभ्यन्तरा सब्रमाह्या च ।

(क) तत्र या मेक्षममीष विष्कम्भमधिष्ठृत्य बाह्या सा सर्वाभ्यन्तरा ।

(ख) या तु भवणदिशि जम्बूद्वीपपयन्ते विष्कम्भमधिष्ठृत्य बाह्या सा तवबाह्यबाहा ।

(ग) आयामश्च-दक्षिणायततया प्रतिपन्नव्यो,

विष्कम्भ पूर्वापरायततया ।

(घ) तीसे ण सव्वयाहिरिया बाहा=सव्वणसमुद्देण, चउणउइ जोयणसहस्साइ, अट्ट प अट्टसट्ठे जोयणसए, चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिवसेवेण, आहिए त्ति वएज्जा ।^१

प — ता से ण परिवसेवविसेसे कम्मो ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ — ता जे ण जमुद्दीव-दीवस्स परिवसेवे त परिवसेव तिहिं गुणिता, दसहिं छेत्ता, दसहिं भागे हीरमाणे = एस ण परिवसेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।^२

तावखेत्तस्स अधकारखेत्तस्स य आयामाईण पक्खण

प ता तीसे ण तावखेत्ते केवइय आयामेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्टत्तारि जोयणसहस्साइ, तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभागे च आयामेण, आहिए त्ति वएज्जा ।

प तथा ण कित्तिठिया अधकारसठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ उद्धीमूह-क्खल्लुआपुप्फसठिया तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा ।

तीसे ण सव्वभतरिया बाहा मदरपव्वयतेण छज्जोयणसहस्साइ तिण्णि य चउयीसे जोयणसए छच्च दसभागे जोयणस्स परिवसेवेण, आहिय त्ति वएज्जा ।

प ता तीसे ण परिवसेवविसेसे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ — ता जे ण मदरस्स पव्वयस्स परिवसेवे ण त परिवसेव दीहिं गुणेत्ता, दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे, एम ण परिवसेव-विसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

तीसे ण सव्वयाहिरिया बाहा सव्वणसमुद्दे ण तेवट्ठि जोयणसहस्साइ दोण्णि य पणयाले जोयसए छच्च दस भागे जोयणस्स परिवसेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प — ता से ण परिवसेवविसेसे कम्मो ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण जमुद्दीवस्स दीवस्स परिवसेवे, त परिवसेव दीहिं गुणेत्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस ण परिवसेवविसेसे, आहिए त्ति वएज्जा ।

प — ता से ण अधकारे केवइय आयामेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ — ता अट्टत्तारि जोयणसहस्साइ तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसए जोयणतिभाग च आयामेण, आहिए त्ति वएज्जा ।

तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उक्ककोसेण अट्टारसमुद्दत्ते विवसे भवति ।

१ मेर की परिधि ३१,६ २३ योजन की है, इसे तीन श गुणा करन पर ९४,८,७९ योजन हुए इन के दश का भाग देने पर ० ८ ८६९. सम्य हीत हैं—यह सब आभ्यन्तर बाहा की परिधि है ।

२ जमुद्दीप की परिधि ३,१६,२ २७ योजन तीन कोस २८ धनुष १३ अंगुल तथा प्राये अंगुल से कुछ अधिक है ।

इसमें दश का भाग देने पर ९४ ८, ६८ योजन और एक योजन का दश भाग म स चार भाग जितनी सब-बाह्य बाहा की परिधि विशेष है ।

जहणिया दुवालसमुहता राई भवइ ।

प - ता जया ण सूरिए सव्वबाहिर मडले उवसकमिता चार चरइ तथा ण किसठिया तावखेतसठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ - ता उद्धमुह-कलबुयापुप्फसठिया तावखेतसठिई आहिय त्ति वएज्जा, एव ज अग्निभतर-मडले अधकारसठिईए पमाण त बाहिरमडले तावखेतसठिईए, ज तर्हि तावखेतसठिईए त बाहिर-मडले अधकारसठिईए भाणियच्च, जाव

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उवकोसेण अट्टारसमुहता राई भवति, जहणिए दुवालसमुहसे दिवसे भवइ ।

सूरियाण तावखेतपमाण-परूवण

प - ता जबुद्धीवे दीवे सूरिया केवइय खेत उड्ढ तवति, केवइय खेत अहे तवति, केवइय खेत तिरिय तवति ?

उ - ता जबुद्धीवे ण दीवे सूरिया एग जोयणसय उड्ढ तवति ।

अट्टारस जोयणसयाइ अहे पतवन्ति ।

सीयालीस जोयणसहस्ताइ दुनि य तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभागे जोयणसस तिरिय तवति ।



पंचम प्रामृत

सूरियस्त लेस्ता पडिघायगा पव्वया

२६ ता कस्सि ण सूरियस्त लेस्ता पडिहया ? आहिय त्ति वएज्जा ।

तत्थे खलु इमाओ घोस पडिवत्तीओ पणत्ताओ, त जहा —

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता मदरसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता मेरु सि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

३ ता मणोरमसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

४ ता सुवसणसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

५ ता सयपभसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

६ ता गिरिरायसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे
एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता रयणुच्चयसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे
एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

८ ता सित्तुच्चयसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे
एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु

९ ता सोयमज्जसि ण पव्वयसि सूरियस्त लेस्ता पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे
एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१० ता लोग्नाभिंसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

११ ता अच्छसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१२ ता सूरियावत्तसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१३ ता सूरियावरणसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१४ ता उत्तमसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१५ ता दिसादिसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१६ ता अवयससि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१७ ता धरणिज्जोलसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया, आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१८ ता धरणिसिगसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

१९ ता पव्वइदसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

एगे पुण एवमाहसु—

२० ता पव्वयरायसि ण पव्वयसि सूरियस्स लेस्सा पडिहया आहिय त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो,

जसि ण पव्वयसि सूरियस्स तेस्सा पडिहया, से ता मदरे वि पवुच्चइ जाव पव्वयराया वि पवुच्चइ,^१

[क] ता जे ण पुग्गला सूरियस्स तेस्स फूसति ते ण पुग्गला सूरियस्स तेस्स पडिहणति,

[ख] अविट्ठा वि ण पुग्गला सूरियस्स तेस्स पडिहणति,

चरिमतेस्सतरगया वि पुग्गला सूरियस्स तेस्स पडिहणति ।



१ मन्तरस पं पव्वयस्स सोलस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा गाहामो—

१ मदर २ मरु ३ मणोरम ४ सुदसण ५ समयभे य ६ गिरिराया ।

७ रयणुच्चय ८ पियत्तण ९-१९, मज्जे सोलस, नाभी य ॥ १ ॥

११ अग्ने य १२ सूरियावत्ते १३ सूरियावरणे सि य ।

१४ उत्तमे य १५ दिसादी य १६ यद्धेत्तइ य सोलस ॥ २ ॥

क—सम स १६, सु ३

ख—जसू वक्क ४, सु १०९

इन दोनों गायत्र्या मं 'मंदर पवन' के सोलह नाम गिनाये हैं यहाँ इनके अनिश्चित चार धौनिक नाम भी हैं ।

मन्तर पवत के इन बीस पर्यायवाची नामों को धर्याय साम्यतावाले भिन्न भिन्न पवत मानते हैं । किन्तु सूत्रप्रतिष्ठा के सवसनवर्ता ने समवायांग धीर जम्बूद्वीप प्रजापति के अगुगार मन्तर पवत के म बीस पर्यायवाची नाम मानकर सभी धर्याय सायताओं का समन्वय किया है ।

छठा प्रामृत

सूरियस्त ओयसठिई

प - ता कह ते ओयसठिई ? आहिय त्ति वएज्जा ।

उ - तत्य खलु इमाओ पणवीस पडिवत्तीओ पणताओ, त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता अणुसमयमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता अणुराइदियमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता अणुपखमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता अणुमासमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

६ ता अणुउत्तमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

७ ता अणुअयणमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

८ ता अणुसवच्छरमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

९ ता अणुजुगमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१० ता अणुवाससयमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

११ ता अणुवाससहस्तमेव सूरियस्त ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१२ ता अणुयास सय-सहस्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१३ ता अणुपुव्वमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१४ ता अणुपुव्व-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१५ ता अणुपुव्वसहस्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१६ ता अणुपुव्वसयसहस्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१७ ता अणुपत्तिओवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे, एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१८ ता अणुपत्तिओवमसयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

१९ ता अणुपत्तिओवमसहस्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२० ता अणुपत्तिओवमसयसहस्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२१ ता अणुसागरोवममेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२२ ता अणुसागरोवम-सयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२३ ता अणुसागरोवम सहस्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जइ अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२४ ता अणुसागरोवम सयसहस्तमेव सूरियस्त श्रोया अण्णा उपपज्जइ, अण्णा! अवेइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२५ ता अणुउस्तप्पिणि-ओसत्पिणिमेव सूरियस्त श्रोया अण्णा उपपज्जइ, अण्णा अवेइ, एगे एवमाहसु ।^१

वय पुण एव वयामो—

(क) ता तीस तीस मुहुत्ते सूरियस्त श्रोया अण्वट्ठिया भवइ तेण पर सूरियस्त श्रोया अणवट्ठिया भवइ ।

(ख) छम्मासे सूरिए श्रोय णिव्वुड्ढेइ ।
छम्मासे सूरिए श्रोय अभिव्वुड्ढेइ ।

(ग) निखममाणे सूरिए वेस णिव्वुड्ढेइ ।
पविसमाणे सूरिए वेस अभिव्वुड्ढेइ ।

प —तत्थ को हेऊ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ —ता अय ण जंबुद्वीपे दीपे सव्वदीव-समुद्दाण सव्ववभतराए सव्वं छुड्डागे वट्टे जाव जोयणसयसहस्तमायाम-विक्खभे ण तिण्णि जोयणसयसहस्ताइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए, तिण्णि कोसे, अट्ठावीस च घणुसय, तेरस य अगुलाइ अट्ठगुल च किचि विसेसाहिए परिवत्थेवे ण पण्णत्ते ।

१ ता जया ण सूरिए सव्ववभंतर मडल उवसक्किता चारं चरइ, तथा ण उत्तमक्कट्ठपत्ते उवकोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवात्तसमुहुत्ता राई भवइ ।

२ से निखममाणे सूरिए णवं सवच्छरं अयमाणे पढमसि अहोरत्तंसि अण्णितरणतरं मडल उवसक्किता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अण्णितरणतरं मडल उवसक्किता चार चरइ, तथा ण एगे-ण राइदिएण एग भाग श्रोयाए दिवसखित्तस्स निव्वुड्ढित्ता रयणि खित्तस्स अभिव्वुड्ढित्ता चार चरइ, मडल अट्ठारसेहि तीसेहि सएंह छेत्ता ।

तथा ण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, दोहं एगट्ठिभागमहुत्तोहं ऊणे ।

१ इन प्रतिपत्तियों से ऐसा प्रतीत होता है कि जैनागमों के अतिरिक्त अन्य दार्शनिक पुराणादि ग्रन्थों में भी भौतिककालवाचक 'पन्चोपम-सागरोपम, उस्तपिणी-अवसपिणी आदि शब्दों का प्रयोग था । वर्तमान में भी यदि पुराणादि ग्रन्थों में इन भौतिककाल वाचक शब्दों का वही प्रयोग हो तो अन्वेषणशील विद्वान् प्रयत्न करने प्रकाशित करें ।

दुवात्समुहृता राई भवइ-दोहि एगट्टिभागमुहृत्तेहि अहिया ।

३ से निवखममाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि अग्निभतराणतर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए अग्निभतराणतर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ, तथा ण दोहि राइदिए हे दो भागे ओयाए दिवस खेतस्स निव्वुड्डिता, रयणि-खेतस्स अभिवुड्डेता चार चरइ, मडल अट्टारसेहि तीसेहि सर्एहि देता ।

तया ण अट्टारसमुहृत्ते दिवसे भवइ, चउहि एगट्टिभाग मुहृत्तेहि ऊणे ।

दुवात्समुहृता राई भवइ, चउहि एगट्टिभागमुहृत्तेहि अहिया ।

४ एव खलु एएण उवाएण निवखममाणे सूरिए तथाणतराओ मडलाओ तथाणतर मडल सकमनाणे सकममाणे एगमेगे मडले, एगमेगेण राइदिएण एगमेग एगमेग भाग ओयाए दिवस खेतस्स निव्वुड्डेमाणे निव्वुड्डेमाणे रयणि खेतस्स अभिवुड्डेमाणे अभिवुड्डेमाणे सच्चवाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ ।

५ ता जया ण सूरिए सच्चवभतराओ मडलाओ सच्चवाहिर मडल उवसकमिता चार चरइ तथा ण सच्चवभतर मडल पणिहाय एगेण तेसिएण राइदिएण एण तेसिय भागसय ओयाए दिवस खेतस्स निव्वुड्डेता रयणि-खेतस्स अभिवुड्डेता चार चरइ, मडल अट्टारसेहि तीसेहि सर्एहि देता ।

तया ण उत्तमकट्टपत्ता उवकोसिया अट्टारसमुहृता राई भवइ, जट्टणए दुवात्समुहृत्ते दिवसे भवइ ।

एस ण पढमे छम्मासे, एस ण पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

१ से पयित्तमाणे सूरिए दोच्च छम्मास अयमाणे पढमसि अहोरत्तसि वाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए वाहिराणतर मडल उवसकमिता चार चरइ, तथा ण एगेण राइदिएण एग भाग ओयाए रयणिकेतस्स निव्वुड्डेता दिवस खेतस्स अभिवुड्डेता चार चरइ, मडल अट्टारसेहि तीसेहि सर्एहि देता ।

तया ण अट्टारसमुहृत्ता राई भवइ, दोहि एगट्टिभागमुहृत्तेहि ऊणा ।

दुवात्समुहृत्ते दिवसे भवइ, दोहि एगट्टिभागमुहृत्तेहि अहिए ।

२ से पयित्तमाणे सूरिए दोच्चसि अहोरत्तसि वाहिराणतर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ ।

ता जया ण सूरिए वाहिराणतर तच्च मडल उवसकमिता चार चरइ, तथा ण दोहि राइदिएहि दो भाग ओयाए रयणिकेतस्स निव्वुड्डेता दिवस-खेतस्स अभिवुड्डेता चार चरइ, मडल अट्टारसेहि तीसेहि सर्एहि देता ।

तथा ण भट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, चउर्हि एगट्टिभागमुहुत्तोहि ऊणा ।

दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, चउर्हि एगट्टिभागमुहुत्तोहि अहिए ।

३ एव खलु एएण उवाएण पविसमाणे सूरिए तयाणतराओ मडलाओ तयाणतर मडल सकममाणे सकममाणे एगमेगे मडले एगमेगेण राइदिएण एगमेग भाग ओयाए रयणि-तेत्तस्स निव्वुड्ढेमाणे निव्वुड्ढेमाणे दिवस खेतस्स अभिवुड्ढेमाणे अभिवुड्ढेमाणे सव्वभतर मडल उवस-कमिस्ता चार चरइ ।

४ ता जया ण सूरिए सव्ववाहिराओ मडलाओ सव्वभतर मडल उवसकमिस्ता चार चरइ, तथा ण सव्ववाहिर मडल णिहाय एगेण तेसीएण राइदियसएण एग तेसीय भागसय ओयाए रयणिखेतस्स निव्वुड्ढेत्ता दिवस खेतस्स अभिवुड्ढेत्ता चार चरइ, मडल भट्टाग्सेहि तीतेहि सर्णहि देत्ता ।

तथा ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोसए भट्टारसमुहुत्तो दिवसे भवइ जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

एस ण दोच्चे छम्मासे, एस ण दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे ।

एस ण आइच्चे सवच्छरे, एस ण आइच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे ।



राष्ट्रम प्राभृत

सूरियेण पगासिधा पव्वया

प —ता किं ते सूरियं वरइ ? आहिंएत्ति यएज्जा ।

उ —तत्थं छलु इमाभ्रो वीस पठिवतीभ्रो पणत्ताभ्रो त जहा—

तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता मदरे ण पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता मेहं ण पव्वए सूरियं वरइ एगे एवमाहसु ।

३-१९ एय एएण अमितावेण णेयत्थं तहेव जाव ।^१

एगे पुण एवमाहसु—

२० ता पव्वयराये ण पव्वए सूरियं वरइ, एगे एवमाहसु ।

यय पुण एवं वदामो—

ता मदरे ण पव्वए सूरियं वरइ, एयं पि पव्वच्चइ तहेव जाव (१-२० सूरिय० पा० ५, सु २६ को देखें) ।^२

ता पव्वयराये ण पव्वए सूरियं वरइ, एवं पि पव्वच्चइ ।

(प) ता जे ण पोगला सूरियस्स लेसं फूसति, ते ण पुग्गला सूरियं वरयति ।

(छ) अदिट्ठा वि ण पोगला सूरियं वरयति ।

(ग) चरिमलेस्सतरगया वि ण पोगला सूरियं वरयति ।



१ 'सूरियस्स लेस्ता पठियायणा पव्वया' इन शीपक वं अंतर्गत सूत्र प्रा ५, सु २६ वं शीघ्र प्रतिपत्ति^३ के अनुसार सूत्र को ले-या को प्रतिरूढ करने कायं शीघ्र पवता व नाम गिनाय है । यहाँ भी उगी के अनुसार भुल-गाठ के शमी आनापक बहन आहिंए ।

२ ऊपर के टिप्पण वं सूत्रिन शीपक के अंतर्गत सूत्र पा ५, सु २६ वं अनुसार सूत्रप्रतिपत्ति के सङ्कलनकर्ता के यहाँ भी मदर पक वं शीघ्र नामा वं पयावधानी मात्र उ समग्रय कर लिया है ।

अष्टम प्रामृत

सुरस उदय-सठिई

प —ता कह ते उदयसठिई आहिया ? ति वएज्जा ।

उ —सत्य खलु इमाओ तिणिण पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा —

१ तत्पेगे एवमाहसु—

(क) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणड्ढेऽपि अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ख) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणड्ढेऽपि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणड्ढेऽपि सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणड्ढेऽपि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणड्ढेऽपि चउद्दसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(च) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरड्ढे तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणड्ढेऽपि तेरसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

(छ) ता जया ण जयुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरड्ढेऽपि बारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरइडे बारसमुहत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणइडेऽपि बारसमुहत्ते दिवसे भवइ ।

(ज) तथा ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पध्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थियमे ण सया पण्णरसमुहत्ते दिवसे भवइ, सया पण्णरसमुहत्ता राई भवइ, अयद्धिया ण तत्थ राइद्धिया पण्णत्ता, समणाउमो ! एणे एवमाहसु ।

२ एणे पुण एवमाहसु—

(क) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणइडे अट्टारसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरइडेऽपि अट्टारसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरइडे अट्टारसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणइडेऽपि अट्टारसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणइडे सत्तरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरइडेऽपि सत्तरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरइडे मत्तरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणइडेऽपि सत्तरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

(ग) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणइडे सोलसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरइडेऽपि सोलसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरइडे सोलसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणइडेऽपि सोलसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

(घ) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणइडे पण्णरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरइडेऽपि पण्णरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरइडे पण्णरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणइडेऽपि पण्णरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

(ङ) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणइडे चोद्दसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरइडेऽपि चोद्दसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरइडे चोद्दसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणइडेऽपि चोद्दसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

(च) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणइडे तेरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरइडेऽपि तेरसमुहत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गेजि तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

[छ] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणङ्गे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गेजि बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गेजि बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ ।

[ज] तथा ण जबुद्दीवे दीवे मवरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिमे ण णो सया पण्णरस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, णो सया पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, अणयट्ठिया ण तत्थ राइदिया पण्णत्ता, सम्पणाउत्तो । एगे एवमाहसु ।

३ एगे पुण एवमाहसु—

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणङ्गे अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गे दुयालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गे बारस मुहुत्ता राई भवइ ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणङ्गे अट्टारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे अट्टारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणङ्गे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गे दुयालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवइ तथा ण दाहिणङ्गे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[ख] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणङ्गे सत्तरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे सत्तरसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

[क] ता जया ण जबुद्दीवे दीवे दाहिणङ्गे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गे दुयालसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गे सोलसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गडे बारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाह्णिणङ्गडे बारसमुहुत्ता राई भवइ ।

तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त पुरत्थिमपच्चत्थियमे ण जेवत्थिय पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जेवत्थिय पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ ।

वोच्छिण्णा ण तत्थ राइदिया पण्णत्ता, समणाउत्तो । एगे एवमाहमु ।

वय पुण एव वयामो

ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया ।

उदीण पाईणमुग्गच्छति, पाईण-दाह्णिणमागच्छति ।

पाईण दाह्णिणमुग्गच्छति, दाह्णिण-पडोणमागच्छति ।

दाह्णिण-पडोणमुग्गच्छति, पडोण उदीणमागच्छति ।

पडोण-उदीणमुग्गच्छति, उदीण-पाईणमागच्छति ।^१

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त दाह्णिणङ्गडे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गडेऽपि दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गडे दिवसे भवइ, तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त पुरत्थिम-पच्चत्थियमे ण राई भवइ ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त पुरत्थियमे ण दिवसे भवइ, तथा ण पच्चत्थियमेऽपि दिवसे भवइ ।

जया ण पच्चत्थियमे ण दिवसे भवइ, तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त उत्तरदाहिणे ण राई भवइ ।

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त दाह्णिणङ्गडे उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवई, तथा ण उत्तरङ्गडे उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गडे उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्त पव्वयस्त पुरत्थिम पच्चत्थियमे ण जह्णिणया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।

१ प जंबुद्दीवे ण भते । दीवे सूरिआ ? उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाह्णिणमागच्छति ?

पाईणदाह्णिणमुग्गच्छ दाह्णिणपडोणमागच्छति ?

दाह्णिणपडोणमुग्गच्छ पडोणउदीणमागच्छति ?

पडोणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छति ?

उ ह्ना गोयमा ! जहा पचमसए पदमे उदेसे जाव जेवत्थिय उत्सप्पिणी अक्खट्टिए ण तत्थ वाते प समणाउत्तो !

—भग स ५, उ १ मु ५

(क) अबु वनय ७, मु १५०

जया ण उत्तरङ्गडे बारसमूहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तथा ण दाहिणङ्गडे बारसमूहुत्ता राई भवइ ।

तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिये ण जेवत्थिय पण्णरसमूहुत्ते दिवसे भवइ, जेवत्थिय पण्णरसमूहुत्ता राई भवइ ।

वोच्छिण्णा ण तत्थ राइस्विया पण्णत्ता, समणाउत्तो । एगे एवमाहसु ।

वय पुण एव वयामो

ता जंबुद्दीवे दीवे सूरिया ।

उदीण-पाईणमुग्गच्छति, पाईण-दाहिणमागच्छति ।

पाईण-दाहिणमुग्गच्छति, दाहिण पडीणमागच्छति ।

दाहिण पडीणमुग्गच्छति, पडीण उदीणमागच्छति ।

पडीण उदीणमुग्गच्छति, उदीण पाईणमागच्छति ।^१

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणङ्गडे दिवसे भवइ, तथा ण उत्तरङ्गडेऽपि दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गडे दिवसे भवइ, तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिये ण राई भवइ ।

[ख] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिये ण दिवसे भवइ, तथा ण पच्चत्थियेऽपि दिवसे भवइ ।

जया ण पच्चत्थिये ण दिवसे भवइ, तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण राई भवइ ।

[क] ता जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणङ्गडे उक्कोत्तए अट्टारसमूहुत्ते दिवसे भवई, तथा ण उत्तरङ्गडे उक्कोत्तए अट्टारसमूहुत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण उत्तरङ्गडे उक्कोत्तए अट्टारसमूहुत्ते दिवसे भवइ, तथा ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिये ण जहण्णिमा दुवालममूहुत्ता राई भवइ ।

१ प जंबुद्दीवे ण मते । दीवे सूरिया ? उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छति ?

पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छति ?

दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छति ?

पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छति ?

उ हता गोयमा । जहा पव्वमत्तए पद्म उद्दे जाव जेवत्थिय उस्सत्थिणी भयट्टिए ण तरय कात्त प समणाउत्तो ।

—मग स ५, उ १ मु ५

(५) जयु वनय ७, सु १५०

[घ] ता जया ण जवुद्दीवे दीवे मवरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण उक्कोसए अट्टारसमुहत्ते दिवसे भवइ, तथा ण पच्चत्थिमेऽपि उक्कोसए अट्टारसमुहत्ते दिवसे भवइ ।

जया ण पच्चत्थिमे ण उक्कोसए अट्टारसमुहत्ते दिवसे भवइ, तथा ण जवुद्दीवे दीवे मरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण जहण्णिया बुवालसमुहत्ता राई भवइ ।

एय एएण गमेण णोपव्व

अट्टारसमुहत्ताणतरे दिवसे—

साइरेण-बुवालस-मुहत्ता राई ।

सत्तरस-मुहत्ते दिवसे—

नेरस-मुहत्ता राई ।

सत्तरस मुहत्ताणतरे दिवसे—

साइरेण-नेरस मुहत्ता राई ।

सोलस-मुहत्ते दिवसे—

चोदस-मुहत्ता राई ।

सोलस-मुहत्ताणतरे दिवसे—

साइरेण-चोदस मुहत्ता राई ।

पण्णरस मुहत्ते दिवसे—

पण्णरस मुहत्ता राई ।

पण्णरस-मुहत्ताणतरे दिवसे—

साइरेण-पण्णरस-मुहत्ता राई ।

चोदस-मुहत्ते दिवसे—

सोलस-मुहत्ता राई ।

चोदस मुहत्ताणतरे दिवसे—

साइरेण-सोलस मुहत्ता राई ।

नेरस मुहत्ते दिवसे—

सत्तरस-मुहत्ता राई ।

नेरस मुहत्ताणतरे दिवसे—

साइरेण सत्तरस-मुहत्ता राई ।

जट्ठणए बुवालस-मुहत्ते दिवसे भवइ—

उक्कोसिया अट्टारस मुहत्ता राई भवइ एय भानियय्य ।^१

वासाउड

[क] ता जया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण उत्तरइडेऽवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ।

जया ण उत्तरइडे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिये ण अणतर-पुरक्खड-काल-समयसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ।

[ख] ता जया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिये ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण पच्चत्थियेऽवि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ।

जया ण पच्चत्थिये ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतर-पच्छाकय-काल-समयसि वासाण पढमे समए पडिवने भवइ ।

जहा समओ तथा १ आबलिया, २ आणापाणू, ३ थेवे, ४ लवे, ५ मुहुत्ते, ६ अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८ मासे, एए अट्ट आलावगा, जहा वासाण तथा भाणियव्वा ।^१

हेमत उड

(क) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण उत्तरइडेऽवि हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ ।

जया ण उत्तरइडे हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम पच्चत्थिये ण अणतर-पुरक्खड-काल-समयसि हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ ।

(ख) ता जया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिये ण हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण पच्चत्थियेऽवि हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ ।

जया ण पच्चत्थिये ण हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ तथा ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतर-पच्छाकड-काल-समयसि हेमताण पढमे समए^१ पडिवज्जइ ।

जहा समओ तथा १ आबलिया, २ आणापाणू, ३ थोवे, ४ लवे, ५ मुहुत्ते, ६ अहोरत्ते, ७ पक्खे, ८ मासे, एए अट्ट आलावगा, जहा हेमताण तथा भाणियव्वा ।

१ ऊपर सूत्र मे 'पढमे समए' भाठ स्थानो पर है उन स्थानो म नीचे लिख आलापक कहें, धीर प्रायक आलापक के दो दो सूत्र ऊपर के समान कह—

१ पढमा आबलिया २ पढमो आणापाणू ३ पढम थोव, ४ पढमे लवे, ५ पढमे मुहुत्ते, ६ पढम अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढम मासे ।

२ ऊपर सूत्र मे पढमे समए^१ भाठ स्थानों पर हैं उन स्थानो पर नीचे लिख आलापक कहें, धीर प्रायक आलापक के ऊपर के समान दो दो सूत्र कहें—

१ पढमा आबलिया, २ पढमो आणापाणू, ३ पढमे थोवे ४ पढमे लवे, ५ पढम मुहुत्ते, ६ पढम अहोरत्ते, ७ पढमे पक्खे, ८ पढम मासे ।

गिम्हा उउ

(क) ता जया ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त दाहिणट्ठे गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ, तथा ण उत्तरट्ठेऽयि गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ ।

जया ण उत्तरट्ठे गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ, तथा ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त पुरत्थियमे ण अणतर-पुरवखट्ठ-वाल-समयसि गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ ।

(ख) ता जया ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त पुरत्थियमे ण गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ, तथा ण पच्चत्थियमेऽयि गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ,

जया ण पच्चत्थियमे ण गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ, तथा ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त उत्तर-दाहिणे ण अणतर-पच्छावड्ठ-वाल-समयसि गिम्हाण पढमे समए पडियज्जइ ।

जहा समणो तहा १ आयात्तिया, २ आणापाणू, ३ थोये, ४ लये, ५ मुहुत्ते, ६ अट्ठारत्ते, ७ पणो, ८ भासे, एए अट्ठ आलायगा, जहा गिम्हाण तहा भाणियव्या ।

अपणाइ

(क) ता जया ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त दाहिणट्ठे पढमे अयणे पडियज्जइ, तथा ण उत्तरट्ठेऽयि पढमे अयण पडियज्जइ ।

जया ण उत्तरट्ठे पढमे अयणे पडियज्जइ, तथा ण दाहिणट्ठेऽयि पढमे अयणे पडियज्जइ ।

जया ण उत्तरट्ठे पढमे अयण पडियज्जइ, तथा ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त पुरत्थियमे ण अणतर-पुरवखट्ठ-वाल-समयसि पढमे अयणे पडियज्जइ ।

(ख) ता जया ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त पुरत्थियमे ण पढमे अयणे पडियज्जइ, तथा ण पच्चत्थियमेऽयि पढमे अयणे पडियज्जइ ।

जया ण पच्चत्थियमे ण पढमे अयणे पडियज्जइ, तथा ण पुरत्थियमेऽयि पढमे अयणे पडियज्जइ ।

जया ण पच्चत्थियमे ण पढमे अयणे पडियज्जइ, तथा ण जयुद्दीये दीये मवरस्त पव्ययस्त उत्तर दाहिणे ण अणतर-पच्छावड्ठ-वाल-समयसि पढमे अयणे पडियज्जइ ।

जहा पढमस्य अयणस्य आलायगो तहा दीच्चस्त अयणस्य भाणियवो ।

जहा अयणे तहा सावच्छरे, जणे, याममए, यामसाहस्से, याम-सायसाहस्से, पुय्वगे, पुय्वे, जाय सीतापट्टेनिय। पत्तिभोवमे सागरोयमे य ।

१ ऊपर सूच्य में पढम समय घाठ स्वार्थ पर है उा स्वार्थो पर साये विने आगतक बडे पोर प्रत्यय आगतक क ऊपर क मन्त्रा दो दो सूच्य क ।

१ पढमा दावत्तिया २ पढमो आणापाणू ३ पढम पाय ४ पढम लय, ५ पढम मुहुत्ता, ६ पढम अट्ठारत्ते,

७ पढम पणो, ८ पढम भास ।

२ उर्त्ता गद्दी पढम अयणे है पद्दी पद्दी दीच्य अयण कहे ।

उत्तररङ्गो

ता जया ण जबुद्दीवे दीवे मवरस्स पव्वयस्स दाहिणडढे उत्तररङ्गो पडिवज्जइ, तथा ण उत्तररङ्गो उत्तररङ्गो पडिवज्जइ ।

जया ण उत्तररङ्गो पडिवज्जइ, तथा ण जबुद्दीवे दीवे मवरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि उत्तररङ्गो नेवत्थि ओत्तररङ्गो अरुत्थि ए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउत्तो ।
एव ओत्तररङ्गो ।^१

लवणसमुद्दो

ता जया ण लवणे समुद्दे दाहिणडढे दिवसे भवइ, तथा ण लवणे समुद्दे उत्तररङ्गो दिवसे भवइ,

जया ण लवणे समुद्दे उत्तररङ्गो दिवसे भवइ, तथा ण लवणे समुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवइ ।

सेस जहा जबुद्दीवे दीवे तहेव जाव ओत्तररङ्गो ।^२

घायइखडो

ता घायइखडे ण दीवे सूरिया—

उदीण पाईणमुग्गच्छति, पाईण दाहिणमागच्छति,

१ (क) ऊपर जहा जहा उत्तररङ्गो है वहा वहा "ओत्तररङ्गो" कहे ।

२ "जच्चेव जबुद्दीवस्स वत्तन्वता भणिता, सच्चेव सव्वा अपरिसेसिता लवणसमुद्दस्स वि भाणितव्वा" ।
नवर—इमेण भभिसावेण मव्वे भालावगा भाणितव्वा ।

५ (क) लवणे ण भते । समुद्दे सूरिया—

उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छति ?

(ख) पादीण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पादीणमागच्छति ?

(ग) दाहिण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-उदीणमागच्छति ?

(घ) पादीण उदीणमुग्गच्छ उदीण-पादीणमागच्छति ?

७ (क-घ) हता गोयमा ! लवणे ण समुद्दे सूरिया—

उदीण-पादीणमुग्गच्छ पादीण-दाहिणमागच्छति जाव

पादीण-उदीणमुग्गच्छ उदीण पादीणमागच्छति ।

एतेण भभिसावेण णेतव्व—जाव

५ (क) जदा ण भते । लवणसमुद्दे दाहिणडढे पढमा उत्तररङ्गो पडिवज्जति

तदा ण उत्तररङ्गे वि पढमा उत्तररङ्गो पडिवज्जति ?

(ख) जदा ण उत्तररङ्गे पढमा उत्तररङ्गो पडिवज्जति, तदा ण लवणसमुद्दे पुरत्थिमपच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओत्तररङ्गो, नेवत्थि उत्तररङ्गो ? अरुत्थिमे ण तत्थ काले पण्णत्ते ?

७ हता गोयमा ! त्थेव उच्चारेयव्व जाव समणाउत्तो ।

जाय पडोण-उदोणमुग्गच्छति, उदोण-पाईणमागच्छति,

ता जया ण धायइसडे दीये मदराण पव्वयाण दाहिणड्ढे दिवसे भयइ, तथा ण उत्तरइइसडे दिवसे भयइ,

जया ण उत्तरड्ढे दिवसे भयइ, तथा ण धायइसडे दीये मदराण पव्वयाण पुरत्तियम-पच्चत्तियम ण राई भवति,

सेस जहा जयुद्दीये दीये तहेय जाय ओसत्पिणी,

षालोए ण समुत्ते जहा सवणे समुत्ते ।

अग्गत्तरपुक्खरद्धो

ता अग्गत्तर-पुक्खरद्धे ण दीये सूरिया —

उदोण-पाईणमुग्गच्छति, पाईण-दाहिणमागच्छति,

जाय पडोण-उदोणमुग्गच्छति, उदोण-पाईणमागच्छति,

ता जया ण अग्गत्तर-पुक्खरद्धे मदराण पव्वयाण दाहिणड्ढे दिवसे भयइ, तथा ण उत्तर ड्ढेसिध दिवसे भयइ,

जया ण उत्तरड्ढे दिवसे भयइ, तथा ण अग्गत्तरपुक्खरद्धे मदराण पव्वयाण पुरत्तियम पच्चत्तियमे ण राई भयइ,

सेस जहा जयुद्दीये दीये तहेय जाय ओसत्पिणी ।



नवम प्राश्न

पोरिसिच्छाय-निव्वत्तण

३० प ता कइकट्ठ ते सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा,
उ तत्थ खलु इमाओ त्तिण्णि पडिव्वत्तीओ पणत्ताओ, त जहा—
तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता जे ण पोगला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोगला सतप्पति, ते ण पोगला सतप्प
माणा तदणतराइ बाहिराइ पोगलाइ सताव्वेतीति,
एस ण से समिए तावव्वेत्ते एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता जे ण पोगला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोगला नो सतप्पति, ते ण पोगला
असतप्पमाणा तदणतराइ बाहिराइ पोगलाइ णो सताव्वेतीति,
एस ण से समिए तावव्वेत्ते, एगे एवमाहसु,
एगे पुण एवमाहसु—

३ ता जे ण पोगला सूरियस्स लेस फुसति, ते ण पोगला अत्थेगइया सतप्पति, अत्थेगइया
नो सतप्पति,

तत्थ अत्थेगइया सतप्पमाणा तदणतराइ बाहिराइ पोगलाइ अत्थेगयाइ सताव्वेति, अत्थेगयाइ
नो सताव्वेतीति,

एस ण से समिए तावव्वेत्ते, एगे एवमाहसु,
वय पुण एव वयामो—

ता जाओ इमाओ चदिम-सूरियाण देवाण विमाणोहितो लेसाओ बहिता उच्छूडा अभिणिस-
ट्ठाओ पताव्वेति,

एयासि ण लेसाण अत्तरेसु अण्णयरीओ छिण्णलेसाओ समुच्छति, तए ण ताओ छिण्णलेसाओ
समुच्छियाओ समाणीओ तदणतराइ बाहिराइ पोगलाइ सताव्वेतीति,

एस ण से समिए तावव्वेत्ते ।

पोरिसिच्छाय-निव्वत्तण—

३१ प ता कइकट्ठे ते सूरिए पोरिसिच्छाय णिव्वत्तेति ? आहिए त्ति वएज्जा ।
उ तत्थ खलु इमाओ पणवीस पडिव्वत्तीओ पणत्ताओ तजहा—

तत्पेगे एयमाहसु—

१ ता अणुसमयमेव सूरिण पोरिसिच्छाय निष्वत्तेह, आहिए ति यएज्जा, एगे एयमाहसु
एगे पुण एयमाहसु—

२ ता अणुसमयमेव सूरिण पोरिसिच्छाय निष्वत्तेह, आहिए ति यएज्जा,
जामो चेय भोयसठिईए पडिवत्तोभो एएण अमितावेण पेयव्वाभो, जाम^१ [३-२४]
एगे पुण एयमाहसु—

२५ ता अणुउस्तप्पिणि-अ्रोस्तप्पिणिमेव सूरिण पोरिसिच्छाय निष्वत्तेह आहिए ति यएज्जा,
एगे एयमाहसु,

यम पुण एय वपामो—

ता सूरियस्स ण—

- १ उच्चत्त च तेस च पटुच्च छामुहोसे,
- २ उच्चत्त च छाम च पटुच्च तेसुहोसे,
- ३ तेस च छाम च पटुच्च उच्चत्तोहोसे

प

३

उ तत्य छलु इमाभो बुये पडिवत्तोभो यणत्ताभो, तजहा—

तत्पेगे एयमाहसु—

(क) १ ता अत्थि ण से दिवसे जति ण दिवसति सूरिण चउपोरिसिच्छाय निष्वत्तेह,

(घ) अत्थि ण से दिवसे जति ण दिवसति सूरिण दु पोरिसिच्छाय निष्वत्तेह, एगे
एयमाहसु,

एगे पुण एयमाहसु—

(क) २ ता अत्थि ण से दिवसे जति ण दिवसति सूरिण दु-पोरिसिच्छाय निष्वत्तेह,

(घ) अत्थि ण से दिवसे जति ण दिवसति सूरिण भो किचि पोरिसिच्छाय निष्वत्तेह,

१ सूरिण वा १ सु २७

२ सूत्रप्रतिपत्ति की संकलनकर्त्री ए अणुसार वहाँ प्रत्ययानुमाना चाहिए था, किन्तु वहाँ प्रत्ययानुमान का उपाय
दिगी प्रति में नहीं है धन महा का प्रत्ययानुमान विच्छिन्न हो गया है, ऐसा मान लेना ही उचित है।

सूत्रप्रतिपत्ति के टीकाकार भी वहाँ प्रत्ययानुमान के होने न होने के सम्बन्ध में सर्वथा मौन है धन वहाँ प्रत्ययानुमान
का उपाय रिक्त रखा है।

यदि वही दिगी प्रति में प्रत्ययानुमान ही उपाय प्रयोग करने की इना करें, निम्नो पद
संस्करण में परिवर्तन दिया जा सके।

तत्थ जे ते एवमाहसु—

(क) १ मा अरुत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए चउ-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

(ख) अरुत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, ते एवमाहसु,

(क) ता जया ण सूरिए सव्वभतर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोसिए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ ।

तसि च ण दिवससि सूरिए चउ-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अरुत्थमण- मुहुत्तसि य,

सेस अभिवड्ढेमाणे नो चेव ण निव्वुड्ढेमाणे ।

[ख] ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ता उवकोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणिए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तसि च ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अरुत्थ मणमुहुत्तसि य,

सेस अभिवड्ढेमाणे नो चेव ण निव्वुड्ढेमाणे ।

तत्थ ण जे ते एवमाहसु—

२ ता अरुत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए दु पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ,

अरुत्थि ण से दिवसे जसि ण दिवससि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, ते एवमाहसु,

[क] ता जया ण सूरिए सव्वभतर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ते उवकोसिए अट्टारस मुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालस-मुहुत्ता राई भवइ,

तसि च ण दिवससि सूरिए दु-पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अरुत्थमण-मुहुत्तसि य,

सेस अभिवड्ढेमाणे, नो चेव ण निव्वुड्ढेमाणे,

[ख] ता जया ण सूरिए सव्ववाहिर मडल उवसकमिन्ता चार चरइ, तया ण उत्तमकट्टपत्ता उवकोसिया अट्टारस मुहुत्ता राई भवइ, जहणिए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ,

तसि च ण दिवससि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ, त जहा—उग्गमण-मुहुत्तसि य, अरुत्थमण-मुहुत्तसि य,

नो चेव ण सेस अभिवड्ढेमाणे वा, निव्वुड्ढेमाणे वा ।^१

१ इत्थं अनन्तर यहाँ स्वमतसूचक 'वयं पुण एव वयामो' यह वाक्य नहीं है और न स्वमत का बयन ही है ।

'वदेव परतीपिक प्रतिपत्तिइयं श्रुत्वा भगवान् गौतम

स्वमत पृच्छति, ता वट्ठइ वभिरयादि' —सूर्य टीका

टीकाकार का यह कथन सूत्रप्रमाणों की मकनमकनी के अनुसंधान पर ही है—क्योंकि प्रतिपत्तिओं के कथन का अनन्तर 'वयं पुण एव वयामो' इस वाक्य से ही सबन स्वमत का प्रतिपादन किया गया है ।

प ता ऋक्कट्ठ ते सूरिए पोरिसिच्छाम निव्वत्तेइ ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्य इमाम्मो छण्णउइ पडियत्तोम्मो पण्णत्ताम्मो, त जहा—

तत्येगे एवमाहसु—

१ ता अत्थिय ण से वेत्ते जत्ति ण वेत्तसि सूरिए एगपोरिसीय छाम निव्वत्तेइ,^१ एगे एवमाहसु
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता अत्थिय ण से वेत्ते जत्ति ण वेत्तसि सूरिए दु पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ, एगे एवमाहसु,
एय एएण अमित्तावेण णेमव्व, जाय (३-९५)

एगे पुण एवमाहसु—

९६—ता अत्थिय ण से वेत्ते जत्ति ण वेत्तसि सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ, एगे
एवमाहसु,

तत्य जे ते एवमाहसु—

१ ता अत्थिय ण से वेत्ते जत्ति ण वेत्तसि सूरिए एग-पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,
ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाम्मो सूर-प्पडिहीम्मो वहिता अभिणित्तद्वाहि सेगाहि ताडिज्जमाणोहि
इमोमे रयणप्पमाए पुठवीए बहससरमणिज्जाम्मो भूमिमागाम्मो जायइय सूरिए उड्डं उच्चतेण,
एयइयाए एगाए अट्ठाए, एगेण छायाणुमाणप्पमाणेण उमाए, तत्य से सूरिए एगपोरिसीयं छाय
निव्वत्तेइ त्ति,

तत्य जे ते एवमाहसु—

२ ता अत्थिय ण से वेत्ते, जत्ति ण वेत्तसि सूरिए दु-पोरिसीय छाय निव्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,
ता सूरियस्स ण सव्वहेट्ठिमाम्मो सूर-प्पडिहीम्मो वहिता अभिणित्तद्वाहि सेगाहि ताडिज्ज
माणोहि, इमोमे रयणप्पमाए पुठवीए बहससरमणिज्जाम्मो भूमिमागाम्मो जायइय सूरिए उड्डं
उच्चतेण, एयइयाइ दोहि अट्ठाहि दोहि छायाणुमाणप्पमाणोहि उमाए, एत्य ण से सूरिए दुपोरिसीयं
छाय निव्वत्तेइ त्ति,

३ ९५—एय एएण अमित्तावेण णेमव्व, जाय

तत्य जे ते एवमाहसु—

९६—'ता अत्थिय ण से वेत्ते जत्ति ण वेत्तसि सूरिए छण्णउइ पोरिसीयं छायं निव्वत्तेइ त्ति' ते
एवमाहसु,

१ तत्र-तथा तस्मिन्ने परत्रीचिकानां मध्ये, एके एवमाह

'ता' इति प्रथमं अस्ति ग दसो, यस्मिन् वेत्ते सूर्यं आगतं च एवपोरिसी एवपुण्यदमाणां (पुरणवद्दुत्तान्तं
सर्वेणानि प्रकाशयन्तु च प्रमाणां) धार्यां निर्वतयति । —सूर्य टीका

ता सूरियस्त ण सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहिता भ्रमिणितट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमा-
णीहिं इमोसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुत्तमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढे उच्चत्तेण,
एवइयाइ छण्णउईए छायाणुमाणप्पमाणोहिं उमाए, एत्थ ण से सूरिए छण्णउइ पोरिसोय छाया
निव्वत्तेइ ति,

वय पुण एव वयामो—

ता साइरेग-अउणट्ठि-पोरिसोण सूरिए पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ ति ।

पोरिसिच्छाय-प्पमाण

प ता भ्रवद्ध-पोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?

उ ता ति-भागे गए वा सेसे वा ।

प ता अउणसट्ठिपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?

उ ता बावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा ।

प ता पोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?

उ ता चउठभागे गए वा सेसे वा,^१

प ता दिवड्डु-पोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?

उ ता पचभागे गए वा, सेसे वा ।

प ता वि पोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?

उ ता छभभागगए वा, सेसे वा ।

प ता अड्डाइज्ज-पोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?

उ ता सत्तभागगए वा, सेसे वा ।

एव भ्रवड्डुपोरिसिं छोडु छोडु पुच्छा,^२

दिवसभाग छोडु छोडु चागरण^३ जाव

१ पोरिसी की परिभाषा—

“पुरिस ति, संकु, पुरिस-सदीर वा, तता पुरिसे निष्फत्ता पोरिसी, एव सम्बस वरुणो यण स्वप्रमाणा धाया
भवति, तदा हवइ,

एय पोरिसि-प्रमाण उत्तरायणस्त अंते, दक्षिणायणस्त भाईए इक्क दिण भवइ, भतो पर अट्ट-एगसट्ठिभागा
अगुलस दक्षिणायणे बहडति उत्तरायणे हसति, एव मडले मडले भाना पोरिसी’

‘यह पोरिसी की परिभाषा सूर्य-प्रज्ञप्ति की टीका में नरिचूर्णि से उद्धृत है । चूर्णि की भाषा ससृत्त मिथिन
प्राकृत होती है, भत ऊपर अंकित चूर्णि-पाठ भ्रगुद नहीं है ।

२ एवमित्यादि-एवमुक्तेन प्रवर्तने ‘अट्टपोरिसी’ अट्टपुष्पप्रमाणा छाया दिप्त्वा, दिप्त्वा पृच्छा पृच्छामून
द्रष्टव्य ।

—सूर्य टीका

३ “दिवसभाग’ ति, पूव-पूवमूत्रापयया एकवमधिक दिवसभाग दिप्त्वा दिप्त्वा ध्यावरण, उत्तरमून भानव्यम् ।

—सूर्य टीका

५ ता ऋक्कटं ते सूरिए पोरिसिच्छाय निष्वत्तेइ ? आहिए त्ति षएज्जा ।

उ तत्य इमाओ छण्णउइ पडिवत्तीओ षण्णत्ताओ, त जहा—
तत्येगे एवमाहसु—

१ ता ऋत्थि ण से देसे जसि ण वेससि सूरिए एगपोरिसीय छाय निष्वत्तेइ, एगे एवमाहसु—
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता ऋत्थि ण से देसे जसि ण वेससि सूरिए दु पोरिसीय छाय निष्वत्तेइ, एगे एवमाहसु
एव एएण अमित्तावेण णेयत्थ, जाय (३-९५)

एगे पुण एवमाहसु—

९६—ता ऋत्थि ण से देसे जसि ण वेससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निष्वत्तेइ, एगे
एवमाहसु,

तत्य जे ते एवमाहसु—

१ ता ऋत्थि ण से देसे जसि ण वेससि सूरिए एग-पोरिसीय छाय निष्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,
ता सूरियस्त ण सव्यहेट्ठिमाओ सूर-स्पडिहीओ बहिता अमिणिसट्ठाहि सेसाहि ताडिज्जमाणीहि
इमीसे रथणप्पमाए पुडवीए बहुत्तमरमणिज्जाओ भूमिमागाओ जायइय सूरिए उड्डं उच्चत्तेण,
एवइयाए एगाए अट्ठाए, एगेण छायाणुमाणप्पमाणेण उमाए, तत्य से सूरिए एगपोरिसीय छाय
निष्वत्तेइ त्ति,

तत्य जे ते एवमाहसु—

२ ता ऋत्थि ण से देसे, जसि ण वेससि सूरिए दु-पोरिसीय छाय निष्वत्तेइ 'त्ति' ते एवमाहसु,
ता सूरियस्त ण सव्यहेट्ठिमाओ सूर-स्पडिहीओ बहिता अमिणिसट्ठाहि सेसाहि ताडिज्ज
माणीहि, इमीसे रथणप्पमाए पुडवीए बहुत्तमरमणिज्जाओ भूमिमागाओ जायइय सूरिए उड्डं
उच्चत्तेण, एवइयाइ बोहि अट्ठाहि बोहि छायाणुमाणप्पमाणेहि उमाए, एत्थ ण से सूरिए दुपोरिसीय
छाय निष्वत्तेइ त्ति,

३ ९५—एव एएण अमित्तावेण णेयत्थ, जाय

तत्य जे ते एवमाहसु—

९६—'ता ऋत्थि ण से देसे जसि ण वेससि सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाय निष्वत्तेइ त्ति' ते
एवमाहसु,

१ तत्र-तथा तत्र-तत्रे परतीविकानां मध्ये एके एवमाहु

'ता इति सूरवत् अमित्तं न देसे, अमित्तं देसे सूर्यं आगतं नत् एवपोरिपी तत्रपुत्तप्रमाणी (सूर्यसंहितासुरप्रमाणं
सर्वस्यापि प्रकाशकानुत्त एव प्रमाणी) शायो विवक्षयति । —सूर्य टीका

ता सूरियस्स ण सव्वहिट्ठिमाओ सूरप्पडिहीओ बहिता अग्निंसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमा-
णीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावइय सूरिए उड्ढे उच्चत्तेण,
एवइयाइ छण्णउईए छायाणुमाणप्पमाणोहिं उमाए, एत्य ण से सूरिए छण्णउइ पोरिसीय छाया
निव्वत्तेइ त्ति,

वय पुण एव वयामो—

ता साइरेग-अउणट्ठि-पोरिसीण सूरिए पोरिसिच्छाय निव्वत्तेइ त्ति ।

पोरिसिच्छाय-प्पमाण

प ता अरुद्ध-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता ति-भागे गए वा सेसे वा ।

प ता अउणसट्ठिपोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता वावीससहस्सभागे गए वा सेसे वा ।

प ता पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता चउवभागे गए वा सेसे वा,^१

प ता दिवड्डु-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता पचभागे गए वा, सेसे वा ।

प ता बि-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता छवभागगए वा, सेसे वा ।

प ता अट्टाइज्ज-पोरिसी ण छाया दिवसस्स किं गए वा सेसे वा ?

उ ता सत्तभागगए वा, सेसे वा ।

एव अरुद्धपोरिसिं छोडु छोडु पुच्छा,^२

दिवसभाग छोडु छोडु यागरण^३ जाव

१ पोरिसी की परिभाषा—

"पुरिस त्ति, सकु पुरिस-सरीर वा ततो पुरिसे निष्फला पोरिसी, एव सव्वस्स वत्थुणो यत्ता स्वप्रमाणा छाया
भवति, तदा हवइ,

एय पोरिसि-प्रमाण उत्तरायणस्स अते, दक्खिणायणस्स भाईए इक्क दिण भवइ, अतो पर अरुद्ध-उणसट्ठिभाग
अगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढति, उत्तरायणे हस्सति, एव मड्ढते मड्ढते अत्रा पोरिसी

'यह पोरिसी की परिभाषा सूर्य-प्राप्ति की टीका में नदिचूणि से उद्धृत है।' चूणि की भाषा सस्सुत्त मिश्रित
प्राकृत होती है, अत ऊपर अंकित चूणि-पाठ असुद्ध नहीं है ।

२ एवमित्यादि-एवमुक्तेन प्रकारेण 'अरुद्धपोरिसी' अरुद्धपुरयप्रमाणा छाया निप्पवा, शिप्पवा पृच्छा पृच्छायुत्त
इप्पत्थ्य ।

३ 'दिवसभाग' ति, पूव-पूवतूचापणया एकमधिक दिवसभाग शिप्पवा शिप्पवा व्याकरण, उत्तरपूत्र पाठय्य ।

—सूर्य टीका

- प ता अउणसद्विपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा, सेसे वा ?
 उ ता एगुणवीम-सय भागे गए वा, सेसे वा ।
 प ता अउणसद्विपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा सेसे वा ?
 उ ता यावीमहस्तभागे गए वा सेसे वा ।
 प ता साइरेण अउणसद्विपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा, सेसे वा ?
 उ ता नरिय किचि गए वा, सेसे वा ।

तस्य षड्नु इमा पणवीसविहा छाया पण्णत्ता, तजहा—

१ अम-छाया २ रज्जु छाया ३ पागार-छाया ४ पासाय-छाया ५ उग्गम छाया ६ उच्चत छाया ७ अणुलोम-छाया ८ पडिलोम-छाया ९ अरभिया छाया १० उवहया-छाया ११ समा छाया १२ पडिहया-छाया १३ पीत छाया १४ पक्क-छाया १५ पुरप्रोउदया छाया १६ पुरिम कठ मागुवगया-छाया १७ पच्छिम-कठ-मागुवगया छाया १८ छायाणुवाइणी छाया १९ विट्ठाणुवाइणी-छाया २० छाव-छाया २१ विक्कप्प छाया २२ वेहास छाया २३ कठ छाया २४ गोम छाया २५ पिट्ठोदग्गा-छाया ।

१ यहाँ अंकित प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई मतिपत्र वाचना की सूचनानुसार संशोधित है । सूयप्रज्ञति की '१ पा स । २ भा य । ३ घ गु । ४ ह य ' इन चारों प्रश्नों में मतिपत्र गये प्रश्नोत्तर यहाँ दी गई मतिपत्र वाचना की सूचना के अन्तर्गत विवरित हैं ? यह विषय पाठक स्वयं करें ।

प 'ता अउणसद्विपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा, सेसे वा ?

उ ता एगुणवीमसयभागे गए वा, सेसे वा ।

प ता अउणसद्विपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा, सेसे वा ?

उ ता यावीम-सहस्त भागे गए वा सेसे वा ।

प ता साइरेण अउणसद्विपोरिसी ण छाया दिवसस्त कि गए वा, सेसे वा ?

उ ता नरिय किचि गए वा, सेसे वा ।

(ब) यहाँ दो प्रश्नोत्तरों में अतिशय ही गद्या प्रतीत होता है । सबप्रथम मांड मुनसठ पोएणी छाया का प्रश्नोत्तर है । द्वितीय प्रश्नोत्तर मुनसठ पोएणी छाया का है । तृतीय प्रश्नोत्तर कुछ अतिशय मुनसठ पोएणी छाया का है ।

(घ) यहाँ प्रश्नों के अनुक्रम उभर भी नहीं है । प्रथम प्रश्नोत्तर में—'घाटे मुनसठ पोएणी छाया, एक ही अक्षर दिग्ग भाग में विपर्यय होती है' तथा 'माता' माना है किन्तु मतिपत्रवाचना पाठ के सूचनानुसार एक ही अक्षर विपर्यय में विपर्यय होती है ।

द्वितीय प्रश्नोत्तर में—मुनसठ पोएणी छाया की विपर्यय यावीम हस्तर दिग्ग भाग में होती है—'मेमा' माना है किन्तु यह मानना गद्यवा अशक्य है । क्योंकि मतिपत्र वाचना के सूचनापाठ की टीका में एक एक अक्षर अक्षर बदलते का ही सूचन है ।

तृतीय प्रश्नोत्तर में—'पाठ ही अक्षर है, क्योंकि मतिपत्र वाचना के सूचनापाठ में कई पोएणी छाया के सम्बन्ध प्रश्न हो तो यहाँ कहा गया उत्तरगुण अक्षर है ।

तत्त्य ण गोल-छाया अट्टविहा पण्णत्ता, त जहा—

- १ गोल-छाया २ अवड्ड-गोल-छाया ३ गाढ गोल-छाया ४ अवड्ड गाढ-गोल छाया
 ५ गोलवलि-छाया ६ अवड्ड-गोलावलि छाया ७ गोलपु ज छाया ८ अवड्ड गोल-पु ज छाया ।'



१ प्रस्तुत सूत्र में छाया के पञ्चीस प्रकार तथा गोल छाया के साठ प्रकार का कथन है। 'तत्त्येत्थादि, तत्र = तस्मात् पञ्चविंशति-छायामाना मध्ये खल्विय गोल-छाया अष्टविधा प्रजायता ।

सूर्य-प्रगति की टीका के इस कथन से प्रतीत होता है कि छाया के पञ्चीस प्रकारों में 'गोल-छाया' का नाम था और उसके साठ प्रकार भिन्न थे, किन्तु सूर्य-प्रगति की '१ आ स । २ आ स । ३ आ गु, ।' इन तीन प्रतियों में छाया के केवल सत्तरह नाम हैं और गोल छाया के साठ नाम हैं। इस प्रकार पञ्चीस पूर नाम लिय गये हैं। सत्तरह नामों में गोल-छाया का नाम नहीं है, फिर भी 'तत्त्येत्थादि' पाठ से सगति करके पञ्चीस नाम पूरे मानना आवश्यकजनक है।

एक 'ह व' प्रति में छाया के पञ्चीस नाम तथा गोल-छाया के साठ नाम हैं, जो मूल पाठ के अनुसार हैं।

दशम प्रामृत

[प्रथम प्रामृतप्रामृत]

णवत्तान आयलिया-णिवायजोगो य

३० प ता कह ते जोगे ति यत्युस्त आयलिया णिवाय ? आहिए ति वएज्जा ।

उ तत्य खल्ल इमाओ पच पडियत्तीओ पणत्ताओ, तजहा—

सत्येगे एवमाहसु—

१ ता सत्ये वि ण णवत्ता, वत्तियादिया भरणिपज्जवत्ताणा पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

२ ता सत्ये वि ण णवत्ता, महादिया अस्सेत-पज्जवत्ताणा पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

३ ता सत्ये वि ण णवत्ता, घणिट्ठादिया सवणपज्जवत्ताणा पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

४ ता सत्ये वि ण णवत्ता, अस्सिणी-आदिया रेवईपज्जवत्ताणा पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

एगे पुण एवमाहसु—

५ ता सत्ये वि ण णवत्ता, भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवत्ताणा पणत्ता, एगे एवमाहसु ।

यय पुण एव वयामो—

ता सत्ये वि ण णवत्ता, अमिई आदिया, उत्तरासाडा पज्जवत्ताणा पणत्ता, तजहा—अमिई

शवणी जाय उत्तरासाडा ।^१



दशम प्रामृत

[द्वितीय प्रामृतप्रामृत]

णखत्ताण चदेण जोगकालो

३३ प ता कह ते मुहुत्तमे आहिए ? ति वएज्जा,

उ ता एएसि ण अट्टावीसाए णखत्ताण,

[क] अत्थि णखत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएइ ।

[ख] अत्थि णखत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ।

[ग] अत्थि णखत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ।

[घ] अत्थि णखत्ता जे ण पणयालीसे मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ।

[क] प ता एएसि ण अट्टावीसाए णखत्ताण,

कयरे णखत्ते जे ण णव मुहुत्ते सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[ख] कयरे णखत्ता जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[ग] कयरे णखत्ता जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[घ] कयरे णखत्ता जे ण पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

[क] उ ता एएसि ण अट्टावीसाए णखत्ताण,

तत्थ जे ते णखत्ते, जे ण णव मुहुत्ते, सत्तावीस च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएति, से ण एगे, अमीयो ।^१

[ख] ता एएसि ण अट्टावीसाए णखत्ता ण,

तत्थ जे ते णखत्ता, जे ण पण्णरस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति, ते ण छ, तं जहा—
१ सतभिसया, २ भरणी, ३ अहा, ४ अस्सेसा, ५ साति, ६ जेट्ठा ।

[ग] ता एएसि ण अट्टावीसाए णखत्ताण,

तत्थ जे ते णखत्ता, जे ण तीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति, ते ण पण्णरस त जहा—
१ सवणो, २ धणिट्ठा, ३ पुव्वाभइवया, ४ रेवई, ५ अस्मिणी, ६ कत्तिया, ७ मगसिरा, ८ पुस्सो,
९ महा, १० पुव्वाफगुणी, ११ हत्थो, १२ चित्ता, १३ अणुराहा, १४ मूलो, १५ पुव्वासाठा ।

[घ] ता एएसि ण अट्टावीसाए, णखत्ताण,

१ षड्विंशत्यवसेसाहारेणे णव मुहुत्ते चदेण सद्धि जोय जोएइ मम ९ मु ५

तत्प जे ते णवपत्ता, जे ण पणयात्तोस मुहुत्ते चवेण सद्धि जोय जोएति, ते ण छ, तजहा—
१ उत्तरामह्यया, २ रोहिणी, ३ पुणव्यसू, ४ उत्तराफगुणी, ५ विसाहा, ६ उत्तरसाडा ।

सूरिय पा १०, पाठ २, गु ११

णवपत्ताण सूर्येण जोगकालो

३४ —ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

[क] अस्विय णवपत्ते जे ण चत्तारिं अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जाय जोएति ।

[ख] अस्विय णवपत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एवकीस च मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ।

[ग] अस्विय णवपत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, धारस य मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ।

[घ] अस्विय णवपत्ता जे ण बीस अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ।

प [क] ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

अयरे णवपत्ते जं चत्तारिं अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ?

[ख] ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

अयरे णवपत्ते जे ण छ अहोरत्ते, एवकीस च मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ?

[ग] ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

अयरे णवपत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते धारस य मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ?

[घ] ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

अयरे णवपत्ताण जे ण बीस अहोरत्ते, तिण्णि य मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ?

उ [क] ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

तत्प जे ते णवपत्ते जे ण चत्तारिं अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति ते ण एणे
अभीयो ।

(ख) ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

तत्प जे ते णवपत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एवकीस च मुहुत्ते, सूर्येण सद्धि जोय जोएति ते ण छ,
तजहा—१. सतमितया, २ भरणी, ३ अदा, ४ अस्तोमा, ५ सातो, ६ जेट्टा ।

(ग) ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

तत्प जे ते णवपत्ता, जे ण तेरस अहोरत्ते दुयात्तस य मुहुत्ते सूर्येण सद्धि जोय जोएति, ते ण
पणरस तजहा—१ रावणी, २ धनिट्टा, ३ पुट्टामह्यया, ४ रेवई, ५ अस्तिनी, ६ अतिवा,
६ मण्णितर, ७ पुत्तो, ८ मट्टा, ९ पुट्टाफगुणी, ११ हत्यो, १२ विसा, १३ अरराटा,
१४ मूत्तो, १५ पुट्टासाडा ।

(घ) ता एएसि ण भट्टावीसाए णवपत्ताण,

तत्प जे ते णवपत्ता, जे ण बीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते, सूर्येण सद्धि जोय जोएति ते ण छ,
तजहा—१ उत्तरामह्यया, २ रोहिणी, ३ पुणव्यसू, ४ उत्तराफगुणी ५ विसाहा, ६ उत्तरा
साडा ।

देशम प्राभृत

[तृतीय प्राभृतप्राभृत]

णवखत्ताण पुव्वाइभागा खेत्त-कालप्पमाण च

३५ प ता कह ते एवभागा णवखत्ता ? आहिया ति वएज्जा,
उ ता एएसि ण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

(क) अत्थि णवखत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ख) अत्थि णवखत्ता पच्छभागा, समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(ग) अत्थि णवखत्ता णत्तभागा अयड्डुखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ।

(घ) अत्थि णवखत्ता उभय भागा विड्डुखेत्ता, पणयालीस मुहुत्ता पण्णत्ता ।

प (क) ता एएसिण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

कयरे णवखत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ख) ता एएसिण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

कयरे णवखत्ता पच्छभागा समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(ग) ता एएसिण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

कयरे णवखत्ता णत्त भागा अयड्डुखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

(घ) ता एएसिण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

कयरे णवखत्ता उभयभागा दिवड्डुखेत्ता, पणयालीस-मुहुत्ता पण्णत्ता ?

उ (क) ता एएसिण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

तत्थ जे ते णवखत्ता पुव्वभागा, समखेत्ता, तीसइ-मुहुत्ता, पण्णत्ता, ते ण छ तजहा—

१ पुव्वापोट्टवया, २ कत्तिया, ३ महा, ४ पुव्वाफगुणी, ५ मूलो, ६ पुव्वासाडा ।

(ख) ता एएसि ण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

तत्थ जे ते णवखत्ता पच्छभागा समखेत्ता तीसइ-मुहुत्ता पण्णत्ता ते ण दस, तजहा—

१ अमिई, २ सवणो, ३ घणिट्टा, ४ रेवई, ५ अस्सिणी, ६ मिगतिर, ७ पूसो, ८ हत्थो, ९ चित्ता,

१० अणुराहा ।

(ग) ता एएसिण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

तत्थ जे ते णवखत्ता णत्तभागा अयड्डुखेत्ता पण्णरस-मुहुत्ता पण्णत्ता, ते ण छ, तजहा—

१ सयमिसया, २ भरणी, ३ अट्टा, ४ अस्सेसा, ५ साती, ६ जेट्टा ।

(घ) ता एएसि ण अट्टावीसाए णवखत्ताण,

तत्थ जे ते णवखत्ता उभयभागा दिवड्डुखेत्ता, पणयालीस मुहुत्ता पण्णत्ता, ते ण छ, तजहा—

१ उत्तरापोट्टवया, २ रोहिणी, ३ पुणव्यसू, ४ उत्तराफगुणी, ५ विसाहा, ६ उत्तरासागा ।

दशम प्रामृत

[चतुर्थ प्रामृतप्रामृत]

षष्ठत्तान चवेण जोगारमकालो

३६ प ता षट् ते जोगस्त भाई ? भाट्टिए त्ति मएज्जा,
उ ता अभियो-सयणा छलु बुये णवत्ता, पच्छाभागा समञ्जित्ता', माइरेगएग्गुणत्तात्तित्त
मुहुत्ता' तत्पटमयाए साय' चंदेण सट्ठि जोगेति', तमो पच्छा अयर साइरेग दिवस ।

एव छलु अभियो-सयणा बुये णवत्ता एगराई एग च साइरेग दिवस चंदेण सट्ठि जोगे
जोएति,

जोगे जो एत्ता जोगे अणुपरियट्ठित्ति,^१

जोगे अणुपरियट्ठित्ता सायं च द घण्टाण समपेत्ति,

२ ता घण्टा छलु णवत्ते पच्छाभागे समञ्जित्ते तोसह-मुहुत्ते' तत्पटमयाए सायं चंदेण सट्ठि
जोगे जोएइ, तमो पच्छाराइ अयर च दिवस ।

एव छलु घण्टा णवत्ते एग च राइ एग च दिवस चंदेण सट्ठि जोगे जोएइ,

जोगे जोएत्ता जोगे अणुपरियट्ठित्ति,

जोगे अणुपरियट्ठित्ता सायं चंदेण समपिसयानं समपेइ,

- १ "इह धम्मिज्जिज्जणं न समनेत्रं, माय्येवाप्यंलोत्रं, मायि इवर्द्धलोत्रं,
केवडं अक्खनत्तवेण सह सम्बद्धमुपात्तमित्तयेणेवधारान् तददि त्तमत्तवपुत्रवत्त्वं समलोत्रमित्तुत्तम् ।"
- २ "सात्तिरवा नवमुत्तां धम्मिजित्त्वं निजन्मुत्तां अक्खलत्वेणुत्तमनीतो वयोत्तं मुत्तवत्तियाणं भवति ।"
- ३ 'सायं विवासवेमानी, इह दिवसायं वत्तिट्ठमाक्खरमाइ भावादारण्यं वावत्तायं वत्तिमा भागो अन्नप्रासादि
परित्तुत्तं नत्तं मत्तसात्तात्तमावात्तं कामविशेषेण सायमिति विवत्तित्तो इत्तम् ।'
- ४ "इह धम्मिज्जिज्जणं चत्थि मुत्तसात्तां प्रवत्तवत्तेण सह योगमुत्तं, तत्तदि अक्खनत्तं सह सम्बद्धमित्तं तत्तित्तं, अक्ख
नत्तायं च मत्तमात्तमात्तवत्तं तत्तये अक्खनत्तं सह योगमुत्तात्तं, तत्तत्तत्तात्तवत्तं तत्तदि सायं समवे अक्ख
मुत्तमात्तं विवत्तित्ता सायमप्यं सायं अक्खनत्तं ।" "सट्ठि जोगे जोगेति इत्तुत्तम् ।

अथवा मुत्तसात्तित्तित्तियात्तया वाट्ठवत्तवत्तवत्तवत्तं तत्तये न वत्तित्तं ।" — टीका

३ "एवात्तं जालं यागं मुत्तया तत्तत्तत्तं योगमुत्तवत्तवत्तं, सायमप्यंमत्तवत्तं इत्तम् ।"

— पूर्वप्रश्नित्तं वी टीका से उत्तर ।

४ "सत्तयायं चत्तमुत्तम्" अक्ख के सायं विट्ठी वी नत्तं वा योगे यदि हीनं मुत्तं वत्तं वत्तं इह ती वत्तं
"सत्तयायं योगे" इह वत्ता इह ।

३ ता सयमितया खलु णक्खत्ते णत्तमागे भ्रवङ्खेत्ते^१ पण्णरस-मुहुत्ते, तप्पढमयाए साय चवेण सद्धि जोय जोएइ, नो लमइ अवर दिवस,

एव खलु सयमितया णक्खत्ते, एग राइ च चवेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुव्वपोट्टवयाण समप्पेइ,

४ ता पुव्वा पोट्टवया खलु णक्खत्ते पुव्व भागे^२ समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए पाम्रो चवेण सद्धि जोय जोएइ, तन्नो पच्छा अवर राइ,

एव खलु पुव्वापोट्टवया णक्खत्ते एग च दिवस एग च राइ चवेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाम्रो चद उत्तरापोट्टवयाण समप्पेइ,

ता उत्तरापोट्टवया खलु णक्खत्ते जमय भागे^३ दिवङ्खेत्ते पण्णालीस-मुहुत्ते^४, तप्पढमयाए पाम्रो चवेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राइ तन्नो पच्छा अवर च दिवस ।

एव खलु उत्तरापोट्टवया णक्खत्ते दो दिवसे एग च राइ चवेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद रेवईण समप्पेइ,

ता रेवई खलु णक्खत्ते पच्छमागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चवेण सद्धि जोय जोएइ, तन्नो पच्छा अवर दिवस,

एव खलु रेवई णक्खत्ते एग च राइ, एग च दिवस चवेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद अस्सिणीण समप्पेइ,

७ ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छमागे समक्खेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पढमयाए साय चवेण सद्धि जोय जोएइ, तन्नो पच्छा अवर दिवस,

एव खलु अस्सिणी णक्खत्ते, एग च राइ, एग च दिवस, चवेण सद्धि जोय जोएइ,

१ "अपार्थ-क्षेत्र पञ्चदशमुहूर्तम्" चन्द्र के साथ किसी भी नक्षत्र का योग, यदि पन्द्रह मुहूर्त पयत्त रहता है, तो वह "अपार्थ-क्षेत्र-योग" अर्थात् "भ्राष्ट्रा क्षेत्र योग" कहा जाता है ।

२ "इह पूर्वप्रोक्तपदानक्षत्र स्य प्रातश्चन्द्रेण सह प्रथमतया योग प्रवृत्त इतीदं पूर्वभागमुच्यते ।"

३ "इदं किलोत्तराभाद्रपदाख्य नक्षत्रमुत्तरावारेण प्रातश्चन्द्रेण सहयोगमधिगच्छति । केवलं प्रथमान् पञ्चदश-मुहूर्तान् अघ्निकानपनीय समन्त्रेण कल्पयित्वा यदा योगश्चिन्त्यते तदा तत्रतमपि योगोऽस्तीत्युभयभागमवधेयम् ।"

४ 'उत्तरप्रोक्तपदानक्षत्र खलु प्रथमभाग द्विपर्यन्तं पञ्चवत्वारिणामुहूर्त तत्रप्रथमतया-योगप्रथमतया प्रातश्चन्द्रेण साह्य योग युक्ति, तद्व्य, तथापुर्वं सत् त अत्रतमपि दिवसमपर च रात्रि तत पञ्चादार दिवसं मावद्भवति ।

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता, साय चव भरणीण समप्पेइ ।

८ ता भरणी छत्तु णवत्ते णत्त भागे,^१ अयमुत्ते, पण्णरसामुहत्ते तप्पदमयाए सायं चंदेण
सट्ठि जोय जोएइ, सो सभइ अयर वियस,

एय छत्तु भरणी णवत्ते एग च राइ चदेण साऽत्त जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोय अणुपरियट्टित्ता पाप्पो चव वत्तियाण समप्पेइ ।

९ ता वत्तिया छत्तु णवत्ते पुव्व भागे समवत्तेत्ते तीसइ-भुहत्ते तप्पदमयाए पाप्पो चंदेण
सट्ठि जोय जोएइ, तप्पो पच्छाराइ,

एयं छत्तु वत्तिया णवत्ते, एग च वियस एग च राइ चंदेण सट्ठि जोय जोएइ,

जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,

जोयं अणुपरियट्टित्ता पाप्पो चंइ रोहिणीण समप्पेइ ।^२

१ "यागमनुपरिख्यं सार्यं परित्कुटनशत्रमण्डतासोत्रसमये भरण्या समपयति, इदं च भरणी मध्यमुत्तमुराया रात्री
चन्द्रेण सह योगमुपाति, तत्रैव नवम भागयवसतयम्"

२ इगरे धागे मूल प्रति में—“सदिप्लवाचना” का पाठ इग प्रकार है—

१० "रोहिणी जहा उत्तराभर्षवा",

११ मगसिर जहा धनिट्टा,

१२ महा जहा सतभिगया,

१३ पुण्णमू जहा उत्तराभर्षवा,

१४ पुम्पो जहा धनिट्टा,

१५ अमसेता जहा सतभिगया,

१६ महा जहा पुण्णापण्णुणी,

१७ पुण्णापण्णुणी जहा पुण्णाभर्षवा,

१८ उत्तरापण्णुणी जहा उत्तराभर्षवा,

१९-२० श्रुत्तो, वित्ता य जहा धनिट्टा,

२१ शाली जहा सत्तियदा,

२२ विगाहा जहा उत्तराभर्षवा,

२३ अणुराहा जहा धनिट्टा,

२४ त्रिट्टा जहा सतभिगया,

२५ मूलो जहा पुण्णाभर्षवा,

२६ पुण्णाताडा जहा पुण्णाभर्षवा

२७ उत्तरागाडा जहा उत्तराभर्षवा

१० ता रोहिणी खलु णवखत्ते उभयभागे दिवड्डुत्ते पणयालीस-मुहुत्ते तप्पडमयाए, पाओ
चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राई तओ पच्छा अवर दिवस,

एव खलु रोहिणी णवखत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद मिगसर समप्पेइ ।

११ ता मिगसिरे खलु णवखत्ते पच्छभागे समवेत्ते तीसइमुहुत्ते तप्पडमयाए साय चदेण सद्धि
जोय जोएइ तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु मिगसिरे णवखत्ते एग च राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद अट्टाए समप्पेइ ।

१२ ता अट्टा खलु णवखत्ते नत्तभागे अवरड्डुत्ते पणरस मुहुत्ते तप्पडमयाए साय चदेण सद्धि
जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु अट्टा णवखत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुणव्वसूण समप्पेइ ।

१३ ता पुणव्वसू खलु णवखत्ते उभयभागे दिवड्डुत्ते पणयालीस मुहुत्ते तप्पडमयाए पाओ
चदेण सद्धि जोय जोएइ, अवर च राइ तओ पच्छा अवर च दिवस,

एव खलु पुणव्वसू णवखत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद पुस्सत्त समप्पेइ ।

१४ ता पुस्से खलु णवखत्ते पच्छभागे समवेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पडमयाए साय चदेण सद्धि
जोय जोयइ, तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु पुस्से णवखत्ते एग च राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोएत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद असिलेसाए समप्पेइ ।

१५ ता असिलेसा खलु णवखत्ते नत्तभागे अवरड्डुत्ते पणरस मुहुत्ते तप्पडमयाए साय चदेण
सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु असिलेसा णवखत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,

जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टेइ,
जोयं अणुपरियट्टित्ता पाप्पो चद मघाण समप्पेइ ।

१६ ता मघा खनु णरउत्ते पुव्वभागे समवगेत्ते तीगइ मुट्ठत्ते तत्पडमयाए पाप्पो चदेण सट्ठि
जोय जोएइ, तप्पो पच्छा अवर राइ,

एय खनु मघा णरउत्ते एग च दिवस एग च राइ चदेण सट्ठि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टेइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाप्पो चद पुव्वाफग्गुणीण समप्पेइ ।

१७ ता पुव्वाफग्गुणी खनु णरउत्ते पुव्वभागे समवगेत्ते तीगइ मुट्ठत्ते तत्पडमयाए पाप्पो चदेण
सट्ठि जोय जोएइ, तप्पो पच्छा अवर राइ,

एय खनु पुव्वाफग्गुणी णरउत्ते एग च दिवस एग च राइ चदेण सट्ठि जोयं जोएइ,
जोय जोइत्ता जोयं अणुपरियट्टेइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाप्पो चद उत्तराफग्गुणीण समप्पेइ ।

१८ ता उत्तराफग्गुणी खनु णरउत्ते उमवगागे दिवइठगेत्ते पणयाओत्तइ-मुट्ठत्ते तत्पडमयाए
पाप्पो चदेण सट्ठि जोय जोएइ, अवर च राइ तप्पो पच्छा अवर च दिवस,

एय खनु उत्तराफग्गुणी णरउत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सट्ठि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टेइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद ह्य्य समप्पेइ ।

१९ ता ह्य्ये खनु णरउत्ते पच्छभागे समवगेत्ते तीगइमुट्ठत्ते तत्पडमयाए साय चदेण सट्ठि
जोय जोएइ, तप्पो पच्छाराइ अवर च दिवस,

एय खनु ह्य्यणरउत्ते एग च राइ, एग च दिवस चदेण सट्ठि जोय जोएइ,
जाय जोइत्ता जाय अणुपरियट्टेइ,
जाय अणुपरियट्टित्ता साय चद चिन्नाए समप्पेइ ।

२० ता चिन्ना खनु णरउत्ते पच्छभाग समवगेत्ते तीगइमुट्ठत्ते तत्पडमयाए साय चदेण सट्ठि
जोय जोएइ, तप्पो पच्छाराइ अवर च दिवस,

एय खनु चिन्ना णरउत्ते एग च राइ, एग च दिवस चदेण सट्ठि जोय जोएइ,
जोयं जोइत्ता जाय अणुपरियट्टेइ
जोयं अणुपरियट्टित्ता साय चद माईए समप्पेइ ।

२१ ता माई खनु णरउत्ते तत्तभागे अयइठगेत्ते पणरममुट्ठत्ते तत्पडमयाए साय चदेण सट्ठि
जोयं जोएइ, गो ममइ अवरं दिवस,

एव खलु साई णवखत्ते एग राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद विसाहाण, समप्पेइ ।

२२ ता विसाहा खलु णवखत्ते उभयभागे दिवडुखेत्ते पणयात्तीस-मुहुत्ते तप्पडमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ-अवर च राइ तओ पच्छा अवर दिवस,

एव खलु विसाहा णवखत्ते दो दिवसे एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद अणुराहाए समप्पेइ ।

२३ ता अणुराहा खलु णवखत्ते पच्छभाग समवखेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पडमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छाराइ अवर च दिवस,

एव खलु अणुराहा णवखत्ते एग राइ एग च दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता साय चद जिट्ठाए समप्पेइ ।

२४ ता जेट्ठा खलु णवखत्ते नत्तभागे अरुडुखेत्ते पण्णरस मुहुत्ते तप्पडमयाए साय चदेण सद्धि जोय जोएइ, नो लभइ अवर दिवस,

एव खलु जिट्ठा णवखत्ते एग दिवस चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद मूलत्त समप्पेइ ।

२५ ता मूले खलु णवखत्ते पुव्वभागे समवखेत्ते तीसइ-मुहुत्ते तप्पडमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ, तओ पच्छा अवर च राइ,

एव खलु मूल णवखत्ते एग च दिवस च राइ च चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद पुव्वासाढाण समप्पेइ ।

२६ ता पुव्वासाढा खलु णवखत्ते पुव्व भागे समवखेत्ते तीसइ मुहुत्ते तप्पडमयाए पाओ चदेण सद्धि जोय जोएइ तओ पच्छा अवर च राइ,

एव खलु पुव्वासाढा णवखत्ते एग च दिवस एग च राइ चदेण सद्धि जोय जोएइ,
जोय जोइत्ता जोय अणुपरियट्टइ,
जोय अणुपरियट्टित्ता पाओ चद उत्तरासाढाण समप्पेइ ।

२७ ता उत्तरासाता गतु नक्षत्रे उभयभागे द्वियङ्गुते पणयातीत मृतुते तत्पद्मभागे पाघो
चदेण मद्धि जोय जाण्ड, अवर च राइ तमो पच्छा अवर च दिवग,

एय गतु उत्तरासाता नक्षत्रे दो दिवमे एग च राइ चदेण मद्धि जोय ओण्ड,

जोय जोइता जोय अणुपण्यिट्टइ,

जाण अणपरियट्टिता माय चद अमिई सवणाण समत्वेइ ।^१



दशम प्रामृत

[पचम प्रामृतप्रामृत]

पञ्चदशतम कुलोवकुलाइ—

३७ ता कह ते कुला (उवकुला, कुलोवकुला) ? आहिए ति चएज्जा ।^१

तत्य धलु इमे बारस कुला, बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पणत्ता ।

बारसकुला पणत्ता त जहा—

१ घणिट्ठा कुल २ उत्तरामहवया कुल ३ अस्सिणी कुल ४ कत्तिपाकुल ५ मिगसिरकुल
६ पुस्सकुल ७ महाकुल ८ उत्तराफगुणी कुल ९ चित्ताकुल १० विसाहाकुल ११ मूलकुल
१२ उत्तरासाढाकुल ।

बारस उवकुला पणत्ता त जहा—

१ सवणो उवकुल २ पुव्वापोट्टवयाउवकुल ३ रेवई उवकुल ४ भरणी उवकुल ५ रोहिणी
उवकुल ६ पुणव्वसु उवकुल ७ अस्सेसा उवकुल ८ पुव्वाफगुणी उवकुल ९ हत्थो उवकुल
१० सातो उवकुल ११ जेट्टा उवकुल १२ पुव्वासाढा उवकुल ।

चत्तारि कुलोवकुला पणत्ता त जहा—

१ अमियो कुलोवकुल २ सतमिसया कुलोवकुल ३ अहा कुलोवकुल ४ अणुराहा कुलोवकुल ।

१ सूर्यप्रजन्ति मे प्रस्तुत प्रथमसूत्र घण्डित है अत कोष्ठक के अन्तगत 'उवकुला, कुलोवकुला' अंकित करने
उत्ते पूरा किया है, जम्बूद्वीपप्रजन्ति सदा० ७ सूत्र १६१ में यह प्रथमसूत्र इस प्रकार है—

प्र० कति थ भते ! कुला ? कति उवकुला ? कति कुलोवकुला पणत्ता ?

उ० गोयमा ! बारस कुला बारस उवकुला, चत्तारि कुलोवकुला पणत्ता ।

येष पाठ सूर्यप्रजन्ति के समान है किन्तु जम्बूद्वीपप्रजन्ति के इस प्रश्नोत्तर सूत्र में बारह कुल नक्षत्रों के नामों
के बाद कुलादि के लक्षण की सूचक एक गाथा दी गई है जो सूर्यप्रजन्ति की टीका में भी उद्धृत है और यह
गाथा प्रस्तुत सफलन में भी उद्धृत है । जम्बूद्वीपप्रजन्ति के सफलनकर्ता यदि यह गाथा प्रस्तुत सूत्र के प्रारम्भ
में या अन्त में देते तो अधिराज उपयुक्त रहती ।

गाथा—मासाण परिणामा, हाति कुला उवकुला उ हेट्ठिमगा ॥

होति पुण कुलोवकुला अमियो-मयमित्तम मद् अणुराहा ।

—उवु वसथ ७, गु १६१

“कि कुलादीनां लगणम् ?

उच्यते मासाणां परिणामानि-परिसमापणानि भवन्ति कुमानि कोऽप्य ? इह यवदार्त्रे प्राया मासानां
परिसमाप्त्य उपजायन्त माससद्वनानामानि च तानि नक्षत्राणि कुत्रातीति प्रसिद्धानि ।

'कुलानामघस्तनानि नक्षत्राणि श्रवणादीनि उात्रुत्तानि कुलाया समीपमुपवृत्ते तत्र सर्वेते यानि नक्षत्राणि
तामुपचारादुपवृत्तानि ।

^१ यानि कुलानामुपवृत्ताणां चाश्रयतां तानि कुत्राववृत्तानि ।

—जम्बू टीका

भासोद्वेष्य पुण्ड्रिणं कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता भासोद्वेष्य पुण्ड्रिणं जुत्तेति वत्तव्यं तिया ।

४ प ता कतिद्वेष्य पुण्ड्रिणं वि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुतोवकुल जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो तमइ कुतोवकुल,

१ कुल जोएमाणे कतिद्वेष्य वत्तव्यते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे मरणो वत्तव्यते जोएइ,

कतिद्वेष्य पुण्ड्रिणं कुलेण वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा जुत्ता कतिद्वेष्य पुण्ड्रिणं जुत्तेति वत्तव्यं तिया ।

५ प ता मागमिरी पुण्ड्रिणं वि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुतोवकुल जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो तमइ कुतोवकुल,

१ कुल जोएमाणे मागमिरी वत्तव्यते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे शहिणो वत्तव्यते जोएइ,

मागमिरी पुण्ड्रिणं कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता मागमिरी पुण्ड्रिणं जुत्तेति वत्तव्यं तिया ।

६ प ता पोसिण्य पुण्ड्रिणं वि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुतोवकुल जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुतोवकुल वा जोएइ,

१ कुल जोएमाणे पुस्से वत्तव्यते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे पुण्यव्यू वत्तव्यते जोएइ,

३ कुतोवकुल जोएमाणे महा वत्तव्यते जोएइ,

पोसिण्य पुण्ड्रिणं कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुतोवकुल वा जोएइ,

कुलेण वा, उवकुलेण वा, कुतोवकुलेण वा जुत्ता पोसिण्य पुण्ड्रिणं जुत्तेति वत्तव्यं तिया ।

७ प ता माहिण्य पुण्ड्रिणं वि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुतोवकुल जोएइ ?

उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो तमइ कुतोवकुल,

१ कुल जोएमाणे महा वत्तव्यते जोएइ,

२ उवकुल जोएमाणे धम्ममा वत्तव्यते जोएइ,

माहिण्य पुण्ड्रिणं कुल वा जोएइ, उवकुलेण वा जोएइ,

कुलेण वा उवकुलेण वा जुत्ता माहिण्य पुण्ड्रिणं जुत्तेति वत्तव्यं तिया ।

- ८ प ता फग्गुणीण पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ नो लमइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे उत्तराफग्गुणी णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे पुव्वाफग्गुणी णवखत्ते जोएइ,
 फग्गुणीण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकलेण वा जोएइ,
 कलेण वा उवकलेण वा जुत्ता फग्गुणीण पुण्णिम जुत्ते ति वत्तव्व सिया,
- ९ प ता चित्तिण्ण पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ ?
 उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लमइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोयमाणे चित्ता णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोयमाणे हत्थ णवखत्ते जोएइ,
 चित्तिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकलेण वा जोएइ,
 कलेण वा, उवकलेण वा जुत्ता चित्तिण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया ।
- १० प ता विसाहिण्ण पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ ?
 उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लमइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे विसाहा णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे साती णवखत्ते जोएइ,
 विसाहिण्ण पुण्णिम कुलेण वा जोएइ, उवकलेण वा जोएइ,
 कलेण वा, उवकलेण वा जुत्ता विसाहिण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया ।
- ११ प ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
 १ कुल जोएमाणे मूले णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे जेट्ठा णवखत्ते जोएइ,
 ३ कुलोवकुल जोएमाणे अणुराहा णवखत्ते जोएइ,
 जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा, उवकलेण वा, कुलोवकुलेण वा जुत्ता जेट्ठा-मूलिण्ण पुण्णिम जुत्तेति वत्तव्व सिया,
- १२ प ता आसाडिण्ण पुण्णिम कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ ता कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लमइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे उत्तरासाडा णवखत्ते जोएइ,

२ उच्यते जोएमाणे पुष्यासाढा णवत्तं जोएइ,
 आसाडिण पुणिम कुत्त वा जोएइ, उच्यते वा जोएइ,
 कुत्तेण वा उच्यतेण वा जुता आसाडिण पुणिम जुत्तेति वसत्थं सिया,

दुवात्तसामु अमावात्तसामु णवत्तज्जोग-मग्ग

- १ प ता भाविट्ठि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति, तज्जहा अस्सेगा ष मघा ष,
- २ प ता पाट्टयइ ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति, त जहा पुष्याकग्गुणी उत्तराकग्गुणी,
- ३ प ता आमोइ ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति तज्जहा हत्थो, चित्ता ष,
- ४ प ता कत्तिइ ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति तज्जहा मातो, विगाहा ष,
- ५ प ता भागसिदि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ तिणि णवत्तं जोएति तज्जहा अणुराघा जेट्ठा मूलो ष,
- ६ प ता पोसि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति तज्जहा-पुष्यासाढा, उत्तरासाढा,
- ७ प ता भाट्ठि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ तिणि णवत्तं जोएति, तज्जहा १ अमीयो, २ सयणो, ३ पण्डित्ठा,
- ८ प ता कग्गुणी ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति तज्जहा १ सत्तमिमया, २ पुष्यापाट्टयया ।
- ९ प ता चेति ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति तज्जहा रेवई, अस्सिणो ष,
- १० प ता विताट्ठि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति तज्जहा भरणी, कत्तिया ष,
- ११ प ता जेट्ठा मूलि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ बुणि णवत्तं जोएति, त जहा रोहिणी, भागसिदि ष,
- १२ प ता आसाडि ण अमावात्तं कति णवत्तं जोएति ?
 उ तिणि णवत्तं जोएति, तज्जहा १ अरु, २ पुनरुत्तु, ३ पुत्तो,

दुवालसामु अमावासामु कुलाइ-णवखत्त-जोग-सखा-

- १ प ता साविट्टि ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ नो लभइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे महा णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे असिलेसा जोएइ,
 ता साविट्टि ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता साविट्टी अमावासा जुत्ता वि वत्तव्व सिया ।
- २ प ता पोट्टवइ ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे उत्तराफगुणी जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे पुब्बाफगुणी जोएइ,
 पुट्टवइ ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता पोट्टवया अमावासा जुत्तात्ति वत्तव्व सिया ।
- ३ प ता आसोइ ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे चित्ता णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे हृत्य णवखत्ते जोएइ,
 ता आसोइ ण अमावास कुल जोएइ, उवकुल जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता आसोई अमावासा जुत्ता त्ति वत्तव्व सिया ।
- ४ प कत्तिइ ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, नो लभइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे विसाहा णवखत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे साई णवखत्ते जोएइ,
 ता कत्तिइ ण अमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता कत्तिइ ण अमावास जुत्तित्तिवत्तव्व सिया ।
- ५ प ता मगसिरि ण अमावास कि कुल जोएइ, उवकुल जोएइ, कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
 १ कुल जोएमाणे मूलणवखत्ते जोएइ,

- १० प ता वेत्साहिं श्रमावास किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे भरणि णक्खत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे कत्तिया णक्खत्ते जोएइ,
 ता वेत्साहिं श्रमावास कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता वेत्साहिं श्रमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।
- ११ प ता जेट्टामूली श्रमावास किं कुल जोएइ उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ नो लब्भइ कुलोवकुल,
 १ कुल जोएमाणे रोहिणी णक्खत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे मगासिरे णक्खत्ते जोएइ,
 ता जेट्टामूली श्रमावास कुल वा जोएइ उवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता जेट्टामूली श्रमावासा जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।
- १२ प ता आसादिं श्रमावास किं कुल जोएइ, उवकुल जोएइ कुलोवकुल जोएइ ?
 उ कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ, कुलोवकुल वा जोएइ,
 १ कुल जोएमाणे भद्दा णक्खत्ते जोएइ,
 २ उवकुल जोएमाणे पुणव्वसू णक्खत्ते जोएइ,
 ३ कुलोवकुल जोएमाणे पुस्से णक्खत्ते जोएइ,
 ता आसादिं श्रमावास कुल वा जोएइ, उवकुल वा जोएइ कुलोवकुल वा जोएइ,
 कुलेण वा जुत्ता, उवकुलेण वा जुत्ता, कुलोवकुलेण वा जुत्ता, आसादिं श्रमावासा
 जुत्तत्ति वत्तव्व सिया ।



दशम प्रामृत

[सप्तम प्रामृतप्रामृत]

दुवालस पुण्णिमासु अमावासासु य चवेण-जग्गत्तसज्जोगो

५० १ प ता कट् ते सज्जिवाए अट्ठिा त्ति वएज्जा ?

उ [क] ता जया ण सज्जिवाए पुण्णिमा भवइ,
तया ण माहो अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण माहो पुण्णिमा भवइ,
तया ण सज्जिवाए अमावासा भवइ ।

२ [क] ता जया ण पुट्ठयई पुण्णिमा भवइ,
तया ण फग्गुणो अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण फग्गुणो पुण्णिमा भवइ,
तया ण पुट्ठयई अमावासा भवइ ।

३ [क] ता जया ण आसोई पुण्णिमा भवइ,
तया ण चेतो अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण चेतो पुण्णिमा भवइ,
तया ण आसोई अमावासा भवइ ।

४ [क] ता जया ण कत्तिवो पुण्णिमा भवइ,
तया ण वेसाहो अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया ण वेसाहो पुण्णिमा भवइ,
तया ण कत्तिवो अमावासा भवइ ।

५ [क] ता जया णं मग्गगिरो पुण्णिमा भवइ,
तया णं जेट्ठामूसो अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं जेट्ठामूसो पुण्णिमा भवइ
तया णं मग्गगिरो अमावासा भवइ ।

६ [क] ता जया णं दोसो पुण्णिमा भवइ
तया णं आगाडो अमावासा भवइ ।

[ख] ता जया णं आगाडो पुण्णिमा भवइ,
तया णं दोसो अमावासा भवइ ।

दशम प्राभृत

[अष्टम प्राभृतप्राभृत]

णवखत्ताण सठाण

- ४१ १ प ता कह ते णवखत्तसठिई आहिए त्ति वएज्जा ?
ता एएसि ण अट्टावीसाए णवखत्ताण अमीयी णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ गोसोसावलि-सठिए पण्णत्ते,
- २ प ता सवणे णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ काहार-सठिए पण्णत्ते,
- ३ प ता धणिट्ठा णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ सजणीपलीणग सठिए पण्णत्ते,
- ४ प ता सयभिसया णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ पुप्फोवयारसठिए पण्णत्ते,
- ५ प ता पुव्वापोट्टवया णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ अक्खड्डयाविसठिए पण्णत्ते ?
- ६ प ता उत्तरापोट्टवया णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ अक्खड्डयावि-सठिए पण्णत्ते,
- ७ प ता रेयई णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ णावासठिए पण्णत्ते,
- ८ प ता अस्सिणी णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ आसखध-सठिए पण्णत्ते,
- ९ प ता भरणी णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ भग-सठिए पण्णत्ते,
- १० प ता वसिया णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ छुरघरग-सठिए पण्णत्ते,
- ११ प ता रोहिणी णवखत्ते किसिठिए पण्णत्ते ?
उ सगड्डुडिड-सठिए पण्णत्ते,

- १२ प ता मिमत्सिषा ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ मगमोमादक्षि-मठिणं पञ्चास्ते,
- १३ प ता ब्रह्मा ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ दक्षिणविदु-मठिणं पञ्चास्ते,
- १४ प ता पुण्यव्यवहारे विसृष्टिणं पञ्चास्ते,
उ मुना-मठिणं पञ्चास्ते,
- १५ प ता पुत्रो ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ ब्रह्ममाण-मठिणं पञ्चास्ते,
- १६ प ता अस्तीना ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ पटान-मठिणं पञ्चास्ते,
- १७ प ता महा ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ पागार-मठिणं पञ्चास्ते,
- १८ प ता पुत्र्याचमुषी ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ अक्षयमिष-मठिणं पञ्चास्ते,
- १९ प ता उत्तराफागुमी ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ अक्षयमिष-मठिणं पञ्चास्ते,
- २० प ता हृत्प ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ हृत्प-मठिणं पञ्चास्ते,
- २१ प ता सिता ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ मुहूर्त्त-मठिणं पञ्चास्ते,
- २२ प ता गार्गी ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ चौमण-मठिणं पञ्चास्ते,
- २३ प ता विताहा ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ शम्पि मठिणं पञ्चास्ते
- २४ प ता अचाराहा ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ अचाराहि-मठिणं पञ्चास्ते,
- २५ प ता त्रेधा ऋषयस्ते विसृष्टिणं पञ्चास्ते ?
उ त्रेधा मठिणं पञ्चास्ते

- २६ प ता भूले णखत्ते किसिणिए पणत्ते ?
 उ विच्छुयल्लगोलसिणिए णणत्ते,
 २७ प ता पुब्बासाढा णखत्ते किसिणिए पणत्ते ?
 उ गयधिवक्कम-सिणिए पणत्ते,
 २८ प ता उत्तरासाढा णखत्ते किसिणिए पणत्ते ?
 उ सीहनिंसाइयसिणिए पणत्ते ।'



१ प एणसि ण भंते ! अट्टावीसाए णखत्ताण अमीई णखत्ते किसिणिए पणत्ते ?

उ गोयमा । गोसीसावलिंसिणिए पणत्ते,

गाहामो—

१ गोसीसावलि, २ काहार, ३ सउणी, ४ पुप्फोयमार, ५-६ वावी य ।

७ णावा, ८ आसक्खधम, ९ भग, १० छुरपरए ११ अ सगडुडी ॥

१२ मिगसीसावली, १३ पहिरविडु, १४ तुला, १५ बद्धमाणग, १६ पठागा ।

१७ पागारे, १८-१९ पल्लवे, २० हत्ये, २१ मुहकुल्लए षेव ॥

२२ धीसग, २३ दामणी, २४ एगावली य, २५ गयदत्त, २६ विच्छुयल्लगुले य ।

२७ गयविवक्कमे य तत्तो, २८ सीहनिंसीही य सठाणा ॥ —अबु वक्ख ७, सु १६०

सूयप्रसक्ति बी वत्ति मे ये गायाए उद्धत्त है—

पूर्वामाद्रपद-उत्तरामाद्रपद के संस्थान तथा पूर्वापाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी के संस्थान समान मान गए हैं बिन्दु पूर्वापादा-उत्तरापादा के संस्थान भिन्न भिन्न माने गए हैं ।

संस्थानों की इस विभिन्नता का हेतु इस प्रकार है —

पूर्वभद्रपदाया अर्द्धवापीसंस्थान, उत्तरभद्रपदाया अप्यर्धवापी संस्थान, एतद्ववापीद्वयमीसनेन परिपूर्णां वापी भवति, तेन सूत्रे वापीसुक्तम् ।

पूर्वपन्गुया अर्द्धपत्त्वकसंस्थान, उत्तरफल्गुया अप्यधपत्त्वक संस्थान, अत्रानि अर्द्धपत्त्वकद्वयमीसनेन परिपूर्णां वत्यो भवति, तेन संध्यान्वृता न ।

—अबु वक्ख ६, सु १६० वति

दशम प्रामृत [नवम प्रामृतप्रामृत]

नवप्रस्तारणं तारगसखा

श्रुत ४२ १ प ता बह ते तारगो आहिए ति वएगजा ?

ता एएसि न घट्टावीताण नवप्रस्तारण घभीई नवप्रस्तं बतितारे पणत्त ?
उ तितारे पणत्ते,^१

२ प सवणे नवप्रस्तं बतितारे पणत्ते ?

उ तितारे पणत्ते,^१

३ प घनिट्टा नवप्रस्तं बतितारे पणत्ते ?

उ पघत्तारे पणत्ते,^३

४ प सममितया नवप्रस्तं बतितारे पणत्ते ?

उ सततारारे पणत्ते,^४

१ क-य तारगि नं भणे ^१ घट्टावीताण नवप्रस्तारणं घभीई नवप्रस्तं बतितारे पणत्त ?

उ सोवमा ! तितारे पणत्त,

एव नवपणा जस्य जइयाघो तारागो,

इधं च त तारगा

नाहाया —

तिव तिज-अंघद-नद-दुप-बभीगतं तिवं लह तिव च ।

स पचम तिव-एवक-अचम तिव सारकण वेव ॥१॥

सामय दुप-दुप-अचम-एवक-अचम-अच-अच-तिवं वेव ।

एवहाउमन चउवक चउवक वेव नारण ॥२॥

उदु वत २ गु १२*

२ घनिट्टा-अचम तितारे पणत्त

एव नवपणे घनिट्टाणी नारणी सममिते, गुमे त्रेट्टा -अणं च ३, उ ३ गु २२*

घनिट्टा-अचम तितारे पणत्त, —अणं च ३, गु *

३ क तारं च ३ उ ३, गु २२*

गु तारं च ३ गु *

४ क एव नवप्रस्तं नवप्रस्तं बतितारे तं जहा १ घनिट्टा, २ घनिट्टा, ३ घनिट्टा, ४ घनिट्टा, ५ घनिट्टा, ६ घनिट्टा, ७ घनिट्टा, ८ घनिट्टा, ९ घनिट्टा, १० घनिट्टा

अणं च ३ उ ३ गु २२*

गु तारं च ३ गु १२*

५ क-य नवप्रस्तं नवप्रस्तं बतितारे पणत्त, —अणं च ३, गु *

- ५ प पुष्वापोढ्वया णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ दुत्तारे पण्णत्ते,^१
- ६ प उत्तरापोढ्वया णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ दुत्तारे पण्णत्ते,^२
- ७ प रेवई णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ बत्तीसइत्तारे पण्णत्ते,^३
- ८ प अस्सिणी, णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,^४
- ९ प भरणी णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,^५
- १० प कत्तिया णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ छत्तारे पण्णत्ते,^६
- ११ प रोहिणीणवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ पचत्तारे पण्णत्ते,^७
- १२ प मिगत्तिरे णवखत्ते कत्तितारे पण्णत्ते ?
उ तितारे पण्णत्ते,^८

- १ व-पुष्वाभद्वयाणवखत्ते दुत्तारे पण्णत्ते, —टाणं ध २ उ ५, मु ११०
घ-सम स २, मु ९
- २ व- उत्तराभद्वयाणवखत्ते दुत्तारे पण्णत्ते —टाणं ध २ उ ५ मु ११०
घ सम स २ मु ६
- ३ रेवईणवखत्ते बत्तीसइ तारे पण्णत्ते —सम स ३२ मु ५
- ४ व-टाणं, ध ३, उ ३ मु २२७
घ-सम स ३ मु ९
- ५ व-टाणं, ध ३ उ ३, मु २२७
घ-सम स ३, मु ९
- ६ कत्तिया णवखत्ते छत्तारे पण्णत्ते
व-टाणं ध ६ मु ५३९
घ-सम स ६ मु ७
- ७ व-टाणं ध ५ उ ३, मु ४७३
घ सम स ५, मु १३
- ८ व-टाणं ध ३ उ ३ मु २००
घ-सम स ३, मु ९

- १३ व अद्वा णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ एगत्तारे वण्णत्ते, १
- १४ व पुण्य्यमू णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ वघत्तारे वण्णत्ते, १
- १५ व पुस्से णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ तितारे वण्णत्ते, १
- १६ व अस्सेसा णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ छनारे वण्णत्ते, १
- १७ व मघा णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ सत्ततारे वण्णत्ते, १
- १८ व पुव्याफग्गुणी णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ दुत्तारे वण्णत्ते, १
- १९ व उत्तराफग्गुणी णव्यत्ते क्तितारे वण्णत्ते ?
उ दुत्तारे वण्णत्ते, १

-
- १ व अद्वा णव्यत्ते वण्णत्तारे वण्णत्ते,
गणं, घ १, गु ५५
- घ-गम घ १, गु २३
- २ व ठाग घ ५ उ ३, गु ५७३
- घ-गम घ ५, गु १३
- ३ व क-ठानं घ ३ उ ३, गु २२७
- घ-गम घ ३, गु ९
- ४ व क-ठानं घ ६, गु ५३१
- घ-गम घ ६, गु ७
- ५ व क-अद्वा णव्यत्ते वण्णत्तारे वण्णत्ते
ठाग घ ७, गु २८१
- घ-गम घ ७, गु ७
- ६ व क-ठाग घ ७, उ ५, गु ११०
- घ-गम घ ७, गु ६
- ७ व क-ठानं ठा २ उ ५, गु ११०
- घ-गम घ ७, गु ६

- २० प हृद्य णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ पचत्तारे पणत्ते,^१
- २१ प चित्ता णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ एकत्तारे पणत्ते,^२
- २२ प साती णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ एकत्तारे पणत्ते,^३
- २३ प विसाहा णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ पचत्तारे पणत्ते,^४
- २४ प अणुराहा णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ पचत्तारे पणत्ते,^५
- २५ प जेह्वा णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ तितारे पणत्ते,^६
- २६ प मूले णवखत्ते कतितारे पणत्ते ?
 उ एगत्तारे पणत्ते,^७

१ क-ठार्ण, ठा ५, उ ३, सु ५७३

घ-सम स ५, सु १३

२ क-ठार्ण, ठा १, सु ५५

घ-सम स १, सु ५५

३ क-ठार्ण, ठा १, सु ५५

घ-सम १, सु २३

४ क-ठार्ण, ठा ५, उ ३, सु ५७३

घ-सम स ५, सु १२

५ क-अणुराहा णवखत्ते कतितारे पणत्ते—ठार्ण घा ४ उ ४ सु ३०६

घ-सम ४ सु ७

६ क-जेह्वा, ठा ३, उ ३ सु २२७

घ-सम स ३, सु ९

७ क-मूले णवखत्ते कतितारे पणत्ते—सम ११ सु ५

- २७ ए पुण्यागाडा नरघत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
 उ चउत्तारे पण्णत्ते, १
- २८ ए उत्तरागाडा नरघत्ते कतितारे पण्णत्ते ?
 उ चउत्तारे पण्णत्ते ।*



दशम प्राभृत

[दशम प्राभृतप्राभृत]

वास-हेमत-गिम्ह-राइ दियाण

४३ प १ क ता कह ते नेता आहिए ति वएज्जा ?

ख ता वासाण पढम मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता चत्तारि णवखत्ता णेति, त जहा—१ उत्तरासाढा, २ अभिई, ३ सवणा,
४ घणिट्ठा ।

१ उत्तरासाढा चोइस अहोरत्ते णेइ,

२ अभिई सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४ घणिट्ठा एग अहोरत्त णेइ,

तसि ण माससि चउरगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्ठइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ चत्तारि य अगुलाणि पोरिसी भयइ ।

प २ ता वासाण वितिय मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता चत्तारि णवखत्ता णेति, त जहा—१ घणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वपोट्ठवया,
४ उत्तरपोट्ठवया,

१ घणिट्ठा चोइस अहोरत्ते णेइ,

२ सतभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ पुव्वपोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४ उत्तरपोट्ठवया एग अहोरत्त णेइ,

तसि ण माससि अट्ठगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्ठइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ अट्ठ अगुलाइ पोरिसी भयइ ।

प ३ ता वासाण ततिय मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता तिण्णि णवखत्ता णेति, त जहा १ उत्तरपोट्ठवया, २ रेयई, ३ अस्सिणी,

१ उत्तरपोट्ठवया चोइस अहोरत्ते णेइ,

२ रेयई षण्णरत्त अहोरत्ते णेइ,

३ अस्सिणी एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण माससि दुयात्तसगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्ठइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे सेहत्थाइ तिण्णि पयाइ पोरिसी भयइ ।

- २७ प पुण्यामादा षडधत्ते क्तितारे पन्नात्ते ?
 उ षडतारे पन्नात्ते, १
- २८ प उत्तरामादा षडधत्ते क्तितारे पन्नात्ते ?
 उ षडतारे पन्नात्ते ।*



दशम प्रामृत

[दशम प्रामृतप्रामृत]

वास-हेमत-गिम्ह-राइवियाण

४३ प १ क ता कह ते नेता आहिए ति वएज्जा ?

ख ता वासाण पढम मास कति णवखत्ता णैति ?

उ ता चत्तारि णवखत्ता णैति, त जहा—१ उत्तरासाढा, २ अर्भिई, ३ सवणा,
४ धणिट्ठा ।

१ उत्तरासाढा चोदस अहोरत्ते णेइ,

२ अर्भिई सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४ धणिट्ठा एग अहोरत्त णेइ,

तसि ण माससि चउरगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्ठइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ चत्तारि थ अगुलाणि पोरिसी भवइ ।

प २ ता वासाण वित्ति मास कति णवखत्ता णैति ?

उ ता चत्तारि णवखत्ता णैति, त जहा—१ धणिट्ठा, २ सत्तभिसया, ३ पुध्वपोट्ठवया,
४ उत्तरपोट्ठवया,

१ धणिट्ठा चोदस अहोरत्ते णेइ,

२ सत्तभिसया सत्त अहोरत्ते णेइ,

३ पुध्वपोट्ठवया अट्ठ अहोरत्ते णेइ,

४ उत्तरपोट्ठवया एग अहोरत्त णेइ,

तसि ण माससि अट्ठगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्ठइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइ अट्ठ अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प ३ ता वासाण तत्ति मास कति णवखत्ता णैति ?

उ ता तिणि णवखत्ता णैति, त जहा १ उत्तरपोट्ठवया, २ रेवई, ३ अस्सिणी,

१ उत्तरपोट्ठवया चोदस अहोरत्ते णेइ,

२ रेवई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ अस्सिणी एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण माससि दुयालसगुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्ठइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहत्याइ तिणि पयाइ पोरिसी भवइ ।

प ४ ता वागाच चउत्प माग वति नवप्रसा वेंति ?

उ ता तिणि नवप्रसा वेंति, तजहा - १ अस्तिनी, २ भरणी, ३ वतिपा,

१ अस्तिनी चउत्प अहोरत्ते जेइ,

२ भरणी पणारम अहोरत्ते जेइ,

३ वतिपा एग अहोरत्त जेइ,

तमि ख न मासमि सोत्तमगुनाए पोरिए छायाए मूरिए अणुपरित्यट्टइ,

तम्प न मासम अरिमे दिवसे तिणि पयाइ अत्तारि अणुनाइ पोरिमी भवइ ।

प १ ता हेमताच पडम माग वति नवप्रसा वेंति ?

उ ता तिणि नवप्रसा वेंति, तंजहा - १ वतिपा, २ रोहिणी, ३ मठाणा,

१ वतिपा चोइम अहोरत्ते जेइ,

२ रोहिणी पणारम अहोरत्ते जेइ,

३ मठाणा एग अहोरत्त जेइ,

तमि ख न मासमि सोत्तमगुनाए पोरिमी छायाए मूरिए अणुपरित्यट्टइ,

तम्प न मासम अरिमे दिवसे तिणि पयाइ अट्ट अणुनाइ पोरिमी भवइ ।

प २ ता हेमताच विनिय मास वति नवप्रसा वेंति ?

उ ता अत्तारि नवप्रसा वेंति, तजहा - १ मठाणा, २ अट्टा, ३ पुणभव्यु, ४ पुरतो,

१ मठाणा चोइम अहोरत्ते जेइ,

२ अट्टा सत्त अहोरत्ते जेइ,

३ पुणभव्यु अट्ट अहोरत्ते जेइ,

४ पुरतो एग अहोरत्त जेइ,

तमि ख न मासमि सोत्तमगुनाए पोरिमी छायाए मूरिए अणुपरित्यट्टइ,

तम्प न मासम अरिमे दिवसे तिणि पयाइ अत्तारि पयाइ पोरिमी भवइ ।

प ३ ता हेमताच ततिव माग वति नवप्रसा वेंति ?

उ ता तिणि नवप्रसा वेंति, तंजहा १ पुरतो, २ अरमेगा, ३ मठा

१ पुरतो चोइम अहोरत्त जेइ,

२ अरमेगा पंचदश अहोरत्ते जेइ,

३ मठा एग अहोरत्त जेइ,

तमि ख न मासमि सोत्तमगुनाए पोरिमी छायाए मूरिए अणुपरित्यट्टइ,

तम्प न मासम अरिमे दिवसे तिणि पयाइ अट्टअणुनाइ पोरिमी भवइ ।

प ४ ता हेमताण चउत्य मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता तिणिण णवखत्ता णेति त जहा— १ मघा, २ पुब्बाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी,

१ मघा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ पुब्बाफग्गुणी पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ उत्तराफग्गुणी एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण माममि सोलस अगुलाइ पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्म ण मासस्स चरिमे दिवसे तिणिण पयाइ चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प १ ता गिम्हाण पढम मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता तिणिण णवखत्ता णेति, तजहा— १ उत्तराफग्गुणी, २ हृत्यो, ३ चित्ता,

१ उत्तराफग्गुणी चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ हृत्यो पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ चित्ता एग अहोरत्त णेइ,

तसि च ण माससि दुवालसगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्टाइ य तिणिण पयाइ पोरिसी भवइ ।

प २ ता गिम्हाण वितिय मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता तिणिण णवखत्ता णेति, तजहा— १ चित्ता, २ साई, ३ विसाहा

१ चित्ता चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ साई पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ विसाहा एग अहोरत्ते णेइ,

तसि च ण माससि अट्ट गुलाए पोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाइ अट्ट अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प ३ गिम्हाण ततिय मास कति णवखत्ता णेति ?

उ ता तिणिण णवखत्ता णेति त जहा १ विसाहा, २ अणुराहा, ३ जेट्टामूलो,

१ विसाहा चोद्दस अहोरत्ते णेइ,

२ अणुराहा पण्णरस अहोरत्ते णेइ,

३ जेट्टामूलो एग अहोरत्ते णेइ,

तसि च ण मासमि चउरगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टइ,

तस्स ण मासस्स चरिमे दिवसे दो पयाणि च चत्तारि अगुलाइ पोरिसी भवइ ।

प ४ ता गिर्याय चरय मात कति नरपत्ता नैति ?

उ ता त्रिणि नरपत्ता नैति, तंग्हा — १ मुत्तो, २ पुम्भाताडा, ३ उतरामाडा,

१ मुत्तो खोद्ग घटारत्ते नोइ,

२ पुम्भाताडा पन्तरस घटोरत्ते नोइ,

३ उतरामाडा एग घटोरत्त नोइ,

तसि ख न मागति थट्टाए समच्चउरमगठियाए नगगोघपरिमइताए सजायमसुरनिषेए
छामाए मूरिण अणुपरिमट्टइ ।

तस्त न मातसग घरिमे दिवगे सेट्टुइ हो पडाइ पोरमोए भवइ ।



दशम प्राम्बूल

[वयारहवा प्राम्बूलप्राम्बूल]

चदमगे णवखत्तजोगसखा

- ४४ प ता कह ते चदमगा आहिए त्ति वएज्जा ?
- उ १ ता एएसि ण अट्ठावीसाए णवखत्ताण—
अत्थि णवखत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएत्ति,
२ अत्थि णवखत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएत्ति,
३ अत्थि णवखत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि उत्तरेणऽपि पमद् पि जोग जोएत्ति,
४ अत्थि णवखत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि पमद् पि जोग जोएत्ति,
५ अत्थि णवखत्ता जे ण चदस्स सया पमद् जोग जोएत्ति ।
- प १ ता एएसि ण अट्ठावीसाए णवखत्ताण—
कयरे णवखत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएत्ति ?
२ कयरे णवखत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएत्ति ?
३ कयरे णवखत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि उत्तरेणऽपि पमद् जोग जोएत्ति ?
४ कयरे णवखत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि पमद् जोग जोएत्ति ?
५ कयरे णवखत्ता जे ण चदस्स सया पमद् जोग जोएत्ति ?
- उ १ ता एएसि ण अट्ठावीसाए णवखत्ताण —
तत्थ जे ण णवखत्ता सया चदस्स दाहिणेण जोग जोएत्ति, ते ण छ, तजहा—१ सदाणा,
२ अट्ठा, ३ पुस्सो, ४ अस्सेसा, ५ हत्थो, ६ मूलो,
२ तत्थ जे ते णवखत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएत्ति, ते ण धारस, तजहा—
१ अमिहं, २ सयणो, ३ धणिट्ठा, ४ सतभिसया, ५ पुव्वमहवया, ५ उत्तरमहवया,
७ रेवई, ८ अस्सिणी, ९ भरणी, १० पुव्वफणुणी, ११ उत्तरफणुणी, १२ सातो,
३ तत्थ जे ते णवखत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि उत्तरेणऽपि पमद् जोग जोएत्ति, ते ण
सत्त, तजहा—१ वत्तिवा, २ रोहिणी, ३ पुणव्वपू, ४ महा, ५ चित्ता, ६ विगाहा,
७ अणुराहा,

- ४ तस्य ते न पश्यता जे न चक्षुरा द्वाहिमेन वि पश्ये जोग जोगति,
- ताया न दो घाताशायो मरुतयश्चिरे मरुते जोग जोगेणु वा, जोगेति वा जोगरुति वा
- ५ तस्य जे न पश्यते जे न मया चक्षुरेण पश्ये जाग जोगे, मा ए एता, वेद्रा ।

रवि-मति पश्यतेति अविरहियाण, विरहियाण सामन्त्याण य चक्षुमहत्याण मया-

- ४५ क ता एगि न पश्यतश्च चक्षुमहत्याण-
- अथि चक्षुमहत्या जे न मया पश्यतेति अविरहिया,
- ग अथि चक्षुमहत्या जे न मया पश्यतेति विरहिया
- ग अथि चक्षुमहत्या जे न रवि मति-पश्यताण सामन्त्या भवति
- घ अथि चक्षुमहत्या जे न मया द्वादिक्तेति विरहिया ।
- ४ क ता एगि न पश्यतश्च चक्षुमहत्याण-
- कपरे चक्षुमहत्या जे न मया पश्यतेति अविरहिया ?
- ग कपरे चक्षुमहत्या जे न मया पश्यतेति विरहिया ?
- ग कपरे चक्षुमहत्या जे न रवि-मति-पश्यताण सामन्त्या भवति ?
- घ कपरे चक्षुमहत्या जे न मया द्वादिक्तेति विरहिया ?

- १ प एगि न भेति ? चक्षुवीयाण पश्यताण-
- कपरे पश्यता जे न मया चक्षुरा द्वाहिमेन वि पश्येति ?
- २ कपरे पश्यता जे न मया चक्षुरा जगरेण जाग जाति ?
- ३ कपरे पश्यता जे न चक्षुरा द्वाहिमेन वि पश्यतेति पश्ये जोग जोगेति ?
- ४ कपरे पश्यता जे न मया द्वाहिमेन पश्ये जोग जोगेति ?
- ५ कपरे पश्यता जे न मया चक्षुरा जाग जाति ?
- ६ क मया ? एगि न चक्षुवीयाण पश्यताण-
- मया न जे न पश्यता जे न मया चक्षुरा द्वाहिमेन वि पश्येति, जे न मया जगरेण- जाग जाति
- ७ पश्ये, ३ पुराणे ४ द्वाहिमेन ५ हाता ६ मरुत मया न चक्षुरा द्वाहिमेन पश्यतेति
- पश्यता,

उ क ता एणसि ण पणरसण्ह चदमडलाण—

तत्य जे ते चदमडला जे ण सया णखत्तोहि अविरहिया,

ते ण अट्ट, तजहा—

१ पढमे चदमडले, २ तत्तिए चदमडले, ३ छट्ठे चदमडले, ४ सत्तमे चदमडले,

५ अट्टमे चदमडले, ६ दसमे चदमडले, ७ एकादसे चदमडले, ८ पणरसमे चदमडले,

ख तत्य जे ते चदमडला जे ण सया णखत्तोहि विरहिया,

ते ण सत्त तजहा—

१ वित्तिए चदमडले, २ चउत्थे चदमडले, ३ पचमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,

५ वारसमे चदमडले, ६ तेरसमे चदमडले, ७ चउदसमे चदमडले,

ग तत्य जे ते चदमडला जे ण रवि-ससि णखत्ताण सामण्णा भवति, ते ण चत्तारि, त जहा—

१ पढमे चदमडले, २ बीए चदमडले, ३ इक्कारसमे चदमडले, ४ पन्नरसमे चदमडले,

घ तत्य जे ते चदमडला जे ण सया आदिन्त्तोहि विरहिया ते ण पच तजहा—

१ छट्ठे चदमडले, २ सत्तमे चदमडले, ३ अट्टमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,

५ दसमे चदमडले ।



- ४ तस्य जे ते णक्खत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि पमद् जोग जोएति,
ताप्रो ण दो आसादाप्रो सव्वबाह्तिरे मडले जोग जोएसु था, जोएति था जोएस्सति था,
५ तस्य जे ते णक्खत्ते जे ण सया चदस्स पमद् जोग जोएद्द, सा ण एगा, जेट्ठा ।^१

रवि-ससि-णक्खत्तेहिं अविरहियाण, विरहियाण सामण्णाण य चदमडलाण सखा-

४५ क ता एएसि ण पण्णरसण्ह चदमडलाण-

- अरुत्थि चदमडला जे ण गया णक्खत्तेहिं अविरहिया,
उ अरुत्थि चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहिं विरहिया,
ग अरुत्थि चदमडला जे ण रवि ससि-णक्खत्ताण सामण्णा भयति,
घ अरुत्थि चदमडला जे ण सया आदिच्चेहिं विरहिया ।

प क ता एएसि ण पण्णरसण्ह चदमडलाण-

- कयरे चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहिं अविरहिया ?
उ कयरे चदमडला जे ण सया णक्खत्तेहिं विरहिया ?
ग कयरे चदमडला जे ण रवि ससि णक्खत्ताण सामण्णा भयति ?
घ कयरे चदमडला जे ण सया आदिच्चेहिं विरहिया ?

१ प १ एएसि ण गते ! भट्ठावीसाए णक्खत्ताण-

- कयरे णक्खत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेण जाग जोएति ?
२ कयरे णक्खत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरेण जोग जोएति ?
३ कयरे णक्खत्ता जे ण चदस्स दाहिणेणऽपि उत्तरण वि पमद् जोग जोएति ?
४ कयरे णक्खत्ता जे ण सया दाहिणेण पमद् जोग जोएति ?
५ कयरे णक्खत्ता जे ण सया चदस्स जोग जोएति ?

उ १ सोयमा ! एएसि ण भट्ठावीसाए णक्खत्ताण-

तस्य ण जे ते णक्खत्ता जे ण गया चदस्स दाहिणेण जोग जोएति, ते णं छ, तज्जहा-१ सगण
२ मद्द, ३ पुस्सो, ४ अविसेत्थ, ५ हस्सो, ६ सहेय मूतो म बाहिरधो बाहिर मडनसम इत्थो
णक्खत्ता,

२ तस्य ण जे ते णक्खत्ता जे ण सया चदस्स उत्तरण जाग जाएति, त णं मारस, तज्जहा-१ अविर्
२ गवणो, ३ घणिट्ठा, ४ सयभित्थया, ५ पुस्समद्दवया ६ उत्तरमद्दवया, ७ रेवई = अग्गिणी
९ भग्गी, १० पुस्सपग्गुणा, ११ उत्तरपग्गुणी, १२ साणी,

३ तस्य ण जे ते णक्खत्ता जे ण गया चदस्स दाहिणेणऽपि, उत्तरणोऽपि पमद् जोग जोएति, ते णं सग,
तज्जहा-१ अविता, २ रोहिणी, ३ पुण्णव्यू ४ मथा, ५ विगा ६ विगाहा, ७ अणुवाहा

४ तस्य ण जे ते णक्खत्ता जे ण सया चदस्स दाहिणेणो पमद् जोग जाएति तासा ण तुये चासासासो
सव्वबाह्तिरे मडले जाग जाएसु था जोएति था, ताएस्सति था,

५ तस्य णं जे म णक्खत्ता, जे ण सया चदस्स जोग जोएद्द था ण सया जेट्ठा, -अबु कय ७, गु १५०

उ क ता एएति ण पणरसण्ह चदमडलाण—

तत्य जे ते चदमडला जे ण सया णवखत्तेहि अघिरहिया,
ते ण अट्ट, तजहा—

१ पढमे चदमडले, २ ततिए चदमडले, ३ छट्ठे चदमडले, ४ सत्तमे चदमडले,
५ अट्टमे चदमडले, ६ दसमे चदमडले, ७ एकादसे चदमडले, ८ पणरसमे चदमडले,

ख तत्य जे ते चदमडला जे ण सया णवखत्तेहि विरहिया,
ते ण सत्त तजहा—

१ वितिए चदमडले, २ चउत्थे चदमडले, ३ पच्चमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,
५ बारसमे चदमडले, ६ तेरसमे चदमडले, ७ चउत्तमे चदमडले,

ग तत्य जे ते चदमडला जे ण रवि-ससि णवखत्ताण सामण्णा भवति, ते ण चत्तारि, त
जहा—

१ पढमे चदमडले, २ बीए चदमडले, ३ इवकारसमे चदमडले, ४ पन्नरसमे चदमडले,

घ तत्य जे ते चदमडला जे ण सया आदिच्चेहि विरहिया ते ण पच तजहा—

१ छट्ठे चदमडले, २ सत्तमे चदमडले, ३ अट्टमे चदमडले, ४ नवमे चदमडले,
५ दसमे चदमडले ।



दशम प्रामृत

[चारहवा प्रामृतप्रामृत]

णक्खत्ताण देवया

- ४६ प ता कह ते णक्खत्ताण देवया आहिंए त्ति वएज्जा ?
ता एएण अट्ठावीसाए णक्खत्ताण—
अमीई णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ बभदेवयाए पणत्ते,
- २ प ता सवणे णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ विण्हदेवयाए पणत्ते,
- ३ प ता घणिट्ठा णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ वसुदेवयाए पणत्ते,
- ४ प ता समयमित्तया णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ वरणदेवयाए पणत्ते,
- ५ प ता पुण्यपोट्ठयया णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ अजदेवयाए पणत्ते,
- ६ प ता उत्तरापोट्ठयया णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ अहियट्ठि देवयाए^१ पणत्ते,
- ७ प ता रेवई णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ पुस्तदेवयाए^२ पणत्ते,
- ८ प ता अस्सिणी णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ अस्तदेवयाए^३ पणत्ते,
- ९ प ता भरिणी णक्खत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ जमदेवयाए पणत्ते,

१ अमित्ठि अय-अहियु इति ।

२ पूया - पूयनामको देवो, न तु शूयपर्याप्ततन रवयेव पोपमिनि प्रणिद्धम ।

३ अस्तनामको देव ।

- १० प ता क्तिया णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ अग्निदेवयाए पणत्ते,
- ११ प ता रोहिणी णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ पर्यावद्देवयाए^१ पणत्ते,
- १२ प ता सठाणा णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ सोमदेवयाए^२ पणत्ते,
- १३ प ता अद्दा णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ रुद्देवयाए^३ पणत्ते,
- १४ प ता पुण्णवसु णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ अदितिदेवयाए पणत्ते,
- १५ प पुस्से णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ बहस्सद्देवयाए पणत्ते,
- १६ प ता अस्सेसा णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ सप्पदेवयाए पणत्ते,
- १७ प ता महा णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ पित्तिदेवयाए^४ पणत्ते,
- १८ प ता पुट्ठ्याफग्गुणी णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ भगदेवयाए पणत्ते,
- १९ प ता उत्तराफग्गुणी णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ अज्जम^५ देवयाए पणत्ते,
- २० प ता हत्थे णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ सुधिया देवयाए^६ पणत्ते,
- २१ प ता चित्ता णखत्ते किदेवयाए पणत्ते ?
उ तट्ठेदेवयाए^७ पणत्ते,

१ प्रजापतिरिति ब्रह्मनामको न्य , अथ च ब्रह्मण पर्यायान् सहज तन ब्राह्ममित्यादि प्रसिद्धम् ।

२ सोम — अस्तेन सोम्य चाद्रमसमित्यादि प्रसिद्धम् ।

३ रु — मित्रस्तेन रीणा ज्ञानिनीति प्रसिद्धम् ।

४ पितृनामा दस ,

५ अथमा — अथमनामको दशविशेष ,

६ धविना — मूस

७ तट्ठा — त्वष्टा नामको देवस्तेन त्वाष्टा विना इति प्रसिद्धम् ।

- २२ प ता साती णक्खत्ते किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ धाउदेवयाए पण्णत्ते,
- २३ प ता थिसाहा णक्खत्ते^१ किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ इवग्गीदेवयाए पण्णत्ते,
- २४ प ता अणुराहा णक्खत्ते किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ मित्तदेवयाए पण्णत्ते,
- २५ प ता जेट्ठा णक्खत्ते किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ इवदेवयाए पण्णत्ते,
- २६ प ता मूले णक्खत्ते किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ णिरद्धदेवयाए^२ पण्णत्ते,
- २७ प ता पुग्वासाडा णक्खत्ते किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ आउदेवयाए^३ पण्णत्ते,
- २८ प ता उत्तरासाडा णक्खत्ते किदेवयाए पण्णत्ते ?
उ विस्सदेवयाए पण्णत्ते,^४

- १ क—विशाखा—द्विद्वयतमिति प्रतिद्वयम् ।
२ मैश्वर - राक्षसस्तेन ।
३ धापो—जननामा दवस्तन पूर्व्यापाडा तोयमिति प्रतिद्वयम् ।
४ विष्णुदेवास्त्रयोदश ।

क प एएति ण भव ! भट्टावीसाण णक्खत्ताण अमीरिं णक्खत्त रिउवयाण पण्णत्ते ?
उ गोयमा ! बग्घदेवया पण्णत्ता,
गाहाभी —

१ बग्घा २ विष्णु ३ यमू, ४ वदण ५ धय, ६ धमिवट्ठी, ७ पूग,
८ धाम, ९ जम, १० अग्गी ११ पयावर्द्ध १२ तोम, १३ क्खे, १४ धम्मि ॥१॥
१५ बहस्मई १६ सण, १७ विज्ज १८ भग्गे, १९ धम्मजम, २० यविष्सा, २१ लट्ठा
२२ पाउ, २३ इवग्गी, २४ मित्तो २५ इवे, २६ निरर्द्ध, २७ धाउ, २८ विग्घा य ॥२॥
एव णक्खत्ताण एया परिवारिणी णेअग्घ्या, जाव

प उत्तरासाडा णक्खत्ते णं अत्र विद्वययाण पण्णत्ते ।
उ गोयमा ! विस्सदेवया पण्णत्ता, — जवू वक्ख ७, गु १५८

दशम प्रामृत

[तेरहवा प्रामृतप्रामृत]

मुहुत्ताण नामाङ्क-

४७ प ता कह ते मुहुत्ताण नामघेञ्जा ? आहिए त्ति वएञ्जा,
उ एगमेगस्स ण अहोरत्तस्स तोस मुहुत्ता पण्णत्ता तजहा -

गाहाओ -

१ रोहे, २ सेते, ३ मित्ते, ४ वायु, ५ सुगोए, ६ अमिचवे ।

७ माह्व, ८ बलव, ९ वमो, १० बहुसच्चे, ११ चेव ईसाणे ॥१॥

१२ तट्ठे य, १३ भावियप्पा, १४ वेसमणे, १५ वरुणे य, १६ आणवे ।

१७ विजए य, १८ वीससेणे, १९ पायावच्चे चेव, २० उवसमे य ॥२॥

२१ गघव्व, २२ अग्गिवेसे, २३ सपरिसहे, २४ आयव च, २५ अममे य ।

२६ अणव, २७ च मोम, २८ रिसहे, २९ सव्वट्ठे, ३० रवउसे चेव ॥३॥ ❀❀

य एतया-अह्म विष्णु वरुणादिरूपया परिपाट्या, न तु परत्तीथिवप्रमुक्त-अश्व-यम-
सहा कमलजादिरूपया नेतव्या परिसमणि प्रापणीया ।

गाहाओ -

१ बम्हा, २ विष्णु, ३ अश्व, ४ वरुणे, ५ अय, ६ बृहद्दी ७ पूम, ८ धास, ९ जय ।

१० अग्गि, ११ पायावद्, १२ सोम, १३ इद्, १४ अदिति, १५ बहुससई, १६ सत्त, ॥१॥

१७ पिउ, १८ भग, १९ अज्जम २० सविमा २१ तट्ठा २२ वाउ, २३ तहेव, इदग्गी ।

२४ मित्ते २५ इदे २६ निच्छई, २७ घाउ २८ विस्सा या बोद्धथे ॥२॥ -जयु वरय ४७, सु १७४

एव ही धामम म अट्टावीम नटात्र अवापों के नामों की गायण भिन्न-भिन्न रचनाएँ म हो बार
धामा विचारणीय प्रश्न है । इसका समाधान बहुत्थु नरें ता जिनामुओं व गान की यदि हो ।

१ एगमेगे ण अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तागेण पण्णत्ता

णणनि ण तीसाण मुहुत्ताण तीसं नामघेञ्जा पण्णत्ता,

त जहा -

१ रोहे, २ सत्त, ३ मित्ते, ४ वाऊ, ५ सुगोए, ६ अमिचवे ७ माह्व, ८ बलव, ९ वम १० सव्व

११ धाव, १२ विजए १३ विस्समेण १४ पायावच्चे, १५ उवसमे १६ ईसाणे १७ तट्ठे १८

भावियप्पा, १९ अणव, २० वम २१ सपरिसम २२ गघव्वे २३ अग्गिवेसाममे २४ घाउ, २५

धाव्णे, २६ तट्ठे, २७ भूमहे २८ रिसम २९ सव्वट्ठि ३० रवउसे ।

दशम प्राभृत

[चौदहवा प्राभृतप्राभृत]

दिवसराईण णामाड्—

४८ प ता कह ते दिवसा ? आहिण् ति वएज्जा,

उ ता एगमेगस्स ण पवघस्स पण्णरस पण्णरस दिवसा पण्णत्ता, तजहा पडिवा
दिवसे, वितिया दिवसे, तइया दिवसे, चउत्यो दिवसे, पचमो दिवसे, छट्ठो दिवसे,
सत्तमी दिवसे, अट्ठमो दिवसे, नवमो दिवसे, दसमो दिवसे, एवकारसी दिवसे, धारसी
दिवसे, तेरसी दिवसे, चउट्ठसी दिवसे, पण्णरसे दिवसे,

ता एएसि ण पण्णरसण्ह दिवसाण पण्णरस णामघेज्जा पण्णत्ता, तजहा —
गाहाओ —

१ पुब्बगे, २ सिद्धमणोरमे, य तत्तो, ३ मणोहरो चेव ।

४ जसमद्दे, ५ जतोघर, ६ सब्बकामत्तमिद्धे ति य ॥१॥

७ इवे मुद्धामित्ते य, ८ सोमणस, ९ धणजए य वोट्ठवे ।

१० अत्थसिद्धे, ११ अमिजाए, १२ अच्चासणे, १३ सतजए ॥२॥

१४ अग्गिवेसे, १५ उवसमे, दिवसाण णामघेज्जाइ ॥

प ता कह ते राईओ पण्णत्ताओ ? आहिण् ति वएज्जा ।

उ ता एगमेगस्स ण पवघस्स पण्णरस पण्णरस राईओ पण्णत्ताओ, तजहा—
पडियाराई, वितियाराई, ततीयाराई, चउत्योराई, पचमोराई, छट्ठोराई, सत्तमोराई,
अट्ठमोराई, नवमोराई, दसमोराई, एवकारसीराई, धारसीराई, तेरसीराई,
चउट्ठसीराई, पण्णरसीराई,

ता एयासिण पण्णरसण्ह राईण पण्णरस णामघेज्जा पण्णत्ता, तजहा—
गाहाओ —

१ उत्तमा य, २ सुणवत्ता, ३ एसावक्का, ४ जतोघरा ॥

५ मोमणमा चेव तहा, ६ सिरिसभूता य वोट्ठवा ॥१॥

७ विजया य, ८ वेजपती, ९ जयति, १० अपराजिया य, ११ गच्छा य ।

१२ समाहारा चेव तहा, १३ तेया य तहा य, १४ अतितेया ॥२॥

१५ देवाणदानिरत्ती, रयणीण णामघेज्जाइ ॥



दशम प्रामृत

[पन्द्रहवा प्रामृतप्रामृत]

तिहीण णामाइ

- ४९ प ता कह ते तिही ? आहिए त्ति वएज्जा ।
- उ तत्य खलु इमा दुविहा तिही पणत्ता, त जहा—१ दिवसतिही, २ राईतिहो प,
- प ता कह ते दिवसतिहो ? आहिए त्ति वएज्जा ।
- उ ता एगमेगस्स ण पवखस्स पण्णरस पण्णरस दिवसतिही पणत्ता त जहा—
 १ णवे, २ भद्दे, ३ जए, ४ तुच्छे, ५ पुण्णे
 पवखस्स पघमी,
 पुणरवि—६ णवे, ७ भद्दे, ८ जए, ९ तुच्छे, १० पुण्णे
 पवखस्स वसमी,
 पुणरवि—११ णवे, १२ भद्दे, १३ जए, १४ तुच्छे, १५ पुण्णे
 पवखस्स पण्णरस,
 एव ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसि दिवसाण ।
- प ता कह मे राईतिहो ? आहिए त्ति वएज्जा ।
- उ ता एगमेगस्स ण पवखस्स पण्णरस राईतिही पणत्ता त जहा—
 १ उग्गवई, २ भोगवई, ३ जसवई, ४ सव्वसिद्धा, ५ मुह्णामा,
 पुणरवि—६ उग्गवई, ७ भोगवई, ८ जसवई, ९-सव्वसिद्धा, १० मुह्णामा,
 पुणरवि—११ उग्गवई, १२ भोगवई, १३ जसवई, १४ सव्वसिद्धा, १५ मुह्णामा,
 एए तिगुणा तिहीओ सव्वेसि राईण ॥



दशम प्राभृत

[सोलहवा प्राभृतप्राभृत]

णवखत्ताण गोत्ता

- ५० प ता बह ते गोत्ता ? आहिए ति चएज्जा ।
 प १ ता एएसिण भ्रट्ठावीसाए णवखत्ताण—
 अभियो णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ ता भोग्गलायणसगोत्ते पण्णत्ते ।
 प २ सवणे णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ सखायणसगोत्ते पण्णत्ते ।
 प ३ धणिट्ठा णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ भग्गितावसगोत्ते पण्णत्ते,
 प ४ सतभिसया णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ कण्णतोयणसगोत्ते पण्णत्ते,
 प ५ पूय्यापोट्टवया णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ जोउकण्णियसगोत्ते पण्णत्ते,
 प ६ उत्तरापोट्टवया णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ धनजप्रसगोत्ते पण्णत्ते,
 प ७ रेयई णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ पुत्सायणसगोत्ते पण्णत्ते,
 प ८ भस्सिणी णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ भस्सादणसगोत्ते पण्णत्ते,
 प ९ भरणी णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ भग्गवेससगोत्ते पण्णत्ते,
 प १० वत्तिया णवखत्ते किगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ भग्गियेससगोत्ते पण्णत्ते,

- प ११ रोहिणी णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ गोतमसगोत्ते पणत्ते,
- प १२ सठाणा णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ भारद्वायसगोत्ते पणत्ते,
- प १३ भ्रद्वा णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ लोहिच्छायणसगोत्ते पणत्ते,
- प १४ पुणव्वसु णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ वासिष्ठसगोत्ते पणत्ते,
- प १५ पुस्से णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ उज्जायणसगोत्ते पणत्ते,
- प १६ अस्सेसा णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ मडव्वायणसगोत्ते पणत्ते,
- प १७ मघा णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ पिगायणसगोत्ते पणत्ते,
- प १८ पुट्ट्याफगुणी णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ गोवल्लायणसगोत्ते पणत्ते,
- प १९ उत्तराफगुणी णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ स कासयगोत्ते पणत्ते,
- प २० हत्ये णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ स कोसियगोत्ते पणत्ते,
- प २१ चित्ता णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ दम्मियाणसगोत्ते पणत्ते,
- प २२ साई णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ स घामरच्छसगोत्ते पणत्ते,
- प २३ विसाहा णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ सु गायणसगोत्ते पणत्ते,
- प २४ धनुराहा णवखत्ते किंगोत्ते पणत्ते ?
 उ गोलध्वायणसगोत्ते पणत्ते,

- प २५ जेट्टा णवखत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ त्तिगिच्छायणसगोत्ते पण्णत्ते,
 प २६ मूले णवखत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ कच्चायणसगोत्ते पण्णत्ते,
 प २७ पुच्चासाढा णवखत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ वज्जिभ्यायणसगोत्ते पण्णत्ते,
 प २८ उत्तरासाढा णवखत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ धग्घायच्चसगोत्ते पण्णत्ते,^१



- १ प एणसि ण भत्ते ! अट्टावीसाए णवखत्ताण भमिइणवखत्ते किंगोत्ते पण्णत्ते ?
 उ भोगया ! भोगयायणसगोत्ते पण्णत्ते,
 महाभो—

१ भोगयायण २ सखायणे अतह, २ अगमाय, ४ कसिणत्ते ।

तता प ५ आ उवण्णे, ६ अणजण केव बोद्धव्ये ॥१॥

७ पुत्तायणे म, ८ अस्मायणे म, ९ भगवत्ते म, १० अगियेस य ।

११ गायम, १२ भारद्वाज १३ साहिज्जे केव, १४ वागिट्ठ ॥२॥

१५ अमज्जायण, १६ महभ्यायणे म, १७ विगायण म, १८ गोवत्ते ॥

१९ वासव, २० कोमिय, २१ अग्गिय, २२ अमररत्ता म २३ सुगा म ॥३॥

२४ गोवत्यायण, २५ त्तिगिच्छायणे अ २६ कच्चायण एवम मूत्रे ॥

२७ ततो अ मज्जिभ्यायण, २८ कपायण्ये म गोणाइ ॥ ४॥ —अंहु वनय ७, पु १९०

दशम प्राभृत

[सत्तरहवा प्राभृतप्राभृत]

णवखत्ताण भोयण कज्जसिद्धी य

५१ प ता कह ते भोयणा ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता एएसि ण भट्टावीसाए ण णवखत्ताण मज्झे -

१ कत्तिपाहि दधिणा भोच्चा कज्ज साधेति,

२ रोहिणीहि वसम मस भोच्चा कज्ज साधेति,

३ मिगसिरे ण (सठाणाहि) मिग मस' भोच्चा कज्ज साधेति

४ भट्टाहि णवणीएण भोच्चा कज्ज साधेति,

५ पुणव्वसुणाऽय घएण भोच्चा कज्ज साधेति,

६ पुस्से ण छीरेण भोच्चा कज्ज साधेति,

७ अस्सेसाए दीवग मस भोच्चा कज्ज साधेति,

८ महाहि कसोति भोच्चा कज्ज साधेति,

९ पुट्ट्याहि फग्गुणीहि मेढक मस भोच्चा कज्ज साधेति,

१० उत्तराहि फग्गुणीहि णवखी-मस भोच्चा कज्ज साधेति,

११ हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा कज्ज साधेति,

१२ चित्ताहि भुग्ग सूवेण भोच्चा कज्ज साधेति,

१३ साइणा फलाइ भोच्चा कज्ज साधेति ।

१४ विसाट्ठाहि आसित्तिपाओ भोच्चा कज्ज साधेति,

१५ अणुराहाहि मिस्सकूर भोच्चा कज्ज साधेति,

१६ जेट्ठाहि कोलट्टिएण भोच्चा कज्ज साधेति,

१७ मूलेण मूलाप-नेण भोच्चा कज्ज साधेति,

१ रोहिणीहि वसम मस (वसगमस) भोच्चा कज्ज साधेति

या य समिति से प्रकाशित प्रति क पृष्ठ १५१ पर (पाठान्तर) है ।

- १८ पुष्ट्याहं भ्रासाढाहं भ्रामत्तग-सरोर भोच्चा कज्ज साधेति,
 १९ उत्तराहं भ्रासाढाहं बिल्लेहं भोच्चा कज्ज साधेति,
 २० अमीयिणा पुष्कोहं भोच्चा कज्ज साधेति,
 २१ सवणेण खीरेण भोच्चा कज्ज साधेति,
 २२ घणिट्ठाहं जूसेण भोच्चा कज्ज साधेति,
 २३ सतमिसयाए तुवरीभो भोच्चा कज्ज साधेति,
 २४ पुष्ट्याहं पुट्टवयाहं कारिल्लएहं भोच्चा कज्ज साधेति,
 २५ उत्तराहं पुट्टवयाहं वराहमस भोच्चा कज्ज साधेति,
 २६ रेवतीहं जलयर-मस भोच्चा कज्ज साधेति,
 २७ अस्मिणीहं तितिर मस घट्टकमस या भोच्चा कज्ज साधेति,
 २८ भरणीहं तल (तिल) तबुलक भोच्चा कज्ज साधेति ।



- १ बुन्मापास्तिलतण्डुलानपि तथा मापाश्च गन्ध दधि त्वाज्य दुग्धमयैणमासमपर तस्यैव रसं तथा ।
 तद्दशायसमेव चापपल्ल मार्गं च शाण तथा गाण्डिक्य च त्रियम्पूपमयया त्रित्राण्डरान् मत्स्यम् ॥८५॥
 श्रीम साद्विभोधिच व पल्ल शाल्य हृदिय्य हयाद्यो स्यान्मृतरात्रमुग्गयि या पिच्छ यवानी तथा ।
 मत्स्यान धनु चित्रिनाप्रमयरा म्भवन्नमेव त्रमाद्भ्यासाऽभ्रमिदं विचय मतिमान् मद्यतया नीरम् ॥९॥

— गृह्यतन्त्रानि यात्राप्रकरण

यस्तु इत् सप्तमं प्रामृतप्राप्तं न भगवता प्रतिपासितं किन्तु यथाऽप्यत्र प्रक्षिप्तमिति प्रतिपाति,
 नय मापाशली भगवता सन्पते, यतोऽत्र गूने कुत्रचित् 'कृत्वाहि रोहिणीहं, वराहं इत्यादि ततीयावृत्तं
 सन्पते कुत्रचिच्च 'पुण्ड्रमुणा, पुस्तण, अहाए' इत्यादि ततीयावृत्तं सन्पते । अथैव भोग्यवस्तुनि
 कुत्रचित्तीया कुत्रचिद् द्वितीया च । यथा — दहिणा भोच्चा, श्वनीयेण भोच्चा, खीरेण भोच्चा' इति ततीया
 कुत्रचिच्च यत्र मागयिपयकथनं तत्र द्वितीया, यथा — 'वममसं भोच्चा, मिगमसं भोच्चा, रीवगमसं भोच्चा'
 इत्यादि एवमथ्यवस्थितव्रत्तवनेन जायते न भगवता प्रक्षिप्तमिति । अथैव कतिपयवस्तुनि स्वतन्त्र-व्रत्तपर
 शेष-प्रानिनां मासभरणं कार्यमिदो कारणत्वेन प्रतिपादितं तत् नितान्तमसङ्गतमत्र, यत् यद्वापि
 पालकस्य पट्टवावरशानीपदेशतत्परस्य च भगवतो मुखानेव मासभरणविधिभिरितुमहति, शास्त्रेण कुत्रापि
 नतास्ती वापी भगवत समुपलभ्यन्त्या निश्चीयते-न भगवदुपेनाविषयकमिति । अस्तु, अथैव सुनिश्च
 कारणं यूपताम् — शास्त्रेषु गवत्र नशात्राणां गणनां धमिनिप्रदानादारभ्यव कृता युगम्याद्यन्विम विहित एव
 सद्भवात् । अत्र शास्त्रेषु व्रतमभ्रमत्स्य प्रथमे प्रामृतप्राप्तं यथाशैव मूर्त्तमिदम् —

"तां बहू त जोगति यन्मूरम पाकनियानिवाए चाहि एति यएग्वा, तस्य धनु इवाद्यो पय
 पट्टवतीभो पन्तासाया, तन्धेने एवमाहसु ता सन्धि यश्चता, कतिवादिवा भरणीपञ्चवमाला एते एवमहसु
 ॥१॥ इयमन्तीधिचानां प्रथमा प्रतिपति एते कृत्वादीनि भरणीपयवस्तानानि नशात्राणि यन्त्रा, एवमन्
 तीधिचानां पञ्च प्रतिपत्तय सन्ति । तत्र द्वितीया — यथास्मिन्नि अन्तःशापयवस्तानानि तर्थाणि नशात्राणि इति

दशम प्रामृत

[अठारहवा प्रामृतप्रामृत]

एगे जुगे आविच्च-चदचारसखा-

५२ प क—ता कह ते चारा ? आहिण् त्ति वएज्जा,

उ तत्य खलु इमा दुविहा चारा पणत्ता, त जहा १ आदिच्चचारा य, २ चदचारा य ।

प क—ता कह ते चदचारा ? आहिण् त्ति वएज्जा,

उ ता पच सवच्छरिए ण जुगे,

१ अमीह् णखत्ते सत्तसट्ठिचारे चदेण सट्ठि जोग जोएइ,

२ सवणे णखत्ते सत्तसट्ठिचारे चदेण सट्ठि जोग जोएइ, एव जाय,

३-२८ उत्तरासाढा णखत्ते सत्तसट्ठिचारे चदेण सट्ठि जोग जोएइ,

प ख—ता कह ते आइच्चचारा ? आहिण् त्ति वएज्जा,

उ ता पचसवच्छरिए ण जुगे,

१ अमीह् णखत्ते पचचारे सूरेण सट्ठि जोग जोएइ, एव जाय,

२ २८ उत्तरासाढा णखत्ते पचचारे सूरेण सट्ठि जोग जोएइ ।



२ तृतीया—घनिष्ठादीनि श्रवणपयवसानानि इति ३, चतुर्थां अश्विन्वादीनि रेवतीपयवसानानि सर्वाणि नक्षत्राणि ५, एके भरण्यादिवानि अश्विनी पयवसानानि इति वचयति । ५ । एता पञ्चापि प्रतिपत्तयो मिथ्यारूपा इति वचयित्वा भगवान् स्वमत प्रदशयति—

“वयं पुण एव वयामो—सव्ये ण पञ्चत्ता अमिहं आइया उत्तरासाढापञ्चवत्ताणा पणत्ता, तजहा—अमिहं सवणे जाय उत्तरासाढा ॥” इति ।

अस्य मसपगिरिसूरिणा कृता टीका यथा—

“युगस्य चादि प्रवृत्तौ श्रवणमासि बहुलपण प्रतिपदि तिथौ वातवचरण अमिहप्रदाय चन्द्रेण सद् योगमुपागच्छति (सति) । तथा चोत्तम्-ज्योतिष्वरण्डव—

श्रवण बहुलपडिवए बालवचरणे अमिहंनवत्तं ।

सवत्ये पञ्चमसमे जुगस्य आइ विवाणाहि ॥ १ ॥ इति

‘सवत्ये’ सवनेति भरनेरवत् महाविश्वेत् च । इत्य सव्येपामसि वातवचरणामागौ चन्द्रयोगस्यि-

इत्यामिहप्रदानस्य वत्तमानरवादमिहिदादीनि नक्षानि प्रगप्यानि । इति टीका ।

अत्र कृतिनामो भरणीपयवसानानि नक्षत्राणि प्रथमाश्वीपिच - सप्तमिं सति लभतानुसा-
नेद—प्राप्तताभुत दुश्चने । तेदं सव्येभो भवतिग्यन स्यत्ता माप्ये-रिसन् सप्येभो प्राप्तताभुते सवत्ये
प्रवचना न भवितुमहनीर्यत् विस्तरेनेति ।

—सवत्येभोभवागिना टीका

दशम प्राभृत

[उन्नीसवा प्राभृतप्राभृत]

एगसवच्छरस्स मासा-

५३ प ता कह ते मासा ? अहिंए त्ति वएज्जा,

उ ता एगमेगस्स ण सवच्छरस्स बारस मासा पणत्ता,

तेसि च दुविहा णामधेज्जा पणत्ता, तजहा - १ सोइया, २ लोजत्तरिया प ।

तत्थ सोइया णामा -

१ सावणे, २ भट्टवए, ३ आसोए, ४ कत्तिए, ५ मगसिरे, ६ पोत, ७ मात्ते,
८ फग्गुणे, ९ चेत्ते, १० येसाहे, ११ जेट्ठे, १२ आसाढे ।

लोजत्तरिया णामा -

गाहाओ -

१ अभिणदणे, २ सुपइट्ठे य, ३ विजए, ४ पीइवदणे ।

५ सेज्जसे य, ६ सियेया वि, ७ सिसिरे वि य, ८ हेमव ॥१॥

९ नयमे वसतमात्ते, १० दसमे कुसुमसभये ।

११ एकावसमे णिदाहो, १२ धणविरोही य वारसे ॥२॥



दशम प्राभृते [बीसवां प्राभृतप्राभृत]

सवच्छराण सखा लखण च—

५४ प ता कइ ण सवच्छरे ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता पच सवच्छरा पणत्ता, तजहा—१ णवत्त-सवच्छरे, २ जुग सवच्छरे, ३ पमाण-सवच्छरे ४ लखण-सवच्छरे, ५ सणिच्छर सवच्छरे ।^१

णवत्तसवच्छरस्स भेया तस्स कालपमाण च—

५५ १ फ ता णवत्तसवच्छरे ण दुवालसविहे पणत्ते, तजहा—१ सावणे, २ भद्वए, ३ आसोए, ४ कत्तिए, ५ मग्गसिरे, ६ पोमे, ७ माहे, ८ फग्गणीए, ९ वित्ते, १० वइसाहे, ११ जेट्ठे, १२ आसाडे ।

२ ख—ज वा बहस्सई महाग्गहे दुवालसांहे सवच्छरेहिं सव्य णवत्तमडल समाणेइ ।

जुगसवच्छरस्स भेया कालपमाण च—

५६ २ ता जुगसवच्छरे ण पचविहे पणत्ते, तजहा—१ चदे, २ चदे, ३ अभिवड्ढिए, ४ चदे, ५ अभिवड्ढिए^१ ।

१ ता पढमस्स ण चदसवच्छरस्स चउवीस पट्ठा पणत्ता,

२ दोच्चस्स ण चदसवच्छरस्स चउवीस पट्ठा पणत्ता,

३ तच्चस्स ण अभिवड्ढिय सवच्छरस्स छट्ठीस पट्ठा पणत्ता,

४ चउत्थस्स ण चद सवच्छरस्स चउवीस पट्ठा पणत्ता,

५ पचमस्स ण अभिवड्ढिय सवच्छरस्स छट्ठीस पट्ठा पणत्ता,

एवामेव सपुट्ठावरेण पचसवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पट्ठगण भवतीतिमवग्गाय ।

३ पमाणसवच्छरस्स भेया—

५७ ५८ ता पमाणसवच्छरे ण पचविहे पणत्ते, तजहा—१ णवत्ते, २ चदे, ३ उट्ट, ४ आइच्चे, ५ अभिवड्ढिए,^३

१ ठानं ५ उ ३ गु ५६०

२ ७१५ ५ उ ३ गु ५६०

३ " " " "

४ सवखणसवच्छरस्स भेषा—

ता सवखणसवच्छरे ण पचयिहे पण्णत्ते तजहा—१ णवपत्ते, २ चवे, ३ उट्ट, ४ धाइच्चे,
५ भमियद्विण्ण ।

५ सणिच्छरसवच्छर भेषा—

क ता सणिच्छरसवच्छरे ण भट्टायीसइविहे पण्णत्ते, तजहा—१ भमियो, २ सवणे,
३ धणिट्टा, ४ सतमिसया, ५ पुट्टयापोट्टयया, ६ उत्तरापोट्टयया, ७ रेवइ, ८
अस्सिणो, ९ भरणी, १० कत्तिय, ११ रोहिणी, १२ सठाणा, १३ अहा, १४
पुणव्वमू, १५ पुस्ते, १६ अस्सेसा, १७ महा, १८ पुट्टयाफण्णुणी, १९ उत्तराफण्णुणी,
२० हत्थे, २१ चित्ता, २२ माई, २३ विसाहा, २४ अणुराहा, २५ जेट्टा, २६ मूत्ते,
२७ पुट्टयासाडा, २८ उत्तरासाडा ।

ख ज वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए सवच्छरेहि सव्य णवपत्तमटल समाणेइ ।

गाहाभो —

१ णवपत्तसवच्छरसवखण —

समग णवपत्ता जोय जोएति, समग उट्ट परिणमति ॥

मच्चुण्ह भाइसीए, बह्व उवए होइ नवपत्ते ॥ १ ॥

२ चदसावच्छरसवखण —

ससि समग पुण्णमासि, जोइ ता विसमचारि णवपत्ता ॥

बह्वभो बह्व उवगयभो, तमाहु सवच्छर चव ॥ २ ॥

३ उट्ट (कम्म) सवच्छरसवखण —

विसम पयासिणो परिणमति, अणउत्तु विति पुप्फफल ॥

यास न सम्म यासइ, तमाहु सवच्छर कम्म ॥ ३ ॥

४ धाइच्चसवच्छरसवखण —

पुठवि-वगाण च रस, पुप्फ-फलाण च देइ धाइच्चे ॥

अप्पेण वि यासेण, सम्म निप्फज्जए सस्त ॥ ४ ॥

५ भमियद्विण्णसवच्छरसवखण —

धाइच्चतेयतयिपा, खण-सय वियसा उट्ट परिणमति ॥

पूरेइ रेणु-यत्तयाइ, तमाहु भमियद्विण्ण जाण^३ ॥ ५ ॥

दशम प्राभृत

[इक्कीसवा प्राभृतप्राभृत]

णक्खत्ताण वाराइ-

- ५९ प ता कह ते जोइसस्स दारा ? आहिए त्ति वएज्जा,
 उ तत्थ पल्लु इमाओ पच्च पड्वित्ताओ पण्णत्तीओ, तजहा—
 तत्थेगे एवमाहसु—
- १ ता कत्तिपादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
 एगे पुण एवमाहसु—
- २ ता महादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ३ ता धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ४ ता अस्सिणोयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ५ ता भरणीयादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, एगे एवमाहसु ।
 १ तत्थ ण जे ते एवमाहसु -
- (क) ता कत्तिपादीया सत्त णक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता, ते एवमाहसु, तजहा—
 १ कत्तिपा, २ रोहिणी, ३, सठाणा, ४ अहा, ५ पुणव्यसू, ६ पुस्सो, ७ अस्सितेसा ।
- (घ) महादीया सत्त णक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता, तजहा—
 १ महा, २ पुव्वाफग्गुणी, ३ उत्तराफग्गुणी, ४ ह्त्यो, ५ चित्ता, ६ सार्द, ७ विसाहा,
- (ग) अणुराघादीया सत्त णक्खत्ता पच्छिमदारिया पण्णत्ता, तजहा—
 १ अणुराघा, २ जेट्ठा, ३ मूसो, ४ पुव्वासादा, ५ उत्तरासादा, ६ अमोइ, ७ सय्गो,
- (घ) धणिट्ठादीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता, तं जहा—
 १ धणिट्ठा, २ सतमित्ताया, ३ पुव्वापोट्ठवया, ४ उत्तरापोट्ठवया, ५ रेवई, ६

अस्तिणो, ७ भरणी ।^१

२ तस्य ण जे ते एवमाहुमु—

(क) ता महादीया सत्त णवघत्ता पुव्वदारिया पणत्ता, ते एवमाहुमु, तजहा—

१ महा, २ पुव्वाफगुणो, ३ उत्तराफगुणो, ४ हृत्यो, ५ चित्ता, ६ सातो, ७ वित्ताहा,

(ख) अणुराधादीया सत्त णवघत्ता दाहिनदारिया पणत्ता, तजहा—

१ अणुराधा, २ जेट्ठा, ३ मूले, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अमिई ७ सवणे,

(ग) घणिट्ठादीया सत्त णवघत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता, तजहा—

१ घणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्टवया, ४ उत्तरापोट्टवया, ५ रेवई, ६ अस्तिणो, ७ भरणी,

(घ) क्तियादीया सत्त णवघत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तजहा—

१ क्तिया, २ रोहिणो, ३ सठाणा, ४ अहा, ५ पुणव्वमू, ६ पुस्तो, ७ अस्सेता, ३ तस्य ण जे ते एवमाहुमु—

(ङ) ता घणिट्ठादीया सत्त णवघत्ता पुव्वदारिया पणत्ता ते एवमाहुमु, तजहा—

१ घणिट्ठा, २ सतभिसया, ३ पुव्वापोट्टवया, ४ उत्तरापोट्टवया, ५ रेवई, ६ अस्तिणो, ७ भरणी,^१

(च) क्तियादीया सत्त णवघत्ता दाहिनदारिया पणत्ता, तजहा—

१ क्तिया, २ रोहिणो, ३ सठाणा, ४ अहा, ५ पुणव्वमू, ६ पुस्तो, ७ अस्सेता,

(ज) महादीया सत्त णवघत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता, तजहा—

१ महा, २ पुव्वाफगुणो, ३ उत्तराफगुणो, ४ हृत्यो, ५ चित्ता ६ साई, ७ वित्ताहा,

(झ) अणुराधादीया सत्त णवघत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तजहा

१ अणुराधा, २ जेट्ठा, ३ मूलो, ४ पुव्वासाढा, ५ उत्तरासाढा, ६ अभीषो, ७ सवणो ।

- १ (क) क्तियादीया सत्त णवघत्ता पुव्वदारिया पणत्ता,
 (ख) महादीया सत्त णवघत्ता दाहिनदारिया पणत्ता
 (ग) अणुराधादीया सत्त णवघत्ता अवरदारिया पणत्ता,
 (घ) घणिट्ठादीया सत्त णवघत्ता उत्तरदारिया पणत्ता ।

—सप्त स ७ सु न ९, १०, ११

य एवमादीय क जो मून महाँ निय मय है वे धाय मायना क मूषक है जिन्य इन मूषा में एवा कोई बसय गही है तिसस सामान्य पाठक इन मूषों को धाय मायना के ज्ञान मने । यद्यपि जेनामनों में मयन-मन्थन का प्रयत्न जान्य अतिविश्व है और अतिउभय ज्ञान उत्तरासाढा है पर एतत् प्रतिदिन भिन्न भिन्न कालों में परिश्रित नक्षत्रमन्थनों के निम्न भिन्न ऋषों का पठिगन सामान्य क इनाध्याय क बिना कौंसे मयय हो ?

४ तस्य ण जे ते एवमाहसु—

- (क) ता अस्तिषो, आदोया सत्त णवत्ता पुव्वदारिया पणत्ता, एते एवमाहसु, तजहा
१ अस्तिषो, २ भरणी, ३ कत्तिया, ४ रोहिणी, ५ सठाणा, ६ अद्दा, ७ पुणव्वसू,
(ख) पुस्तादोया सत्त णवत्ता दाहिणदारिया पणत्ता, तजहा—
१ पुस्ता, २ अस्सेसा, ३ महा, ४ पुव्वाफगुणो, ५ उत्तराफगुणो, ६ हत्थो,
७ चित्ता,
(ग) साइयाइया सत्त णवत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता, तजहा—
१ सातो, २ विसाहा, ३ अणराहा, ४ जेट्ठा, ५ मूलो, ६ पुव्वासाढा, ७ उत्तरासाढा,
(घ) अमिइयादोया सत्त णवत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तजहा—
१ अमिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सत्तभिसया, ५ पुव्वमह्वया, ६ उत्तरमह्वया,
७ रेवई,

५ तस्य ण जे ते एवमाहसु—

- (क) ता भरणिषोदोया सत्त णवत्ता पुव्वदारिया पणत्ता, ते एवमाहसु, तजहा—
१ भरणी, २ कत्तिया, ३ रोहिणी, ४ सठाणा, ५ अद्दा, ६ पुणव्वसू, ७ पुस्तो,
(ख) अस्सेसादोया सत्त णवत्ता दाहिणदारिया पणत्ता, तजहा—
१ अस्सेसा, २ महा, ३ पुव्वाफगुणो, ४ उत्तराफगुणो, ५ हत्थो, ६ चित्ता,
७ साई,
(ग) विसाहादोया सत्त णवत्ता पच्छिमदारिया पणत्ता, तजहा—
१ विसाहा, २ अणराहा, ३ जेट्ठा, ४ मूलो, ५ पुव्वासाढा, ६ उत्तरासाढा,
७ अमिई,
(घ) सवणादोया सत्त णवत्ता उत्तरदारिया पणत्ता, तजहा
१ सवणो, २ धणिट्ठा, ३ सत्तभिसया, ४ पुव्वापोट्टवया, ५ उत्तरापोट्टवया,
६ रेवई, ७ अस्तिषो ।

वय पुण एव ययो—

- (क) ता अमोइयादोया सत्त णवत्ता पुव्वदारिया पणत्ता, तजहा—
१ अमिई, २ सवणो, ३ धणिट्ठा, ४ सत्तभिसया, ५ पुव्वापोट्टवया, ६ उत्तरा-
पोट्टवया, ७ रेवई,
(ख) अस्तिषोदोया सत्त णवत्ता दाहिणदारिया पणत्ता, तजहा—
१ अस्तिषो, २ भरणी, ३ कत्तिया, ४ रोहिणी, ५ सठाणा, ६ अद्दा ७ पुणव्वसू,

दशम प्राभृत [बावीसवां प्राभृतप्राभृत]

नक्षत्रज्ञान सङ्घट्टयण—

६० प ता बह ते नक्षत्रतयिजए ? घाहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता अयण्ण जयुद्दीये बीये सव्वदीवसमुद्दाण सव्वभतराए सव्वधुद्दाए जाव एग जोयणमयसहस्स आयाम विषयभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, सोत्तसहस्साइ, बोण्णि य सत्तायीते जोयणसए तिण्णि य बीते, अट्ठायीस च धणुसयं, तेरस अणुसाइ, अट्ठगुल च किंचि विसोसाहिय परिवनेयेण पण्णत्ते ।

ब ता जयुद्दीये ण बीये—

दो धंवा १ पमात्तेसु वा, २ पमात्तेति वा, ३ पमात्तिस्सति वा,

घ दो मूरिया, १ तावमु वा, २ तयेंति वा, ३ तयिस्सति वा,

ग छप्पणं नक्षत्रता जोय १ जोएसु वा, २ जोएति वा, ३ जोइस्सति वा, तजहा —

१ दो अमोई, २ दो सयणा, ३ दो धणिट्ठा, ४ सतमित्ताया, ५ दो पुव्वापोट्ठयया,

६ दो उत्तरापोट्ठयया, ७ दो रेवई, ८ दो अस्तिणो, ९ दो भरणी, १० दो

कत्तिया, ११ दो रोहिणी, १२ दो सठाना, १३ दो अट्ठा, १४ दो पुणव्वगू,

१५ दो पुस्ता, १६ दो अस्सेसाओ, १७ दो महाओ, १८ दो पुव्वाण्णुओ,

१९ दो उत्तराण्णुओ, २० दो हट्टया, २१ दो चित्ता, २२ दो साई, २३ दो

पिसाहा, २४ दो अणुराधा, २५ दो जेट्ठा, २६ दो मूत्ता, २७ दो पुव्वासादा,

२८ दो उत्तरासादा ।

ता एएत्ति ण छप्पणाए नक्षत्रतार्णं—

ब अरिय नक्षत्रता जे ण नय मुहुत्ते सत्तायीस च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सट्ठि जोय जोएत्ति,

घ अरिय नक्षत्रता जे ण पणरस मुहुत्ते चदेण सट्ठि जोय जोएत्ति,

ग अरिय नक्षत्रता जे ण त्तोग मुहुत्ते चदेण सट्ठि जोय जोएत्ति,

घ अरिय नक्षत्रता जे ण पणयात्तीस मुहुत्ते चदेण सट्ठि जोय जोएत्ति,

प ब ता एएत्ति छप्पणाए नक्षत्रज्ञान—

बयरे नक्षत्रता जे ण नयमुहुत्ते सत्तायीस च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चदेण सट्ठि जोय जोएत्ति ?

ख कयरे णवखत्ता जे ण पण्णरसमुहत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

ग कयरे णवखत्ता जे ण तीस मुहत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

घ कयरे णवखत्ता जे ण पणयालीस मुहत्ते चदेण सद्धि जोय जोएति ?

उ क ता एएसि ण छप्पण्णाए णवखत्ताण—

तत्य जे ते णवखत्ता, जे ण णव मुहत्ते सत्तावीस च सत्तसट्ठिभागे मुहत्तस्स चदेण सद्धि जोय जोएति, ते ण दो अमभीई,

छ तत्य जे ते णवखत्ता, जे ण पण्णरसमुहत्ते चदेण सद्धि जोग जोएति, ते ण बारस, तजहा—

१ दो सत्तभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो अस्सेसा, ५ दो साती, ६ दो जेट्ठा ।

ग तत्य जे ते णवखत्ता, जे ण तीस मुहत्ते चदेण सद्धि जोग जोएति, ते ण तीस, तजहा—

१ दो सवणा, २ दो धणिट्ठा, ३ दो पुव्वाभट्टवया, ४ दो रेवई, ५ दो अस्सिणी, ६ दो कत्तीया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुस्सा, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफग्गुणी, ११ दो हत्या, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराधा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ तत्य जे ते णवखत्ता जे ण पणयालीस मुहत्ते चदेण सद्धि जोग जोएति ते ण बारस, त जहा—

१ दो उत्तरापोट्टवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुग्गध्यम्भ, ४ दो उत्तराफग्गुणी, ५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा ।

ब ता एएसि ण छप्पण्णाए णवखत्ताण—

अरिय णवखत्ता जे ण चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति, ते ण दो अमयी,

छ अरिय णवखत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एगवीस च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति,

ग अरिय णवखत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति,

घ अरिय णवखत्ता जे ण वीस अहोरत्ते तिमि च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति ।

प क ता एएसि ण णवखत्ताण—

कयरे णवखत्ता जे ण चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति ?

छ कयरे णवखत्ता जे ण छ अहोरत्ते एगवीस च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति ?

ग कयरे णवखत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति ?

घ कयरे णवखत्ता जे ण वीस अहोरत्ते, तिमि च मुहत्ते सूरिएण सद्धि जोग जोएति ?

उ क ता एएसिण छप्पणाए णवखत्ताण—

तत्य जे ते णवखत्ता जे ण चत्तारि अहोरत्ते, छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति,
ते ण दो अमीई,

ख तत्य जे ते णवखत्ता जे ण छ अहोरत्ते, एगवीस च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति,
ते ण बारस तजहा—

१ दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो अद्दा, ४ दो अस्सेसा, ५ दो साती,
६ दो जेट्टा,

ग तत्य जे ते णवखत्ता जे ण तेरस अहोरत्ते, बारस य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति,
ते ण तीस, तजहा—

१ दो सवणा, २ दो धणिट्टा, ३ दो पुव्यामट्टवया, ४ दो रेवती, ५ दो अस्सिणी,
६ दो कत्तिया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुस्ता, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफगुणी,
११ दो हत्या, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराघा, १४ दो मूला, १५ दो पुव्वासाढा,

घ तत्य जे ते णवखत्ता जे ण वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएति,
ते ण बारस, तजहा—

१ दो उत्तरापोट्टवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफगुणी
५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा ।

णवखत्तमडलाण सीमाविषयभो

६१ प ता कह ते सीमाविषयभे ? आहिए ति वएज्जा ।

उ क ता एएसिण छप्पणाए णवखत्ताण—

अत्यि णवखत्ता, जेसि ण छ सया तीसा सत्तसद्धिभाग तीसइ भागाण सीमा-
विषयभो,

ख अत्यि णवखत्ता, जेसि ण सहस्स पचोत्तर सत्तसद्धिभाग तीसइ भागाण सीमा विषयभो
ग अत्यि णवखत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसद्धिभाग तीसइ भागाण सीमा
विषयभो,

घ अत्यि णवखत्ता जेसि ण तिसहस्स पचदसुत्तर सत्तसद्धिभाग तीसइ भागाण सीमा
विषयभो,

प क ता एएसिण छप्पणाए णवखत्ताण—

कयरे णवखत्ता जेसि ण छसया, तीसा सत्तसद्धिभाग तीसइ भागाण सीमा-
विषयभो ?

- ख कयरे णवखत्ता जेसि ण सहस्स पचोत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-
विबखमो ?
- ग कयरे णवखत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-
विबखमो ?
- घ कयरे णवखत्ता जेसि ण तिसहस्स पचदसुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागाण सीमा-
विबखमो ?
- उ क ता एएसिण छप्पण्णाए णवखत्ताण—
तत्थ जे ते णवखत्ता जेसि ण छ सया तीसा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमा-
विबखमो, ते ण दो भ्रमिई ।
- ख तत्थ जे ते णवखत्ता, जेसि ण सहस्स पचुत्तर सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण सीमा-
विबखमो, ते ण बारस, तजहा—
१ दो सतभिसया, २ दो भरणी, ३ दो भ्रद्दा, ४ दो भ्रस्सेसा, ५ दो साती, ६ दो जेट्ठा ।
- ग तत्थ जे ते णवखत्ता जेसि ण दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे ण
सीमाविबखमो, ते ण तीस, तजहा—
१ दो सवणा, २ दो घण्टा, ३ दो पुव्वाभद्दवया, ४ दो रेवई, ५ दो अस्सिणी,
६ दो फत्तिया, ७ दो सठाणा, ८ दो पुत्सा, ९ दो महा, १० दो पुव्वाफगुणी,
११ दो हत्था, १२ दो चित्ता, १३ दो अणुराहा, १४ दो मूला, १५ दो
पुव्वासाढा,
- घ तत्थ जे ते णवखत्ता जेसि ण तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तसट्ठिभाग तीसइ भागे
ण सीमाविबखमो, ते ण बारस, तजहा—
१ दो उत्तरापोट्ठवया, २ दो रोहिणी, ३ दो पुणव्वसू, ४ दो उत्तराफगुणी,
५ दो विसाहा, ६ दो उत्तरासाढा,

णवखत्ताण चदेण जोगो

- ६२ प क ता एएसिण छप्पण्णाए णवखत्ताण—
किं सया पादो चदेण सट्ठि जोग जोएति ?
- ख ता एएसिण छप्पण्णाए णवखत्ताण—
किं सया साय चदेण सट्ठि जोग जोएति ?
- ग ता एएसिण छप्पण्णाए णवखत्ताण—
किं सया दुहा पविसिय पविसिय चदेण सट्ठि जोग जोएति ?

उ क ता एएसिण छप्पणाए णवत्ताण—

न कि पि त ज सया पावो चदेण सद्धि जोग जोएति,

ए न सया साय चदेण सद्धि जोग जोएति,

ग न सया दुहयो पविसित्ता पविसित्ता चदेण सद्धि जोग जोएति, णणत्त्य दोहि
अभिर्हीहि ।

ता एएण दो अभिर्ही पायच्चिय पायच्चिय चोत्तालीस चोत्तालीस अमावासा जोएति
णो चेव ण पुण्णमासिणि ।

चदस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो

६३ तस्य खलु इमाग्नो बावट्ठि पुण्णिमासीग्नो बावट्ठि अमावासाग्नो पण्णत्ताग्नो,

१ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?

उ जसि ण देससि चदे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ ताए तेण पुण्णिमा
सिणिट्ठाणाए^१ मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता वेत्तोस भागे उवाइणावेत्ता, एत्य ण से
चदे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ,

२ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दोच्च पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?

उ जसि ण देससि चदे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए तेण पुण्णिमासिणिट्ठाणाए
मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता वेत्तोस भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से चदे दोच्च
पुण्णिमासिणि जोएइ,

३ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?

उ जसि ण देससि चदे दोच्च पुण्णिमासिणि जोएइ ताए ते ण पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल
चउव्वीसेण सएण छेत्ता वेत्तोस भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से चदे तच्च पुण्णिमासिणि
जोएइ,

४ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि जोएइ ?

उ जसि ण देससि चदे तच्च पुण्णिमासिणि जोएइ ता पुण्णिमासिणिट्ठाणाए मडल
चउव्वीसेण सएण छेत्ता दोण्णि अट्ठासीए भागसए^१ उवाइणावेत्ता, एत्य ण से चदे
दुवालसम पुण्णिमासिणि जोएइ,

१ तस्मात्पूजाभागीस्थानात्-चरमद्रापष्टितम-
पौर्णमासीपरिममाष्टिस्थानात् परतो मण्डलं,
पशुविकारयधिकेन शतेन धित्वा विमज्य ॥

२ “दोण्णि अट्ठासीए भागसए” ति,

दृतीयास्या पौर्णमास्या परतो द्वादशी किल पौर्णमासी नवमी भवति,
एतो नवभिर्द्वात्रिंशतो गुणने द्वे शते अष्टासीत्यधिके भवत ।

एव खलु एएण उवाएण ताए ताए पुण्णिमासिणिठ्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण
छेत्ता वत्तीस भागे उवाइणावेत्ता तसि तसि देससि त त पुण्णिमासिणि चदे जोएइ ।

५ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरम बावाट्ठि पुण्णिमासिणि चदे कसि देससि
जोएइ ?

उ ता जव्वदीयस्स ण दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहियययाए जीवाए मडल
चउव्वीसेण सए ण छेत्ता दाहियसि चउम्भामडलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता,
अट्टावीसइ भागे वीसहा छेत्ता अट्टारसभागे उवाइणावेत्ता तिहि भागेहि दोहि य
कलाहि एच्चत्थियमिल्ल चउम्भागमडल असपत्ते एत्थण चदे चरिम बावाट्ठि
पुण्णिमासिणि जोएइ ।^१

सूरस्स पुण्णिमासिणीसु जोगो

६४ १ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावाट्ठि पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणि-
ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता चउणवइ भागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से सूरिए
पढम पुण्णिमासिणि जोएइ ।

२ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दोच्च पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे पढम पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल
चउव्वीसेण सएण छेत्ता दो चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्थ ण से सूरिए दोच्च
पुण्णिमासिणि जोएइ,

३ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे दोच्च पुण्णिमासिणि जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल

१ "जबुद्धीवस्स णमित्थादि"

जम्बूद्वीपस्य णमिति वाक्यालकारे द्वीपस्थोपरि प्राचीना प्राचीनतया,

इह प्राचीनग्रहणेनोत्तरपूर्वा (ईशान) गह्यते, अर्वाचीनग्रहणेन दक्षिणापररा, (नैऋत्य) ।

ततोऽप्यमथ पूर्वोत्तर-दक्षिणापररायतया, एवमुदीचि-दक्षिणायतया, पूव-दक्षिणोत्तरापररायतया जीवया प्रत्यचया
दपरिकया इत्यथ ,

मण्डल चतुर्विधेन-चतुर्विधशत्यधिनेन शतेन द्वित्वा विभज्य भूमश्चतुर्भिविभज्यते,

ततो दक्षिणात्ये चतुर्भागमण्डले एकात्रिंशद्भागप्रमाणे सप्तविंशतिभागानुपादायाष्टाविंशतितम च भाग विशतिधा
द्वित्वा तदयतानुष्टादश—

भागानुपादाय शेषैस्त्रिंशद्भागश्चतुस्रस्य भागस्य द्वाभ्यां कलाभ्यां,

पाश्चात्य चतुर्भागमण्डलमसंप्राप्त अस्मिन् प्रदेशे चन्द्रो द्वापष्टितमां चरमां पौर्णिमासीं परिसमापयति ।

चउव्योसेण सएण छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से सूरिए तच्चं पुण्णिमासिणिं जोएइ,

- ४ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण बुवालस पुण्णिमासिणिं सूरे कसि देससि जोएइ ?
 उ ता जसि ण देससि सूरे तच्च पुण्णिमासिणिं जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्योसेण सएण छेत्ता अट्टछताले भागसए^१ उवाइणावेत्ता, एत्य ण से सूरिए बुवालसम पुण्णिमासिणिं जोएइ,
 एव खलु एएण उवाएण ताए ताए पुण्णिमासिणिठाणाए मडल चउव्योसे ण सएण छेत्ता चउणवइ चउणवइ भागे उवाइणावेत्ता^२, तसि तसि ण देससि त त पुण्णिमासि ण सूरे जोएइ,

- ५ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण चरिम वावट्ठि पुण्णिमासिणिं सूरे कसि देससि जोएइ ?
 उ ता जवुट्ठीयस्स ण दीवस्स पाईण-पडिणाययाए उदीण-दाहिणाययाए जीवाए मडल चउव्योसेण सएण छेत्ता पुरत्थिमिल्लसि चउम्भागमडलसि सत्तावीस भागे उवाइणावेत्ता अट्टावीसइभाग योसहा^३ छेत्ता अट्टारसभागे उवाइणावेत्ता तिंह भागेहि बोहि य कसाहि दाहिणिल्ल चउम्भागमडल असपत्ते एत्य ण सूरिए चरिम वावट्ठि पुण्णिमासिणिं जोएइ ।

चउव्यो अमावासासु जोगो

- ६५ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराणं पडम अमावास चंदे कसि देससि जोएइ ?
 उ ता जसि ण देससि चदे चरिम वावट्ठि अमावास जोएइ ताए अमावासट्टाए मडल चउव्योसे ण सएण छेत्ता अतोस भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण से चदे पडम अमावास जोएइ,

१ "अट्टछताले भागसए" ति,

तृतीयस्या षोणमास्या परतो द्वादशी निल षोणमासी नवमी,
 सत्रचतुनवतिनवभिगु ण्यते, जाता यष्टी शतानि पटथरवारिणदधिकानि ।

- २ पाराशर्यपुग्वरमयापष्टितमषोणमासीपरिसमाप्तिनिय घनात्
 स्थानात् परतो मण्डलस्य अनुविशर्यधिके रात प्रविभक्तस्य सरवानो
 चतुनवतिचतुनवतिभागानामतिप्रमे तस्या तस्या षोणमास्या
 परिसमाप्ति, तत्रचतुनवतिद्विपटया गुण्यते, जाता यष्टी—
 पाराशर्यनानि अष्टाविशर्यधिकानि, तेषां अनुविशर्यधिकेन शतैः भागो द्विपटे सभ्या
 सप्तचरवारिणसत्रममण्डलपरवर्तनी ।

एव जेणेव श्रमिलावेण चदस्स पुण्णिमासिणीओ भणिप्राओ तेणेव श्रमिलावेण श्रमावासाओ भाणियव्वाओ, तजहा—विइया, तइया, दुवालसमी ।^१

एव खलु एएण उवाएण ताए ताए श्रमावासाठाणाए मडल चउव्वीसे ण सएण छेत्ता बत्तीस बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता तसि तसि देससि त त श्रमावास चदेण जोएइ,

- प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि श्रमावास चदे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि चदे चरिम बावट्ठि पुण्णिमासिणि जोएति, ताए पुण्णिमासिणि-
ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता सोलस भागे श्रोसवक्कावइत्ता, एत्य ण से चदे
चरिम बावट्ठि श्रमावास जोएइ ।

सूरस्स श्रमावासासु जोगो

६६ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम श्रमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

- उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठि श्रमावास जोएइ, ताए श्रमावाससठाणाए मडल
चउव्वीसेण सएण छेत्ता चउणउइभागे उवाइणावेत्ता, एत्य ण से सूरे पढम श्रमावास
जोएइ,

एव जेष्व श्रमिलावेण सूरियस्स पुण्णिमासिणीओ तेणेव श्रमिलावेण श्रमावासाओ
भाणियव्वाओ, तजहा—विइया, तइया, दुवालसमी ।^२

१ 'एवमित्यादि' एवमुक्तप्रकारेण येनैवाश्रमिलापेन चद्रस्य षोणमास्यो भणितस्तेनवाश्रमिलापेनामावास्या अपि
भणितव्या, तद्यथा—द्वितीया, तृतीया, द्वादशी च ताम्बचवम् ।

- प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च श्रमावास चदे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि चदे पढम श्रमावास जोएइ तामो ण श्रमावासट्टाणामो मडल चउवीसेण सएण छेत्ता,
बत्तीस भागे उवाइणावेत्ता, एत्य ण से चदे दोच्च श्रमावास जोएइ
प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च श्रमावास चदे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि चदे दोच्च श्रमावास जोएइ, तामो श्रमावासट्टाणामो मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, बत्तीस
भाग उवाइणावेत्ता, एत्य ण से चदे तच्च श्रमावास जोएइ,
प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम श्रमावास चदे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि चदे श्रमावास जोएइ, तामो ण श्रमावासट्टाणामो मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता, दोण्णि
भट्टासीए भागसए उवाइणावेत्ता, एत्य ण चदे दुवालसम श्रमावास जोएइ,

२ एवमित्यादि एवमुक्तेन प्रकारेण तेमवाश्रमिलापेन सूयस्य षोणमास्य उक्तास्तेनैवाश्रमिलापेनामावास्या अपि
वक्तव्या, तद्यथा—द्वितीया, तृतीया, द्वादशी च ताम्बचवम् ।

- प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च श्रमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि सूरे पढम श्रमावास जोएइ तामो श्रमावासट्टाणामो मडल चउवीसेण सएण छेत्ता
चउणउइ भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण सूरे दोच्च श्रमावास जोएइ
प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च श्रमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि दोच्च श्रमावास जोएइ तामो श्रमावासट्टाणामो मडल चउवीसेण सएण छेत्ता
चउणउइ भागे उवाइणावेत्ता एत्य ण सूरे तच्च श्रमावास जोएइ,
प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम सूरे कसि देससि जोएइ ?
उ ता जसि ण देससि सूरे तच्च श्रमावास जोएइ तामो श्रमावासट्टाणामो मडल चउव्वीसेण सएण छेत्ता
भट्ट छत्ताले भागसए उवाइणावेत्ता, एत्य ण से सूरे दुवालसम श्रमावास जोएइ ।

एष जलु एएण उवाएण ताए ताए भ्रमावासट्ठाणाए मडल चउव्वीसेण सएण देत्ता,
चउणउइ चउणउइ भागे उवाइणावेत्ता तसि तसि देससि त त भ्रमावास सूरिए जोएइ ।

प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण चरिम बावट्ठि भ्रमावास सूरे कसि देससि जोएइ ?

उ ता जसि ण देससि सूरे चरिम बावट्ठि भ्रमावास जोएइ, ताए पुण्णिमासिणिठानाए
मडल चउव्वीसे ण सएण देत्ता सत्तालीस भागे ओसवकावइत्ता, एत्थ ण से सूरिए
चरिम बावट्ठि भ्रमामास जोएइ ।

पुण्णिमासिणिसु चवस्स य सूरस्स य णवखत्तेण जोगो

६७ १ क प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण पढम पुण्णिमासिणि चवे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता घणिट्ठाहिं, घणिट्ठाण तिण्णि महुत्ता एणुणवोस च बावट्ठिभागा महुत्तस्स बावट्ठिभाग
च सत्तट्ठिघा देत्ता पण्णट्ठि खुण्णिया भागा सेत्ता,

ख प त समय च ण सूरिए केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता पुव्वफग्गुणीहिं, पुव्वफग्गुणीण भट्ठावीस महुत्ता भट्ठतीस च बावट्ठिभागा महुत्तस्स
बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा देत्ता बत्तीस खुण्णिया भागा सेत्ता ।

२ क प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दोच्च पुण्णिमासिणि चवे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं पोट्टवयाहिं, उत्तराण पोट्टवयाण सत्तावीस महुत्ता चोइत्त य बावट्ठि-
भागा महुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा देत्ता बावट्ठि खुण्णिया भागासेत्ता,

ख प त समय च ण सूरिए केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराफग्गुणीण सत्तमहुत्ता तेत्तीस च बावट्ठिभागा महुत्तस्स
बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा देत्ता, एकवीस खुण्णिया भागा सेत्ता ।

३ क प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण तच्च पुण्णिमासिणि चवे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीण एकवीस महुत्ता णव य बावट्ठिभागा महुत्तस्स, बावट्ठिभाग
च सत्तट्ठिघा देत्ता तेवट्ठि खुण्णिया भागा सेत्ता,

ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता चित्ताहिं, चित्ताण एकवो महुत्तो बट्ठावीस च बावट्ठिभागा महुत्तस्स, बावट्ठिभाग च
सत्तट्ठिघा देत्ता, तीस खुण्णियामागा सेत्ता ।

४ क प ता एएसिण, पचण्ह सवच्छराण दुयालसम पुण्णिमासिणि चवे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाडाहिं, उत्तराण च आसाडाण छवीस महुत्ता छवीस च बावट्ठिभाग
महुत्तस्स बावट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा देत्ता, चउप्पण खुण्णिया भागा सेत्ता,

ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता पुण्यसुखा पुण्यसुखस्य सोलस मुहुता अद्द य वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता बीस चुण्णियाभागा सेसा ।

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरम बावाट्टि पुण्णिमासिणि चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसादाहिं उत्तराण आसादाण चरमसमए ।

ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता पुस्से ण पुस्सेस्स एगुणवीस मुहुता तेतालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता तेतीस चुण्णिया भागा सेसा ।

अभावात्तासु चदस्स य सूरस्स य णवखत्ताण जोगो

६८ १ क प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम अभावास चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सेसाहिं चैव अस्सेसाण एवके मुहुत्ते चत्तालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता, बावाट्टि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता अस्सेसाहिं चैव अस्सेसाण एवको मुहुत्तो चत्तालीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता, बावाट्टि चुण्णिया भागा सेसा ।

२ क प ताएएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च अभावास चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं चैव फग्गुणीहिं उत्तराण फग्गुणीण चत्तालीस मुहुता पणतीस वावट्टिभाग मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता, पण्णाट्टि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं चैव फग्गुणीहिं उत्तराण फग्गुणीण जहेय चदस्स ।

३ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च अभावास चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेण चैव हत्थस्स चत्तारिं मुहुता तीस च वावट्टिभागा मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता बावाट्टि चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता हत्थेण चैव हत्थस्स जहेय चदस्स ।

४ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दुवालसम अभावास चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ अर्धाहं चैव अर्धाण चत्वारि मुहुत्ता, वस य वायट्टि भागा मुहुत्तस्स, वायट्टिभाग च सत्तट्ठिघा ऐत्ता चउप्पण च्चुण्णिया भागा सेता ।

ख प त समय च सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अर्धाहं चैव अर्धाण जहा चवस्स ।

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चरिम वायट्टि अमावास चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा चैव पुणव्वसुस्स बावीस मुहुत्ता वायालीस च वासट्टिभागा मुहुत्तस्स सेता ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा चैव, पुणव्वसुस्स जहा चवस्स ।

चवेण य सूरेण य णक्खत्ताण जोगकाल

६९ १ क ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ अट्ट एगूणयोसाइ मुहुत्तसयाइ चउवीस च वायट्टिभागा मुहुत्तस्स, वायट्टिभाग च सत्तट्ठिघा ऐत्ता, वायट्टि च्चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता पुणरवि से चदे अण्णेण तारिसएण चैव णक्खत्तेण जोग जोएइ अण्णसि देससि ।

ख ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ, जसि देससि से ण इमाइ सोत्त अट्टतीस मुहुत्तसयाइ अउणापण्ण च वायट्टिभागा मुहुत्तस्स वायट्टिभाग च सत्तट्ठिघा ऐत्ता, पण्णाट्टि च्चुण्णियाभागे उवाइणावेत्ता, पुणरवि से ण चदे तेण चैव णक्खत्तेण जोग जोएइ, अण्णसि देससि ।

ग ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ, जसि देससि से ण इमाइ चउप्पण-मुहुत्त सहस्साइ णय य मुहुत्तसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से चदे अण्णेण तारिसएण णक्खत्तेण जोग जोएइ, तसि देससि,

घ ता जेण अज्ज णक्खत्तेण चदे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ एगलक्ख नय य सहस्स अट्ट य मुहुत्तसए उवाइणावेत्ता पुणरवि से चदे तेण चैव णक्खत्तेण जोग जोएइ, तसि देससि ।

२ क ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ तिण्णि छावट्टाइ राइवियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरिए अण्णेण तारिसएण चैव णक्खत्तेण जोग जोएइ त देससि ।

- ख ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ तंसि देससि से ण इमाइ सत्त दुतीस राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे अण्णेण चेव तारिसएण णक्खत्तेण जोग जोएइ, तंसि देससि ।
- ग ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ, जसि देससि से ण इमाइ अट्ठारस तोसाइ राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि सूरे तेण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ, तंसि देससि ।
- घ ता जेण अज्ज णक्खत्तेण सूरे जोग जोएइ जसि देससि से ण इमाइ छतीस सट्ठाइ राइदियसयाइ उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेण चेव णक्खत्तेण जोग जोएइ तंसि देससि ।

चदे-सूर-गह-णक्खत्ताण गइसमावण्णत्त

- ७० ता जया ण इमे चदे गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इयरेऽवि चदे गइसमावण्णए भवइ ।
जया ण इयरे चदे गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इमेऽवि चदे गइसमावण्णए भवइ ।
ता जया ण इमे सूरिए गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इयरेऽवि सूरिए गइसमावण्णए भवइ ।
ता जया ण इयरे सूरिए गइसमावण्णए भवइ,
तया ण इमेऽवि सूरिए गइसमावण्णए भवइ ।
एव गहे वि, णक्खत्ते वि ।

चदे-सूर-गह-णक्खत्ताण जोगो

- ता जया ण इमे चदे जुत्ते जोगे ण भवइ,
तया ण इयरेवि चदे जुत्ते जोगे ण भवइ ।
ता जया ण इयरे चदे जुत्ते जोगे ण भवइ,
तया ण इमेऽवि चदे जुत्ते जोगे ण भवइ ।
एव सूरेऽवि गहेऽवि णक्खत्तेऽवि ।
सया वि चदा जुत्ता जोगेहि,
सया वि सूरा जुत्ता जोगेहि,
सया वि गहा जुत्ता जोगेहि,
सया वि णक्खत्ता जुत्ता जोगेहि ।

दुहस्रोऽपि घदा जुत्ता जोगेहि,
 दुहस्रोऽपि सूरा जुत्ता जोगेहि,
 दुहस्रोऽपि गहा जुत्ता जोगेहि,
 दुहस्रोऽपि णवपत्ता जुत्ता जोगेहि ।
 मङ्गल समयसहस्तेण म्मट्टाणउईए सएहि देत्ता इच्चेस णवखत्ते खेतपरिभागे,
 णवखत्तविजए पाहुडे, त्ति येमि ।



व्याख्यां प्राभृत

पचण्ह सवच्छराण, पाग्भ-पज्जवसाणकाल चद-सूराण-णवखत्तसजोगकाल च

७१ क १ प ता कह ते सवच्छराणादी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ तत्थ खलु इमे पच सवच्छरे पणत्ते त जहा—१ चदे, २ चदे, ३ अभिवड्डिए,
४ चदे, ५ अभिवड्डिए ।

पढम चदसवच्छर

ख १ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढमस्स चदस्स सवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण पचमस्स अभिवड्डियसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से ण पढमस्स चदस्स सवच्छरस
आदी, अणतरपुरवखडे समए ।

ग प ता से ण कि पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स आदी, से ण पढमस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे,
अणतरपच्छाकडे समए ।

घ प त समय च ण चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण छट्ठवीस मुहुत्ता, छट्ठवीस च वासट्ठिभागा,
मुहुत्तस्स वासट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा छित्ता चउप्पण चुण्णिया भागा सेसा ।

ङ प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता, अट्ठ घ वासट्ठिभागा, मुहुत्तस्स वासट्ठिभाग च
सत्तट्ठिघा देत्ता वीस चुण्णिया भागा सेसा ।

वितिय चदसवच्छर

क २ प ता एएसिण पचण्ह सवच्छराण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स के आदी ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण पढमस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से ण दोच्चस्स चदसवच्छरस्स आदी,
अणतरपुरवखडे समए ।

ख प ता से ण कि पज्जवसिए ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता जे ण तच्चस्स अभिवड्डिय-सवच्छरस्स आदी, से ण दोच्चस्स सवच्छरस्स पज्जवसाणे
अणतरपच्छाकडे समए ।

- ग प त समय च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?
 उ ता पुय्वाहं आसाढाहं, पुय्वाण आसाढाण सत्त मुहुत्ता, तेवण्ण च यावट्ठिभागा मुहुत्तस्स,
 यावट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता इगतात्तीस चुण्णिया भागा सेसा ।
- घ प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?
 उ ता पुण्णसुणा, पुण्णसुस्स ण यायात्तीस मुहुत्ता पणतीस च यासाट्ठिभागा मुहुत्तस्स,
 यासाट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा ।

ततिय अभिवट्ठिय सवच्छर

- क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्चस्स अभियट्ठियसवच्छरस्स के भादी ? भाहिए त्ति
 यएज्जा ।
 उ ता जे ण वोच्चस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से ण तच्चस्स अभिवट्ठियसवच्छरस्स
 भादी, अणतरपुरक्खडे समए ।
- घ प ता से ण किपज्जवसिए ? भाहिए त्ति यएज्जा ।
 उ ता जे ण चउत्तयस्स चदसवच्छरस्स भादी, से ण तच्चस्स अभिवट्ठियसवच्छरस्स पज्जव-
 साणे अणतरपच्छाकडे समए ।
- ग प त समय च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?
 उ ता उत्तराहं आसाढाहं, उत्तराण आसाढाण तेरसमुहुत्ता, तेरस य यावाट्ठिभागा मुहुत्तस्स,
 यावाट्ठिभाग च सत्तट्ठिधा ऐत्ता सत्तावीस चुण्णिया भागा सेसा ।
- घ प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?
 उ ता पुण्णसुणा, पुण्णसुस्स दो मुहुत्ता, छप्पण्ण यावट्ठिभागा, मुहुत्तस्स, यावट्ठिभागं
 सत्तट्ठिधा ऐत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा ।

चउत्तय चदसवच्छर

- क ४ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चउत्तयस्स चदसवच्छरस्स के भादी ? भाहिए त्ति
 यएज्जा ।
 उ ता जे ण तच्चस्स अभियट्ठिय-सवच्छरस्स पज्जवसाणे से ण चउत्तयस्स चदसवच्छरस्स
 भादी, अणतरपुरक्खडे समए ।
- घ प ता से ण किपज्जवसिए ? भाहिए त्ति यएज्जा ।
 उ ता जे ण चरिमस्स अभिवट्ठियसवच्छरस्स भादी, से ण चउत्तयस्स चदसवच्छरस्स
 पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए ।
- ग प त समय च ण चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तरार्ह आसाढार्ह, उत्तराण आसाढाण चत्तालीस मुहुत्ता, चत्तालीस च वासट्टिभागा मुहुत्तस्स, वासट्टिभाग च सत्तट्टिघा छेत्ता चउसट्टी चुण्णिया भागा सेसा ।

घ प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता पुणव्वसुणा पुणव्वसुस्स अउणतीस मुहुत्ता, एक्कवीस च वासट्टिभागा मुहुत्तस्स, वासट्टि-
भाग च सत्तट्टिघा छेत्ता सितालीस चुण्णिया भागा सेसा ।

पचम अभिवड्ढिय सवच्छर

क ५ प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स के आदी ? आहिए ति वएज्जा ।

उ ता जे ण चउत्यस्स चदसवच्छरस्स पज्जवसाणे, से ण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स आदी, अणतरपुरवखडे समए ।

घ प ता से ण किपज्जवसिए ? आहिए ति वएज्जा ।

ता जे ण पढमस्स सवच्छरस्स आदी से ण पचमस्स अभिवड्ढियसवच्छरस्स पज्जवसाणे अणतरपच्छाकडे समए ।

ग प त समय च ण चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता उत्तरार्ह आसाढार्ह, उत्तराण आसाढाण चरमसमए ।

घ प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?

उ ता पुस्सेण, पुस्सस्स ण एक्कवीस मुहुत्ता तेतालीस च वावट्टिभागा, मुहुत्तस्स वावट्टिभाग च सत्तट्टिघा छेत्ता तेत्तीस चुण्णिया भागा सेसा ।



वारहवां प्राभृत

पचण्ह सवच्छराण, मासाण च राइदिय-मुहुत्तप्पमाण

७२ क १ प ता कति ण सवच्छरा ? आहिंए त्ति वएज्जा ?

उ तदय खलु इमे पच सवच्छरा पण्णत्ता त जहा—१ णवउत्ते, २ चदे, ३ उड्ड,
४ आइच्चे, ५ अमिवाड्डिए ।

पढम णयखत्त-सवच्छर

ख प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढमस्त णवउत्तसवच्छरस्त णवउत्तमासे तीसइ मुहुत्तेण तीसइ मुहुत्तेण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइदियगेण ? आहिंए त्ति वएज्जा ।

उ ता सत्तावीस राइदियाइ एक्कवीस च सत्तट्ठिमागा राइदियस्त राइदियगेण, आहिंए त्ति वएज्जा ।

ग प ता से ण केवइए मुहुत्तगेण ? आहिंए त्ति वएज्जा ?

उ ता अट्ठसए एगुणवीसे मुहुत्ताण, सत्तावीस च सत्तट्ठिमागे मुहुत्तस्त मुहुत्तगेण, आहिंए त्ति वएज्जा ।

घ प ता एएसि ण अट्ठा दुयात्तसकधुत्तकडा णवउत्ते सवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियगे ण ? आहिंएत्ति वएज्जा ।

उ ता तिण्णि सत्तावीसे राइदियसए एक्कावन्न च सत्तट्ठिमागे राइदियस्त राइदियगे ण आहिंए त्ति वएज्जा ।

उ प ता से ण केवइए मुहुत्तगे ण ? आहिंए त्ति वएज्जा ।

उ ता णय मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्न च सत्तट्ठिमागे मुहुत्तस्त मुहुत्तगे ण, आहिंए त्ति वएज्जा ।

बित्तिप चदसवच्छर

२ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोब्बस्त चदसवच्छरस्त चदे मासे तीसइमुहुत्ते ण तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइदियगे ण ? आहिंए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगुणतीस राइदियाइ बत्तीस यासट्ठिमागा राइदियस्त राइदियगे ण आहिंए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तगे ण ? आहिंए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठपधासए मुहुत्ते नेत्तीस यासट्ठिमागा मुहुत्तगे ण, आहिंए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण अद्दा दुवालसखुत्तकडा चदे सवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता त्तिन्नि चउप्पने राइदियसए दुवालस य वासट्ठिभागा राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता वसमुहुत्तसहस्ताइ छच्च पणवीसे मुहुत्तसए पण्णास च वासट्ठिभागे मुहुत्ते ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ततिय उडुसवच्छर

३ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्चस्स उडुसवच्छरस्स उडुमासे तीसइ मुहुत्ते ण, तीसइ मुहुत्ते ण मिज्जमाणे केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तीस राइदियाण राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णवमुहुत्तसयाइ मुहुत्तगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण अद्दा दुवालसखुत्तकडा उडू सवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता त्तिण्णि सद्ढे राइदियसए राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता वसमुहुत्तसहस्ताइ अट्ठ य सयाइ मुहुत्तगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

चउरय आइच्चसवच्छर

४ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चउरयस्स आदिच्चसवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसइमुहुत्ते ण, तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्तेण मिज्जमाणे केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तीस राइदियाइ अरवद्धभाग च राइदियस्स राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ख प ता से ण केवइए मुहुत्तगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण अद्दा दुवालसखुत्तकडा आदिच्चे सवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता त्तिन्नि छावट्ठे राइदियसए राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तगो ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता वसमुहुत्तस्स सहस्साइ णव भसीए मुहुत्तसए मुहुत्तगो ण, आहिए त्ति वएज्जा ।

पचम अमिबड्ढियसवच्छर

५ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पचमस्स अभिवट्ठियसवच्छरस्स अभिवट्ठिए माणे तीसइमुहुत्तेण, तीसइमुहुत्ते ण अहोरत्ते ण मिज्जमाणे केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एगतीस राइदियाइ एगूणतीस च मुहुत्ता सत्तरस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तगो ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तमए सत्तरस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तगो ण आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता एस ण भट्ठा दुयालसघुत्तकडा अभिवट्ठियसवच्छरे, ता से ण केवइए राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तिण्णि तेसीए राइदियसए एक्कोस च मुहुत्ता भट्टारस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तगो ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता एक्कारसमुहुत्तसहस्साइ पच य एक्कारसमुहुत्तसए भट्टारस वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तगो ण आहिए त्ति वएज्जा ।

एगस्स जूगस्स अहोरत्त-मुहुत्तप्पमाण

७३ क प ता केवइय ते नो जूगे राइदियगेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता सत्तरस एकाणउए राइदियसए, एगूणवीस च मुहुत्त, सत्तावण्णे वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, वासट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा ऐत्ता पणपन्त घुण्णिगया भागे राइदियगे ण आहिए त्ति वएज्जा ।

घ प ता से ण केवइए मुहुत्तगो ण ? आहिए त्ति वएज्जा,

उ ता तेवण्णमुहुत्तसहस्साइ, सत्त य भउणापने मुहुत्तसए, सत्तावण्ण वासट्ठिभागे मुहुत्तस्स, वासट्ठिभाग च सत्तट्ठिघा ऐत्ता पणपण घुण्णिगया भागा मुहुत्ते ण, आहिए त्ति वएज्जा ।

ग प ता केवइए ण ते जगपत्ते राइदियगे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

- उ ता अद्वितीय राइवियाइ दस य मुहुता, चत्तारि य वासट्टिभागे मुहुत्तस्स, वासट्टि भाग च सत्तट्टिधा ऐत्ता दुवालस चुण्णिया भागे राइवियग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा ।
- घ प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा,
उ ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए, चत्तारि य वासट्टिभागे मुहुत्तस्स, वासट्टिभाग च सत्तट्टिधा ऐत्ता दुवालस चुण्णिया भागे मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा ।
- ङ प ता केवइय जूगे राइवियग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।
उ ता अट्टारस तीसे राइवियसए राइवियग्गे ण आहिए त्ति वएज्जा,
- च प ता से ण केवइए मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा ।
उ ता चउप्पण्ण मुहुत्तसहस्साइ णव य मुहुत्तसयाइ मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा ।
- छ प ता से ण केवइए वासट्टिभाग मुहुत्तग्गे ण ? आहिए त्ति वएज्जा,
उ ता चोतीस समयसहस्साइ अट्टाथोस च वासट्टिभागमुहुत्तसए वासट्टिभाग मुहुत्तग्गे ण, आहिए त्ति वएज्जा ।

पञ्चह सवच्छराण पारम-पज्जवसाणकालस्स समत्तपस्सवण

- ७४ १ क प ता कया ण एए आदिच्च चद सवच्छरा समादीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा ।
उ ता सट्टि एए आदिच्चमासा वासट्टि एए य चदमासा ।
एस ण अट्टा छुत्तकडा दुवालसभयिता तीस एए आदिच्चसवच्छरा, एक्कतीस एए चदसवच्छरा,
तया ण एए आदिच्च-चद-सवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहिए त्ति वएज्जा ।
- घ प ता कया ण एए आदिच्च-उडु-चद णववत्ता सवच्छरा समादीया, समपज्जवसिया ? आहिए त्ति वएज्जा ।
उ ता सट्टि एए आदिच्चा मासा, एगट्टि एए उडुमासा, वासट्टि एए चदमासा, सत्तट्टि एए णववत्तमासा ।
एस ण अट्टा दुवालस छुत्तकडा दुवालसभयिता सट्टि एए आदिच्चा सवच्छरा, एगट्टि एए उडु सवच्छरा, वासट्टि एए चदा सवच्छरा, सत्तट्टि एए णववत्ता सवच्छरा ।

तथा णं एए आइच्च-उड्ड-चद-णवत्ता सयच्छरा समादीया, समपज्जवसिया, आहिए त्ति षएज्जा ।

ग प ता कया ण एए अभिवड्ढिअ आइच्च-उड्ड-चद-णवत्ता सवच्छरा समादीया समपज्जवसिया ? आहिए त्ति षएज्जा ।

उ ता सत्तायण्ण मासा, सत्त य भ्रहोरत्ता, एवकारस य मुहुत्ता, तेवीस बासट्ठि भागा मुहुत्तस्स एए अभिवड्ढिया मासा, सट्ठि एए आइच्चामासा, एसट्ठि एए उड्डमासा बासट्ठि एए चदमासा सत्तट्ठि एए णवत्त मासा ।

एस ण अद्धा छप्पण्ण-सयखुत्तकडा दुवालस भवित्ता सत्त सया चोयाला, एए ण अभिवड्ढिया सवच्छरा,

सत्तसया असीया, एए ण आइच्चा सयच्छरा,

सत्तसया तेणजया, एए ण उड्ड सवच्छरा,

अट्टसत्ता छल्लुत्तरा, एए ण चदा सवच्छरा,

एवसत्तरी अट्टसया, एए ण णवत्ता सवच्छरा ।

तथा ण एए अभिवड्ढिअ-आइच्च-उड्ड-चद-णवत्ता सयच्छरा समादीया समपज्जवसिया, आहिए त्ति षएज्जा ।

२ ता णयट्टयाए ण चवे सवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइदियसए, दुवालस य बासट्ठिभागे राइदियस्स, आहिए त्ति षएज्जा ।

३ ता अहातच्चे ण चवे सवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइदियसए, पच य मुहुत्ते पण्णास च बासट्ठि भागे मुहुत्तस्स, आहिए त्ति षएज्जा ।

उड्डूण णामाइ कालप्पमाण च

७५ तत्थ खलु इमे छ उड्डू पण्णत्ता, तजहा—१ पाउते, २ वरिसारत्ते, ३ सरते, ४ हेमंते, ५ वसते, ६ गिम्हे ।^१

ता राखे वि ण एए चद-उड्डू खुये दुये मासा तिचउप्पण्णसएण तिचउप्पण्णसएण आयामेण गणिज्जमाणे साइरेगाइ एगुणसट्ठि एगुणसट्ठि राइदियाइ राइदियामेण^१ आहिए त्ति षएज्जा ।

अवम-अइरित्तरत्ताण सखा त हेउ च

तत्थ खलु इमे छ अमरत्ता पण्णत्ता, तजहा—१ तइए पथ्ये, २ शत्तमे पथ्ये, ३ एवकारसमे पथ्ये, ४ पण्णरसमे पथ्ये, ५ एगुणवोसइमे पथ्ये, ६ तेवीसइमे पथ्ये ।

१ ठाय, ६, गु २२६

१ चंदस्य णं सवच्छरस्य एवमे उरु एगुणसट्ठि राइदियाइ राइदियामेण पण्णत्ता ।

तत्प खलु इमे छ अतिरत्ता पण्णत्ता, तजहा —

१ चउत्ये पव्वे, २ अट्टमे पव्वे, ३ बारसमे पव्वे, ४ सोलसमे पव्वे, ५ वीसइमे पव्वे,
६ चउवीसइमे पव्वे ।*

गाहा—

छच्चेव य अइरत्ता, आइच्चाओ हवति माणाइ ।

छच्चेव ओमरत्ता, चदाहि हवति माणाइ ॥१॥

वासिक्कियामु आउट्टियामु चदेण सूरेण य णक्खत्त जोगकालो

७६ तत्प खलु इमाओ पचवासिकीओ, पच हेमतीओ आउट्टीओ पण्णत्ताओ ।

१ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम वासिक्क आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता अभिद्वणा अभिइस्स पढमसएण ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसेण, पूसस्स एणुणवीस मुहुत्ता तेतालीस च बावट्टिभागा मुहुत्तस्स बावट्टिभाग च सत्तट्टिधा देत्ता तेत्तीस चुण्णिया भागा सेसा ।

२ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण दोच्च वासिक्क आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता सठण्णाहि, सठण्णाण एक्कारस मुहुत्ते, एणुणतालीस च बावट्टिभागा मुहुत्तस्स, बावट्टिभाग च सत्तट्टिधा देत्ता तेपण्ण चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसे ण, पूसस्स ण त चेव, ज पढमाए ।

३ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च वासिक्क आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता विसाहाहि, विसाहा ण तेरस मुहुत्ता, चउप्पण्ण च बावट्टिभागा मुहुत्तस्स, बावट्टिभाग च सत्तट्टिधा देत्ता, चत्तालीस चुण्णिया भागा सेसा ।

ख प त समय च ण सूरे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

उ ता पूसे ण, पूसस्स ण त चेव, ज पढमाए ।

४ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण च चउत्य वासिक्क आउट्टि चदे केण णक्खत्तेण जोएइ ?

१ क पयणि-पले । यहाँ पच-पण का पयणिवाची है ।

ख ठाण ६, सु ५२४

उ ता रेवईर्हि, रेवईण पगवीस मुहुता यतीस च घासट्टिभागा मुहुत्तस्त, बावट्टिभाग च सत्तट्टिघा देत्ता छत्तीस चुण्णिया भागा सेता ।

प प त समय च ण सूरे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता पूसे ण, पसस्त ण त जेय, ज पढमाए ।

१ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण च पचम वासिषिक आउट्टि चदे केण णवत्तणे ण जोएइ ?

उ ता पुव्यार्हि फग्गुणीर्हि पुव्याफग्गुणीण वारसमुहुता सत्तालीस च बावट्टिभागा मुहुत्तस्त बावट्टिभाग च सत्तट्टिघा देत्ता तेरस चुण्णिया भागा सेता ।

प प त समय च ण सूरे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता पूसेण, पूसस्त त ण जेय, ज पढमाए ।

हेमतिमासु बावट्टियासु चदेण सूरेण य णवत्तजोगकाली

७७ १ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण पढम हेमति आउट्टि चदे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता हत्येण, हत्यस्म ण पचमुहुत्त। पण्णास च बावट्टिभागा मुहुत्तस्त, बावट्टिभाग च सत्तट्टिघा देत्ता सट्टि चुण्णिया भागा सेता ।

प प त समय च ण सूरे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता उत्तरार्हि आसाडाहि उत्तराण आसाडाण चरिमसमए ।

२ क प ता एएसि ण पचण्ह सवच्छराण बोच्च हेमति आउट्टि चदे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता सत्तमिसर्पाहि, सत्तमिसयाण दुप्पि मुहुत्ता अट्टावीस च बावट्टिभागा मुहुत्तस्त बावट्टिभाग च सत्तट्टिघा देत्ता छत्तालीस च चुण्णिया भागा सेता ।

प प त समय च ण सूरे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता उत्तरार्हि आसाडाहि उत्तराण आसाडाण चरिमसमए ।

३ क प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण तच्च हेमति आउट्टि चदे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता पूसे ण, पुसस्त एणुणवीस मुहुत्ता तेतालीस च बावट्टिभागा मुहुत्तस्त, बावट्टिभाग च सत्तट्टिघा देत्ता तेतीस च चुण्णिया भागा सेता ।

प प त समय च ण सूरे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता उत्तरार्हि आसाडाहि उत्तराण आसाडाण चरिमसमए ।

४ क प एएसि ण पचण्ह सवच्छराण चउत्तिय हेमति आउट्टि चदे केण णवत्तणे जोएइ ?

उ ता पूसेण, पूसस्त छ मुहुत्ता, अट्टावन्न च बावट्टिभागा मुहुत्तस्त, बावट्टिभाग च सत्तट्टिघा देत्ता बीस चुण्णिया भागा सेता ।

वाट्ठवां प्राप्त]

- ख प त समय च ण सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?
 उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण, चरिमसमए,
 ५ क प ता एएसि ण पचण्हं सबच्छराण पचम हेमति आडाट्टं चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?
 उ ता कत्तियारिहं, कत्तियाण अट्टारस मुहुत्ता, छत्तीस च वावट्टिभाग मुहुत्तस
 वावट्टिभाग च सत्तट्टिया देत्ता छ चुणिया भागा सेसा ।
 ख प त समय च सूरे केण णवखत्तेण जोएइ ?
 उ ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराण आसाढाण चरिमसमए ।

जोगाण चदेण सद्धिं जोग-परुवण

- ७८ तत्थं पलु इमे दसविहे जाए पणत्ते, तजहा
 १ वसमाणु जोए, २ वेणुयाणु जोए
 ३ मवे जोए, ४ मचाइमचे जोए
 ५ छत्ते जोए, ६ छत्ताइ छत्ते जोए
 ७ जमणद्धे जोए, ८ घणसमददे जोए
 ९ पीणिए जोए, १० मडुकप्युते जोए

- १ प ता एएसि ण पचण्हं सबच्छराण छत्ताइच्छत्त जोय चदे कसि देससि जोएइ ?
 उ ता जयुद्धीवस्स दीवस्स,
 पाईण-पडिणीआययाए, उदीण-दाहिणायायाए जीवाए मडल चउव्वीसेण सएण छित्ता दाहिण-

पुरत्थिमिल्लसि चउभागमडलसि सत्तावीस मागे उवाइणावेत्ता अट्टावीसइभाग वीसधा देत्ता
 अट्टारसमागे उवाइणावेत्ता तिहिं मागेहिं दोहिं वत्ताहिं दाहिण-पुरत्थिमिल्ल चउभागमडल
 असपत्ते एत्थ ण से चदे छत्तातिच्छत्त जोय जोइए ।
 उण्णि चदो, मज्जे णवखत्ते, हेट्ठा आइत्ते ।

- २ प त समय च ण चदे केण णवखत्तेण जोएइ ?
 उ ता चित्ताहिं चरिमसमए ।



तेरहवां प्राभृत

चदमसोवड्डोऽवड्ढी

७९ प ता कह ते चदमसो वड्डोऽवड्ढी ? आहिण्ति ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठ पचासीते मुहुत्तसते तीस च वावट्ठिभागे मुहुत्तस्स ।

फ ता दोसिणापक्खाम्भो अधगारपक्ख अयमाणे चदे चत्तारि वायालसए, छत्तालीस च वावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जइ, तजहा—

पडमाए पडम भाग चित्तियाए चित्तिय भाग जाव पण्णरसोए पण्णरसम भाग,

चरमित्तमए चदे रत्ते भवइ,

अयतोसे त्तमए चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ, इयण्ण अमावासा, एत्थ ण पडमे पथ्ये अमा यासे ता अधगारपक्खो,

घ ता ण दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चत्तारे वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस च वावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जइ, तजहा—

पडमाए पडम भाग चित्तियाए चित्तिय भाग जाव पण्णरसोए पण्णरसम भाग, चरमित्तमए

चदे विरत्ते भवइ, अयसेमममए रत्ते य, विरत्ते य भवइ,

इयण्ण पुण्णमासिणी, एत्थ ण दोच्चे पथ्ये पुण्णमासिणी ।

एगयुगे पुण्णमासिणीओ अमावासो

८० तस्य खलु इमाम्भो वावट्ठि पुण्णमासिणीओ वावट्ठि अमावासाओ पण्णत्ताओ,

वावट्ठि एते कसिणा रागा,

वावट्ठि एते कसिणा विरागा,

एते चउट्ठोसे पथ्यसए,

एते चउट्ठोसे कसिण-राग विरागसए,

जावइयाण पचण्ह सपच्छराण समया एगे ण चउट्ठोसेण समयसएपुणागा,

एयइया परित्ता असलेज्जा देस राग विराग सया भवतोत्तिमक्खाया,

ता अमावासाओ ण पुण्णमासिणी चत्तारि वायाले मुहुत्तसए छत्तालीस वावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहिण्ति ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ ण अमावासा चत्तारि वायले मुहुत्तसए छत्तालीस बावट्टिभागे
मुहुत्तस्स आहिए त्ति वएज्जा,

ता अमावासाओ ण अमावासा अट्ठपचासीए मुहुत्तसए तीस च बावट्टिभागे मुहुत्तस्स
आहिए त्ति वएज्जा,

ता पुण्णिमासिणीओ ण पुण्णिमासिणी अट्ठ पचासीए मुहुत्तसए तीस बावट्टिभागे मुहुत्तस्स
आहिए त्ति वएज्जा,

एस ण एवइए चदे मासे,

एस ण एवइए सगले जुगे ।

चदाइच्च अट्ठमासे चदाइच्चवाण मडलचार

८१ क प ता चदेण अट्ठमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता चउहस चउवभागमडलाइ चरइ एग च चउवीससयभाग मडलस्स ।

ख प ता आइच्चेण अट्ठमासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?

उ ता सोलस मडलाइ चरइ, सोलसमडलचारी तथा अवराइ खलु दुवे अट्ठकाइ
जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्टित्ता पविट्टित्ता चार चरइ ।

ग प कयराइ खलु दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्टित्ता
पविट्टित्ता चार चरइ ?

उ इमाइ खलु ते दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्टित्ता
पविट्टित्ता चार चरइ त जहा—

१ निवपममाणे चेव अमावासते ण,

२ पविसमाणे चेव पुण्णिमासितेण,

एयाइ खलु दुवे अट्ठगाइ जाइ चदे केणइ असामण्णगाइ सयमेव पविट्टित्ता
पविट्टित्ता चार चरइ ।

पढमे चदायणे

ता पढमा पढमायणए चदे दाहिणए भागाए पविसमाणे सत्त अट्ठमडलाइ
जाइ चदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे चार चरइ,

प कयराइ खलु ताइ सत्त अट्ठमडलाइ जाइ चदे दाहिणाए भागाए पविसमाणे,
चार चरइ ?

उ इमाइ खलु ताइ सत्त अद्धमडलाइ जाइ चदे दाहिणाए भागाए पयिसमाणे चार चरइ, त जहा —

- १ विइए अद्धमडले, २ चउरये अद्धमडले,
 ३ छटठे अद्धमडले, ४ अट्टमे अद्धमडले,
 ५ दसमे अद्धमडले, ६ बारसमे अद्धमडले,
 ७ चउदसमे अद्धमडले ।

एयाइ खलु ताइ सत्त अद्धमडलाइ जाइ चदे दाहिणाए भागाए पयिसमाणे चार चरइ,

सा पढमायणणए चदे उत्तराए भागाए पयिसमाणे छ अद्धमडलाइ तेरस य सत्त ट्टिभागाइ अद्धमडलस्स जाइ चदे उत्तराए भागाए पयिसमाणे चार चरइ ।

प कयराइ खलु ताइ छ अद्धमडलाइ तेरस य सत्तट्टिभागाइ अद्धमडलस्स जाइ चदे उत्तराए भागाए पयिसमाणे चार चरइ ?

उ इमाइ खलु ताइ छ अद्धमडलाइ तेरस य सत्तट्टिभागाइ अद्धमडलस्स जाइ चदे उत्तराए भागाए पयिसमाणे चार चरइ, तजहा—

- १ तईए अद्धमडले, २ पचमे अद्धमडले,
 ३ सत्तमे अद्धमडले, ४ नयमे अद्धमडले,
 ५ एकारसमे अद्धमडले, ६ तेरसमे अद्धमडले
 पण्णरसमडलस्स तेरस सत्तट्टिभागाइ,

एताइ खलु ताइ छ अद्धमडलाइ तेरस य सत्तट्टिभागाइ अद्धमडलस्स जाइ चदे उत्तराए भागाए पयिसमाणे चार चरइ,

एयायया च पढमे चदायणे समत्ते भवइ ।

दोच्चे चदायणे

ता णवणत्ते अद्धमासे नो चदे अद्धमासे,

चवे अद्धमासे नो णवणत्ते अद्धमासे,

प ता णवणत्ताओ अद्धमासाओ ते चदे चदेण अद्धमानेण विमपिय चरइ ?

उ ता एण अद्धमडल चरइ, खत्तारि य सत्तट्टिभागाइ अद्धमडलस्स सत्तट्टिभाग एगतीसाए ऐत्ता णव भागाइ,

ता दोच्चायणगए चदे पुरच्छिमाए भागाए णिवणममाणे सत्त चउप्पणाइ जाइ चदे परस्स चिन्न पडिचरइ, सत्त तेरसगाइ जाइ चदे अप्पणा चिण्ण चरइ,

ता दोच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए णिवणममाणे छ चउप्पणाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडिचरइ, छ तेरसगाइ चदे अप्पणो चिण्ण पडिचरइ,

अवरगाइ खलु दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामणगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

प कयराइ खलु ताइ दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामणगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ ?

उ इमाइ खलु ताइ दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामणगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

१ सव्वभतरे चेव मडले,

२ सव्वबाहिरे चेव मडले,

एयाणि खलु ताणि दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामणगाइ सयमेव पविट्ठित्ता पविट्ठित्ता चार चरइ,

एयवया दोच्चे चदायणे समत्ते भवइ ।

तच्चे चदायणे

ता णक्खत्ते मासे नो चदे मासे,

चंदे मासे नो णक्खत्ते मासे,

प ता णक्खत्ताए मासाए चदे चदेण मासेण किमधिय चरइ ?

उ ता दो अद्धमडलाइ चरइ, अट्ठ य सत्तट्ठि भागाइ अद्धमडलस्स, सत्तट्ठिभाग च एक्क-
तीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइ,

ता तच्चायणगए चदे पच्चत्थिमाए भागाए पविसमाणे बाहिराणतरस्स पच्चत्थि-
मिल्लस्स अद्धमडलस्स इगयालीस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो, परस्स य चिन्न
पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडिचरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडिचरइ,

एयावया बाहिराणतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ ।

तच्चायणगए चदे पुरत्यिमाए भागाए पयिसमाणे याहिर तच्चस्स पुरत्यिमिल्लस्स
अद्धमडलस्स इगपालोस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण
पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे परस्स चिण्ण पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

एपायया याहिरत्तच्चे पुरत्यिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

ता तच्चायणगए चदे पच्चत्यिमाए भागाए पयिसमाणे याहिर चउत्थस्स पच्चरिय
मिल्लस्स अद्धमडलस्स अट्ठसत्तट्ठिभागाइ, सत्तट्ठिभाग च एवरतीसथा ऐत्ता
अट्ठारस भागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,

एपायया याहिर चउत्थ पच्चत्यिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

एय एतु चदेण भासेण चदे तेरस चउत्पण्णगाइ दुये तेरसगाइ जाइ चदे परस्स
चिण्ण पडियरइ,

तेरस तेरसगाइ जाइ चदे अप्पणो चिण्णाइ पडियरइ,

दुये इगपालोसगाइ दुये तेरसगाइ, अट्ठ सत्तट्ठिभागाइ सत्तट्ठिभाग च एवरतीसथा
ऐत्ता अट्ठारसभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्स य चिण्ण पडियरइ,
अवरइ एतु दुये तेरसगाइ जाइ चदे वेणइ असामन्नगाई समयेव पयिट्ठिता
पयिट्ठिता चार चरइ,

इच्चेसो चदमासो अभिगमण निरुत्तमण-युट्ठि निव्वुट्ठि अणवट्ठिय-सटाण-सट्ठि
विउव्वणगिट्ठिपत्ते चदे देये चदे देये, आहिए त्ति यएज्जा ।



चौदहवां प्राभृत

दोसिणा अधयारस्स य बहुत्तकारण

- ८२ क १ प ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ ता दोसिणापक्खे ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।
- २ प ता कहू ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।
- ३ प ता कहू ते अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते
 छत्तालीस च वावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जति, तजहा—
 पढमाए पढम भाग बिदियाए बिदिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरस भाग ।
 एव खलु अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ।
- ४ प ता केवतिया ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ?
 उ ता परित्ता असखेज्जा भागा ।
- ख १ प ता कता ते अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ ता अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा,
- २ प ता कहू ते अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ ता दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?
- ३ प ता कहू ते दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ ता दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्ख अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते
 छत्तालीस च वावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जति, तजहा—पढमाए पढम भाग
 वितियाए वितिय भाग जाव पण्णरस भाग,
 एव खलु दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ।
- ४ प ता केवतिए ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?
 उ परित्ते असखेज्ज भागे ।^१



१ "सूयप्रजप्ति प्राभृत १३, सूत्र ७९ और सूयप्रजप्ति प्रा १४ सूत्र ८२" इन दोन सूत्रों का फलिताथ समान है। अन्तर इतना ही है कि सूत्र ७९ में 'चन्द्र की हानि-वृद्धि' का कथन है। सूत्र ८२ में "चन्द्रिका तथा अघकार की अधिवृत्ता" का कथन है। किन्तु चन्द्र की हानि वृद्धि से ही चन्द्रिका एवं अघकार की अधिवृत्ता होती है।

तच्छायणगए चदे पुरत्यिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर तच्चस्तस पुरत्यिमिल्लस्त
 अद्धमडलस्त इगयालीस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्त य चिण्ण
 पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे परस्त चिण्ण पडियरइ,

तेरस सत्तट्ठिभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्त य चिण्ण पडियरइ,

एयावया बाहिरतच्चे पुरत्यिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

ता तच्छायणगए चदे पच्चत्यिमाए भागाए पविसमाणे बाहिर चउरयस्त पच्चत्यि
 मिल्लस्त अद्धमडलस्त अट्ठसत्तट्ठिभागाइ, सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसया धेत्ता
 अट्ठारस भागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्त य चिण्ण पडियरइ,

एयावया बाहिर चउत्थ पच्चत्यिमिल्ले अद्धमडले समत्ते भवइ,

एव खलु चदेण मासेण चदे तेरस चउप्पणगाइ दुवे तेरसगाइ जाइ चदे परस्त
 चिण्ण पडियरइ,

तेरस तेरसगाइ जाइ चदे अप्पणो चिण्णाइ पडियरइ,

दुवे इगयालीसगाइ दुवे तेरसगाइ, अट्ठ सत्तट्ठिभागाइ सत्तट्ठिभाग च एक्कतीसया
 धेत्ता अट्ठारसभागाइ जाइ चदे अप्पणो परस्त य चिण्ण पडियरइ,

अवराइ खलु दुवे तेरसगाइ जाइ चदे केणइ असामन्नगाइ सयमेव पविट्ठित्ता
 पविट्ठित्ता चार चरइ,

इच्चेसो चदमासो अभिगमण णिवपमण-बुद्धि णिवबुद्धि अणवट्ठिय-सठाण-सठिई
 विउव्वणगिद्धिपत्ते चदे देवे चदे देवे, आहिए त्ति चएज्जा ।



चौदहवां प्रश्न

दोसिणा अधयारस्स य बहुत्तकारण

८२ क १ प ता कता ते दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खे ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

२ प ता कह ते दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ।

३ प ता कह ते अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्टिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे विरज्जति, तजहा—
पढमाए पढम भाग विदियाए विदिय भाग जाव पण्णरसीए पण्णरस भाग ।
एव खलु अधकारपक्खाओ ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिया ण दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहिताति वदेज्जा ?

उ ता परित्ता असखेज्जा भागा ।

ख १ प ता कता ते अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा,

२ प ता कह ते अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खे ण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

३ प. ता कह ते दोसिणापक्खाओ अधकारपक्खेण अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ ता दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्खे अयमाणे चदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीस च बावट्टिभागे मुहुत्तस्स जाइ चदे रज्जति, तजहा—पढमाए पढम भाग विदियाए विदिय भाग जाव पण्णरस भाग,
एव खलु दोसिणापक्खाओ ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ।

४ प ता केवतिए ण अधकारपक्खे अधकारे बहू आहितेति वदेज्जा ?

उ परित्ते असखेज्ज भागे ।^१



१ "सुयप्रनप्ति प्राभूत १३, सूत्र ७९ और सुयप्रनप्ति प्रा १४ सूत्र ८२' इन दोगे सूत्रों का फलित्वाप समान है। अन्तर इतना ही है कि सूत्र ७९ में 'चद्र की हानि-वदि' का कथन है। सूत्र ८२ में 'चद्रिका तथा अधकार की अधिकता' का कथन है। किन्तु चद्र की हानि-वदि से ही चद्रिका एवं अधकार की अधिकता होती है।

पन्द्रहवाँ प्राभृत

चद-सूर-गह-णखत्त-ताराण गइपरूखण

८३ प ता कह ते सिग्घर्ई ? आहिए त्ति चएज्जा ।

उ ता एएसि ण चदिम सूरिय गहगण णखत्त ताराख्वाण—
चदेहंतो सूरु सिग्घर्ई,
सूरुहंतो गहा सिग्घर्ई,
गहेहंतो णखत्ता सिग्घर्ई,
णवत्तेहंतो तारा सिग्घर्ई,
सव्वप्पर्ई चवा सव्वसिग्घर्ई तारा ।^१

१ प ता एगमेगेण मुहुत्तेण चदे केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता ज ज मडल उवसकमिता चार चरइ तस्स तस्स मडलपरिक्खेवस्स सत्तरस
अट्ठसंठ्ठि भागसए गच्छइ, मडल सयसहस्से ण अट्ठाणउइ सएहिं छेत्ता छेत्ता ।

२ प ता एगमेगेण मुहुत्तेण सूरिए केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता ज ज मडल उवसकमिता चार चरइ, तस्स तस्स मडल परिक्खेवस्स अट्ठारस
तीसे भागसए गच्छइ, मडल सयसहस्से ण अट्ठाणउइसएहिं छेत्ता छेत्ता ।^२

१ प ता एएसि ण चदिम-सूरिय-गह णखत्त ताराख्वाण वयरे कयरेहंतो सिग्घर्ई वा मदर्ई वा ?

उ ता चदेहंतो सूरु सिग्घर्ई,
सूरुहंतो गहा सिग्घर्ई
गहेहंतो णवत्ता सिग्घर्ई,
णवत्तेहंतो तारा सिग्घर्ई,
सव्वप्पर्ई चवा, सव्वसिग्घर्ई तारा ।

२ प्रहो की गति वा निम्पण मूल पाठ में नहीं है ।

प्रहा की गति के सम्बन्ध में टीकाकार का स्पष्टीकरण—

प्रहास्तु चक्रानुचक्रादिगतिभावतोऽनियतगतिप्रस्थानास्ततो न वेपामुवतप्रकारेण गतिप्रमाणप्ररूपणा इति,
उक्त च ग्राह्यो—

‘चदेहि सिग्घररा, सूरु सूरुहिं होति णवत्ता ।

अणिययगइपत्याणा, ह्वति सेसा गहा सव्वे ॥ १ ॥

अट्ठारस णतीस, भागसए गच्छइ मुहुत्तेण ।

णवत्त चदे पुण, सत्तरससए उ अट्ठसट्ठे ॥ २ ॥

अट्ठारस भागसए, तीसे गच्छइ रवी मुहुत्तेण ।

णवत्तसीमच्छेदो, सो चव इह पि णायम्बो ॥ ३ ॥

३ प ता एगमेगेण मुहुत्तेण णक्खत्ते केवइयाइ भागसयाइ गच्छइ ?

उ ता ज ज मडल उवसकमिता चार चरइ, तस्स तस्स मडल-परिवत्तेयस्स अट्टारस पणतीसे भागसए गच्छइ, मडल सपसहस्से ण अट्टाणउईसएहि छेत्ता छेत्ता ।^१

चद-सूर-णक्खत्ताण वित्तेसगइपरूवण

८४ १ प ता जया ण चद गइसमावण्ण सूरे गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय वित्तेसेइ ?

उ यावट्टिभागे वित्तेसेइ ।

२ प ता जया ण चद गइसमावण्ण, णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय वित्तेसेइ ?

उ ता सत्तट्टि भागे वित्तेसेइ ।

३ प ता जया ण सूर गइसमावण्ण णक्खत्ते गइसमावण्णे भवइ, से ण गइमायाए केवइय वित्तेसेइ ?

उ ता पच भागे वित्तेसेइ ।

चदस्स-णक्खत्ताण य जोगगइपरूवण

ता जया ण चदे गइसमावण्ण अमिई णक्खत्ते ण गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ समासाइत्ता णवमुहुत्ते सत्तावीस च सत्तसट्टिभागे मुहुत्तस्स चदेण सट्टि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता, जोग विप्पजहइ विगयजोगो यावि भवइ,

ता जया ण चद गइसमावण्ण सवणे णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, समासाइत्ता तीस मुहुत्ते चदेण सट्टि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ विगयजोगो यावि भवइ ।

एय एएण अभिलावेण णेयव्व, पण्णरसमुहुत्ताइ, तीसइमुहुत्ताइ पणयालीसमुहुत्ताइ । भाणि-यव्वाइ जाव उत्तरासाठा,

चदस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवण

८४ ता जया ण चद गइसमावण्ण गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता चदेण सट्टि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगो यावि भवइ ।

१ 'तारामो की गति सबसे अधिक है' एसा श्रुत पाठ मे कथन है कि-तु गति न प्रमाण का कथन नहीं है, टीकाकार त भी इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं बहा है ।

सूरस्स णक्खत्ताण य जोग-गइकालपरूवण

ता जया ण सूर गइसमावण्ण अमिइणक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता, चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ,

एव छ अहोरत्ता एक्कवीस मुहुत्ता य, नेरस अहोरत्ता बारस मुहुत्ता य, वीस अहोरत्ता तिण्णि मुहुत्ता य सव्वे भणियव्वा जाव --

ता जया ण सूर गइसमावण्ण उत्तरासाढा णक्खत्ते गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता वीस अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ, विगयजोगी यावि भवइ ।

सूरस्स गहाण य जोग-गइकालपरूवण

ता जया ण सूर गइसमावण्ण गहे गइसमावण्णे पुरत्थिमाए भागाए समासाएइ, पुरत्थिमाए भागाए समासाइत्ता सूरेण सद्धि जोग जोएइ, जोग जोएत्ता जोग अणुपरियट्टइ, जोग अणुपरियट्टित्ता जोग विप्पजहइ विगयजोगी यावि भवइ ।

फ-णक्खत्तमासे चदस्स सूरस्स, णक्खत्तस्स य मडलचार

८५ [णक्खत्ताइसु ५चसु मासेसु चदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स च मडलचारत्तथा]

- १ प ता णक्खत्तेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता तेरस मडलाइ चरइ, तेरस य सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।
- २ प ता णक्खत्तेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता तेरस मडलाइ चरइ चोत्तालीस च सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।
- ३ प ता णक्खत्तेण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता तेरस मडलाइ चरइ अद्धसेतालीस च सत्तट्ठिभागे मडलस्स ।

ख-चदमासे चदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मडल चार

- १ प ता चदेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता चोइस्स चउभागाइ मडलाइ चरइ, एग च चउवीसत्तय भाग मडलस्स ।
- २ प ता चदेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता णण्णरस चउभागाइ मडलाइ चरइ, एग ज चउवीसत्तयभाग मडलस्स ।
- ३ प ता चदेण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता णण्णरस चउभागाइ मडलाइ चरइ, छच्च चउवीसत्तयभाग मडलस्स ।

ग-उडुमासे चदस्स सूरस्स णक्खत्तमासस्स य मडलच्चार

- १ प ता उडुणा मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता चोहस मडलाइ चरइ तीस च एगट्टिभागे मडलस्स ।
- २ प ता उडुणा मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस मडलाइ चरइ ।
- ३ प ता उडुणा मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस मडलाइ चरइ, पच्च य द्वावीस सयभागे मडलस्स ।

घ-आइच्चमासे चदस्स, सूरस्स णक्खत्तस्स य मडलच्चार

- १ प ता आइच्चेण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता चोहस्स मडलाइ चरइ, एक्कारस पण्णरस य भागे मडलस्स ।
- २ प ता आइच्चेण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ।
उ ता पण्णरस चउभागाहिगाइ मडलाइ चरइ ।
- ३ प ता आइच्चेण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस चउभागाहिगाइ मडलाइ चरइ पच्चतीस च चउवीससयभाग मडलाइ चरइ ।

ङ-अभिवड्ढियमासे चदस्स सूरस्स णक्खत्तस्स य मडलच्चार

- १ प ता अभिवड्ढिएण मासेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता पण्णरस मडलाइ चरइ, तेसीइ छलसीयभागे मडलस्स ।
- २ प ता अभिवड्ढिएण मासेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता सोलस मडलाइ चरइ, तिहि भागेहि ऊणगाइ दोहि अडपालेहि सएहि मडल छित्ता ।
- ३ प ता अभिवड्ढिएण मासेण णक्खत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता सोलस मडलाइ चरइ सेयालीसएहि भागेहि अहियाहि चोहसहि अट्टासीएहि मडल छेत्ता ।

एगमेगे अहोरत्ते चद-सूर-णक्खत्ताण मडलच्चार

- ६६ १ प ता एगमेगेण अहोरत्तेण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
उ ता एग अट्टमडल चरइ, एक्कतीसेहि भागेहि ऊण णवाहि पण्णरसेहि सएहि अट्ट-मडल छेत्ता ।

- २ प ता एगमेगेण अहोरत्तेण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
 उ ता एग अट्टमडल चरइ ।
- ३ प ता एगमेगेण अहोरत्तेण णवखत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
 उ ता एग अट्टमडल चरइ, दोहि भागेहि अहिप सत्तिह वत्तीसेहि सएहि अट्टमडल
 छेत्ता ।

एगमेगे मडले चद-सूर-णवखत्ताण अहोरत्ते चार

- १ प ता एगमेग मडल चदे कतिहि अहोरत्तेहि चरइ ?
 उ ता दोहि अहोरत्तेहि चरइ, एवकतीसेहि भाएहि अहिपहि चउहि चोपालेहि सएहि
 राइदिएहि छेत्ता ।
- २ प ता एगमेग मडल सूरे कतिहि अहोरत्तेहि चरइ ?
 उ ता दोहि अहोरत्तेहि चरइ ।
- ३ प ता एगमेग मडल णवखत्ते कतिहि अहोरत्तेहि चरइ ?
 उ ता दोहि अहोरत्तेहि चरइ, दोहि भागेहि ऊणेहि तिहि सत्तसट्टहि सएहि राइ
 दिएहि छेत्ता ।

एगमेगजुगे चद-सूर-णवखत्ताण मडलचार

- १ प ता जुगे ण चदे कइ मडलाइ चरइ ?
 उ ता अट्टचुल्लसीए मडलसए चरइ ।
- २ प ता जुगे ण सूरे कइ मडलाइ चरइ ?
 उ ता णव पणारसमडलसए चरइ ।
- ३ प ता जुगे ण णवखत्ते कइ मडलाइ चरइ ?
 उ ता अट्टारस पणतीसे दुमागमडलसए चरइ ।
 इच्चेसा मुहुत्तगई रिक्ख-उडमास राइदिय जुगमडल पविभत्ती सिग्घगई वरय आएहि
 त्ति वेमि ।



सोलहवॉ प्रश्न

दोसिणाइयाण लवखणा

- ८७ १ प ता कह ते दोसिणालवखणा ? माहिए त्ति वएज्जा ?
उ ता चदलेसाइ य दोसिणाइ य ।
- २ प दोसिणाइ य चदलेसाइ य के अट्ठे, किलवखणे ?
उ ता एगट्ठे एगलवखणे ।
- १ प ता कह ते सूरलेस्तालवखणे ? माहिए त्ति वएज्जा ?
उ ता सूरलेस्ताइ य आयवेइ य ।
- २ प ता सूरलेस्ताइ य, आयवेइ य के अट्ठे किलवखणे ?
उ ता एगट्ठे, एगलवखणे ।
- १ प ता कह ते छायालवखणे ? माहिए त्ति वएज्जा ।
उ ता छायाइ य, अधकाराइ य ।
- २ प ता छायाइ य अधकाराइ य के अट्ठे किलवखणे ?
उ ता एगट्ठे एगलवखणे ।



शत्तरहवाँ प्राभृत्

चद-सूरियाण चवणोववाया

- ८८ ५ ता कह् ते चवणोववाया, आहिए त्ति वएज्जा ?
 ७ तत्य खलु इमाओ पणवीस पडिवत्तीओ पणत्ताओ तज्जा—
 तत्य एगे एवमाहसु—
- १ ता अणुसमयमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति अण्णे उववज्जति, एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- २ ता अणुमुहत्तमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति अण्णे उववज्जति ।
- ३-२४ एव जहेय हेट्ठा तहेव जाव^१

- १ “एव जहा हिट्ठा तहेव जावेत्तादि—
 एव उवतेन प्रकारेण यथा अघस्तात् पच्छे प्राभृते पञ्चविंशति प्रतिपत्तयस्तथैवात्रापि वक्तव्या यावद् भणुमी
 सम्पिणि-उत्सम्पिणिमेवैत्यादि चरमसूत्रम् ।
 तासचैव भणितव्या —
 एगे पुण एवमाहसु—
 ता अणुराइदिममेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ४ ता अणुपववमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ५ ता अणुमासमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति, आहिए त्ति वएज्जा, एगे एवमाहसु,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ६ ता अणु-उठमेव
 एगे पुण एवमाहसु—
- ७ ता अणु-अवणमेव,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ८ ता अणु-सवच्छरमेव,
 एगे पुण एवमाहसु—
- ९ ता अणुजुगमेव,
 एगे पुण एवमाहसु—

(शेष टिप्पणियाँ अगले पृष्ठ पर)

२५ एगे पुण एवमाहसु—

ता अणुओसस्पिणी, उस्सपिणीमेव चदिम-सूरिया अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति,
एगे एवमाहसु ।

- १० ता अणुवाससयमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- ११ ता अणुवाससहस्समेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- १२ ता अणु वाससयमहस्समेव,
एग पुण एवमाहसु—
- १३ ना अणुपुब्बमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- १४ ता अणुपुवसयमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- १५ ता अणुपुवसहस्समेव,
एग पुण एवमाहसु—
- १६ ता अणुपुब्बसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- १७ ता अणुपल्लिओवमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- १८, ता अणुपल्लिओवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- १९ ता अणुपल्लिओवमसहस्समेव,
एग पुण एवमाहसु—
- २० ता अणुपल्लिओवमसयसहस्समेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- २१ ता अणुसागरोवमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- २२ ता अणुसागरोवमसयमेव,
एगे पुण एवमाहसु—
- २३ ता अणुसागरोवमसहस्समेव ।
एगे पुण एवमाहसु—
- २४ ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव ।

पचविभानितम प्रणिपत्तिम् तु साक्षादेव सूत्रतुता दशितम् सदेवमुक्ता परतीयिकप्रतिपत्तय । —टीका

वयं पुण एव वयामो—

ता चदिम-सूरियाण देवा महिङ्कीया, महाजुईया-महाबला, महाजसा, महासोख्दा,
महाणुमाया ।

घर उत्त्यधरा, वरमल्लधरा, वरगधधरा, वराभरणधरा, अर्ध्वोच्छित्तिभयद्वयाए ऋत
अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति, चवणोववाया आहिए त्ति वएज्जा ।



अठारहवो प्रामृत

चदाइच्छाइन भूमिभागाओ उड्डत्त

८९ प ता कह ते उच्चते आहितेति चदेज्जा ?

उ तत्य खलु इमाओ पणवीस पडिवत्तिओ, पणत्ताओ, तजहा—
तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एग जोयणसहस्स सूरे उड्ड उच्चतेण दिवड्ड चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता दो जोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण, अड्ढातिज्जाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

३ ता तिमि जोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण, अड्ढुट्ठाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

४ ता चत्तारि जोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण, अड्ढपचमाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

५ ता पच जोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण, अड्ढछट्ठाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

६ ता छ जोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण, अड्ढसत्तमाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

७ ता सत्तजोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण अड्ढटठमाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

८ ता अट्ठ जोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण अड्ढनवमाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

९ ता नवजोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण अड्ढवसमाइ चदे, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

१० ता दसजोयणसहस्साइ सूरे उड्ड उच्चतेण, अड्ढएवकारस चदे, एगे एवमाहसु ।

मदरपव्ययाओ लोइतचार

- १२ १ प ता मदरस्स ण पव्ययस्स ण केवइय अवाहाए जोइसे चार चरइ ?
उ ता एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अवाहाए जोइसे चार चरइ ।^१

लोअताओ जोइसठाण

- प ता लोअताओ ण केवइय अवाहाए जोइसे पण्णत्ते ?
उ ता एक्कारस एक्कारे जोयणसए अवाहाए जोइसे पण्णत्ते ।^२

णक्खत्ताण अब्भतराइ चार

- १३ १ प ता जवुहीवे ण दोवे
कयरे णक्खत्ते सव्वव्भतरिल्ल चार चरइ ?
२ प कयरे णक्खत्ते सव्ववाहिरिल्ल चार चरइ ?
३ प कयरे णक्खत्ते सव्वुयरिल्ल चार चरइ ?
४ प कयरे णक्खत्ते सव्वहेट्टिरिल्ल चार चरइ ?
१ उ अग्गिई णक्खत्ते सव्वव्भतरिल्ल चार चरइ ।^३

छावट्टीसहस्साइ, णक्ख केव सयाइ पचसयराइ ।

एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोटीण ॥

—जीवा प ३, उ २, सु १९४

ग जीवाभिगम प्रति ३, उ २, सू १९४ मे—“चद्द ओर सूव दोनो के समुक्त प्रश्नोत्तर है। मूल में प्रश्नसूचक वा केवल प्रतीक है और उत्तर के रूप में दो गाथाएँ हैं।

टीका में—“प्रश्नसूचक वा यह प्रतीक है—‘एगमगस्स ण भते ! चदिम-मूरियस्येरयाणि इय प्रतीक व’ सम्बन्ध में टीकाकार का स्पष्टीकरण यह है—

“एक्कस्य भदन्त ! चद्द सूयस्य” अर्थात् च पदन यथा नक्षत्रादीनां चद्द स्वामी तथा सुवर्गोऽपि, तस्यापीदृशवात्

इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गतितानि च सूत्राणि बहूय पुस्तकेषु ततो यथावत्पिच वाचनाभेदप्रतिपत्त्यय गलितसूत्रोद्धरणाय चय सुगमायपि विव्रियते

१ सम स ११, सु ३

२ व सम स ११ सु २

घ जम्बु वक्ख ७, सु १५४

३ “सर्वाभ्यन्तर सर्वेभ्यो मण्डलेभ्योऽभ्यन्तर सर्वाभ्यन्तर अनेन द्वितीयादि मण्डलचारभ्युत्पात”

“यद्यपि सर्वाभ्यन्तरमण्डलचारीभ्यभिजिदान्दिग्दाशनक्षत्राण्यभिहितानि, तथापीद शेषत्रादशनक्षत्राण्येव मण्डलदिशि स्थित सत् चार चरतीति सर्वाभ्यन्तरचारीसुक्तम्” ।

२ उ भूले णवपत्ते सव्ववाहिरिल्ल चार चरइ ।^१

३ उ साई णवखत्ते सव्ववरिल्ल चार चरइ ।^२

४ उ भरणी णवखत्ते सव्वहेट्ठिल्ल चार चरइ ।

चद-सूर-गह-णवखत्तविमाणेण सठाणाइ

१४ प ता चदविमाणे ण किसिणिए पणत्ते ?

उ ता अद्धकविट्ठग सठाणसठिए^३ सव्वफालियामए अद्भुगयमूसियपहसिए विविह-मणि रयण-मत्तिचित्ते, वाउद्धुय विजय वेजयतीपडागा एत्ताइच्छत्तकलिए, तु गे गगणतलमणुसिहत्त-सिहरे, जालतररयण-पजजम्मोत्तियव्व मणिकणमधूमियगगे, वियसिय सयवत्त-पु डरीय-तिलयरयणद्धचदचित्ते, अतो वाहं च सण्ठे, तयणिज्जवालुगापत्यडे सुहफासे सत्सिरीयरुवे पासार्इए वरिसणिज्जे अम्मिरुवे पडिरुवे ।

एव सूरविमाणे, गहविमाणे, नवखत्तविमाणे ताराविमाणे ।^४

१ 'सववाह्य सवतो नक्षत्रमण्डलिकाया बहिरचार चरति' ।

"यद्यपि पञ्चदशमण्डलादबदिरचारीणि भृगुशिर प्रमृतीनि यड नक्षत्राणि पूर्वापादोत्तरापादयोश्चतुणा वारकाणा मध्ये द्वे द्वे च तारे उक्तानि, तथाप्येतदपरबहिरचारिनक्षत्रापेक्षया लवणदिशि स्थित सञ्चार चरतीति सववहिरचारीत्युक्तम्" ।

२ क "दशोत्तरशतयोजनरूपे ज्योतिषचक्रबाह्ये यो नक्षत्राणा क्षेत्रविभागश्चतुर्गोत्रप्रमाणस्तदपक्षयोक्तनक्षत्रयो क्रमेणाघस्तनोपरितनभागो ज्ञेयो । इस टिप्पण म उदघत उद्धरण जम्बू वक्ख ७, सू १६५ टीका ने हैं ।

ख जम्बूद्वीपप्रान्ति के सूत्र १६५ व समान यह सूत्रप्रान्ति का सूत्र भी है ।

३ गार्हाभो—

अद्धकविट्ठगारा उदयत्यमणमि कह न दीसति,

सत्ति-सूराण विमाणा, तिरियक्खेत्तट्टियाण च ?

उत्ताणद्धकविट्ठगार, पीड तदुवरि च पासामो ।

वट्टालेखेण तमो, समवटट डूरभावाभो ॥

जिनभद्रगणिकामाश्रमणेन विशेषणावत्पामाक्षेपपुरस्सरमुक्तम् ॥

"यदि चन्द्रविमानमुत्तानीकुनाद्धमानकपित्यफलसस्थानसस्थित तत उदयवाले अस्तमयवाले वा,

यदि वा तिरक परिभ्रमत शोर्णमास्मां वस्मात्तदधकपित्यफलाकार नोपलभ्यते ?

काम शिरस उपरि वतमान वतु लमुपलभ्यते अथकपित्यस्य उपरि दूरमवस्थापितस्य परभागादजनतो वतु लतया दश्यमानत्वात् उच्यते ।

इहद्विकपित्यफलाकार चन्द्रविमान न सामस्थाने प्रतिपत्तव्य, किन्तु तस्य चन्द्रविमानस्य पीठ, तस्य च पीठस्थोपरि चन्द्रवस्य ज्योतिषचक्रराजस्य प्रासाद स च प्रासादस्तथा कथचनापि व्यवस्थितो यथा पीठेन सह भूयान् वतु लाकारो भवति, स च दूरभावादेकातत समवत्ततया जनाना प्रतिभासते, ततो न वरिचट्टोप ॥

—सूय टीका,

४ वतु वक्ख ७ सु १२५

चद-सूर-गह-णखत्त-ताराविमाणेण आयाम-विखलम-परिखलेव-वाहल्लेण

प क ता चदविमाणे ण -

केचइय आयाम-विखलमेण ?

ख केचइय परिखलेवेण ?

ग केचइय वाहल्लेण पणत्ते ?

उ क ता छप्पण एगट्टिभागे जोयणस्त आयाम विखलमेण ।

ख त त्तियुण सवित्सेस परिखलेवेण ।

ग अट्टावीस एगट्टिभागे जोयणस्त वाहल्लेण पणत्ते ।'

प क ता सूरविमाणे ण केचइय आयाम विखलमेण ?

ख केचइय परिखलेवेण ?

ग केचइय वाहल्लेण पणत्ते ?

उ क ता अट्टावीस एगट्टिभागे जोयणस्त आयाम विखलमेण ?

ख त त्तियुण सवित्सेस परिखलेवेण ।

ग अट्टावीस एगट्टिभागे जोयणस्त वाहल्लेण पणत्ते ।

प क ता गहविमाणे ण केचइय आयाम-विखलमेण ?

ख केचइय परिखलेवेण ?

ग केचइय वाहल्लेण पणत्ते ?

उ क ता अट्टजोयण आयाम-विखलमेण ।

ख त त्तियुण सवित्सेस परिखलेवेण ।

ग एते वाहल्लेण पणत्ते ।

१ प क चदमहत्त ण भत्त ।

केचइय आयाम-विखलमेण ?

ख केचइय परिखलेवेण ?

ग केचइय वाहल्लेण पणत्ते ?

उ क गोयता ! छप्पण एगट्टिभागे जोयणस्त आयाम विखलमेण,

ख त त्तियुण सवित्सेस परिखलेवेण,

ग अट्टावीस एगट्टिभागे जोयणस्त वाहल्लेण, पणत्ते । —जमु वपय ७, गु १४५

उत्तरेण च एगट्टिभागे विभागे समे पणत्ते । —सम ६१, गु ३

इत सूत्र से यह स्पष्ट है कि उद्विमान क्षीर चन्द्रमण्डल एक ही है ।

- प क ता णक्खत्तविमाणे ण केवइय आयाम विक्खभेण ?
 ख केवइय परिवसेवेण ?
 ग केवइय बाहल्लेण ?
- उ क ता कोस आयाम विक्खभेण ।
 ख त तिमुण सविसेस परिवसेवेण ।
 ग अद्धकोस बाहल्लेण पणत्ते ।
- प क ता ताराविमाणे ण केवइय आयामविक्खभेण ?
 ख केवइय परिवसेवेण ?
 ग केवइय बाहल्लेण ?
- उ क ता अद्धकोस आयामविक्खभेण ।
 ख त तिमुण सविसेस परिवसेवेण ।
 ग पच्चधणुसयाइ बाहल्लेण पणत्ते ।'

चद-सूर-गह-णक्खत्त-ताराण विमाणपरिवहण

- प ता चदविमाणे ण कइ देवसाहस्सीओ परिवहति ?
 उ सोलस देवसाहस्सीओ परिवहन्ति, तजहा—
 पुररियेणे सीहूख्वधारीण चत्तारि देवसाहस्सीओ परिवहति,

- १ क प चदविमाणे ण भत्त । केवइय आयाम विक्खभेण ? केवइय बाहल्लेण ?
 उ गाहाभा—

छप्पण णलु भाए विच्छिण चदमडल होइ ।
 अट्ठावीस भाए बाहल्ल तस्स बाद्धव्व ॥ १ ॥
 अट्ठयालीस भाए, विच्छिण सूरमडल होइ ।
 चउवीस णलु भाए बाहल्ल तस्स मोद्धव्व ॥ २ ॥
 दा कोसं अ गहाण णक्खत्ताण तुहवइ तस्सड ।
 तस्सड ताराण, तस्सड चेव बाहल्ले ॥ ३ ॥

—जलु वक्क ७, सु १६५

'एकस्म प्रमाणानु लयाजनस्वक्क पट्टिमागाकृतस्य पटपचाशता भागं समुदितयत्प्रमाण भवति, तावत्प्र-
 माणोऽस्य विस्तार "'

'वत्तवस्तुन म्मायाम विष्कम्भात्"'

परिसेपस्तु स्वयमम्मूह्य वृत्तस्य सविगेपस्त्रिपुण परिधिरिति प्रसिद्धे ।

यह स्पष्टीकरण जवूद्धीपप्रज्ञप्ति के वक्तिकार ने ऊपर लिखित सूत्र का दिया है ।

- ख यद्यपि जीवा प ३ उ २, सू १९७ प्रश्नोत्तरात्मक सूत्र हैं किंतु उसमें 'भते' शीर "गोयमा' का प्रयोग अधिक है ।

दाहिणेण गयरुवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीभ्रो परिवहति,
पच्चमिमेण वसभरुवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीभ्रो परिवहति,
उत्तरेण तुरगरुवधारीण चत्तारि देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ।
एव सूरविमाण पि,

प ता गहविमाणे ण कइ देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ?

उ ता भद्र देवसाहस्सीभ्रो परिवहति, तजहा—
पुरत्थिमेण सिंहरुवधारीण देवाण दो देवसाहस्सीभ्रो परिवहति,
एव जाव—

उत्तरेण तुरगरुवधारीण देवाण दो देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ।

प ता णखत्तथिमाणे ण कइ देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ?

उ ता चत्तारि देवसाहस्सीभ्रो परिवहति, तजहा—
पुरत्थिमेण सीहरुवधारीण देवाण एवका देवसाहस्सी परिवहइ,
एव जाव—

उत्तरेण तुरगरुवधारीण देवाण एवका देवसाहस्सी परिवहइ ।

प ता ताराविमाणे ण कइ देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ?

उ ता दो देवसाहस्सीभ्रो परिवहति, तजहा—
पुरत्थिमेण सीहरुवधारीण देवाण पच्चदेवसया परिवहति,
एव जाव—

उत्तरेण तुरगरुवधारीण देवाण पच्चदेवसया परिवहति ।*

१ प षडविमाणे ण भंति ! इति देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ?

गोपमा । सोलघ देवसाहस्सीभ्रो परिवहति ।

उ षडविमाणेण ण पुरत्थिमेण,

सेमाण, सुभमाण, सुपमाण, संघतल-विमल-निम्मल-दधिपण-गोधीरुणे रमणणिगरुवधाराण, विर-भद्र

पट्ट वट्ट-पीवर सुधिसिट्ट-विधिसिट्ट-तिपघडाडा-विधविम-मुहाण,

रसुणलपत्त-मउय सुमासतासु-जीहाण,

मट्ट-मुसिध-पिगलवघाण,

पीवरवरोध-पडिपुण-विउल-खघाण,

मिउ-विसय-मुहुम-सकपण-पत्तय वरवण-नेसरसटोवसोहिमाण,

ऊसिध-सूनमिध-मुजाय-सप्पोविध-एसूसाण,

वइरामय-णवसाण, वइरामय-दाडाण, वइरामय दठाण,

तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्ज-त्तालुभाण, तवणिज्ज-जुल-जोत्तगमुजोद्भाण कामगमाण, पीइगमाण, मणोग-
 माण, मनोरमाण, भ्रमिजिभ्रगईण,
 भ्रमिभ्र-बल-वीरिभ्र-पुरिसक्कार-परक्कमाण,
 महया भ्रम्फोडिभ्र-सीहणाय-बोल-कलकल-रवेण महुरेण मणहुरेण पूरेंता अबर, दिशामो य सोमयता,
 चत्तारि देवसाहस्सीभ्रो सीहरूवघारीण पुरिरियिगिल्ल वाह वड्ढति
 चदविमाणस्स ण दाहिणेण,
 सेमाण, सुमगाण, सुप्पमाण, सख्तल विमल-णिम्मल-दधिघण-गोखीरफेण रयय-णिगरप्यगासगाण,
 चइरामय-कु भयुगल-सुट्ठिभ्र-पीवर-वरवइरसोंड-चट्टिभ्र-दित्त-सुरत्त, पउमप्यगासाण, भ्रमुण्णय-मुहाण,
 तवणिज्ज-विसाल-कण्णच चल-चलत्त-विमलुज्जलाण,
 महवण्ण-भिसत्त णिद्ध-पत्तल-णिम्मल-तिवण्ण-मणि-रयण-लोयणाण,
 भ्रमुण्णय मज्जल-मल्लिभ्राधवलसरिससठिय णिवण्णदढ-वसिण-फालिभ्राभय मुजाय-दत्तमुसलोवसोभिभाण,
 क चणकोसी-पविट्ट-दत्तग-विमल-मणि-रयण-रुइल-वेरत्त-चित्तरूवग-विराइभाण,
 तवणिज्ज-विसाल-तिलगप्पमुह-परिमण्डियाण,
 पाणामणि-रयण-मुद्ध-नेविज्ज-बद्ध-गलयवरभूसणाण,
 वेहलिय-विचित्त-दण्ड-निम्मल-वइरामय-तिक्खलट्ट-अकुस कु भज्जयलयतरोडिभाण,
 तवणिज्ज-भुवद्ध-कच्छ-दप्पिभ्र-वलुद्धराण,
 विमल-घण-मडल-वइरामय-त्तालालियतालण,
 पाणामणि-रयण-भट-पासग-रजत्तमय-बद्ध-रज्जु-लविभ्र-घटाजुयल-महुरसरमणहराण,
 मल्लीण पमाणजुत्त-वट्टिभ्र-मुजाय-लवखण-पसत्त्य-रमणिज्ज-वालगतपरिपु छ्थाण,
 उवचिभ्र-पडिपुण्ण-कुम्म-चलण-सहुविककमाण,
 अकामयणक्खाण, तवणिज्ज-जीहाण, तवणिज्जतापुभाण, तवणिज्ज-जोत्तग-मुजोद्भाण
 कामगमाण, पीइगाण, मणोगमाण, मनोरमाण, भ्रमियगईण, भ्रमिय-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमाण,
 महया-गभीर-गुलमुलाइतरवेण महुरेण मणहुरेण, पूरेंता अबर, दिशामो य सोमयता,
 चत्तारि देवसाहस्सीभ्रो गयरूवघारीण देवाण दक्खिगिल्ल वाह परिवहति,
 चदविमाणस्स ण पच्चरियेण,
 सेमाण, सुमगाण सुप्पमाण, चल-चवल-ककुह-सालीण, घण-त्रिचिभ्र-भुवद्ध-लक्खण्णयईसिभ्राणय-वसमोद्धा-
 ण चकमिभ्र-लनिभ्र-पुलिभ्र-चलचवल-गविभ्र-गईण, सन्नतपासाण सगतपासाण मुजायपासाण,
 पीवरवट्टिभ्र-सुत्तडिभ्र-कड्डीण,
 भ्रोलब-वलव-लक्खण-पमाणजुत्त-रमणिज्ज-वालगडाण
 समधुरवालिघाणाण,
 समलिहिभ्र-सिग तिक्खग्ग-सगयाण,
 तणु-सुद्धम-मुजाय-णिद्ध-लोमक्खवीण,
 उवचिभ्र-मसल-त्रिसाल-पडिपुण्ण-ब्रध-पएस-मु दर्राण, वेहलिभ्र-भिसत्त-बडवध-मुत्तिरिक्खणाण,

जुत्तप्पमाण-बह्वाणलवण-वसत्थ-रमणिज्ज-गग्गर-मल्ल-सोभिमाण,
 घरघरण-मुग्घ-वद्ध-रुद्ध-परिमडियाण,
 णाणामणि-कणम-रणघटिष्ठा-वेगच्छिम-मुक्यमातिष्ठाण,
 वरघटा-मन्व-मालुज्जल-सिरिधराण,
 पउमुपन-सगल-गुरभि-माता विभूसाण,
 बहुरुराण विविह्वरुराण,
 फालिष्ठाण-ताण, मवणिज्ज-जोहाण, तवणिज्जतात्तुष्ठाण,
 तवणिज्ज-जोत्तग-गुजादयाण,
 वामगमाण धीइगमाण मणोयमाण मणोरमाण
 धमिधगईण धमिध-वतवीरिध-पुरिमववारपरवमाण महया गज्जिध-गभीर-रवेण, मडुरण, मणुरण,
 पूरैता अबर-सिंसाधो य मोधता,
 उत्तारि देवसाहसोमावस हूरुघारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहत्ति,
 चदविमाणस्स ण उत्तरेण—

सगगाण मुभगाण, सुप्पमाण, तरमल्लिधच्छाण चचुच्चिध-सेष्ठाण,
 तलिध-पुनिध-चलचवल-च-चलगईण, ललतलाम-मलताय-वरभूसाण,
 सधयवामाण सगयवामाण, गुजाववामाण,
 पीउर-वट्ठिध-मुसठिध-वडीण,
 धोलव, पलव-लवघण-वमाण-पुत्त-रमणिज्ज-वालपुच्छाण,
 तणुमुत्तम गुजाव-णिट्ठ-वोमच्छविहराण,
 मिउविमय-मुत्तम-लवण-वसत्थ-वित्थिण-कगरवालिहराण
 ललत वामग-सत्ताठ-वरभूसाण,
 मुहमण्डग-माचल्लग-वामर-यासग-परिमण्डिध-वडीण
 तवणिज्ज-पुराण, तवणिज्ज-जोहाण, तवणिज्ज-तालुष्ठाण, तवणिज्ज-जोत्तग-गुजादयाण,
 वामगमाण धीइगमाण, मणोयमाण, मणोरमाण,
 धमिधगईण धमिध-वतवीरिध-पुरिमववारपरवमाण,
 महया गज्जिध-महुरणरवेण, गभीर-मणहुरेण पूरैता अबर, दिगाधा य सोमयता,
 चत्तारि देवसाहसोमावस हूरुघारीण देवाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहत्ति,
 चदविमाणस्स ण उत्तरेण —

वेष्ठाण मुभगाण, सुप्पमाण तरमल्लिधच्छाण चचुच्चिध-सेष्ठाण, तलिध पुनिध-चलचवल-च-चलगईण,
 ललतलाम-मलताय-वरभूसाण

जोड़सियाण सिग्घ-मदगइपरूवण

१५ प सा एएसि ण चदिम सूरिय-गह-णक्खत्त-तारा-रूवाण कयरे कयरेहंतो सिग्घगई वा,
मदगई वा ?

उ ता चदेहंतो सूरा सिग्घगई,
सूरेहंतो गहा सिग्घगई,
गहेहंतो णक्खत्ता सिग्घगई,
णक्खत्तेहंतो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चदा, सव्वसिग्घगई तारा ।^१

जोड़सियाण अप्प-महिडिडपरूवण

प ता एएसि ण चदिम-सूरिय गह णक्खत्त-तारा-रूवाण कयरे कयरेहंतो अप्पड्विया वा
महिड्विया वा ?

उ ता ताराहंतो महिडिडया णक्खत्ता,
णक्खत्तेहंतो महिडिडया गहा ।
गहेहंतो महिडिडया सूरा,
सूरेहंतो महिडिडया चदा,
सव्वप्पडिडया तारा, सव्वमहिडिडया चदा ।^२

ताराण अवाहा अतरपरूवण

१६ प ता जवुद्धीवे ण दीवे तारा-रूवस्स तारा-रूवस्स य एस ण केवइए अवाहाए अतरे पणत्त ?

उ दुविहे अतरे पणत्ते, तजहा—
१ वाघाइमे य, २ निव्वाघाइमे य ।

प तत्य ण जे से वाघाइमे, से ण जहण्णेण दीणि छावटठे जोयणसए ।
उक्कोसेण, बारस जोयणसहस्साइ दीणि बायले जोयणसए तारा-रूवस्स य तारा-
रूवस्स य अवाहाए अतरे पणत्ते ।

ख तत्य ण जे से निव्वाघाइमे से ण जहण्णेण पच घणुसयाइ,
उक्कोसेण अद्धजोयण तारा-रूवस्स य तारा-रूवस्स य अवाहाए अतरे पणत्ते ।^३

१ क सूत्र ८३ और इस सूत्र में साम्य है ।

ख जवू वक्ख ७ सु १६९

२ जवू वक्ख ७ सु १७०

३ जवु वक्ख ७, सु १७१

जुत्तप्यमाण-महाणलकवण-पसत्थ-रमणिज्ज-गगगर-गल्ल-सोमियाण,

परघरण-सुमद्-उद्ध-कड-परिमटियाण,

णाणामणि-कणम-रयणपटिघा-वगच्छिग-सुवयमालिघाण,

वरघटा-गलय-मालुज्जल-सिरिघराण,

पत्तमुप्पल-सगल-मुरभि-माला विभूतिघाण,

वइरउराण विविह्वल्लुराण, ।

पालिघामय-ताण, तवणिज्ज-जोहाण, तत्रणिज्जतालुघाण,

तत्रणिज्ज-जोत्तग सुजोइयाण,

वामगमाण पीइगमाण, मणोगमाण मणोरमाण

अमिघगईण अमिघ-इलवीरिअ-पुरिसउराररउरउमाण महया गज्जिअ-गभीर-रवण मट्टरण, मणोरण

पूरैता अबर िसाधो य सामता,

अत्तारि देवसाहस्सीधो वसहूवधारीण देयाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहति,

अदविमाणस्म ण उत्तरेण—

गणाण, सुभगाण, सुप्पमाण, तरमल्लिहायणाण तरमल्लिअच्छाण अचुच्चिअ सेघाण,

तनिअ-पुलिअ-अलअवल-अअलगईण, ललतलाम-गललाय-अरभूसणाण,

सअयपानाण सगयपासाण मुजायपासाण,

पीवर-वट्ठिअ-मुमठिअ-अडीण,

अोलअ पलव-अवअण-पमाण जुत्त-रमणिज्ज-वालपुच्छाण,

तणुमुद्धम मुजाय-णिद्ध-तोमच्छविहराण,

मिउअिमअ-मुहुम-अवअण-पसत्थ विविअण अमरवालिहराण

सलत-धाअग-सलाड-अरभूगणाण,

मुहमण्डग-अोचूलग-आअर-आअग-परिमण्डिअ-अडीण,

तवणिज्ज-अुराण तवणिज्ज-जोहाण, तवणिज्ज-तालुघाण, तत्रणिज्ज-जोत्तग-मुजोइयाण,

कामगमाण पीइगमाण मणागमाण, मणोरमाण,

अमिघगइण, अमिघ-अलवीरिअ-पुरिसउराररउरउमाण

महया गज्जिअ मट्टरेणरवेण, गभीर-मणहरण पूरैता अबर, दिताधो म सामयता

अत्तारि देवसाहस्सीधोअध हूवधारीण देयाण पच्चत्थिमिल्ल वाह परिवहति

अदविमाणस्म ण उत्तरेण—

सेघाण सुभगाण, सुप्पमाण तरमल्लिअच्छाण अचुच्चिअ-सेयाण, तनिअ पुलिअ-अलअवल अअलगईण,

सलतलाम अललाय-अरभूसणाण,

जोइसियाण सिग्घ-मदगइपरूवण

१५ प ता एएसि ण चदिम सूरिय-गह णखत्त-तारा-रूवाण कयरे कयरेहितो सिग्घगई वा,
मदगई वा ?

उ ता चदेहितो सूरा सिग्घगई,
सूरेहितो गहा सिग्घगई,
गहेहितो णखत्ता सिग्घगई,
णखत्तेहितो तारा सिग्घगई,
सव्वप्पगई चदा, सव्वसिग्घगई तारा ।^१

जोइसियाण अप्प-महिड्डिपपरूवण

प ता एएसि ण चदिम-सूरिय-गह-णखत्त-तारा-रूवाण कयरे कयरेहितो अप्पड्डिया वा
महिड्डिया वा ?

उ ता ताराहितो महिड्डिया णखत्ता,
णखत्तेहितो महिड्डिया गहा ।
गहेहितो महिड्डिया सूरा,
सूरेहितो महिड्डिया चदा,
सव्वप्पड्डिया तारा, सव्वमहिड्डिया चदा ।^२

ताराण अवाहा अत्तरपरूवण

१६ प ता जवुदीवे ण दीवे तारारूवस्स तारारूवस्स य एस ण केवइए अवाहाए अतरे पणत्त ?

उ दुविहे अतरे पणत्ते, तजहा—

१ वाघाइमे य, २ निव्वाघाइमे य ।

फ तत्य ण जे से वाघाइमे, ते ण जहण्णेण दोण्णि छावट्ठे जोयणसए ।

उक्कोसेण, वारस जोयणसहस्साइ दोण्णि वायाले जोयणसए तारारूवस्स य तारा-
रूवस्स य अवाहाए अतरे पणत्ते ।

ख तत्य ण जे से निव्वाघाइमे से ण जहण्णेण पच्च घणुसयाइ,

उक्कोसेण अद्धजोयण तारारूवस्स य तारारूवस्स य अवाहाए अतरे पणत्ते ।^३

१ न मूत्र ८३ और इस मूत्र मे साम्य है ।

ख जवु वक्ख ७, सु १६९

२ जवु वक्ख ७ सु १७०

३ जवु वक्ख ७, सु १७१

चवस्स अग्गमहिंसीओ देवीपरिवारविउच्चणा य

१७ प ता चवस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तजहा --

१ चवप्पमा, २ दोसिणामा, ३ अन्विचमाली, ४ पभकरा ।

तत्थ ण एग्गेगाए देवीए चत्तारि देवीसाहस्सापरिवारो पण्णत्तो ।

प पम्प ण ताओ एग्गेगा देवी अण्णाइ चत्तारि चत्तारि देवीसाहस्साइ परिवार विउच्चित्तए ?

उ पम्प ण ताओ एग्गेगा देवी देवीसाहस्सीपरिवार विउच्चित्तए ।

एवामेव सपुब्बावरेण सोलसदेवीसाहस्सा पण्णत्ता, से त्त तुडिए ।

प ता पम्प ण चदे जोइसिदे जोइसरया चदवाडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सत्तिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

उ णो इणट्ठे सम्भट्ठे ।

प ता कह ते णो पम्प जोइसिदे जोइसरया चदवाडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सत्तिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

उ क ता चवस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो चदवाडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए माणव एमु चेइयखभेमु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसवहाओ सणिक्खिताओ चिट्ठति ।

ताओ ण चवस्स जोइसिदस्स जोइसरण्णो अण्णेति च य्हण जोइसिपाण देवाण य, देवीण य अन्वचणिज्जाओ वदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सवकारणिज्जाओ सम्माण णिज्जाओ, कल्लाण भगत देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ ।

एव खलु णो पम्प चदे जोइसिदे जोइसरया चदवाडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए तुडिएण सत्तिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ।

ख पम्प ण चदे जोइसिदे जोइसरया चदवाडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए चवसि सोहा सणसि चर्वाहि सामाणियसाहस्सोहि, चर्वाहि, अग्गमहिंसीहि सपरिवाराहि, तिहि परिसाहि, सत्ताहि अणियाहि, सत्ताहि अणियाहि, सोलसहि धायरक्ख देव साहस्सोहि, अण्णेहि य ब्रह्महि जोइसिएहि देवीहि देवीहि य सत्तिं, सपरिवडे, महायाह्व णट्ट-गीय-वाइय-ततो-तल-ताल-तुडिय घण-मुद्दग

भोगाइ भु जमाणे विहरित्तए केवल परिवारणिडटोए ।
णो चेव ण मेहुणवत्तियाए ।

सूरस्स अग्गमहिंसीओ देवीपरिवारविउडवणा य

- प ता सूरस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?
उ ता घत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तज्जा—
१ सूरप्पमा, २ आतवा, ३ अच्चिमात्ती, ४ पभकरा ।
सेस जहा चदस्स,
णवर सूरवड्डेसए विमाणे जाव नो चेव ण मेहुणवत्तियाए ।

जोइसियाण देवाण ठिई

- १८ प ता जोइसियाण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम,
उक्कोसेण पलिओवम, वाससयसहस्समव्वहिय ।
प ता जोइसिणीण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ ता जहन्नेण अट्ठभागपलिओवम,
उक्कोसेण अट्ठपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहिं अव्वहिय ।
प ता चदविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ ता जहन्नेण चउडभागपलिओवम,
उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समव्वहिय ।
प ता चदविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ ता जहन्नेण चउडभागपलिओवम,
उक्कोसेण अट्ठपलिओवम पण्णासाए वाससहस्सेहिं अव्वहिय ।
प ता सूरविमाणे ण देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ ता जहन्नेण चउडभागपलिओवम,
उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समव्वहिय ।
प ता सूरविमाणे ण देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
उ ता जहन्नेण चउडभागपलिओवम,
उक्कोसेण अट्ठ पलिओवम पच्चाहिं वाससएहिं अव्वहिय ।

- प ता गृहविमाणे ण देवाण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ।
 उ ता जहन्नेण चउब्भागपत्तिओवम,
 उक्कोसेण पत्तिओवम ।
- प ता गृहविमाणे ण देवीण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?
 उ ता जहन्नेण चउब्भागपत्तिओवम,
 उक्कोसेण अद्दपत्तिओवम ।
- प ता णवत्तविमाणे ण देवाण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?
 उ ता जहन्नेण चउब्भागपत्तिओवम,
 उक्कोसेण अद्दपत्तिओवम ।
- प ता णवत्तविमाणे ण देवीण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?
 उ ता जहन्नेण अद्दभागपत्तिओवम,
 उक्कोसेण चउब्भागपत्तिओवम ।
- प ता ताराविमाणे ण देवाण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?
 उ ता जह्ण्णेण अद्दभागपत्तिओवम,
 उक्कोसेण चउब्भागपत्तिओवम ।
- प ता ताराविमाणे ण देवीण केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?
 उ ता जहन्नेण अद्दभागपत्तिओवम,
 उक्कोसेण साइरेगअद्दभागपत्तिओवम ।^१

जोइसिमाण अप्पचहुत्त

- १९ प ता एएसि ण चदिम-भूरिय गृह णवत्त-ताराण कयरे कपरेहितो अप्पा या, अहुया या,
 तुत्ता या विसैसाहिया या ?
- उ ता चदा य, मूरा य, एएण वोवि तुत्ता,
 सव्यहयोया णवत्ता,
 सविज्जगुणा गहा,
 सविज्जगुणा तारा ।^२

१ जंबु पक्य ७, सु १७३

२ जंबु पक्य ७, सु १७५



उज्जीरावाँ प्राभृत

चव-सूर-गह-णखत्त-ताराण परिमाण

१०० प ता फइ ण चदिम-सूरिया सव्वल्लोय ओभासति, उज्जोएति, तव्वेति, पभासेति ? आहिए
त्ति वएज्जा ।

उ तत्थे खलु इमाओ दुवालस पडिवत्तीओ पणत्ताओ तजहा—
तत्थेगे एवमाहसु—

१ ता एगे चदे एगे सूरे सव्वल्लोय ओभासइ, उज्जोएइ, तवेइ, पभासइ, एगे एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

२ ता तिण्णि चदा, तिण्णि सूरा सव्वल्लोय ओभासेति उज्जोएति, तव्वेति, पभासेति, एगे
एवमाहसु ।
एगे पुण एवमाहसु—

३ ता अट्ठट्ठ चदा अट्ठट्ठ सूरा सव्वल्लोय ओभासेति जाव पभासेति, एगे एवमाहसु ।
एएण अभिलावेण णेयव्व,

४ सत्त चदा, सत्त सूरा,

५ दस चदा, दस सूरा,

६ वारस चदा, वारस सूरा,

७ बायालीस चदा, बायालीस सूरा,

८ बावत्तरीं चदा, बावत्तरीं सूरा,

९ बायालीस चदसय बायालीस सूरसय,

१० बावत्तर चदसय बावत्तर सूरसय,

११ बायालीस चदसहस्स बायालीस सूरसहस्स,

१२ बावत्तर चदसहस्स, बावत्तर सूरसहस्स, सव्वल्लोय ओभासति उज्जोएति तव्वेति, पभासेति
एगे एवमाहसु,

वय पुण एव वयामो —

जम्बूद्वीवी-जम्बूद्वीवे जोइसियपरिभाषण

ता अमण्ण जम्बूद्वीवे दीवे सध्ववीयसमुद्धान् सध्वम्भतराए सध्वखुद्वाए जाय एग जोयणसयसहस्स
आयाम विषयभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ, सोलस सहस्साइ, दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए,
तिण्णि य कोसे, अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ, अट्ठगुल च किचि विसैसाहिय परिबलेवेण पण्णत्ते ।

१ प ता जम्बूद्वीवे दीवे —

केयइया चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केयइया सूरा तविंसु वा, तवेति वा, तविस्सति वा ?

३ प केयइया गहा चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?

४ प केयइया णवखत्ता जोअ जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?

५ प केयइया तारागणकोडि-कोडीमो सोभ सोभंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ ता जम्बूद्वीवे दीवे—

वो चदा पभासंसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ।

२ उ वो सूरिया तविंसु वा, तवेति वा, तविस्सति वा ।

३ उ छावत्तरि गहसय चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ छप्पण्ण णवखत्ता जोय जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ।

५ उ एग सयसहस्स तेत्तीस च सहस्सा णव सया पण्णासा तारागणकोडिकोडीणं सोभं
सोभंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ।

गहामो—

वो चदा वो सूरा, णवखत्ता खलु ह्वति, छप्पणा ।

छायत्तर गहसय, जम्बूद्वीवे विचारोण ॥

एग च सयसहस्स तेत्तीस खलु भवे सहस्साइ ।

णव य सया पण्णासा, तारागणकोडिकोडीण ॥

सवणसमुद्दी

ता जम्बूद्वीय दीय सवणे नाम समुद्दे वट्ठे यलयावारसठाणसठिए सध्वमो समता सपरिचिखता
णं चिट्ठइ ।

प ता सवणे ण समुद्दे विं समचक्कयालसठिए विसमचक्कयालसठिए ?

उ ता सवणसमुद्दे समचक्कयालसठिए, नो विसमचक्कयालसठिए ।

प ता लवणसमुद्दे केवइय चक्कवालविक्खभेण, वेवइय परिव्लेवेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता दो जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण, पण्णरस जोयणसयसहस्साइ एक्कासीय च सहस्साइ सय च एगुणवालीस किंचि विसेसुण परिव्लेवेण । गाहा—

पण्णरस सयसहस्सा, एक्कासीय सय च ऊताल ।

किंचि विसेसेणुणो, लवणोदहिणो परिव्लेवो ॥

१ प ता लवणसमुद्दे—

केवइया च्चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्तति वा ?

२ प केवइया सूरा त्विसु वा, त्विति वा, त्विस्तति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिसु वा, चरति वा चरिस्तति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्तति वा ?

५ प केवइया तारागण कोडाकोडीओ सोभ सोभेसु वा सोभति वा सोभिस्तति वा ?

१ उ ता लवणसमुद्दे चत्तारि च्चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्तति वा ।

२ उ चत्तारि सूरिया त्विसु वा, त्विति वा, त्विस्तति वा ।

३ उ तिण्णि वावण्णा महग्गहसया चार चरिसु वा चरति वा, चरिस्तति वा ।

४ उ बारस णक्खत्तसय जोग जोएसु वा जोएति वा, जोइस्तति वा ।

५ उ दो सयसहस्सा सत्तट्ठि च सहस्सा णव य सया तारागणकोडाकोडीण सोभ सोभेसु वा सोभति वा, सोभिस्तति वा ।

गाहाओ—

चत्तारि च्चव च्चदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ।

बारस णक्खत्तसय, गहाण तिण्णेव वावण्णा ॥

दोच्चेव सयसहस्सा, सत्तट्ठि खलु भवे सहस्साइ ।

णव य सया लवणजले, तारागणकोडिकोडीण ॥

घायईसडदीवे

ता लवणसमुद्दे घायईसडे णाम दीवे वटटे वलयागारसठाणसठिए सव्वओ समता सपरिविक्खत्ता ण चिट्ठुइ ।

प ता घायईसडे णाम दीवे किं समचक्कवालसठिए विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता घायईसडे णाम दीवे समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए ।

प धायईसडे ण दीवे केवइय चक्कयालविषखभेण केवइय परिवसेवेण ?
आहिए त्ति यएज्जा ।

उ ता घत्तारि जोयणसयसहस्साइ चक्कयालविषखभेण, ईयालीस जोयणसयसहस्साइ दस
य सहस्साइ णय य एगट्ठे जोयणसए किच्चि वित्तेसूण परिवसेवेण, आहिए त्ति यएज्जा
गाहा—

धायइसड परिरोओ, ईयाल दसूत्तरा समसहस्सा ।
णय य सया एगट्ठा, किच्चि वित्तेसेण परिहीणा ॥

१ प धायईसडे दीवे—

केवइया च्चदा पमासंसु वा, पमासति वा, पमासिस्सति वा ?

२ प केवइया सूरिया तवेंसु वा, तविति वा, तविसिस्सति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?

५ प केवइया तारागणकोडाकोडीओ, सोभ सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ वारस च्चदा पमासंसु वा, पमासति वा, पमासिस्सति वा ।

२ उ वारस सूरिया तवेंसु वा, तविति वा, तविसिस्सति वा ।

३ उ एग छप्पण महग्गहसहस्स चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ तिणिण छत्तीसा णक्खत्तसया जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ।

५ उ गाहाओ—

अट्ठेव समसहस्सा, तिणिण सहस्साइ सत्त य सयाइ ।

एगत्तसीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥

च्चवीस शसि रविणो, णक्खत्तसया य तिणिण छत्तीसा ।

एग च गहसहस्स, छप्पण धायईसडे ॥

अट्ठेव समसहस्सा, तिणिण सहस्साइ सत्त य सयाइ ।

धायइसडे दीवे, तारागण कोटिपोडीण ॥

कालोए समुद्दे

ता धायईसड ण दीवे कालोए णाम समुद्दे वट्ठे यत्तयावारसटाणसट्ठिए सव्वओ समत्ता
सपरिविपत्तार्ण चिट्ठइ ।

प ता कालोए ण समुद्दे किं समचक्कवालसठिए, विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता कालोए ण समुद्दे समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता कालोए ण समुद्दे केवइय चक्कवालविकखभेण, केवइय परिवखेवेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता कालोए ण समुद्दे अट्ट जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविकखभेण पणत्ते ।

एक्काणउइ जोयणसयसहस्साइ सत्तारिं च सहस्साइ छच्च पच्चुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिवखेवेण, आहिए त्ति वएज्जा । गाहा—

एक्काणउई सयसहस्स, सत्तारिं सहस्साइ परिरओ तस्स ।

अहियाइ छच्च पच्चुत्तराइ, कालोदधि वरस्स ॥

१ प ता कालोये ण समुद्दे—

केवइया चदा पभासिसु वा, पभासिति वा, पभासिस्सति वा ?

२ प केवइया सूरा तविसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ?

३ प केवइया गहा चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?

४ प केवइया णक्खत्ता जोग जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?

५ प केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा सोभति वा, सोभिस्सति वा ?

१ उ ता कालोये ण समुद्दे बायालीस चदा पभासेंसु वा पभासिति वा, पभासिस्सति वा ।

२ उ बायालीस सूरा तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्सति वा ।

३ उ तिन्नि सहस्सा छच्च छन्नउया महग्गहसया चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।

४ उ एक्कारस छावत्तरा णक्खत्तसया जोग जोइसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ।

५ उ अट्टावीस सयसहस्साइ, वारस सहस्साइ नव य सयाइ पण्णासा तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभेंसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ।

गाहाओ—

बायालीस चदा, बायालीस च दिणकरादित्ता ।

कालोर्दाहिमि एए, चरति सबद्धलेसागा ॥

णक्खत्तसहस्स, एगमि छावत्तर च सतमण्णे ।

छच्चसया छण्णउया, महग्गह, तिण्णि य सहस्सा ॥

भ्रूढावीस सयसहस्त, बारस य सहस्ताइ ।
णवयसया पण्णासा, तारागण कोडिकोडोण ॥

पुषखरवरदीवे

ता कालोय ण समुद्द पुषखरवरे णाम दीवे वट्टे बलयाकारसठाणसठिए सव्यभो समता सपरिविषत्ता ण चिट्ठइ ।

प ता पुषखरे ण दीवे किं समचक्कवालसठिए विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता पुषखरवरे ण दीवे समचक्कवालसठिए नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता पुषखरवरे ण दीवे केयइय समचक्कवालविषखभेण ? केवइय परिवत्तेवेण ?

उ ता सोलस जोयणसयसहस्ताइ चक्कवालविषखभेण ।

एगा जोयणकोडी वाणउइ च सयसहस्ताइ अउणायन्न च सहस्ताइ अट्ट चउणउए जोयणसए परिवत्तेवेण, आहिए त्ति वएज्जा । गाहा—

कोडी वाणउई खलु, अउणाणउइ भये सहस्ताइ ।

अट्टसया चउणउया, परिरभो पोषखरवरस्स ॥

१ प ता पुषखरवरे ण दीवे—

केवइया चदा पमासेमु वा, पमांसति वा, पमासिस्सति या ?

२ प केवइया सूरा त्विसु वा, तवेति या, तविस्सति या ?

३ प केवइया गाहा चार चरिसु वा, चरति या, चरिस्सति या ?

४ प केवइया णखत्ता जोग जोइसु वा, जोएति या, जोइस्सति या ?

५ प केवइया तारागण कोडिकोडोणो सोभ सोभेमु वा, सोभति या सोभिस्सति या ?

१ उ ता घोयाल चदसय पमासेमु वा, पमांसति वा, पमासिस्सति या

२ उ घोयाल सूरियाण सय त्विसु वा, तवेति या, तविस्सति या ।

३ उ बारस सहस्ताइ छच्च वायत्तरा महग्गहसया चार चरिसु वा, चरति या, चरिस्सति या ।

४ उ चत्तारि सहस्ताइ बत्तीस च णवथत्ता जोग जोएमु वा, जोएति या, जोइस्सति या ।

५ उ छण्णउइसयसहस्ताइ घोयालीस सहसाइ चत्तारि य सयाइ तारागणकोडिकोडोण ताभ सोभेमु वा, सोभेति या, सोभिस्सति या ।

गाहाओ

चत्ताल चदसय, चत्ताल चैव सूरियाण सर्गं ।
 पोक्खरवरदीवम्मि य, चरति एए पमासता ॥
 चत्तारि सहस्साइ, वत्तीस चैव हुति णवत्ता ।
 छच्च सया वावत्तर, महग्गहा चारह सहस्सा ॥
 छण्णउइ सयसहस्सा, चोत्तालीस खलु भवे सहस्साइ ।
 चत्तारि य सया खलु, तारागण कोडि कोडी ण ॥

माणुसुत्तरे पठवए

ता पुक्खरवरस्स ण दीवस्स बहुमज्जवेसभाए माणुसुत्तरे णाम पठवए पण्णत्ते, वट्ठे वलयाकार-
 सठाणसठिए जे ण पुक्खरवर दीव दुहा विभयमाणे विभयमाणे चिट्ठइ, तजहा—

१ अग्गितरपुक्खरद्ध च, २ बाहिरपुक्खरद्ध च ।

अग्गितर-पुक्खरद्धे

प ता अग्गितर-पुक्खरद्धे ण कि समचक्कवालसठिए, विसमचक्कवालसठिए ?
 उ ता समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए ।
 प ता अग्गितर-पुक्खरद्धे ण केवइय चक्कवालविकखभेण केवइय परिकखेवेण ?
 आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता अट्ठ जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविकखभे ण,
 एक्का जोयणकोडी बायालीस च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दो अउणापण्णे जोयणसए
 परिकखेवेण, आहिए त्ति वएज्जा,

“अट्ठेव सयसहस्सा अग्गितरपुक्खरत्स विकखमो ।”

- १ प ता अग्गितरपुक्खरद्धे ण केवइया चदा पमासेसु वा, पमारिसिंति वा, पमासिस्सति वा ?
- २ प केवइया सूर्रा तवसेसु वा, तवेति वा, तविस्सति वा ?
- ३ प केवइया गहा चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ?
- ४ प केवइया णवत्ता जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ?
- ५ प केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभसेसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ?
- १ उ वावत्तरि चदा पमामेसु वा, पमारिसिंति वा, पमासिस्सति वा ।

१ ये गाथा के प्रारम्भ के दो पद हैं ।

- २ उ वावत्तरि सूरिया तवेंसु वा, तवेंति वा, तविस्तति वा ।
 ३ उ छ महग्गहसहस्सा तिप्पि सए य छत्तीसा चार चरेंसु वा, चरति वा, चरिस्तति वा ।
 ४ उ दोण्णि सोला णवत्तसहस्सा जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्तति वा ।
 ५ उ अडयालीस सयसहस्सा, बावीस च सहस्सा दोण्णि य सया तारागणकोटिकोडोण सोम सोभेंसु वा सोभति वा सोभिस्तति वा ।

गाहाओ -

वावत्तरि च चवा वावत्तरिमेव दिणकरादिता ।
 पुक्खरवरदीवड्ढे चरति एए पमासेता ॥

तिण्णि सया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाण तु ।
 णवत्ताण तु भवे, सोलाइ दुवे सहस्साइ ॥

अडयालसयसहस्सा, बावीस चतु भवे सहस्साइ ।
 दो य सय पुक्खरद्धे, तारागणकोटिकोडोण ॥

समयवत्ते

- प ता समयवत्ते ण केवइय आयाम-विक्खभेण केवइय परिवत्तेवेण ? आहिंए त्ति वएज्जा ।
 उ ता पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयाम विक्खभेण—
 एया जोयणकोडो, बायालीस च सयसहस्साइ दोण्णि य अडणापण्णे जोयणसए परिवत्तेवेण
 आहिंए त्ति वएज्जा,

गाहा--

पणयाल सय सहस्सा, समयवत्तस्त विक्खभो ।^१

पोडो बायालीस, सहस्स दुसया य अडणपण्णासा ।

समयवत्तस्त परिदओ, एमेव य पुक्खरद्धस्त ॥

- १ प ता समयवत्ते ण केवइया चवा पमासेंसु वा, पमासति वा, पमासिस्तति वा ?
 २ प केवइया मूरा तवेंसु वा, तवति वा, तवस्तति वा ?
 ३ प केवइया गहा चार चरिंसु वा, चरति वा, चरिस्तति वा ?
 ४ प केवइया णवत्ता जोग जोइसु वा, जोइति वा, जोइस्तति वा ?
 ५ प केवइया तारागणकोटिकोडोओ सोम सोभेंसु वा सोभति वा, सोभिस्तति वा ?

- १ उ ता वत्तीस चदसय पभासँसु वा, पभासति वा, पभासिस्सति वा ।
 २ उ ता वत्तीस सूरसय तवँसु वा, तवँति वा, तविस्सति वा ।
 ३ उ ता एक्कारस सहस्सा छच्च सोलस महग्गहसया चार चरिसु वा, चरति वा, चरिस्सति वा ।
 ४ उ ता तिण्णि सहस्सा छच्च छण्णउया णवखत्तसया जोग जोएसु वा, जोएति वा, जोइस्सति वा ।
 ५ उ ता अट्ठासीइ सयसहस्साइ चत्तालीस च सहस्सा सत्त य सया तारागणकोडिकोडीण सोभ सोभँसु वा, सोभति वा, सोभिस्सति वा ।

गाहाओ—

वत्तीस चदसय, वत्तीस चेव सूरियाण सय ।
 सयल माणुसलोय चरति एए पभासँता ॥

एक्कारस य सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाण तु ।
 छच्च सया छण्णउया णवखत्ता तिण्णि य सहस्सा ॥

अट्ठासीइ चत्ताइ, सय सहस्साइ मणुयलोगमि ।
 सत्त य सया अणूणा, तारागणकोडिकोडीण ॥

एसो तारापिडो, सब्वसमासेण मणुयलोगमि ।
 बहिया पुण ताराओ, जिणोहि भणिया असखेज्जा ॥

एवइय तारग्ग, ज भणिय माणुससि लोगमि ।
 चार कलबुया पुप्फसठिय जोइस चरइ ॥

रवि ससि गह णवखत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ।
 जँसि णामागोत्त, न पागया, पण्णवेहिंति ॥

जोइसियाण पिडगाइ—

छावट्ठि पिडगाइ, चदाइच्चाण मणुयलोगमि ।
 दो चदा दो सूर, य ह्वति एक्केकए पिडए ॥

छावट्ठि पिडगाइ, महागहाण मणुयलोगमि ।
 छावत्तर गहसय, होइ एक्केकए पिडए ॥

छावट्टि पिडगाइ णक्खत्ताण तु मणुयलोगमि ।
छप्पण णक्खत्ता हुति एक्केक्कए पिडए ॥
जोइसियाण पतीओ—

गाहाओ—

घत्तारि य पतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगमि ।
छावट्टि छावट्टि च, हवइ एक्केक्किया पती ॥
छायत्तर गहाण, पतिसय हयति मणुयलोगमि ।
छावट्टि छावट्टि च हवइ एक्केक्किया पती ॥
छप्पन्न पतीओ, णक्खत्ताण तु मणुयलोगमि ।
छावट्टि छावट्टि हवइ एक्केक्किया पती ॥
जोइसियाण मडला—

गाहाओ—

ते मेरुमणुवरता, पदाहिणावत्त मडला सव्वे ।
अणवट्टिय जोगेहि, चवा सूरा गहणणा य ॥
णक्खत्त-त्तारमाण, अयट्टिया, मडला मणुयव्वा ।
तेऽयि य पदाहिणायत्तमेय मेरु अणुवरति ॥
जोइसियाण मडलसक्कमण—

रयणिकर दिणकाराण, उट्ठ च अहेव सक्को नत्थि ।
मंडलसक्कमण पुण, सम्भतर-वाहिर तिरिए ॥
जोइसाण चार सुह उहस्स निमित्तकारण—

रयणिकर-दिणपराण, णक्खत्ताण महण्णहाण च ।
चारवित्तेण भये, सुह-सुक्कविट्ठी मणुस्ताण ॥
जोइसाण तावक्केत्त—

तेसि पविसताण तावक्केत्त तु यट्टए गियय ।
तेणेय कमेण पुणो, परिहायइ निचयमाणण ॥
तेसि कलमुयापुष्फसट्टिया हुति तावक्केत्तपहा ।
अतो य सट्टुटा बाहि वित्तयइ चव-सूराण ॥

चदस्स परिवुड्ढि-परिहाणी--

गाहाओ--

केणइ वड्ढइ चदो ? परिहाणी केण ह्ति चदस्स ?
 कालो वा जोण्हो वा ? केणऽणुभावेण चदस्स ?
 किण्ह राहुविमाण णिच्च चदेण होइ अविहरहिय ।
 चउरगुलमसपत्त, हिच्चा चदस्स त चरइ ॥
 बावट्ठि बावट्ठि, दिवमे दिवसे तु सुवकपवखस्स ।
 ज परिवुड्ढइ चदो, खवेइ त चेव काले ण ॥
 पण्णरसइ भागेण य चद पण्णरसमेव त चरइ ।
 पण्णरसइ भागेण य, पुणोऽवि त चेव ववकमइ ॥
 एव वड्ढइ चदो, परिहाणी एव होइ चदस्स ।
 कालो वा जोण्हो वा, एवऽणुभावेण चदस्स ॥

अणवट्ठिया अणवट्ठिया वा जोइसिया -

गाहाओ--

अतोमगुस्स खेत्ते, ह्वति चारोवगा उ उववण्णा ।
 पचविहा जोइसिया, चदा सूरा गहगणा य ॥
 तेण पर जे सेसा, चदाइच्च गह तार-णयखत्ता ।
 णत्थि गई णवि चारो, अणवट्ठिया ते मुण्येव्वा ॥

अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु जोइसियाण पमाण--

गाहाओ--

एव जवुदीवे, दुगुणा, लवणे चउग्गुणा ह्ति ।
 लावणगा य त्तुगुणिया, सत्ति सूरा धायइसडे ॥
 दो चदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए ।
 धायइसडे दीवे, वारस चदा य सूरा य ॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाण पमाण--

गाहाओ--

धायइसडप्पभिइस्स, उट्ठिद्धा त्तुगुणिया भवे चदा ।
 भाइल्लचद सहिया, अणतराणतरे खेत्तेग ॥

छावट्टि पिडगाइ णवत्ताण तु मणुयत्तोमि ।
 छप्पण णवत्ता हति एक्केक्कए पिडए ॥
 जोइसियाण पतीओ—

गाहाओ—

घत्तारि य पतीओ, चंदाइच्छाण मणुयत्तोमि ।
 छावट्टि छावट्टि च, हवइ एक्केक्कया पती ॥
 छावत्तर गहाण, पतिसय हयति मणुयत्तोमि ।
 छावट्टि छावट्टि च हवइ एक्केक्कया पती ॥
 छप्पन्न पतीओ, णवत्ताण तु मणुयत्तोमि ।
 छावट्टि छावट्टि हवइ एक्केक्कया पती ॥
 जोइसियाण मडला—

गाहाओ—

ते मेरुमणुवरता, पदाहिणावत्त मडला सव्वे ।
 भणवट्टिय जोगेहि, चंदा सुरा गहणया य ॥
 णवत्त-त्तारणा, भयट्टिया, मडला मुणेयत्वा ।
 तेऽपि य पदाहिणावत्तमेय मेरु भणुवरति ॥
 जोइसियाण मडलसक्कमण—

रयणिकर-विणकराण, उट्ट च भ्रहेय सक्कमो नत्थि ।
 मडलसक्कमण पुण, सग्गतर-वाहिर तिरिए ॥
 जोइसाण चार सुह दुहस्त निमित्तकारण—

रयणिकर विणकराण, णवत्ताण मरुणहाण च ।
 चारयित्तेण भये, सुह-दुक्कविही मणुस्ताण ॥
 जोइसाण तावक्केत्त—

तेसि पविसताण तावक्केत्त तु यद्धए णियय ।
 तेणोय क्कमेण पुणो, परिहायइ निवत्तमाणाण ॥
 तेसि कलमुयापुष्कसट्टिया हति तावक्केत्तपहा ।
 अतो य सत्तुडा याहि विरयडा चद-भूराण ॥

चदस्स परिवुड्ढि-परिहाणी—

गाहाओ—

केणइ वड्ढइ चदो ? परिहाणी केण ह्ति चदस्स ?
 कालो वा जोण्हो वा ? केणऽणुभावेण चदस्स ?
 किण्ह राहुविमाण णिच्च चवेण होइ अघिरहिय ।
 चउरगुलमसपत्त, हिच्चा चदस्स त चरइ ॥
 बावट्ठि बावट्ठि, दिवमे दिवसे तु सुवक्कपक्खस्स ।
 ज परिवुड्ढइ चदो, खवेइ त चेव काले ण ॥
 पण्णरसइ भागेण य चद पण्णरसमेव त वरइ ।
 पण्णरसइ भागेण य, पुणोऽवि त चेव वक्कमइ ॥
 एव वड्ढइ चदो, परिहाणी एव होइ चदस्स ।
 कालो वा जोण्हो वा, एवऽणुभावेण चदस्स ॥

अणवट्ठिया अणवट्ठिया वा जोइसिया -

गाहाओ—

अतोमगुस्स खेत्ते, हवति चारोवगा उ उववण्णा ।
 पचविहा जोइसिया, चदा सूरा गहगणा य ॥
 तेण पर जे सेसा, चदाइच्च गह तार-णक्खत्ता ।
 णत्थि गई णवि चारो, अणवट्ठिया ते मुणेयव्वा ॥

अडढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु जोइसियाण पमाण—

गाहाओ—

एव जंबुद्दीवे, दुगुणा, लवणे चउग्गुणा ह्ति ।
 लावणगा य तिगुणिया, ससि सूरा धायइसडे ॥
 दो चदा इह दीवे, चत्तारि य सायरे लवणतोए ।
 धायइसडे दीवे, वारस चदा य सूरा य ॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाण पमाण—

गाहाओ—

धायइसडेप्पभिइस्स, उट्ठिटा तिगुणिया भवे चदा ।
 आइल्लचद सहिया, अणतराणतरे सेत्तेग ॥

रिषधग्गह-तारागग्ग, दीव-समुद्दे जहिच्छसो णाउ ।
 तस्तसोहि तग्गुणिय, रिषध-ग्गह-तारगग्ग सु ॥
 बहिया उ माणुसणगस्स चद-सूराणऽवहिया जोण्हा ।
 चवा अमिईजुत्ता, सूरा पुण ह्ति पुस्तोहि ॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाण अतर--

गाहाओ -

चवाओ सूरस्स य, सूरा चदस्स अतर होइ ।
 पण्णाससहस्साइ तु जोयणाण अणूणाइ ॥
 सूरस्स य सूरस्स य, ससिणो ससिणो य अतर होई ।
 बाहि तु माणुसणगस्स जोयणाण सपसहस्स ॥
 सूरतरिया चंदा, चदतरिया य विणयरा वित्ता ।
 चित्ततरलेसागा, सुहलेसा मदलेसा य ॥

माणुसणगस्स बहिया एगससोपरिचारो -

घणमुद्ग-पडुप्पवाइयरवेण, महया उक्किट्टु सीहणादबोलकलकलरवेण, अच्च पव्वयराय पयाहिणावत्तमडलचार मेरु अणुपरियट्टति ।

पुव्वइदस्स चवणाणत्तर अण्णइदस्स उववज्जण

प ता तेसि ण देवाण जाहे इदे चयइ से कयमिदाणि पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पच्च सामाणिआ देवा त ठाण उवसपज्जित्ताण विहरति जाव अण्णे इत्थ इदे उववण्णे भवइ ।

प ता इदथाणे ण केवइएण कालेण विरहिय पण्णत्त ?

उ ता जहण्णेण एक्क समय उवकोसेण छम्मासे ।

माणुसखेत्तस्स बहियाजोइसियाणउड्ढोववण्णगाइपरूवण

प ता बहिया ण माणुरसखेत्तस्स जे च्चदिमसूरिया गहगण णवखत्त तारात्त्वा, ते ण देवा कि उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्टिइया, गइरईया गइसमावण्णगा ?

उ ता ते ण देवा नो उड्ढोववण्णगा, नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, नो चारोववण्णगा, चारट्टिइया नो गइरइया, नो गइसमावण्णगा ।

पगिट्टगसठाणसठिएहि जोयणसयसाहस्सिएहि ताववखेत्तेहि सयसाहस्सिएहि बाहिराहि वेउत्थिवयाहि परिसाहि महयाट्टय-णट्ट गीय वाइय-त्तती-त्तल ताल-नुडिय-घणमुद्ग-पडुप्प-वाइयरवेण, महया उक्किट्टुसीहणाद-बोलकलकलरवेण, विव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।

सुहलेसा मदलेसा मदायवलेसा, चित्तरलेसा, अण्णोऽण्ण सभोगाढाहि लेसाहि कूडा इव ठाणठिया ते पदेसे सव्वम्रो समता ओभासति उज्जोव्वेति तव्वेति पमासेति ।

प ता तेसि ण देवाण जाहे इदे चयइ, से कहमिदाणि पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पच्च सामाणिआ देवा त ठाण उवसपज्जित्ताण विहरति, जाव अण्णे इत्थ इदे उववण्णे भवइ ।

प ता इदथाणे ण केवइएण कालेण विरहिय पण्णत्ते ।

उ ता जहण्णेण एक्क समय, उवकोसेण छम्मासे ।

सेसाण दीव-समुद्दाण आयामाह

१०१ ता पुक्खरवर ण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयाकारसठाणसठिए सव्वम्रो समता सपरिविखत्ता ण चिट्ठइ ।

रिक्छग्गह-ताराग्ग, दीव-समुद्दे जहिच्छती णाउ ।
 तस्ससीहि तग्गुणिय, रिक्छ ग्गह-तारग्ग तु ॥
 बहिया उ माणुसणगस्स चव-सूराणऽवट्ठिया जोण्हा ।
 चदा अग्निईजुता, सूरा पुण ह्ति पुस्सेहि ॥

माणुसणगस्स बहिया जोइसियाण अतर—

गाहाओ—

चदाओ सूरस्स य, सूरा चदस्स अतर होइ ।
 पण्णाससहस्साइ तु जोयणाण अण्णाण्णं ॥
 सूरस्स य सूरस्स य, सत्तिणो सत्तिणो य अतर होई ।
 बाहिं तु माणुसणगस्स जोयणाण सयसहस्स ॥
 सूरतरिया चदा, चदतरिया य दिणयरा दित्ता ।
 चित्ततरलेसागा, मुहलेसा मदलेसा य ॥

माणुसणगस्स बहिया एगससीपरिवारो—

गाहाओ—

अट्ठासीइ च गहा, अट्ठावीस च ह्ति णक्खत्ता ण ।
 एगससी परिवारो, एत्तो ताराण वोच्छामि ॥
 छावट्ठि सहस्साइ, णव चेव सयाइपचसयराइ ।
 एगससी परिवारो, ताराणण कोडिकोडीण ॥

अतोमणुस्सखेत्ते जोइसियाण उट्ठोववण्णगाइपरुवण

प अतो मणुस्सखेत्ते जे चदिम-सूरिया ग्ह णक्खत्त-ताराहवा ते ण देवा कि उट्ठोव
 वण्णगा, कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्ठितिया, गनिरतिया
 गतिसमावण्णगा ?

उ ता ते ण देवा नः उट्ठोववण्णगा नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोव
 वण्णगा नो चारट्ठिईया गइरइया गइसमावण्णगा ।

उट्ठाम्हा-क्खत्तवृत्तपुत्तसटाणसट्ठिण्णं जोयणसाहस्सिण्णं तावक्खेत्तेहि साहस्सिण्णं
 बाहिराहिं य वेउविधियाहिं परित्ताहिं भहयाह्मणट्ठोयवाइय-ततो तत्त तात्त-नुडिय

घणमुद्ग-पडुप्पवाइयरवेण, महया उविकट्ट सीहणादबोलकलकलरवेण, अरुच्छ
पव्वयराय पयाहिणावत्तमडलचार मेरु अणुपरियट्टति ।

पुव्वइदस्स चवणाणतर अण्णइदस्स उववज्जण

प ता तेसि ण देवाण जाहे इदे चयइ से कयमिदाणि पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पच्च सामाणिया देवा त ठाण उवसपज्जित्ताण विहरति जाव अण्णे इत्थ इदे उववण्णे भवइ ।

प ता इवठाणे ण केवइएण कालेण विरहिय पणत्त ?

उ ता जहण्णेण इक्क समय उवकोसेण छम्मासे ।

माणुसखेत्तस्स बहियाजोइसियाणउड्ढोववण्णगाइपरूवण

प ता बहिया ण माणुरसखेत्तस्स जे च्चदिमसूरिया गहगण णवखत्त तारारूवा, ते ण देवा कि उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारट्टिइया, गइरईया गइसमावण्णगा ?

उ ता ते ण देवा नो उड्ढोववण्णगा, नो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, नो चारोववण्णगा, चारट्टिइया नो गइरईया, नो गइसमावण्णगा ।

पगिट्ठगसठाणसठिएहि जोयणसयसाहस्सिएहि तावक्खेत्तेहि सयसाहस्सिएहि बाहिराहि वेउव्वियाहि परिसाहि म्हायाह्य णट्ट-गीय वाइय-तती-तल ताल-तुडिय घणमुद्ग-पडुप्प-वाइयरवेण, महया उविकट्टसीहणाद-बोलकलकलरवेण, दिव्वाइ भोगमोगाइ भुजमाणे विहरइ ।

सुह्लेसा मदलेसा मदायवलेसा, चित्ततरलेसा, अण्णोऽण्ण सभोगाडाहि लेसाहि कूडा इय ठाणठिया ते पदेसे सव्वभ्रो समता भ्रोभासति उज्जोव्वेति तव्वेति पमासंति ।

प ता तेसि ण देवाण जाहे इदे चयइ, से कहमिदाणि पकरेइ ?

उ ता चत्तारि पच्च सामाणिया देवा त ठाण उवसपज्जित्ताण विहरति, जाव अण्णे इत्थ इदे उववण्णे भवइ ।

प ता इवठाणे ण केवइएण कालेण विरहिय पणत्ते ।

उ ता जहण्णेण एक्क समय, उवकोसेण छम्मासे ।

सेसाण दीव-समुद्दाण आयामाह

१०१ ता पुक्खरवर ण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्ठे वलपाकारसठाणसठिए सव्वभ्रो समता सपरिखित्ता ण चिट्ठइ ।

प ता पुषखरोदे ण समुद्दे किं समचक्कवालसठिए विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता समचक्कवालसठिए नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता पुषखरोदे ण समुद्दे केवइय चक्कवालविषखभेण ? केवइय परिवलेवेण ? आहिए त्ति वएज्जा ?

उ ता सखेज्जाइ जोयणसहस्साइ आयामविषखभेण,
सखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिवलेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प ता पुषखरोदे ण समुद्दे केवइया चदा पभासेसु था, जाव केवइया तारागण-कोडिकोडोओ सोभ सोभिससति वा ।

उ ता पुषखरोदे ण समुद्दे सखेज्जा चदा पभासेसु था जाव सखेज्जाओ तारागणकोडिकोडोओ सोभ सोभिससति वा ।

एष एएण अभिलावेण —

१ वरुणवरे दीवे, २ वरुणोदे समुद्दे,

१ खोरवरे दीवे, २ खोरोदे समुद्दे,

१ घयवरे दीवे, २ घयोदे समुद्दे,

१ घोयवरे दीवे, २ खोयोदे समुद्दे,

१ नदीसरवरे दीवे, २ नदीसरे समुद्दे,

१ अरुणे दीवे, २ अरुणोदे समुद्दे,

१ अरुणवरे दीवे, २ अरुणवरोदे समुद्दे

१ अरुणवरोभासे दीवे, २ अरुणवरभासोदे समुद्दे,

१ कु डले दीवे, २ कु डलोदे समुद्दे,

१ कु डलवरे दीवे, २ कु डलवरोदे समुद्दे,

१ कु डलवरोभासे दीवे, २ कु डलवरभासोदे समुद्दे ।

सत्त्वेसि विषखम-परिवलेवो जोइसाइ च पुषखरोदसागरसरिसाइ ।

ता कु डलवरभासोदे समुद्दे रयए दीवे घटटे वलयाकारसठाणसठिए, सव्वओ समता सपरिविउत्ताण चिट्ठइ ।

प ता रयए ण दीवे किं समचक्कवालसठिए विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता समचक्कवालसठिए, नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता रुयए ण दीवे केवइय समचक्कवालविक्खभेण, केवइय परिवस्सेवेण ?

उ ता असस्सेज्जाइ जोयणसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण,

असस्सेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिवस्सेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प ता रुयणे ण दीवे केवइया चदा पभासंसु वा जाव केवइया तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभंसु सोभिस्सति वा ?

उ ता रुयणे ण दीवे असस्सेज्जा चदा पभासंसु वा जाव असस्सेज्जाओ तारागण-कोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा ।

एव रुयगोदे समुद्दे,

१ रुयगवरे दीवे, २ रुयगवरोदे समुद्दे ।

१ रुयगवरोभासे दीवे, २ रुयगवरभासोदे समुद्दे ।

एव तिपडोघारा दीव-समुद्दे णायव्वा,

जाव, १ सूरे दीवे, २ सूरोदे समुद्दे,

१ सुरवरे दीवे, २ सुरवरोदे समुद्दे,

१ सुरवरोभासे दीवे, २ सुरवरभासोदे समुद्दे ।

सव्वेसि विक्खम परिवस्सेवो जोइसाइ रुयगवरदीवत्तरिसाइ ।

ता सुरवरोभासोदे ण समुद्दे देवे णाम दीवे वट्ठे वलापाकारसठाणसठिए सव्वओ समता सपरिविक्खत्ताण चिट्ठइ ।

प ता देवे ण दीवे कि समचक्कवालसठिए, विसमचक्कवालसठिए ?

उ ता समचक्कवालसठिए नो विसमचक्कवालसठिए ।

प ता देवे ण दीवे केवइय चक्कवालविक्खभेण केवइय परिवस्सेवेण ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता असस्सेज्जाइ जोयणसहस्साइ चक्कवालविक्खभेण, असस्सेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिवस्सेवेण आहिए त्ति वएज्जा ।

प ता देवे ण दीवे केवइया चदा पभासंसु वा जाव केवइया तारागण-कोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा ?

उ ता देवे ण दीवे असस्सेज्जा चदा पभासंसु वा जाव असस्सेज्जाओ तारागणकोडिकोडीओ सोभ सोभिस्सति वा ।

एव देवीदे समुद्दे —

१ णागे दीवे, २ णागोदे समुद्दे,

१ जषले दीवे, २ जषलोदे समुद्दे,

१ भूए दीवे, २ भूओदे समुद्दे,

१ सयभूरमणे दीवे, २ सयभूरमणे समुद्दे ।

सर्वेसि विक्खम परिकलेवे जोहसाह देवदीवसरिसाह ।



बीरावों प्राभृत

चदिम-सूरियाण अणुभावो

१०२ प ता कह ते अणुभावे ? आहिए त्ति वएज्जा ।

उ ता तत्थ एलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पणत्ताओ, तजहा —

१ तत्थेगे एवमाहसु—

ता चदिम-सूरिया ण—

नो जीवा, अजीवा,

नो घणा, भूसिरा,

नो वादरवोदिधरा कलेवरा ।

नत्थि ण तेसि १ उट्ठाणेइ वा, २ कम्मेइ वा, ३ बलेइ वा, ४ वीरिएइ वा, ५ पुरिसवकार-परवकमेइ वा ।

नो विज्जु लवति, नो असॉण लवति, नो थणिय लवति ।

अहे य ण वादरे वाउकाए समुच्छइ, समुच्छित्ता विज्जु पि लवति, असॉण पि लवति, थणिय पि लवति “एगे एवमाहसु” ।

१ एगे पुण एवमाहसु—

ता चदिम-सूरिया ण—

जीवा, नो अजीवा,

घणा, नो भूसिरा,

वादरवोदिधरा, नो कलेवरा ।

अत्थि ण तेसि १ उट्ठाणेइ वा, २ कम्मेइ वा, ३ बलेइ वा, ४ वीरिएइ वा, ५ पुरिसवकार-परवकमेइ वा ।

ते विज्जु पि लवति, असॉण पि लवति, थणिय पि लवति, “एगे एवमाहसु” ।

वय पुण एव वयामो

ता चदिम-सूरिया ण देवाण महिञ्जिया, महज्जुइया, महब्वला, महाजसा, महासोखा, महानु-माणा वरयत्थघरा, वरमल्लघरा, वराभरणघरा अवोच्चित्तिणयट्टयाए अन्ने चयति, अन्ने उचवज्जति ।

राहु-कम्मपरुवण

- १०३ प ता कह ते राहुकम्मे ? आहिए त्ति वएज्जा ?
 उ तत्थ खलु इमाओ दो पडिवत्तीओ पण्णत्ताओ तजहा —
 एत्थेगे एवमाहसु—
 १ अत्थिय ण से राहु देवे जे ण चव वा सूर वा गिण्हइ, “एगे एवमाहसु” ।
 एगे पुण एवमाहसु—

२ नत्थिय ण से राहु देवे जे ण चव वा सूर वा गिण्हइ, “एगे एवमाहसु” ।
 तत्थ जे ते एवमाहसु—
 ता अत्थिय ण से राहु देवे जे ण चव वा सूर वा गिण्हइ, से एवमाहसु—

ता राहु ण देवे चव वा सूर वा गेण्हमाणं—
 १ बुद्धतेण गिण्हत्ता, मुद्धतेणमुयइ,

२ बुद्धतेण गिण्हत्ता, मुद्धतेणमुयइ,

३ मुद्धतेण गिण्हत्ता, बुद्धतेणमुयइ,

४ मुद्धतेण गिण्हत्ता, मुद्धतेणमुयइ,

१ वामभुयतेण गिण्हत्ता वामभुयतेण मुयइ,

२ वामभुयतेण गिण्हत्ता, दाहिणभुयतेण मुयइ,

३ दाहिणभुयतेण गिण्हत्ता वामभुयतेण मुयइ,

४ दाहिणभुयतेण गिण्हत्ता दाहिणभुयतेण मुयइ ॥

तत्थ जे ते एवमाहसु—

ता नत्थिय ण से राहु देवे जे ण चव वा, सूर वा गेण्हइ, ते एवमाहसु—
 तत्थ ण इमे पण्णरसकत्तिणपोग्गला, पण्णत्ता, तजहा—१ सिंघाणए,

२ जडिलए, ३ खरए, ४ खत्तए, ५ अजणे, ६ खजणे, ७ सीतले, ८ हिम-
 सीतले, ९ केसाते, १० अरुणाभे, ११ परिज्जए, १२ णभसूरए, १३ कवि-

त्तिए, १४ पिगलए, १५ राहु ।

ता जया ण एए पण्णरस कत्तिणा कत्तिणा पोग्गला सया चवस्त वा सूरस्त वा सेसाणुबद्ध
 चारिणो भवति, तया ण माणुसलोयसि माणुसा एव वयति—“एव खलु राहु चव वा सूर वा गेण्हइ” ।

एव ता जया ण एए पण्णरस कत्तिणा कत्तिणा पोग्गला णो सया चवस्त वा सूरस्त वा
 सेसाणुबद्धचारिणो भवति, णो खलु तया माणुसलोयसि माणुसा एव वयति—“एव खलु राहु चव वा
 सूर वा गेण्हइ, ते एवमाहसु ।

वय पुण एव वयामो—

ता राहू ण देवे महिद्धीए महज्जुइए महब्रले महायसे महातोक्खे महानुभावे, वरवत्यधरे, वरमल्लधरे वरामरणधारी ।

राहुस्स णव णामाइ

ता राहुस्स ण देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तजहा—१ सिंघाडए, २ जडिलए, ३ खरए, ४ खेतए, ५ डडुरे, ६ मगरे, ७ मच्छे, ८ कक्कभे, ९ कण्णसप्पे ।

राहुस्स विमाणा पच्चवण्णा

ता राहुस्स ण देवस्स विमाणा पच्चवण्णा पण्णत्ता, तजहा—१ किण्हा, २ नीला, ३ लोहिया, ४ हालिदा, ५ सुक्किल्ला ।

अत्थि कालए राहुविमाणे खजणवण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि लोहिए राहुविमाणे मज्जिद्वामण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि हालिदए राहुविमाणे हालिदावण्णाभे पण्णत्ते ।

अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउब्बेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा, सूरस्स वा लेस्स पुरत्थियेण आवरित्ता पच्चत्थियेण चीईवयइ, तथा ण पुरत्थियेण चदे वा सूरे वा उवदसेइ पच्चत्थियेण राहू ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउब्बेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस्स दाहिणेण आवरित्ता उत्तरेण चीईवयइ, तथा ण दाहिणेण चदे वा सूरे वा उवदसेइ, उत्तरेण राहू ।

एएण अभिलावेण पच्चत्थियेण आवरित्ता पुरत्थियेण चीईवयइ, उत्तरेण आवरित्ता दाहिणेण चीईवयई ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउब्बेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस्स दाहिणपुरत्थियेण आवरित्ता उत्तरपच्चत्थियेण चीईवयइ, तथा ण दाहिण पुरत्थियेण चदे वा सूरे वा उवदसेइ, उत्तरपच्चत्थियेण राहू ।

ता जया ण राहू देवे आगच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउब्बेमाणे वा, परियारेमाणे वा चदस्स

या सूरस्स वा लेस दाह्णिपच्चत्थियेण आवरित्ता उत्तरपुरत्थियेण वोईवयइ, तथा ण दाह्णिपच्चत्थियेण चदे वा, सूरे वा उववसेइ उत्तरपुरत्थियेण राहू ।
एएण अभिलावेण उत्तरपच्चत्थियेण आवरेत्ता दाह्णिपुरत्थियेण वोईवयइ, उत्तरपुरत्थियेण आवरत्ता दाह्णिपच्चत्थियेण वोईवयइ ।

ता जया ण राहू देवे प्रागच्छमाणे वा गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस्स आवरेत्ता पासेण वोईवयइ, तथा ण माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति "राहुणा चदे वा, सूरे वा गहिए ।"

ता जया ण राहू देवे प्रागच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा सूरस्स वा लेस आवरेत्ता पासेण वोईवयइ, तथा ण माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति "चदेण वा, सूरेण वा राहुस्स कुच्छी निण्णा ।

ता जया ण राहू देवे प्रागच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा, सूरस्स वा लेस आवरेत्ता पच्चोसक्कइ तथा ण माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति "चदेण वा, वा सूरे वा वत्ते ।"

ता जया ण राहू देवे प्रागच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा, सूरस्स वा लेस आवरेत्ता मज्जेण वोईवयइ, तथा ण माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति—"राहुणा चदे वा, सूरे वा विइयरिए ।"

ता जया ण राहू देवे प्रागच्छमाणे वा, गच्छमाणे वा, विउव्वेमाणे वा, परियारेमाणे वा, चदस्स वा, सूरस्स वा लेस आवरेत्ता अहे अपविउ सपडिदिसि चिट्ठइ, तथा ण माणुसलोयसि मणुस्सा एव वयति—"राहुणा चदे वा सूरे वा घत्थे ।"

राहुस्स दुविहत्त

प कइविहे ण राहू पण्णत्ते ?

उ दुविहे पण्णत्ते, तजहा—ता धुवराहू य पव्वराहू य ।

क तत्थ ज जे से धुवराहू से ण बहुत्तपव्वस्स पाडिवए पण्णरसइ भागेण भाग चदस्स लेस आवरमाणे आवरेमाणे चिट्ठइ, तजहा—पढमाए पढम भाग, जाव पण्णरसमाए पण्णरसम भाग ।

चरने समए चदे रत्ते भवइ,
अवसेने समए चदे रत्ते य, विरत्ते य भवइ ।

तमेव सुवकपवत्ते उवदसेमाणे उवदसेमाणे चिट्टइ, तजहा—पढमाए पढम भाग जाव

५ पण्णरत्तमीए पण्णरत्तम भाग ।

७ चरमे समए चदे विरत्ते य भवइ,
अवसेसे समए चदे रत्ते य विरत्ते य भवइ ।

ख तत्थ ण जे ते पव्वराहू से जहण्णेण छण्ह मासाण,
उवकोसेण बायालीसाए भासाण चदस्स, अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स ।

चदस्स ससी-अभिहाण

१०४ प ता कह ते चदे ससी चदे ससी आहिए ? ति वएज्जा ।

उ ता चदस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णे मियके विमाणे कता देवा, कताओ देवोओ,
कताइ आसण सयण-खभ-भड-मत्तोवगरणाइ ।

अप्पणा वि ण चदे देवे जोइसिदे जोइसराया सोमे कते सुमे पियदसणे सुरूवे ।
ता एव खलु चदे ससी, चदे ससी आहिए ति वएज्जा ।

सूरस्स आइच्चाभिहाण

प ता कह ते सूरिए आइच्चे सूरिए आइच्चे आहिए ? ति वएज्जा ।

उ ता सूरादीया समयाइ वा आवलियाइ वा आणावाणूइ वा थोवेइ वा, जाव उस्सपिणी,
ओसपिणीइ वा । ता एव खलु सूरे आइच्चे सूरे आइच्चे आहिए ति वएज्जा ।

चद-सूराईण काम-भोगपरुवण

१०५ प ता चदस्स ण जोइसिदस्स जोइसरण्णे कइ अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?

उ ता चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तजहा—१ चइप्पमा, २ दोसिणाभा, ३ अच्चि-
माली, ४ पभकरा ।

जहा हेद्दा त चेव जाव णो चेव ण मेहुणवत्तिय ।

७ एव सूरेस्स वि णेयव्व ।

प ता चदिम-सूरिया जोइसिदा जोइसरायाणो केरिसे कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरति ?

उ ता से जहाणामेए केई पुरित्ते,

पढमजोव्वणुद्दाणवलसमत्थे,

पढमजोव्वणुद्दाणवलसमत्थाए भारियाए सद्धि,

अचिरवत्तविवाहे,

अत्यत्यी अत्यगवेसणयाए सोलसवासविप्पवसिए,
 से ण ततो लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणररवि णियगघर हव्वमागए,
 पहाए कयवलिकम्मे कयकोउयमगलपायच्छित्ते सुद्धप्पवेसाइ भगलाइ वत्याइ पवरपरि
 हिए,

अप्प महग्घाभरणालकियसरीरे,
 मणुण्ण थालोपाक्सुद्ध अट्टारसवजणाउल भोयण भुत्ते समाणे,
 तसि तारिसगसि वासघरसि अतो सच्चित्तकम्मे,
 वाहिरओ दूमियघट्टमट्ठे विचित्तउल्लोअ विल्लियतले बहुसमसुविभत्तभूमिभाए, मणि
 रयण-पणासियघयारे ।

कालागुरू पवरकु दुरक्क-तुरक्क धूव मघमघेंतगधुद्धुयामिरामे सुगधवरगघिए, गघवट्ट
 भूए,

तसि तारिसगसि सयणिज्जसि दुहओ उण्णए मज्जे णयगभोरे उमओ सात्तिगणवट्टिए,
 उमओ पणत्तगडविच्चोयणे,

सुरम्मे गगापुलिण बालुआ-उहाल-सात्तिसए सुविरइयरयत्ताणे, ओयविय-ओमिय
 खोमदुगूलपट्टपडिच्छायणे, रत्तसुमसवुडे,

सुरम्मे आईणग-रूय वूर णवणीय तूलफासे, सुगधवर-कुसुमचुण्ण-सयणोवयारकत्तिए,
 ताए तारिसाए भारियाए सद्धि सिगारागारचारुवेसाए सगत-हसित भणित चिट्ठित
 सलाव विलास णिउणज्जुत्तोवयारकुसलाए अणुरत्तायिरत्ताए मणोऽणुकूलाए सद्धि एगतर
 तिपसत्ते अण्णत्य कत्यई मण अकुब्बमाणे इट्ठे सट्ट-फरिस रस-रूव गघे पवाविहे
 माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरिज्जा ।

प ता से ण पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसए सायासोक्ख पच्चणुमवमाणे विहरइ ?
 उ उराल समयणउसो ।

ता तस्स ण पुरिसस्स कामभोगेहितो एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव वाणमतराण
 देवाण कामभोगा,

वाणमतराण देवाण काम-भोगेहितो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव असुरिदवज्जियाण भवण
 वासोण देवाण कामभोगा,

असुरिदवज्जियाण देवाण काम भोगेहितो एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव असुर
 कुमारण इदभूयाण देवाण कामभोगा,

असुरकुमाराण देवाण काम-भोगेहितो अणतगुणविसिद्धतरा चेव गहगण णवखत्त तारा-
रूवाण कामभोगा,

गहगण णवखत्त-तारारूवाण काम-भोगेहितो अणतगुणविसिद्धतरा चेव चदिम-सूरियाण
देवाण कामभोगा,

ता एरिसए ण चदिम-सूरिया जोइसिदा जोइसरायाणो कामभोगे पच्चणुभवमाणा
विहरति ।



अठ्ठारसीई महगवाहा

१०६ तत्य धलु इमे अठ्ठारसीई महगवाहा पणता, तजहा—

- १ इगालए, २ वियालए, ३ लोहियक्खे, ४ सणिच्छरे, ५ आहुणिए, ६ पाहुणिए, ७ कण,
 ८ कणए, ९ कणकणए, १० कणवियाणए, ११ कणसताणए ।
 १२ सोमे, १३ सहिए, १४ अस्तासणे, १५ कज्जोयए, १६ कन्वडए, १७ मयकरए,
 १८ कुवुमए, १९ सखे, २० सखवणणे, २१ सखवण्णाभे, २२ फसे ।
 २३ कसवणणे, २४ कसवण्णाभे, २५ णीले, २६ णीलामासे, २७ रप्पी, २८ हप्पोमासे,
 २९ भासे, ३० भासरासो, ३१ तिले, ३२ तिलपुक्कवणणे, ३३ दगे ।
 ३४ दगपच्चवणणे, ३५ काले, ३६ काकधे, ३७ इवग्गी, ३८ धूमकेऊ, ३९ हरी, ४० पिण्णे,
 ४१ बुहे, ४२ सुक्के, ४३ महस्सई, ४४ राहू ।
 ४५ अगत्यी, ४६ माणवणे, ४७ कामे, ४८ फासे, ४९ धूरे, ५० पमुहे, ५१ विपडे,
 ५२ विसधी, ५३ णियल्ले, ५४ पयल्ले, ५५ जडियाइल्ले ।
 ५६ अरण्णे, ५७ अग्गिल्लए, ५८ काले, ५९ महाकाले, ६० सोत्थिए, ६१ सोवत्थिए,
 ६२ वट्ठमाणणे, ६३ पल्ले, ६४ णिच्चालोए, ६५ निच्चुज्जोए, ६६ सयपभे ।
 ६७ ओमासे, ६८ सेयकरे, ६९ सेमकरे, ७० आभकरे, ७१ पभकरे, ७२ अपराजिए,
 ७३ अरए, ७४ असोणे, ७५ वोयसोणे, ७६ विमले, ७७ वियत्ते ।
 ७८ वितथे, ७९ विसाले, ८० साले, ८१ सुव्वए, ८२ अनियट्ठी, ८३ एगजडो, ८४ बुजडो,
 ८५ करकरिए, ८६ रायागले, ८७ पुक्ककेऊ, ८८ भावकेऊ ।



संगहणीगाहाओ

- १ इगालए, २ बियालए, ३ लोहियवले, ४ सणिच्छरे चेव ।
 ५ आहुणिए, ६ पाहुणिए, ७-११ कणगसनामा उ पचेव ॥
- २ १२ सोमे, १३ सहिए, १४ आसासणे य, १५ कज्जोवए य, १६ कब्बडए ।
 १७ अयकरए, १८ डुडुहए, १९-२१ सखसनामाओ तिन्नेव ॥
- ३ २२ २४ तिनेन कसनामा, २५-२६ णीला, २७-२८ रूपो य होति चत्तारि ।
 २९-३० भास, ३१-३२ तिलपुप्फवण्णे, ३३-३४ वग-पणवण्णे य, ३५ काय, ३६ काकघे ॥
- ४ ३७ इवगि, ३८ धूमकेऊ, ३९ हरि, ४० पिगलए, ४१ बूहे य, ४२ सुक्के य ।
 ४३ बहस्सई, ४४ राहु, ४५ अगत्यी, ४६ माणवए, ४७ कास, ४८ फासे य ॥
- ५ ४९ धूरे, ५० पमुहे, ५१ वियडे, ५२ विसधि, ५३ णियले, ५४ तहा पयल्ले य ।
 ५५ जडियाइलए, ५६ अरण्णे, ५७ अगिल्ल, ५८ काले, ५९ महाकाले य ॥
- ६ ६० सोत्थिय, ६१ सोवत्थिय, ६२ वद्धमाणगे, ६३ तहा पल्ले य ।
 ६४ णिच्वालोए, ६५ णिच्चुज्जोए, ६६ सयपभे, ६७ चेव ओभासे ॥
- ७ ६८ सेयकर, ६९ लेमकर, ७० आभकर, ७१ पभकरे व बोद्धव्हे ।
 ७२ अरए, ७३ विरए य तहा, ७४ असोगे, ७५ वीयसोगे य ॥
- ८ ७६ विमल, ७७ वित्त, ७८ वितये, ७९ विसाल, ८० तह साल, ८१ सुच्चए चेव ।
 ८२ अनियट्टी, ८३ एगजडी य, ८४ होइ विजडी य बोद्धव्हे ॥
- ९ ८५ करकरए, ८६ रायगल, ८७ बोद्धव्हे पुप्फ, ८८ मायकेऊ य ।
 अट्टासीई गहा खलु गेयट्वा आणुपुत्तोए ॥



उतरांहारोः

१०७

इह एस पाहुडत्या, अमव्वजणहिययदुल्लाहा इणमो ।
उक्कित्तिया भगवई, जोइसरायस्स पण्णत्ती ॥
एस गहिपाऽवि सत्ता, थढे गारक्खिय भाणि-पडिणीए ।
अयहुस्सए ण देया, तद्विवरीए भवे देया ॥
सद्धा धित्ति उट्टाणुच्छहह-कम्म बल विरिय पुरिसकारेहि ।
जो सिक्खिअओऽवि सतो, अभायणे पक्खिवेज्जाहि ॥
सो पवयण-कुल-गण सघवाहिरो णाण विणय परिहोणो ।
अरहत थेर गणहरमेर किर होइ बोलीणो ॥
तम्हा धित्तिउट्टाणुच्छाह कम्म-बल विरियसिक्खिअ णाण ।
घारेयव्व णियमा ण य अविणएसु दायव्व ॥
वीरवरस्स भगवओ, जर मरण-किलेस-दोसरहियस्स ।
वदामि विणयपणओ, सोक्खुप्पाए सया / पाए ॥

॥ सुरियपण्णत्तो समत्ता ॥



सुयथतिरपणीयं चंदपणतिरुत्तं

नमो अरिहताण ॥

जयइ नव-नलिन-कुवलय वियसिय-सयवत्त-पत्तलदलच्छो ।

वीरो गइद-भयगल सललिय गयविवकमो भयव ॥ १ ॥

नमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयग-परिवदिए गयकिलेसे ।

अरिहे सिद्धायरिय उवज्झाए सब्वसाह य ॥ २ ॥

फुड वियड-पागडत्य, वुच्छ पुव्व-सुय-सार-नीसव ।

सुहुम गणिणोवइदुठ, जोइस-गणरायपण्णति ॥ ३ ॥

नामेण इवभूइत्ति गोयमो वदिऊण तिविहेण ।

पुच्छइ जिणवर-वसह, जोइसरायस्स पण्णति ॥ ४ ॥

कइ मडलाइ वच्चइ १, तिरिच्छा किं च गच्छई २ ।

ओमासइ केवइय ३, सेयाइ किं ते सठिई ४ ॥ ५ ॥

कहिं पडिहया लेसा ५, कह ते ओयसठिई ६ ।

के सूरिय वरयते ७, कह ते उदयसठिई ८ ॥ ६ ॥

कइकट्टा पोरिसोच्छाया ९, जोगेत्ति किं ते आहिंए १० ।

किं ते सबच्छराणाई ११, कइ सबच्छराइ य १२ ॥ ७ ॥

कह चदमसो वुड्डी १३, कया ते दो (जो) सिणा बह १४ ।

के सिग्घगई वुत्ते १५, किं ते दो (जो) सिणलवण १६ ॥ ८ ॥

चयणोववाय १७, उच्चत्ते १८, सूरिया कइ आहिया १९ ।

अणुभावे केरिसे वुत्ते २०, एवमेयाइ वीसई ११ ॥ सूत्र १ ॥

वड्ढोवड्ढी १, सुहुत्ताण मद्धमडलसठिई २ ।

के ते चिण्ण परियरइ ३, अतर किं चरति य ४ ॥ १० ॥

ओगाहइ केवइय ५, केवइय च विकपइ ६ ।

मडलाण य सठाणे ७, विक्खमो ८, अट्ट पाहुडा ११ ॥ सूत्र २ ॥

छप्पच य सत्तेव य, अट्ट य तिभि य हवति पडिवत्ती ।

पढमस्स पाहुडस्स उ, हवति एयाओ पडिवत्ती ॥ १२ ॥ सूत्र ३ ॥

पडिवत्तीश्रो उदए, अत्रुव अत्यमणेसु य ।
भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गईइ य ॥ १३ ॥

निवखममाणे सिग्घगई, पविसते मदगईइ य ।
चूलसोइसय पुरिसाण, तेसि च पडिवत्तीश्रो ॥ १४ ॥

उदयम्मि अट्ट भणिया, भेयघाए दुवे च पडिवत्ती ।
चत्तारि मुहुत्तगईए, होति तइयम्मि पडिवत्ती ॥ १५ ॥ सूत्र ४

आवलयि १, मुहुत्तगो २, एवभागा ३ य, जोगेस्ता ४ ।
कुलाइ ५, पुण्णमासी ६ य, सनिवाए ७ य सठिई ८ ॥ १६ ॥

तारग्ग ९, च नेता य, १०, चदमग्गति ११ यवरे ।
वेवताण य अज्जभयणा १२, मुहुत्ताण नामया १३ इय ॥ १७ ॥

दियसा राई य युत्ता १४ य, तिहि १५, गोत्ता १६ भोयणाणि य १७ ।
आइच्चचार १८, मासा १९ य, पच सवच्छरा २० इय ॥ १८ ॥

जोइसस्स य दाराइ २१, नवखलविचए २२ विय ।
दसमे पाहुडे एए, यावोस पाहुड-पाहुडा ॥ १९ ॥ सूत्र ५ ॥

तेण कालेण तेण समएण, मिहिला णाम णयरी होत्या रिद्धतियमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया
जाव पासादोया, वण्णश्रो ॥ १ ॥ =

तोसे ण मिहिलाए णयरीए ब्रह्मिया उत्तरपुरत्थिमे विसीभाए एत्य ण माणिमहे णाम चेइए
होत्या चिराईए, वण्णश्रो ॥ २ ॥

तोसे ण मिहिलाए णयरीए जियसत्तूणाम राया, धारिणो देवो, वण्णश्रो ॥ ३ ॥

तेण कालेण तेण समएण तमि माणिमहे चेइए सामो समोसठे, परिसा णिग्गया, धम्मो कहिओ,
परिसा पडिग्गया जाव राया जामेव विसि पाउवभूए तामेव विसि पडिग्गए ॥ ४ ॥ सूत्र ६ ॥

तेण कालेण तेण समएण समूणस्स भगवओ महावीरस्स जेटठे अतेवासी इवभूई णाम अणगारे
गोयमगोत्ते ण सत्तुस्सेहे जाव पज्जवासमाणे एव वयासी ॥ सूत्र ७ ॥

प ता कह ते वडठोवड्ढो मुहुत्ताण आहितेति वदेज्जा ?

उ गोयमा ! ता अट्ट एगूणवीसे मुहुत्तसते सत्तायोस च सत्तट्ठिमाणो मुहुत्तस्स आहितेति
वदेज्जा ॥ सूत्र ८ ॥

इय एस पागडत्या, अभव्वजणहियय-दुल्लमा इणमो ।
उक्कित्तिया भगवती जोइसरायस्स पणत्तो ॥ १ ॥

एस गहियाचि सतो, यद्धे गारवियमाणपडिणीए ।
अबहुस्सुए ण देया, तच्चिवरीए भवे देया ॥ २ ॥

(सद्धा) धिइउट्टाणुच्छाह-कम्मबलविरिय-पुरिसकारोह ।
जो सिक्खिअोचि सतो, अभायणे पक्खिविज्जाहि ॥ ३ ॥

सो पवयण कुल गण-सघबाहिरो णाणविणय-परिहीणो ।
अरहत थेरगणहरमेर किर होइ वोलीणो ॥ ४ ॥

तम्हा धिइउट्टाणुच्छाह कम्मबलवीरियसिक्खिय नाण ।
घारेयव्व णियमा, ण य अविणएसु दायव्व ॥ ५ ॥

वीरवरस्स भगवतो, जरमरण-किलेस-दोसरहियस्स ।
वदामि विणयपणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥ ६ ॥ सूत्र १०७ ॥

॥ वीसइम पाहुड समत्त ॥

॥ चदपन्नत्तो समत्ता ॥



श्री सूर्य-चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का गणित विभाग

सूत्रसख्या ८

मुहूर्त के परिमाण की हानि-वृद्धि नक्षत्रमास के मुहूर्त का परिमाण

एक युग के अहोरात्र १८३० हाते हैं। एक युग के नक्षत्रमास की सख्या ६७ है। एक नक्षत्रमास के दिवस १८३०—६७ करने से २७ दिन २१/६७ मुहूर्त प्रमाण होता है। वह इस प्रकार

$$\begin{array}{r} ६७)१८३०(२७ \\ \underline{१३४} \end{array}$$

४९०

४६९

२१

२१/६७ के मुहूर्त करने के लिए ३० से गुणा करने पर $२१ \times ३० = ६३०$ होते हैं। उनको ६७ से भाग देने पर (६३०—६७) ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होते हैं। अर्थात् नक्षत्रमास २७ दिवस ९ मुहूर्त २७/६७ भाग होता है। उसके मुहूर्त करने पर $२७ \times ३० = ८१०$ होते हैं। उनमें ९ जोड़ने से ८१९ होते हैं। अतएव नक्षत्रमास के मुहूर्तों की सख्या ८१९। २७/६७ होती है।

सूर्यमास के मुहूर्तों की सख्या

एक युग के दिवस १८३० हैं और एक युग के सूर्यमास ६० हैं। सूर्यमास के दिवस करो के लिए १८३० को ६० से भाग देने पर ३० दिन और ३०/६० होंगे। उनके मुहूर्त करने के लिए सूर्यमास के दिनों को ३० से गुणा करने पर $३० \times ३० = ९००$ होते हैं और ३०/६० को ३० से गुणा करने पर $३० \times ३० - ६०$ करने पर १५ मुहूर्त होते हैं। इनको ९०० में जोड़ने पर ९१५ मुहूर्त होते हैं। अर्थात् सूर्यमास के मुहूर्तों की सख्या ९१५ होती है।

चन्द्रमास के मुहूर्तों की सख्या

एक युग के चन्द्रमास ६२ होते हैं और एक युग के दिवस १८३० हैं। चन्द्रमास के दिन बनाने के लिए १८३०—६२ करने में २९ दिन ३२/६२ प्राप्त होते हैं। इनके मुहूर्त बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर $२९ \times ३० = ८७०$ होंगे और $३२/६२ \times ३०$ करने पर ९६०/६२ होंगे एवं मुहूर्त के

रूप में १५ मुहूर्त ३०/६२ होंगे। इस सख्या को पूर्वोक्त ८७० में मिलाने पर ८८५ मुहूर्त पूरा एवं ३०/६२ मुहूर्त की सख्या होगी।

कममास के मुहूर्तों की सख्या

एक युग में ३० दिन का एक कममास होता है। उसके मुहूर्त बनाने के लिए ३० से गुणा करने पर $३० \times ३० = ९००$ होते हैं। यह कममास के मुहूर्तों की सख्या है।

मास	मुहूर्तों की सख्या
१ नक्षत्रमास	८१९ × २७/६७ मु
२ सूयमास	९१५ मु
३ चंद्रमास	८८५। ३०/६२ मु
४ कममास	९०० मु

॥ प्रथम प्राभूत का आठवा सून समाप्त ॥

सूत्रसख्या ६, १०, ११

३६६ रात्रि दिवस का प्रमाण

सर्वाभ्यन्तरमंडल के सर्वबाह्य मंडल में गमन करने पर एवं सर्वबाह्य मंडल के सर्वाभ्यन्तर मंडल में गमन करने पर सूय को (३६६ रात्रि दिवस) लगते हैं।—सून स ९

सूर्य ३६६ दिवस में १८४ मंडल में संचार करता है।—सून स १०

रात्रि दिवस की हानि-वृद्धि का प्रमाण

सूर्य ३६६ दिवस में सर्वाभ्यन्तर मंडल में से सर्वबाह्य मंडल में, सर्वबाह्य मंडल में से सर्वाभ्यन्तर मंडल में परिक्रमा करता है। सर्वाभ्यन्तर मंडल में से सर्वबाह्य मंडल तक १८३ दिवस में परिक्रमा करता है। जब सूर्य सर्वाभ्यन्तर मंडल में होता है तब १८ मुहूर्त का दिन एवं १२ मुहूर्त की रात्रि होती है। सर्वाभ्यन्तर मंडल में से सर्वबाह्य मंडल तक जाने में १८३ दिन होते हैं और उस समय में ६ मुहूर्त की हानि वृद्धि होती है।

एक दिवस में मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि-हानि होती है। अर्थात् दिवस के परिमाण में मुहूर्त के २/६१ भाग की हानि होती है और रात्रि के परिमाण में मुहूर्त के २/६१ भाग की वृद्धि होती है।

सूर्य जैसे-जैसे बाह्यमंडल की ओर गमन करता है। वैसे-वैसे दिवस के परिमाण में हानि और रात्रि के परिमाण में वृद्धि होती है।

सूर्य जब सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान होता है तब १२ मुहूर्त का दिन और १८ मुहूर्त की रात्रि होती है। सूर्य जैसे-जैसे सर्वाभ्यन्तरमंडल की तरफ गमन करता है वैसे-वैसे दिन में वृद्धि और रात्रि में हानि होती है।

प्रथम ६ मास में दिवस घटता है और रात्रि बढ़ती है। दूसरे ६ मास में दिवस बढ़ता है और रात्रि घटती है।

हानि वृद्धि का प्रमाण मुहूर्त के २/६१ भाग जितना होता है।—सूत्र ११

॥ प्रथम प्राभूत का प्रथम प्राभूत-प्राभूत समाप्त ॥

तृतीय प्राभूत प्राभूत में 'सयमेग चोयाल' गाथा अधूरा होने से अथ नहीं कर सकते हैं। मेष व्यवच्छेद है। इस प्रकार श्री अमोलक ऋषिजी ने सूयप्रज्ञा की भाषा में लिखा है तथा टीकाकार मलयगिरिकृत टीका से भी यथाथ गणित १४४ आता नहीं है। जिनके ध्यान में गणित की प्रक्रिया हो, यदि वे बताने की कृपा करेंगे तो श्रुतसेवा मानी जायेगी।

॥ प्रथम प्राभूत का तृतीय प्राभूत-प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र १५

दो सूर्यों के (भरत और ऐरवत के) संचरण समय में परस्पर अन्तर

संचरण करते समय दोनों सूर्यों के बीच प्रत्येक मंडल में ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर होता है। जब दोनों सूर्य सर्वाभ्यन्तरमंडल में वर्तमान हों तब दोनों सूर्यों के बीच ९९६४० योजन अन्तर होता है।

जम्बूद्वीप क्षेत्र एक लाख योजन के विष्णुमंडल वाला है। प्रत्येक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके संचार करता है।

१००००० योजन में से दोनों सूर्यों का अवगाहन क्षेत्र १८० और १८० योजन कुल मिलाकर ३६० योजन कम करने पर ९९६४० योजन शेष रहते हैं। जो सर्वाभ्यन्तरमंडल में वर्तमान दोनों सूर्यों का अन्तर होता है।

१८४ सूर्यमंडल के १८३ अन्तर होने हैं और एक मंडल का दूसरे मंडल तक २ योजन ४८/६१ भाग का अन्तर होता है। अतः जब सूर्य एक मंडल से दूसरे मंडल में जाता है तब दोनों सूर्यों के मंडल के अन्तर २ योजन ४८/६१ और २ योजन ४८/६७ का जोड़ करने पर ५ योजन ३५/६१ भाग होता है।

सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान दोनों सूर्यों का परस्पर अन्तर

दोनों सूर्यों की अपेक्षा प्रतिमंडल ५ योजन ३५/६१ भाग अन्तर पूर्व में उजाया है। मेष आभ्यन्तर मंडल से सर्वबाह्यमंडल १८३ वा होता है। १८३ को ५ योजन ३५/६१ में गुणा करने पर 3×360 इस प्रकार १०२० योजन अन्तर आता है। इस १०२० योजन अन्तर को ९९६/४०

६१

में मिलाएँ पर १००६६० योजन आता है। जो सर्वबाह्यमंडल में वर्तमान दो सूर्यों का परस्पर अन्तर है।—सूत्र १५

॥ प्रथम प्राभूत का चौथा प्राभूत-प्राभूत समाप्त ॥

एक ग्रहोरात्र में सूर्य का सचरण-क्षेत्र

सूर्य एक ग्रहोरात्र में २ योजन ४८/६१ भाग सचरण करता है। सूर्य १८३ दिवस में ५१० योजन सचरण करता है, जिससे एक दिवस में २ योजन ४८/६१ भाग सचरण करता है।

१८३ मडल का १८३ दिवस में सूर्य सचरण करता है। एक दिवस में एक मडल में सचरण करता है। सूर्य के सबमडलों का सचरण क्षेत्र ५१० योजन का है। एक मडल का एक दिवस का सचरण २ योजन ४८/६१ भाग होता है। —सूत्र १८

॥ प्रथम प्राभूत का छठा प्राभूत-प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र २०

प्रत्येक मडल का विष्कम्भ आयाम

जब सूर्य सर्वाभ्यन्तरमडल में हो तब १ लाख योजन का ४८/६१ भाग वाहल्य से ९९६४० योजन आयाम विष्कम्भ से ३१५०८९ योजना परिक्षेप से सन्नमण करता है तब १८ मुहूर्त का उत्कृष्ट दिवस और जघय १२ मुहूर्त की रात्रि होती है।

जब सूर्य सर्वाभ्यन्तरमडल के अनन्तरवर्ती मडल में सन्नमण करता है तब १ योजन का ४८/६१ भाग वाहल्य से ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग आयाम विष्कम्भ से, ३१५१०७ योजन विहित विशेष न्यून परिक्षेप से चार (गति) करता है। तब दिवस और रात्रि का प्रमाण सर्वाभ्यन्तरमडल के समान ही होता है।

सर्वाभ्यन्तरमडल में आयाम विष्कम्भ का प्रमाण

एक सूर्य १८० योजन अवगाहन करके गति करता है। जम्बूद्वीप के दोनों सूर्य की अपेक्षा ३६० योजन अवगाहना जम्बूद्वीप क्षेत्र के १ लाख योजन प्रमाण में से कम करने पर ९९६४० योजन रहते हैं। जो सर्वाभ्यन्तरमडल का आयाम-विष्कम्भ है।

सूत्र २०

सर्वाभ्यन्तरमडल का परिक्षेप

सर्वाभ्यन्तरमडल का परिक्षेप (३१५०८९) योजन है। वह इस प्रकार है—

(सर्वाभ्यन्तरमडल का विष्कम्भ) $^2 \times १०$ इस सूत्र से परिक्षेप या विचार करने पर निम्न प्रकार से होगा।

$$\begin{array}{r} \hline) (९९६४०)^2 \times १० \\ \hline) ९९२८१२९६०० \times १० \\ \hline) ९९२८१२९६००० \\ \hline \end{array}$$

)
	९९२८१२९६०००
	३१५०८९ योजन परिक्षेप
)
३	९९२८१२९६०००
+३	९
-----	-----
६१	०
+१	६१
-----	-----
६२५	३१८१
+५	३१२५
-----	-----
६३००८	००५६२९६०
+८	५०४०६४
-----	-----
६३०१६९	०५६८९६००
+९	५६७१५२१
-----	-----
६३०१७८	००१८०७९

उक्त प्रकार से गणित करने पर सर्वाभ्यतरमडल का परिक्षेप ३१५०८९ योजन होता है और १८०७९ शेष रहते हैं।

प्रत्येक मडल का परिक्षेप

प्रत्येक मडल में ५ योजन ३५/६१ भाग आयाम-विष्कभ में वृद्धि होती है। तदनुसार सर्वाभ्यतरमडल के अनन्तरवर्ती मडल या आयाम विष्कभ ९९६४५ योजन ३५/६१ भाग है। प्रत्येक मडल का परिक्षेप निवालेने के लिए (जानने के लिए) ५ योजन के इक्कमठिया भाग करने पर $५ \times ६१ = ३०५$ आते हैं। उनमें ३५ भाग और मिलाने पर ३४० होते हैं।

परिक्षेप निकालने की विधि—

$$\begin{array}{r} (विष्कभ का)^2 \times १० \\ \hline) (३४०)^2 \times १० \\ \hline) ११५६०० \times १० \\ \hline) ११५६००० \end{array}$$

	१०७५	
१) ११५६०००	
१	१	
२०७	०१५६०	
७	१४४९	
२१४५	०१११००	
५	१०७२५	
२१५०	००३७५	

१०७५ के योजन बनाने के लिए ६१ से भाग देने पर [१०७५—६१] १७ योजन ३८/६१ आयेगे। प्रत्येक मडल में १७ योजन ३८/६१ भाग परिक्षेप बढ़ता है।

प्रत्येक परिमडल का परिक्षेप व्यवहार से १८ योजन और निश्चय से १७ योजन ३८/६१ भाग है। प्रत्येक मडल का परिक्षेप में १८ योजन मिलाने पर दूसरे मडल का परिक्षेप होता है। ऐसा करने पर सूय सक्रमण करता-करता सबवाह्य मडल में आता है तब आयाम विष्कभ १००६६० होता है।

सबवाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१४ ८६९ है।

व्यवहार से ६१८३१५ योजन होता है।

सबवाह्य मडल का आयाम विष्कभ-परिक्षेप निकालने की विधि

प्रत्येक मडल में ५ योजन ३५/६१ भाग बढ़ता है जिससे सर्ववाह्यमडल में कितनी वृद्धि होगी ?

परिमडल १८३ होने से ५ योजन ३५/६१ भाग से गुणा करने पर १८३ मडल × ५ योजन = ९१५ योजन होते हैं।

३५ भाग × १८३ मडल = ६४०५ होते हैं। इनके योजन बनाने के लिए ६४०५ को ६१ से भाग देने पर १०५ योजन आते हैं। पूर्वोक्त ९१५ योजन में १०५ योजन मिलाने से १०२० योजन होते हैं। सर्वाभ्यतरमडल के आयाम ९९६४० योजन में १०२० योजन जोड़ने से सर्ववाह्यमडल का १००६६० योजन आयाम होता है।

सबवाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१५ योजन है। जिसको प्राप्त करने की विधि इस प्रकार है—

सबवाह्यमडल का परिक्षेप निकालने की विधि

परिक्षेप निकालने के लिए।

	(आयाम) × १०
	(१००६००) × १०
	१०१३२४३५६०० × १०
	३१८३१४ ८६९ योजन परिक्षेप
३	१०१३२४३५६०००
३	९
६१	११३
१	६१
६२८	५२२४
८	५०२४
६३६३	०२००३५
३	१९०८९
६३६६१	००९४६६०
१	६३६६१
६३६६२४	३०९९९००
४	२५४६४९६
६३६६२७८	०५५३४०४००
८	५०९३०३०६
६३६६२९६६	०४४१००९६००
६	३८१९७५७९६
६३६६२९७२९	५९०३३८०४००
९	५६२९६६७५६१

इस प्रकार ८६९ हजार से कम हैं, परन्तु 'अर्धाद्विधमेव ग्राह्यम्' इस आय से ३१४ के स्थान पर ३१५ ग्रहण किये हैं। इस प्रकार सबग्राह्यमंडल का परिक्षेप ३१८३१४ योजन (व्यवहार में) होता है।

सर्वाभ्यन्तरमंडल का परिक्षेप ३१५०८९ याजन है। पूर्व में यथाई गई नीति से प्रत्येक मंडल के परिक्षेप में १७ याजन ३८/६१ भाग की वृद्धि होगी है तो १८३ मंडल में वितने योजन परिक्षेप की वृद्धि होती है ?

१८३ मडल × १७ योजन = ३१११ योजन होते हैं ।

१८३ मडल × ३८ (योजन का भाग) करने पर ६९५४ भाग आयेंगे ।

६९५४ भाग के योजन करने के लिये ६१ से भाग देने पर ११४ योजन होंगे ।

३१११ योजन में ११४ योजन मिलाने पर ३२२५ योजन १८३ परिमडल की परिक्षेप वृद्धि होती है ।

सर्वाभ्यतरमडल के परिक्षेप ३१५०८९ योजन में ३२२५ योजन के मिलाने पर सबवाह्य मडल का परिक्षेप ३१८३१४ होगा ।

इस सूत्र के मूल पाठ में ३१८३१५ योजन सबवाह्यमडल का परिक्षेप कहा है । वह व्यवहार से समझना चाहिये । क्योंकि पूर्व में प्रत्येक मडल का परिक्षेप निकालने पर ३७५ शेष बढते हैं । उनको १८३ मडल में गुणा करने पर ६८६२५ आते हैं । इस सट्या को २१५० से भाग देने पर ३१ आते हैं । जो ६१ के अघभाग की अपेक्षा विशेष होने से व्यवहार से पूण मानकर ३१८३१५ कहे हैं ।

प्रत्येक मडल का अंतर २ योजन ४८।६१ भाग है । दोनों सूत्र के मडल का अंतर ५ योजन ३५/६१ भाग है । सबमडल का क्षेत्र ५१० योजन है । — सूत्र २०

॥ प्रथम प्राभूत का अष्टम प्राभूत-प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र २३

सूत्र की प्रत्येक मडल में प्रतिमुहूर्त की गति

सूर्य जब मडल में सक्रमण करता है तब अपनी एक विशेष गति से सनमण करता है । भरतक्षेत्र और ऐरवत क्षेत्र के दोनों सूत्र अपनी विशिष्टगति से सक्रमण करके ६० मुहूर्त में १ मडल को परित्रमा पूण करते हैं ।

अर्थात् २ अहोरात्र में दोनों सूत्र १ मडल की परित्रमा पूण करते हैं ।

प्रत्येक मुहूर्त की सूत्र की विशेष गति इस सूत्र से ज्ञात की जा सकती है—

१ मुहूर्त की गति = मडल की परिधि—२ अहोरात्र के मुहूर्त

१ अहोरात्र के ३० मुहूर्त के अनुसार २ अहोरात्र के ६० मुहूर्त होते हैं ।

सर्वाभ्यतरमडल की परिधि ३१५०८९ योजन है ।

सर्वाभ्यतरमडल की परित्रमा दोनों सूर्य ६० मुहूर्त में पूण करते हैं ।

सर्वाभ्यतरमडल में सूर्य की १ मुहूर्त की गति

सर्वाभ्यतरमडल की परिधि—६० मुहूर्त = १ मुहूर्त की गति ।

३१५०८९ योजन—६० मुहूर्त = ५२५१ योजन २९/६० भाग सूत्र की १ मुहूर्त की गति है ।

प्रत्येक मडल की परिधि में व्यवहार से १८ योजन का अंतर होता है। अर्थात् सर्वाभ्यन्तर मडल की परिधि में १८ योजन मिलाने पर सर्वाभ्यन्तरमडल के अनन्तरवर्ती दूसरे में उसकी परिधि आती है। तदनुसार दूसरे मडल की परिधि में १८ योजन मिलाने पर तीसरे मडल की परिधि आती है।

इस प्रकार प्रत्येक मडल की परिधि ज्ञात की जा सकती है।

प्रत्येक मडल में सूय की एक मुहूर्त्त में कितनी गतिवृद्धि होती है, यह जानने के लिये इस सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

प्रत्येक मडल में परिधि की वृद्धि—६० मुहूर्त्त।

प्रत्येक मडल में १८ योजन परिधि में वृद्धि होती है। उसे ६० मुहूर्त्त से भाग देने पर १ मुहूर्त्त में होने वाली गतिवृद्धि प्राप्त होगी।

१८ योजन प्रत्येक मडल की परिधि में होने वाली वृद्धि—६० मुहूर्त्त = १८।६० योजन १ मुहूर्त्त में गति में वृद्धि होती है।

सूर्य के दृष्टिपथ क्षेत्र का अंतर ज्ञात करने की विधि

उस-उस मडल में विद्यमान सूय दृष्टिपथ के क्षेत्र का अंतर ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिए—

सूर्य की उस-उस मडल में एक मुहूर्त्त की गति × दिनमान का अर्धभाग।

सर्वाभ्यन्तर मडल में सूय के दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण ४७२६३ योजन २१।६० भाग है। उसको जानने के लिये उपयुक्त सूत्र का उपयोग करने पर—५२५१ योजन २९।६० भाग।

(सर्वाभ्यन्तरमडल में सूय की एक मुहूर्त्त की गति) × ९ मुहूर्त्त (दिनमान का अर्धभाग)

$$\frac{३१५०८९ \times ९}{६०}$$

$$\frac{२८३५८०१}{६०}$$

$$= ४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यन्तर मडल में सूय का दृष्टिपथ क्षेत्र है।$$

सर्वाभ्यन्तर मडल में सूय का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण जानने की दूसरी विधि

उस-उस मडल की परिधि × दिनमान का अर्धभाग

६०

सर्वाभ्यन्तरमडल की परिधि × दिनमान का अर्धभाग

६०

$$\frac{३१५०८९ \times ९}{६०}$$

६०

$$= \frac{२८३५८०१}{६०}$$

$$६०$$

= ४७२६३ योजन २१।६० भाग सर्वाभ्यन्तरमडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र है।

सर्वबाह्यमडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

सर्वबाह्यमडल में सूर्य की एक मुहूर्त की गति

सर्वबाह्यमडल की परिधि

३१८३१५ योजन

मडल की परिष्ठा करते हुए लगता समय =

६० मुहूर्त

= ५३०५ योजन १५।६० भाग १ मुहूर्त में सूर्य की गति।

सर्वबाह्यमडल में सूर्य का दृष्टिपथ क्षेत्रप्रमाण ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करना चाहिये—

सर्वबाह्यमडल में सूर्य की १ मुहूर्त में गति × दिनमान का अर्धभाग

$$= \frac{३१८३१५ \times ६ \text{ मुहूर्त दिनमान का अर्धभाग}}{६०}$$

$$६०$$

$$= \frac{१९०९८९०}{६०}$$

$$६०$$

= ३१८३१ योजन ३०।६० भाग सर्वबाह्यमडल में दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण।

द्वितीय विधि—

परिधि × दिनमान का अर्धभाग

$$६०$$

$$= \frac{३१८३१५ \times ६}{६०}$$

$$६०$$

$$= \frac{१९०९८९०}{६०}$$

$$६०$$

= ३१८३१ योजन ३०।६० भाग सर्वबाह्यमडल में दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण

१—उस-उस मडल में सूर्य की १ मुहूर्त की गति निकालने के लिये उस-उस मडल की परिधि को ६० से भाग देने पर १ मुहूर्त की गति प्राप्त होती है।

२—दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण निकालने के लिये १ मुहूर्त को गति को (सूर्य की) दिनमान के अर्धभाग से गुणा करने पर जो लब्धि आये वह दृष्टिपथ क्षेत्र का प्रमाण जानना चाहिये । — सूत्र २३
॥ दूसरा प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र २४

सूर्य द्वारा प्रकाशमान क्षेत्र का प्रमाण

जब सूर्य सर्वाभ्यन्तरमंडल में वतमान होता है तब जम्बूद्वीप के कल्पित पाँच चक्रवाल में से डेढ़ भाग प्रकाशित करता है और एक भाग अप्रकाशित होता है ।

जम्बूद्वीप में वतमान दोनों सूर्य की अपेक्षा पाँच चक्रवाल में से तीन भाग प्रकाशित करते हैं और दो भाग अप्रकाशित होते हैं । अर्थात् जम्बूद्वीप के कल्पित पाँच भाग में से तीन भाग दिन होता है और दो भाग रात्रि होती है ।

जम्बूद्वीप के ३६६ भाग की कल्पना करने पर १ भाग (चक्रवाल) के ७३२ भाग होते हैं, ३ चक्रवाल के २१९६ भाग होते हैं । अर्थात् ३६६० भाग में से २१९६ भाग का दिवस होता है १४६४ भाग रात्रि होती है, अथवा दोना सूर्य ६० मुहूर्त में १ मंडल की परिभ्रमा पूरा करते हैं । जम्बूद्वीप के पाँच चक्रवाल की कल्पना करने पर १ चक्रवाल १२ मुहूर्तात्मक होता है । १० मुहूर्त का पाल जम्बूद्वीप के ३६६० भाग की कल्पना में ७३२ भागात्मक होता है ।

सर्वाभ्यन्तर मंडल से सूर्य जब सबवाह्यमंडल की ओर गमन करता है तब प्रतिमंडल में अहोरात्र में २।६१ भाग हानि-वृद्धि होती है ।

सर्वाभ्यन्तर मंडल को बम करो पर सबवाह्य मंडल १८३ वा आता है । जिससे १८३ × २ करने पर ३६६/६१ भाग की हानि-वृद्धि अहोरात्र में होती है । अर्थात् ६ मुहूर्त दिवस में हानि और रात्रि में वृद्धि होती है । दोनों सूर्य की अपेक्षा १२ मुहूर्त की हानि-वृद्धि होती है । सबवाह्यमंडल में सूर्य १ भाग प्रकाशित करता है और डेढ़ भाग अप्रकाशित रहता है ।

पूव में बताये गये अनुसार एक-एक सूर्य की अपेक्षा १ भाग दिवस और डेढ़ भाग रात्रि रहती है । दोनों सूर्य की अपेक्षा २ भाग दिवस और तीन भाग रात्रि होती है ।

सर्वाभ्यन्तरमंडल में ३ भाग दिवस और २ भाग रात्रि होती है ।

सबवाह्यमंडल में २ भाग दिवस और ३ भाग रात्रि होती है ।

१ भाग १२ मुहूर्तात्मक जानना चाहिए ।

जम्बूद्वीप के ५ चक्रवाल की परिपल्पा १ चक्रवाल होता है ।
अथवा दोना सूर्य की अपेक्षा ६० मुहूर्त का वा १ होता है ।

॥ तीसरा प्राभूत

समाप्त ॥

सूत्र २५

तापक्षेत्र की सस्थिति

तापक्षेत्र की सस्थिति की आभ्यन्तर-बाह्य का परिक्षेप

९४८६ योजन ९/१० भाग है।

उसका गणित निम्न प्रकार है—

परिक्षेप	=) (आयाम) ^२ × १०
=) (विष्कम्भ) ^२ × १० (उसका विष्कम्भ) ^२ × १०
=	(१००००) ^२ × १०
=) १०००००००० × १०
=) १०००००००००
	३ १ ६ २ २ ० ७ ७ ६
३	=) १०००००००००
३	९
—	—————
६१	१००
१	६१
—	—————
६२६	३९००
६	३७५६
—	—————
६३२२	०१४४००
२	१२६४४
—	—————
६३२४२	०१७५६००
२	१२६४८४
—	—————
६३२४४७	०४९११६००
७	४४२७१२९
—	—————
६३२४५४७	०४८४४७१००
७	४४२७१८२९
—	—————

$$\frac{६३२४५५४६}{६}$$

$$६३२४५५५२$$

$$०४२७५२७१००$$

$$\frac{३७९४७३२७६}{४८०५३८२४}$$

$$४८०५३८२४$$

७७६ एक हजार के अर्धभाग (५००) की अपेक्षा अधिक है। 'अर्द्धाद्रुघ्नमेक प्राह्यम्' व विधान से पूर्व सख्या गिन कर व्यवहार से ३१६२३ योजन बतलाये हैं।

उनके तिगुने करने से ९४८६९ होते हैं। उनको १० से भाजित करने पर ९४८६९ योजन ९/१० भाग सर्वाभ्यन्तर तापक्षेत्र सन्धिति की सर्वाभ्यन्तर-बाह्य का परिमाण है।

जम्बूद्वीप के परिक्षेप से सर्वबाह्य बाह्य का परिमाण

$$\text{परिक्षेप} = (\text{विष्कम्भ})^2 \times १०$$

जम्बूद्वीप का परिक्षेप प्रसिद्ध है। उसे ३ से गुणा करके १० से भाग देने पर ९४८६९ योजन ४/१० होते हैं।

जम्बूद्वीप का परिक्षेप ३१६२२७ योजन, ३ गव्यूति १२८ योजन और १३३ अगुल है। परतु व्यवहार में ३१६२२८ योजन मानकर इसे गुणा करने पर ९४८६९४ योजन होते हैं। उनको १० से भाग देने पर ९४८६९ योजन ४/१० भाग सर्वबाह्य बाह्य का परिमाण होता है।

उत्तर-दक्षिण दिशा से तापक्षेत्र का आयाम

आयाम = उत्तर-दक्षिण दिशा का अंतर

विष्कम्भ = पूर्व-पश्चिम दिशा का अंतर

तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ योजन १/३ भाग है।

मेरुपर्वत में जम्बूद्वीपपर्यन्त ४५००० योजन है।

सवणसमुद्र के विस्तार का छठा भाग ३३३३३ योजन है। दोनों का जोड़ करके पर तापक्षेत्र का आयाम परिमाण ७८३३३ योजन होता है।

अर्धकार सन्धिति की सर्वाभ्यन्तर बाह्य का परिमाण

अर्धकार सन्धिति की सर्वाभ्यन्तर बाह्य का परिमाण ६३२४ योजन ६/१० भाग है।

मेरुपर्वत के परिक्षेप को २ से गुणा कर १० से भाजित करने पर आभ्यन्तर बाह्य का परिमाण ज्ञात होता है।

मेरुपर्वत को परिधि ३१६२३ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४६ योजन होते हैं। उन्हें १० से भाग देने पर ६३२४ योजन ६/१० अर्धकार सन्धिति की सर्वाभ्यन्तर बाह्य का परिमाण है।

सवणसमुद्र की निश्चयिता जम्बूद्वीप तक की अर्धकार सन्धिति की सर्वबाह्य बाह्य

जम्बूद्वीप की परिधि के २ से गुणा कर १० से भाग देने पर सर्वबाह्य बाह्य का परिमाण

प्राप्त होता है। जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२८ योजन है। उसे २ से गुणा करने पर ६३२४५६ योजन होते हैं। जिन्हे १०६३२४५ योजन ६/१० भाग सबवाह्य वाहा का परिमाण होता है।

अधकार सस्थिति की लम्बाई तापमान की लम्बाई जितनी जाननी चाहिए।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे जो तापमान की स्थिति है वह सबवाह्य मडल मे अधकार की स्थिति जानना चाहिये।

सर्वाभ्यन्तरमडल मे जो अधकार की स्थिति है वह सबवाह्यमडल मे ताप की स्थिति जानना चाहिए। अर्थात् सबवाह्यमडल मे तापमान की आभ्यान्तर वाहा ६३२४ योजन ६/१० भाग है। सबवाह्य वाहा ६३२४५ योजन ६/१० भाग है। तापमान की लम्बाई ७८३३३ ३३३ योजन है।

अधकार की सस्थिति सबवाह्य मडल मे आभ्यान्तर वाहा ९४८६ योजन ९/१० भाग है। शेष वाहा ९४८६८ योजन ८/१० भाग है। अधकार सस्थिति की लम्बाई ७८३३३ ३३३ योजन है।

—सूत्र २५ समाप्त

॥ चतुर्थ प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र ३३

दसवें प्राभूत का दूसरा प्राभूत-प्राभूत

ग्रहोरात्र के ६७ भाग की कल्पना करनी चाहिये।

ग्रहोरात्र के ६७ भाग में से भाग सख्या	नक्षत्र सख्या	चन्द्र के साथ योग मुहूर्त	नक्षत्रनाम
२१	१	९ मु २७/६७	अभिजित
३३ भाग १/२	६	१५ मु	शतभिषा भरणी, आर्द्रा आश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा
६७	१५	३० मु	श्रवण, घनिष्ठा, पूर्वा भा० रेवती, अश्विनी, कृतिका मृगशिर, पुष्य, मघा, पू० फा० हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढा
१०० भाग १/२	६	४५ मु	उ० भा० रोहिणी पुन० उ फा विगाधा उत्तराषाढा०

उपयुक्त कोष्ठक नक्षत्र का चंद्र के साथ कितने मुहूर्त का योग होता है, यह बतलान के लिये है।

नक्षत्रों का सूर्य के साथ योग

नक्षत्र सख्या	सूर्य के साथ योग दिवस	मुहूर्त	नक्षत्रों का नाम
१	४	६	अभिजित
६	६	२१	शतभिषा, भरणी, आद्रा आश्लेषा, स्वाति, जेष्ठा
१५	१३	१२	श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा भा रेवती, अश्विनी, वृश्चिगा, मृगशिर, पुष्य, मघा, पू फा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल० पूर्वाषाढा
६	२०	३	उ भा, रोहिणी, पूनवसु उ फा, विशाखा, उ षाढा।

जो नक्षत्र चंद्रमा के साथ १ दिवस के ६७ भाग में से अथवा उससे विशेष जितने भाग गमन करता है, उसके पाँचवें भाग प्रमाण सूर्य के साथ दिवस और मुहूर्त के परिमाण से गमन करता है।

जैसे कि अभिजित नक्षत्र चंद्र के साथ २१।६७ भाग गमन करता है तो सूर्य के साथ कितना गमन करता है? यह जानने के लिये २१ भाग को ५ से भाग देने पर ४ दिवस १।५ भाग मुहूर्त आते हैं। १।५ के मुहूर्त निकानने के लिये ३० से गुणा करने पर ६ मुहूर्त आते हैं। जिसका अर्थ यह हुआ कि अभिजित नक्षत्र सूर्य के साथ ४ दिवस ६ मुहूर्त योग करता है। इस प्रकार अन्य स्थान पर भी समझना चाहिये।

१५ मुहूर्त चंद्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

शतभिषा नक्षत्र चंद्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग में से ३३।३ भाग योग करता है, तो सूर्य के साथ कितने दिवस और कितने मुहूर्त योग करता है?

$$\frac{६७}{२} - ५ = \frac{६७}{२} \times \frac{३}{२} = \frac{६७}{१०}$$

अतः ६ दिवस ७।१० मुहूर्त सूर्य के साथ योग करता है ।

१० के मुहूर्त जानने के लिए ३० से गुणा करने पर २१ मुहूर्त आते हैं । अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का सूर्य के साथ ६ दिवस और २१ मुहूर्त योग होता है ।

इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के लिये जानना चाहिये ।

३० मुहूर्त चंद्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

श्रवण नक्षत्र चंद्र के साथ १ दिवस के ६७ भाग योग करता है तो सूर्य के साथ कितने समय योग करता है ?

सूर्य के साथ होने वाले योग का समय जानने के लिये चंद्र के साथ होने वाले योग के समय को ५ से भाग देने पर जो भाज्य-भाजक भाव से उपलब्ध होता है वह नक्षत्र का सूर्य के साथ का योगकाल समझना चाहिये ।

$$६७ - ५ = १३\frac{२}{५} \text{ दिवस}$$

२।५ के मुहूर्त निकालने के लिये ३० से गुणा करने पर १२ मुहूर्त होते हैं । अतएव उस प्रकार से १३ दिवस १२ मुहूर्त अन्य नक्षत्र के साथ भी सूर्य का योगकाल जानना चाहिये ।

४५ मुहूर्त चंद्र के साथ योग करने पर नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल

उत्तर भाद्रपद नक्षत्र चंद्र के साथ $२\frac{१}{२}$ भाग योग करता है । उसका सूर्य के साथ कितने समय योग होता है, यह समझने के लिये ५ से भाग देने पर $२\frac{१}{२} \times \frac{५}{५}$ करने पर $२\frac{५}{२}$ आयेगा । उनके दिवस बनाने पर २० दिवस और ३ मुहूर्त समय होंगे । जो उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य के साथ योगकाल है ।

—सूत्र ३४ समाप्त

॥ दसवें प्राभूत का दूसरा प्राभूत-प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र ४०

पूर्णिमा और अमावस्या का चंद्र योग को अधिकार कर सन्निपात

पूर्णिमा	अमावस्या	कुल नक्षत्र	उपकुल नक्षत्र	कुलोपकुल नक्षत्र
१ श्रावणो	माघ	घनिष्ठा	श्रवण	अभिजित
२ भाद्रपदी	फाल्गुनी	उ भाद्रपद	पू भाद्रपद	शतभिषा
३ अश्विनी	चैत्री	अश्विनी	रेवती	
४ कार्तिक	वैशाखी	कृत्तिका	भरणी	
५ मागशीर्षी	जेष्ठा	मृगशिर	रोहिणी	

६	पीपी	आपाढी	पुष्य	पुनवसु	भार्द्रा
७	माध्वी	श्रावणी	मघा	भाश्लेपा	
८	फाल्गुनी	भाद्रपदी	उ फाल्गुनी	पू फाल्गुनी	
९	चत्री	श्रिविनी	चित्रा	हस्त	
१०	वशाखी	वातिकी	विशाखा	स्वाति	
११	ज्येष्ठा	मार्गशीर्षी	भूल	ज्येष्ठा	अनुराधा
१२	आपाढी	पीपी	उ पाढा	पू पाढा	

—सूत्र ४० समाप्त

॥ दशम प्रामृत का सातवाँ प्रामृत-प्रामृत समाप्त ॥

दशम प्रामृत का दसवाँ प्रामृत-प्रामृत

सूत्र ४३

वक्षिणायन

मास	पौरुषी	वृद्धि
१ श्रावण	२ पाद ४ अगुल	४ अगुल
२ भाद्रपद	० पाद ८ अगुल	८ अगुल
३ आशीज	३ पाद	१ पाद
४ वातिक	३ पाद ४ अगुल	१ पाद ४ अगुल
५ मार्गशीर्ष	३ पाद ८ अगुल	१ पाद ८ अगुल
६ पीप	४ पाद	२ पाद

उत्तरायण

मास	पौरुषी	ह्राति
१ माघ	३ पाद ८ अगुल	४ अगुल
२ फाल्गुन	३ पाद ४ अगुल	८ अगुल
३ चैत्र	३ पाद	१ पाद
४ वैशाख	० पाद ८ अगुल	१ पाद ४ अगुल
५ ज्येष्ठ	२ पाद ४ अगुल	१ पाद ८ अगुल
६ आषाढ	२ पाद	२ पाद

॥ दशम प्रामृत का दसवाँ प्रामृत-प्रामृत समाप्त ॥

दसवें प्राभूत का २२ (बाईसवाँ) प्राभूत-प्राभूत

सूत्र ६२

नक्षत्रसंख्या	सीमाविष्कभ भाग	नक्षत्र का नाम
२	६३०	दो अभिजित
अघशेन नक्षत्र १२	१००५	दो शतभिष यावत् दो ज्येष्ठा
समशेन नक्षत्र ३०	२०१०	दो श्रवण यावत् दो पूर्वाषाढा
द्व्यघशेन नक्षत्र १२	३०१५	दो उत्तराभाद्रपद यावत् दो उत्तराषाढा

५६ (नक्षत्र के नाम दसवें प्राभूत के दूसरे प्राभूत-प्राभूत में देखें)

१ अहीरात्र के ६७ भाग की कल्पना करना चाहिये ।

—सूत्र ६२ समाप्त ।

सूत्र ७२ वारहवाँ प्राभूत

सवत्सरों का प्रमाण

सवत्सर ५ प्रकार के कहे गये हैं—

१ नक्षत्र सवत्सर, २ चन्द्र सवत्सर, ३ ऋतु सवत्सर, ४ आदित्य सवत्सर, ५ अभिर्वाधत सवत्सर ।

१ नक्षत्र सवत्सर—नक्षत्र मास में २७ दिवस २१/६७ मुहूर्त होते हैं । नक्षत्रमास ११९ मुहूर्त २७/६७ भागात्मक है ।

नक्षत्र सवत्सर के दिवस कितने ?—३२७ दिवस ५१/६७ भाग होते हैं । नक्षत्र सवत्सर ९८३२ मुहूर्त ५५/६७ भागात्मक है ।

१ युग के ६७ नक्षत्र होते हैं ।

१ युग के १८३० दिवस होते हैं ।

नक्षत्रमास के दिवस ज्ञात करने के लिये १८३० को ६७ से भाग देने पर २७ दिवस २१/६७ भाग आते हैं ।

नक्षत्रमास के मुहूर्त जानने के लिये १ दिवस के ३० मुहूर्त से नक्षत्रमास के दिवसों को गुणा करने पर मुहूर्तों की संख्या प्राप्त होगी—

$$\frac{१८३० \times ३०}{६७} = \frac{५४९००}{६७} = ८१९ \text{ मुहूर्त } २७/६७ \text{ भाग}$$

नक्षत्रसवत्सर के दिवस ज्ञात करने के लिये नक्षत्रमास के दिवसों को १२ में गुणा करना चाहिये ।

$$\frac{१८३० \times १०}{६७} = \frac{२१९६०}{६७} = ३२७ \text{ दिवस } ५१/६७ \text{ मुहूर्त}$$

नक्षत्रसंवत्सर के दिवस होते हैं।

नक्षत्रसंवत्सर के मुहूर्त बनाने के लिये नक्षत्रसंवत्सर के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये।

ऐसा करने पर $\frac{२१९६०}{६७} \times \frac{३०}{६७} = \frac{६५८५००}{६७} = ९८३२ \text{ मुहूर्त } ५६/६७ \text{ भाग नक्षत्रसंवत्सर के मुहूर्त हैं।}$

२ चन्द्रसंवत्सर

चन्द्रमास के २९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त हैं।

चन्द्रमास ८८५ मुहूर्त ३०/६० भागात्मक है।

चन्द्रसंवत्सर ३५४ दिवस १२/६२ मुहूर्तात्मक है।

चन्द्रसंवत्सर १०६२५ मुहूर्त ५०/६२ भागात्मक है।

१ युग के चन्द्रमास ६२ हैं।

१ युग के दिवस १८३० हैं।

१ चन्द्रमास के दिवस जानने के लिये १८३० को ६२ से भाग देना चाहिये।

१८३०—६२ = २९ दिवस ३२/६२ मुहूर्त होते हैं।

चन्द्रमास के मुहूर्त जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये—

$$\frac{१८३० \times ३०}{६२} = \frac{५४९००}{६२} = ८८५ \text{ मुहूर्त } ३०/६२ \text{ भाग होते हैं।}$$

चन्द्रसंवत्सर के दिवस जानने के लिये चन्द्रमास के दिवसों को १२ से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{१८३० \times १२}{६२} = \frac{२१९६०}{६२} = ३५४ \text{ दिवस } १२/६२ \text{ मुहूर्तात्मक चन्द्रसंवत्सर होता है।}$$

चन्द्रसंवत्सर के मुहूर्त जानने के लिये वर्ष के दिवसों को ३० से गुणा करना चाहिये।

$$\frac{२१९६० \times ३०}{६२} = \frac{६५८५००}{६२} = १०६२५ \text{ मुहूर्त } ५०/६२ \text{ भाग होते हैं।}$$

३ ऋतुसंवत्सर

१ युग के ऋतुमास ६१ हैं।

१ ऋतुमास के दिवस ३० हैं।

- १ ऋतुमास के मुहूर्त ९०० हैं।
 १ ऋतुवष के दिवस ३६० हैं।
 १ ऋतुवष के मुहूर्त १०८०० हैं।

४ आदित्यसवत्सर

- १ युग के आदित्यमास ६० है।
 १ आदित्यमास के ३० $\frac{१}{२}$ दिवस है।
 १ आदित्यमास के ९१५ मुहूर्त होते हैं।
 १ आदित्यसवत्सर के ३६६ दिवस होते हैं।
 १ आदित्यसवत्सर के १०९८० मुहूर्त होते हैं।

५ अभिर्वाधतसवत्सर

- १ अभिर्वाधत मास के ३१ दिवस २९ मुहूर्त १७/६२ भाग होते हैं।
 १ अभिर्वाधत मास के ९५९ मुहूर्त १७/६२ भाग।
 १ अभिर्वाधत सवत्सर के ३८३ दिवस २१ मुहूर्त १८/६२ भाग होते हैं।
 १ अभिर्वाधत सवत्सर के ११५११ मुहूर्त १८/६२ भाग होते हैं। —सूत्र ७२ समाप्त।

सूत्र ७३

नौ युग के अहोरात्र का प्रमाण

	दिवस	मुहूर्त	वासठिया भाग	चूणित भाग
१ नक्षत्रसवत्सर	३२७	२२	५१	५५/६७
२ चंद्रसवत्सर	३५४	५	५०	×
३ ऋतुसवत्सर	३६०	×	×	×
४ आदित्यसवत्सर	३६६	×	×	×
५ अभिर्वाधतसवत्सर	३८३	२१	१८	×
	१७९१	१९	५७	५५/६७

नौ युग के मुहूर्त

$१७९१ \times ३० = ५३७३० + १९ = ५३७४९\frac{१}{२}$ ५५/६७ चूणित भाग।

नौ युग में कितने दिवस मिलाने पर युग पूरा होता है ?—

३८ दिवस १० मुहूर्त $\frac{१}{२}$ भाग १२/६७ चूणित भाग मिलाने से युग पूरा होता है।

कितने मुहूर्त मिलाने से युग के मुहूर्त पूर्ण होते हैं ?

$३८ \times ३० = १०४० + १० = ११$ मुहूर्त

११५० मुहूर्त $\frac{१}{२}$ भाग १२/६७ चूणित भाग मिलाने पर युग के मुहूर्त पूरा हो

युग के दिवस कितने ?

१८३० दिवस ।

युग के मुहूर्त कितने ?

१८३० × ३० = ५४९०० मुहूर्त ।

५४९०० मुहूर्त के कितने वासठिया भाग होते हैं ?

५४९०० × ६२ = ३४०३८०० वासठिया भाग ।

—सूत्र ७३ समाप्त ।

॥ वारहवाँ प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र ७६

तेरहवाँ प्राभूत

चन्द्रमा की हानि-वृद्धि

शुक्लपक्ष में वृद्धि होती है और वृष्णपक्ष में हानि होती है ।

शुक्लपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की वृद्धि होती है ।

वृष्णपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग की हानि होती है ।

चन्द्रमास का प्रमाण एव चन्द्रमास के मुहूर्तों का प्रमाण सूत्र ७२ के अनुसार जानना चाहिये ।

शुक्लपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग है ।

वृष्णपक्ष में ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग है ।

एकपक्ष १४ दिवस ४७/६२ भागात्मक है ।

—सूत्र ७९ समाप्त ।

सूत्र ८०

१ युग में ६२ पूर्णिमा और ६२ अमावस्या होती हैं ।

अमावस्या और पूर्णिमा तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं ।

पूर्णिमा में अमावस्या तक ४४२ मुहूर्त ४६/६२ भाग होते हैं ।

पूर्णिमा से पूर्णिमा तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं ।

अमावस्या से अमावस्या तक ८८५ मुहूर्त ३०/६२ भाग होते हैं ।

—सूत्र ८० समाप्त ।

॥ तेरहवाँ प्राभूत समाप्त ॥

सूत्र ८३

षट्ठहवाँ प्राभूत

एक मुहूर्त में चन्द्र की गति

एक मुहूर्त में चन्द्र उत्त-उत्त मंडल के १७६८ भाग गति करता है ।

१ युग के अघमंडल १७६८ हैं । १ युग में १८३० दिवस हैं ।

दो अघमंडल अर्थात् एक मंडल की परित्रमा चन्द्र कितने रात्रि दिवस में पूरा करता है ?

यह बात बरने के लिये—

$$\frac{१८३० \text{ दिवस} \times २ \text{ अघमडल}}{१७६८ \text{ भाग}} = \frac{३६६०}{१७६८}$$

= २ दिवस १२४/१७६८ भाग आते हैं।

१२४/१७६८ भाग के मुहूर्त बनाने के लिये उन्हें ३० से गुणा करने पर—

$$\frac{१२४ \times ३०}{१७६८} = \frac{३७२०}{१७६८} = \frac{४६५}{२२१}$$

= २ दिवस २ मुहूर्त २३/२२१ भाग में चन्द्र एक मडल पूर्ण करता है।

एक मुहूर्त की गति कितनी ?

६२ मुहूर्त २३/२२१ भाग में चन्द्र १०९८०० भाग (मडल का परिक्षेप) गति करता है तो एक मुहूर्त की गति जानने के लिये—

$$\frac{२२१ \times १०९८००}{१३७२५} = \frac{२४२६५८००}{१३७२५}$$

१७६८ भाग

चन्द्र एक मुहूर्त में १७६८ भाग गमन करता है।

सूर्य एक मुहूर्त में १८३० भाग गति करता है।

सूर्य दो दिवस में एक मडल पूर्ण करता है।

अर्थात् ६० मुहूर्त में १०९८०० भाग गमन करता है।

एक मुहूर्त में कितने भाग गमन करता है ?

$$\frac{१०९८००}{६०} = १८३०$$

सूर्य एक भाग में १८३० भाग गमन करता है।

नक्षत्र एक मुहूर्त में १८३५ भाग गमन करता है।

मुहूर्त जानने के लिये एक मडल का सन्मण काल निकालना जरूरी है।

१८३५ अघमडल पूर्ण करने में १८३० दिवस लगते हैं।

दो अघमडल पूर्ण करने में कितने दिवस लगते हैं ?

$$\frac{२ \times १८३०}{१८३५} = १ \text{ दिवस } १८२५/१८३५ \text{ मुहूर्त}$$

१८२५ भाग के मुहूर्त बनाने के लिये $\frac{१८२५ \times ३०}{१८३५}$

$$= \frac{५४७५०}{१८३५} = २९ \text{ मुहूर्त } ३०७/३६७ \text{ आते हैं।}$$

अर्थात् नक्षत्र को एक मंडल पूर्ण करने में १ दिवस २९ मुहूर्त ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
 अर्थात् ५९ मुहूर्त में ३०७/३६७ भाग समय लगता है।
 अर्थात् ५९ मुहूर्त में १०९८०० भाग परिक्षेप करता है।
 एक मुहूर्त में कितने भाग परिक्षेप करेगा ?

$$\frac{५९ \quad ३०७}{३६७}$$

$$= \frac{२१९६०}{३६७}$$

$$\frac{३६७ \times १०९८००}{२१९६०}$$

= १८३५ भाग एक मुहूर्त में गमन करता है।

सूय-चंद्र की गति में क्या विशेषता है ?

सूय-चंद्र की अपेक्षा ६२ भाग विशेष गमन करता है।

सूय १८३०—चंद्र १७६८ = ६२ भाग

जब चंद्र गति समाप्त हो तब नक्षत्र की गति से क्या विशेष है ?

नक्षत्र ६७ भाग विशेष गति करता है। क्योंकि नक्षत्र १८३५ भाग गमन करता है।

चंद्र १७६८ भाग गमन करता है।

नक्षत्र १८३५—चंद्र १७६८ = ६७ भाग अधिक गमन करता है।

सूय ८५

नक्षत्रमास में चंद्र कितने मंडल गति करता है ?

चंद्र एक नक्षत्रमास में १३ मंडल १३/६७ भाग गति करता है। इसका कारण यह है कि एक युग के नक्षत्रमास ६७ हैं। चंद्र मंडल ८८४ है। ६७ नक्षत्रमास में ८८४ चंद्रमंडल चंद्र गति करता है। एक नक्षत्रमास में कितने मंडल गति करता है ?

$$८८४ - ६७ = १३ \text{ मंडल } १३/६७ \text{ भाग गति करता है।}$$

नक्षत्रमास में सूय कितने मंडल गति करता है ?

१३ मंडल ४४/६७ भाग गति करता है।

एक युग के ६७ नक्षत्रमास में ९१५ सूयमंडल की गति करे तो एक मास में कितने मंडल गति करता है ?

$$\frac{९१५}{६७} = १३ \text{ मंडल } ४४/६७ \text{ भाग गति करता है।}$$

नक्षत्रमास में नक्षत्र कितने मंडल गति करता है ?

एक युग के ६७ नक्षत्रमास में १८३५ अर्धमंडल गति करता है।

$$\frac{१८३५}{६७} = २७ \text{ अर्धमंडल } २६/६७ \text{ भाग}$$

उनके मंडल बनाने के लिये २ से भाग देने पर

$$\frac{१८३५}{६७} - २ = १३ \frac{४६१}{६७} \text{ मंडल}$$

चंद्रमास में चंद्र कितने मंडल गति करता है ?

१२४ पव में ८८४ मंडल गति करता है।

२ पव में कितने मंडल गति करता है ?

$$\frac{२ \times ८८४}{१२४} = \frac{१७६८}{१२४} = १४ \frac{३२}{१२४}$$

१४ मंडल तथा पन्द्रहवें मंडल के ३२/१२४ भाग।

चंद्रमास में सूर्य कितने मंडल गति करता है ?

१५ मंडल में चौथा भाग न्यून तथा १२४ भाग का एक अंश।

१४ मंडल तथा पन्द्रहवें मंडल के ९४/१२४ भाग।

वह किस प्रकार से ?

१२४ पर्व में ९१५ सूर्यमंडल गति करता है तो २ पर्व में कितने सूर्यमंडल गति करता है ?

$$\frac{२ \times ९१५}{१२४} = \frac{१८३०}{१२४} = १४ \frac{९४}{१२४} \text{ मंडल गति करता है।}$$

चंद्रमास में नक्षत्र कितने मंडल गति करता है ?

१४ मंडल तथा १५ वें मंडल के $\frac{९४}{१२४}$ भाग।

१२४ पव में १८३५ नक्षत्र अर्धमंडल गति करता है।

तो २ पव में कितने नक्षत्र अर्धमंडल गति करता है ?

$$\frac{२ \times १८३५}{१२४} = \frac{३६७०}{१२४} = २९ \frac{७४}{१२४}$$

दो अर्धमंडल का एक मंडल होता है तो दो से भाग देने पर—

$$\frac{३६७० - २}{१२४} = १४ \text{ मंडल तथा } ९९/१२४ \text{ भाग।}$$

ऋतुमास में चंद्र कितने मंडल गति करता है ?

६१ कममास में ८८४ चंद्रमंडल गति करता है।

तो कममास में कितने चन्द्रमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{८८४}{६१} = १४ \frac{३०}{६१}$$

१८ मण्डल तथा पन्द्रहवें मण्डल के ३०/६१ भाग ।

ऋतुमास में सूर्य कितने मण्डल की गति करता है ?

६१ कममास में ९१५ सूर्यमण्डल गति करता है ।

१ कममास में कितने सूर्यमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{९१५}{६१} = १५ \text{ मण्डल गति करता है ।}$$

ऋतुमास में नक्षत्र कितने मण्डल गति करता है ?

१०० ऋतुमास में १८३५ नक्षत्रमण्डल गति करता है ।

तो १ ऋतुमास में कितने नक्षत्रमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{१८३५}{१००} = १८ \frac{५}{१००} \text{ मण्डल गमन करता है ।}$$

सूर्यमास में चंद्र कितने मण्डल गमन करता है ?

६० सूर्यमास में ८८४ चन्द्रमण्डल गति करता है ।

तो १ सूर्यमास में कितने चंद्रमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{८८४}{६०} = १४ \frac{११}{१५}$$

१४ मण्डल पन्द्रहवें मण्डल का ११/१५ भाग ।

सूर्यमास में सूर्य कितने मण्डल गमन करता है ?

६० सूर्यमास में ९१५ सूर्यमण्डल गमन करता है ।

तो एक सूर्यमास में कितने सूर्यमण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{९१५}{६०} = १५ \frac{१५}{६०}$$

१५ मण्डल १/४ भाग ।

सूर्यमास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है ।

१०० सूर्यमास में १८३५ नक्षत्रमण्डल गमन करता है ।

तो १ सूर्यमास कितने नक्षत्रमण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{१८३५}{१००} = १८ \frac{३५}{१००} \text{ मण्डल}$$

१८ मण्डल ३५/१०० भाग

अभिर्वाधित मास मे चन्द्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के अभिर्वाधित मास $५७\frac{३}{१३}$ हैं ।

क्योंकि एक अभिर्वाधित मास के मुहूर्त पूर्व मे बताये गये अनुसार—

$$९५९\frac{१७}{६२} \text{ मुहूर्त का एक मास ।}$$

$$९५९ \times ६२ + १७ = \frac{५९४७५}{६२}$$

युग के मुहूर्त $१८३० \times ३० = ५४९००$ मुहूर्त । उनके ६२ भाग करना चाहिये
 $५४९०० \times ६२ = ३४०३८००$ भाग ।

$५९४७५/६२$ मुहूर्त का १ अभिर्वाधित मास होता है ।

५४९०० मुहूर्त के कितने मास होंगे ?

$$\frac{५४९०० \times ६२}{५९४७५} = \frac{३४०३८००}{५९४७५}$$

$$५७\frac{१३७३५}{५९४७५}$$

$$५७\frac{३}{१३} (\frac{४५७५}{१३} \text{ से छेद चलता है ।})$$

५७ अभिर्वाधित मास $३/१३$ भाग ।

$५७\frac{३}{१३}$ अभिर्वाधित मास मे ८८४ चन्द्रमण्डल गमन करता है ।

तो १ अभिर्वाधित मास में कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

$$५७\frac{३}{१३} = ७४४/१३ \text{ होते हैं ।}$$

$७४४/१३$ अभिर्वाधित मास मे कितने चन्द्रमण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{८८४ \times १३}{७४४} = \frac{११४९२}{७४४} = १५\frac{८३}{१८६}$$

१५ मण्डल चन्द्र गति करता है । $८३/१८६$ भाग ।

अभिर्वाधित मास मे सूर्य कितने मण्डल गमन करता है ।

एक युग के अभिर्वाधित मास $७४४/१३$ हैं, उनमे ९१५ सूर्यमण्डल गति करता है तो एक अभिर्वाधित मास मे सूर्य कितने मण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{११५ \times १३}{७४४} = \frac{११८९५}{७४४} = १५ \frac{२४५}{२४८}$$

१५ मण्डल तथा १६वें मण्डल में ३ भाग न्यून ।

अभिवाधित मास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करता है ?

एक युग के ७४४/१३ अभिवाधित मास हैं । उसमें $\frac{१८३५}{२}$ मण्डल गमन करता है ।

तो एक अभिवाधित मास में नक्षत्र कितने मण्डल गमन करेगा ?

$$\frac{१३ \times १८३५}{२ \times ७४४} = \frac{२३८५५}{१४८८} = १६ \frac{४७}{१४८८} \text{ मण्डल परिभ्रमण करेगा ।}$$

—सूत्र ८५ समाप्त ।

सूत्र ८६

प्राप्त १५

चंद्र रात्रि में कितने मण्डल परिभ्रमण करता है ?

एक युग के अहोरात्र १८३० हैं । उनमें १७६८ अर्धमण्डल गति करता है ।

तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{१७६८}{१८३०} = \frac{८८४}{९१५} \text{ एक अर्धमण्डल के ३१ भाग न्यून गति करता है ।}$$

सूर्य एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० हैं, उनमें १८३० अर्धमण्डल गति करता है । तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{१८३०}{१८३०} = १ \text{ अर्धमण्डल गति करेगा ।}$$

नक्षत्र कितने अर्धमण्डल गति करता है ?

एक युग के दिवस १८३० हैं । उनमें १८३५ अर्धमण्डल गति करता है । तो एक अहोरात्र में कितने अर्धमण्डल गति करेगा ?

$$\frac{१८३५}{१८३०} = १ \text{ अर्धमण्डल } \frac{५}{१८३०} \text{ भाग गति करता है ।}$$

एक मण्डल गति करने पर चन्द्र को कितना समय लगता है ?

८८४ मण्डल गति करने पर चंद्र का १८३० दिवस लगत हैं तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगेंगे ?

$$\frac{१८३०}{८८४} = २\frac{३१}{४४२} = \text{दो दिवस और } ३१/४४२ \text{ भाग में एक मण्डल गति करता है।}$$

एक मण्डल सूर्य कितने रात्रि-दिवस में गमन करता है।

९१५ मण्डल गति करने पर सूर्य को १८३० दिवस लगते हैं, तो एक मण्डल की गति करने पर कितने दिवस लगते हैं ?

$$\frac{१८३०}{९१५} = २ \text{ अहोरात्र}$$

नक्षत्र कितने दिवस में एक मण्डल गति करता है ?

$१८३५/२$ मण्डल गति करने पर नक्षत्र को १८३० दिवस लगते हैं तो एक मण्डल की गति करने पर नक्षत्र को कितने दिवस लगेंगे ?

$$\frac{१८३०}{१८३५} \times २ = \frac{७३२}{३६७} = १\frac{३६५}{३६८}$$

दो अहोरात्र में दो भाग कम एक अहोरात्र के ३६७ भाग।

युग में चन्द्र कितने मण्डल गति करता है ?

चन्द्र एक मुहूर्त में मण्डल के १०९८०० भाग में से १७६८ भाग गति करता है। युग के मुहूर्त ५४९०० हैं।

एक मुहूर्त में $१७६८/१०९८००$ गति करता है। तो ५४९०० मुहूर्त में कितनी गति करेगा ?

$$\frac{५४९००}{१०९८००} \times १७६८ = \frac{९७०६३२००}{१०९८००} = ८८४$$

= ८८४ मण्डल गति करता है।

युग में सूर्य के मण्डलों की संख्या ?

अर्थात् एक युग में सूर्य कितने मण्डल गति करता है ?

सूर्य एक मुहूर्त में $१८३०/१०९८००$ भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त में कितनी गति करेगा ?

$$\frac{५४९०० \times १८३०}{१०९८००} = ९१५ \text{ मण्डल गति करता है।}$$

युग मे नक्षत्रों की सख्या ?

अर्थात् एक युग मे नक्षत्र कितने मण्डल गति करता है ?

नक्षत्र एक मुहूर्त मे १८३५/१०९८०० भाग गति करता है तो ५४९०० मुहूर्त मे कितनी गति करेगा ?

$$\frac{54900 \times 1835}{109800} = \frac{1835}{2} = 917\frac{1}{2} \text{ मण्डल}$$

९१७ मण्डल १/२ भाग गति करेगा ।



सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र सूत्र २० त २४

सूरमडलस्त आयाम-विक्रमो परिक्रमेवो बाहल्ल च

प सूरमडले ण भते । केवइय आयाम विक्रमेण केवइय परिक्रमेण केवइय बाहल्लेण पणत्ते ?

उ गोयमा ! सूरमडले अडयालीस एगसट्टिभाए जोयणस्त आयाम-विक्रमेण^१ त तिगुण सविसेस परिक्रमेण चउवीस एगसट्टिभाए जोयणस्त बाहल्लेण पणत्ते ।

—जबु यख ७, सु १३०

जबुद्दीवे सूरिया पडुप्पन्न खेत ओभासति

प जबुद्दीवे ण भते । दीवे सूरिया कि तीय खेत ओभासति, पडुप्पन्न खेत ओभासति, अणायय खेत ओभासति ?

उ गोयमा ! नो तीय खेत ओभासति, पडुप्पन्न खेत ओभासति, नो अणायय खेत ओभासति ।

प त भते । कि पुट्ठ ओभासति, अपुट्ठ ओभासति ?

उ गोयमा ! पुट्ठ ओभासति, नो अपुट्ठ ओभासति जाव ।^२

प त भते ! कि एगदिसि ओभासति, छट्ठिसि ओभासति ?

१ (क) सूरमडले ण अडयालीस एगसट्टिभाए जोयणस्त विक्रमेण पणत्ते, —सम ५८, सु ३

(ख) सूरमडल जोयणे ण तेरसहि एगट्टिभाएहि जोयणस्त अण पणत्ते, —सम १३, सु ८

२ यावत् पद से सग्रहीत सूत्र

प त भते ! कि अणोगाड ओभासति, अणोगाड ओभासति ?

उ गोयमा ! अणोगाड ओभासति, नो अणोगाड ओभासति,

प त भते ! कि अणतरोगाड ओभासति, परपरोगाड ओभासति ?

उ गोयमा ! अणतरोगाड ओभासति, नो परपरोगाड ओभासति,

प त भते ! कि अणु ओभासति, वायर ओभासति ?

उ गोयमा ! अणु पि ओभासति, वायर पि ओभासति,

प त भते ! कि उड्डं ओभासति, तिरिय ओभासति अहे ओभासति ?

उ गोयमा ! उड्ड पि, तिरिय पि, अहे वि ओभासति ।

(अन्त)

उ गोयमा ! नो एगर्वित्त भोभासेत्ति, नियमा छद्दित्त भोभासेत्ति ।^१—विद्या स ८, उ ८, सु ३९, ४०

जम्बुद्वीपे सूरिया पट्टुप्पन्न सेत्त उज्जोवेत्ति

प जम्बुद्वीपे ण भते ! द्वीपे सूरिया कि तीय सेत्त उज्जोवेत्ति, पट्टुप्पन्नं सेत्त उज्जोवेत्ति, अभागयं सेत्त उज्जोवेत्ति ?

उ गोयमा ! नो तीये सेत्त उज्जोवेत्ति, पट्टुप्पन्न सेत्त उज्जोवेत्ति, नो अभागय सेत्त उज्जोवेत्ति, एवं तवेत्ति, एव भासति जाव नियमा छद्दित्त भासति ।^२

जम्बुद्वीपे सूरियाण ताव सेत्त पमाण —विद्या स ८, उ ८, सु ४१-४२

प जम्बुद्वीपे ण भते ! द्वीपे सूरिया केयइय सेत्त उड्ड तवति ? केयइय सेत्तं अहे तवति ? केयइयं सेत्तं तिरिय तवति ?

उ गोयमा ! एग जोयणसय उड्ड तवति,^३ अट्टारसजोयणसयाइ अहे तवति,^४ सीयात्तीस जोयणसह

प त भते ! कि भाइ भोभासेत्ति, मज्जे भोभासेत्ति, अठे भोभासेत्ति ?

उ गोयमा ! भाइ पि, मज्जे पि, अठे पि भोभासेत्ति,

प त भते ! कि तविसए भोभासेत्ति, अतिसए भोभासेत्ति ?

उ गोयमा ! तविसए भोभासेत्ति, नो अतिसए भोभासेत्ति,

प तं भते ! कि अणुपुंश्चि भोभासेत्ति, नो अणानुपुंश्चि भोभासेत्ति,

उ गोयमा ! अणुपुंश्चि भोभासेत्ति, नो अणानुपुंश्चि भोभासेत्ति,

प तं भते ! इदं दित्तं भोभासेत्ति ?

उ गोयमा ! नियमा छद्दित्तं भोभासेत्ति,

—विद्या स ८, उ ८, सु ३९ टिप्प

[प त भन ! कि एगर्वित्तं भोभासेत्ति, छद्दित्तं भोभासेत्ति ?

उ गोयमा ! नो एगर्वित्तं भोभासेत्ति, नियमा छद्दित्तं भोभासेत्ति ।] (पाठान्तर)

१ जंबु वन्य ७, सु १३७

२ जंबु वन्य ७ सु १३७

३ (क) जंबु वन्य ७, सु १३९

(घ) सूरिया पा ४ सु २५

भूप ५ विमान से ही योजन ऊपर जनेबचर यह का विमान है और वही तक ज्योतिष चक्र की सीमा है, अत इतने ऊपर भूप का तापसेन नहीं है ।

४ जम्बुद्वीप के पश्चिम महाद्वीप से जयंतशार की ओर सबणगमुद्र के समीप प्रथम एक हजार योजन पर्यंत भूमि नीचे है, इस धराणा से एक हजार योजन तथा मेघ के समीप की समभूमि से ८०० योजन ऊँचा भूप का विमान है, ये धाठ ही योजन संयुक्त करने पर अठारह ही योजन भूप विमान से नीचे की ओर का तापसेन है, अथ द्वीपों में भूमि शय रहती है । इसलिए वहाँ भूप का ताप का तापसेन केवल धाठ ही योजन का है । अठारह ही योजन नीचे की ओर क तापसेन के ओर ही योजन ऊपर की ओर के तापसेन के इन दोनों संख्याओं के समुक्त करने पर १९०० योजन का भूप का तापसेन है ।

स्ताइ बोणि तेवढे जोयणसए एकवीस च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरिय तवति ।^१

—विद्या स ८, उ ८, सु ४५

१, यहाँ विरहे तापद्योत्र वा कथन पूर्व-पश्चिम दिशा की अपेक्षा से कहा गया है, अर्थात् उत्कृष्ट इतनी दूरी पर स्थित सूर्य मानव चक्ष से देखा जा सकता है ।
उत्तर में १८० योजन यून पैंतालीस हजार योजन तथा दक्षिणदिशा में द्वीप में १८० योजन और लवणसमुद्र ५ तैतीस हजार तीन सौ तैतीस योजन तथा एब योजन के तृतीय भाग समुक्त दूरी से सूर्य देखा जा सकता है ।

अनध्यायकाल

[स्य० आचायप्रवर श्री आत्मारामजी म० द्वारा सम्पादित नदीसूत्र से उद्धृत]

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल में स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों में भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक ऋषि भी वेद के आध्यायों का उल्लेख करते हैं। इसी प्रकार अन्य आय ग्रंथों का भी अनध्याय बताया जाता है। जनागम भी सर्वशोक्त, देवाधिष्ठित तथा म्बरविद्या समुक्त होने के कारण, दावा भी आगमों में अनध्यायकाल वर्णित किया गया है, जैसे कि—

दमविधे अतलिविद्यते असज्भाए पण्णत्ते, त जहा—उक्कावाते, दिसिदाधे, गज्जिते, विग्गुत्ते, विग्घाते, जुत्ते, जयघालित्ते, धूमिता, महिता, रयत्तघाते।

दसविहे ओरालिते असज्भातिते, त जहा—अट्ठी, मस, सोणिते, असुतिसामत्ते, गुमाणामत्ते, चदोवरात्ते, मूरावरात्ते, पडने, राययुग्गहे, उवस्सयस्स अतो ओरालिए सरीरग।

—स्पानाङ्ग सूत्र, स्पान १०

नो कण्णत्ति निग्गघाण वा, निग्गघीण वा चत्तहि महापाडियएहि सज्भाय करित्तए, त जहा—आसाडपाडियए, इदमहापाडियए, वत्तअपाडियए सुग्गिहपाडियए। नो कप्पइ निग्गघाण वा निग्गघीण वा, चत्तहि सभाहि सज्भाय करेत्तए, त जहा—पडिमात्ते, पच्चिमात्त मज्जमण्हे, अट्ठरत्ते। कण्णत्ति निग्गघाण वा, निग्गघीण वा, चाउक्काल सज्भाय करेत्तए, त जहा—पुब्बण्ठे अररण्ठे, पभोत्ते, पच्चूस।

—स्पानाङ्ग सूत्र, स्पान ४, उद्देश २

उपयुक्त सूत्रपाठ के अनुसार, दस आनास से सम्बन्धित, दस शीदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सध्या, इस प्रकार बत्तीस अनध्याय मान गए हैं, जिनका संक्षेप में निम्न प्रकार से वर्णन है, जैसे—

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१ उल्कापात-तारापतन—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त वास्तव स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

२ बिम्बाह—जब तक दिशा रक्षणों की हो अर्थात् ऐसा मालूम पड़े कि दिशा में भाग मतगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३ गर्जित—बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४ विद्युत्—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

विद्युत् गजन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास में नहीं मानना चाहिए। अर्थात् ४८

गजन और विद्युत् प्राय ऋतु-स्वभाव मे ही होता है । अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पयन्त अनध्याय नही माना जाता ।

५ निर्घात—बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गजना होने पर, या बादलो सहित आकाश मे कडकने पर दो प्रहर तक अस्वाध्याय काल है ।

६ मूपक—शुक्लपक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सध्या की प्रभा और चद्रप्रभा के मित्रने से मूपक कहा जाता है । इन दिनों प्रहर रात्रि पयन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

७ यक्षादीप्त—कभी किसी दिशा मे बिजली चमकने जैसा, थोडे-थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है । अत आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

८ घूमिका कृष्ण—कार्तिक से लेकर माघ तक का समय मेघो का गभमास होता है । इसमे घूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धु घ पडती है । वह घूमिका-कृष्ण कहलाती है । जब तक यह धु घ पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

९ मिहिकाश्वेत—शीतकाल मे श्वेत वण की सूक्ष्म जलरूप धु घ मिहिका कहलाती है । जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्याय काल है ।

१० रज-उदघात—वामु के कारण आकाश मे चारो ओर धूलि छा जाती है । जब तक यह धुलि फली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

उपरोक्त दस कारण आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय के हैं ।

औवारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१२-१३ हड्डी, मांस और रधिर—पचेन्द्रिय तिर्यंच की हड्डी, मांस और रधिर यदि सामने दिखाई दें, तो जब तक वहा से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ तब तक अस्वाध्याय है । वृत्तिकार आस-पास के ६० हाय तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते हैं ।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, मांस और रधिर का भी अनध्याय माना जाता है । विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाय तब तथा एक दिन-रात का होता है । स्त्री के मासिक घम का अस्वाध्याय तीन दिन तक । बालक एव बालिका के जन्म का अस्वाध्याय त्रमस सात एव आठ दिन पयन्त का माना जाता है ।

१४ अशुचि—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है ।

१५ श्मशान—श्मशानभूमि के चारो ओर सौ सौ हाय पयन्त अस्वाध्याय माना जाता है ।

१६ चद्रग्रहण—चद्रग्रहण होने पर जपन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पयन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए ।

१७ सूर्यग्रहण—सूर्यग्रहण होने पर भी त्रमस आठ, बारह और सोलह प्रहर पयन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है ।

१८ पतन—किसी बड़े माय राजा अथवा राष्ट्रपुरुष का निघन होने पर जब तक उसका दाहसम्भार न हो, तब तक स्वाध्याय नहीं करता चाहिए। अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारुड न हो, तब तक तन धर्म स्वाध्याय करना चाहिए।

१९ राजव्युत्प्रह—समीपस्थ राजाभा में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शांति न हो जाए तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करें।

२० औदारिक शरीर—उपाश्रय के भीतर पंचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक पत्रवर पडा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जोय कलेवर पड़ा हो तो म्याध्याय नहीं करना चाहिए।

अस्वाध्याय के उपरोक्त १० कारण औदारिकशरीर सम्बन्धा बड़े गये हैं।

२१-२८ चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा—आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव हैं। इन पूर्णिमामा के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते हैं। इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२ प्रातः, सायं, मध्याह्न और अघरात्रि—प्रातः सुय उगने से एक घड़ी पहिले तथा एक घड़ी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घड़ी पहिले तथा एक घड़ी पीछे। मध्याह्न अर्धान् दोपहर में एक घड़ी आगे और एक घड़ी पीछे एवं अघरात्रि में भी एक घड़ी आगे तथा एक घड़ी पीछे स्वाध्याय नहीं करता चाहिए।



अर्थसहयोगी सदस्यो की शुभ नामावली

महास्तम्भ

सरसक

- | | |
|---|---|
| १ श्री सेठ मोहनमलजी चोरडिया, मद्रास | १ श्री विरदीचदजी प्रकाशचदजी तलेसरा, पाली |
| २ श्री गुलाबचदजी मागीलालजी सुराणा, सिकंदराबाद | २ श्री ज्ञानराजजी केवलचदजी मूधा, पाली |
| ३ श्री पुखराजजी शिशोदिया, ब्यावर | ३ श्री प्रेमराजजी जतनराजजी मेहता, मेहता सिटी |
| ४ श्री सायरमलजी जेठमलजी चोरडिया, बंगलोर | ४ श्री शा० जडावमलजी माणकचन्दजी बेताला, बागलकोट |
| ५ श्री प्रेमराजजी भवरलालजी श्रीश्रीमाल, दुग | ५ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चौपडा, ब्यावर |
| ६ श्री एस किशनचदजी चोरडिया, मद्रास | ६ श्री मोहनलालजी नेमीचन्दजी ललवाणी, चागाटोला |
| ७ श्री कवरलालजी बेताला, गोहाटी | ७ श्री दीपचदजी चदनमलजी चोरडिया, मद्रास |
| ८ श्री सेठ खीवराजजी चोरडिया मद्रास | ८ श्री पन्नालालजी भागचदजी जोधरा, चागाटोला |
| ९ श्री गुमानमलजी चोरडिया, मद्रास | ९ श्रीमती सिरैकुंवर बाई धमपत्नी स्व श्री सुगनचन्दजी फामड, मयुरान्तकम् |
| १० श्री एस बादलचदजी चोरडिया, मद्रास | १० श्री बस्तीमलजी मोहनलालजी बोहरा (K G F) जाडन |
| ११ श्री जे दुलीचन्दजी चोरडिया, मद्रास | ११ श्री यानचदजी मेहता, जोधपुर |
| १२ श्री एस रतनचदजी चोरडिया, मद्रास | १२ श्री भरुदानजी लाभचदजी सुराणा, नागौर |
| १३ श्री जे अन्नराजजी चोरडिया, मद्रास | १३ श्री खूबचन्दजी गदिया, ब्यावर |
| १४ श्री एस सायरचन्दजी चोरडिया, मद्रास | १४ श्री मिश्रीलालजी धनराजजी विनायकिया ब्यावर |
| १५ श्री आर शांतिलालजी उत्तमचन्दजी चोरडिया, मद्रास | १५ श्री इन्द्रचन्दजी वेद, राजनादगाव |
| १६ श्री सिरैमलजी हीराचदजी चोरडिया, मद्रास | १६ श्री रावतमलजी भीमचन्दजी पगारिया, वालाघाट |
| १७ श्री जे हुक्मीचदजी चोरडिया, मद्रास | १७ श्री गणेशमलजी धर्मोचदजी काकरिया, टगला |
| स्तम्भ सदस्य | |
| १ श्री अग्रचदजी फनेचदजी पारख, जोधपुर | १८ श्री सुगनचदजी वोक्डिया, इंदौर |
| २ श्री जसराजजी गणेशमलजी सचेती, जोधपुर | १९ श्री हरकचदजी सागरमलजी बेताला, इन्दौर |
| ३ श्री तिलोचदजी, सागरमलजी सचेती, मद्रास | २० श्री रघुनाथमलजी लिखमोचन्दजी सोडा, चागाटोला |
| ४ श्री पूसालालजी किस्तूरचदजी सुराणा, कटगी | २१ श्री सिद्धचरणजी शिखरचदजी बड, चागाटोला |
| ५ श्री आर प्रसन्नचदजी वोक्डिया, मद्रास | |
| ६ श्री दीपचदजी चोरडिया, मद्रास | |
| ७ श्री मूलचन्दजी चोरडिया, कटगी | |
| ८ श्री वदमान इण्टस्टीज, वानपुर | |
| ९ श्री मांगीलालजी मिश्रीनालजी चेतती, दुग | |

- २२ श्री सागरमन्त्री नोरतमन्त्री पीचा, मद्रास
 २३ श्री मोहनराजजी मुक्कन्धजी बालिया,
 प्रहमदावाद
 २४ श्री केशरामन्त्री जयरोलालजी तलेसरा, पाली
 २५ श्री रतनचन्द्रजी उत्तमचन्द्रजी मोदी, ब्यावर
 २६ श्री धर्मोच्चन्द्रजी भागचन्द्रजी बोहरा, कूठा
 २७ श्री द्योगमलजी हेमराजजी लोढ़ा, डाडीनोहारा
 २८ श्री गुणचन्द्रजी दलीचन्द्रजी ष्टारिया, बेत्लारी
 २९ श्री मूलचन्द्रजी मुजानमलजी मचेती, जाधपुर
 ३० श्री सी० प्रमरचन्द्रजी बीपरा, मद्रास
 ३१ श्री भवरनालजी मूलचन्द्रजी सुराणा, मद्रास
 ३२ श्री बादलचन्द्रजी जुगराजजी मेहता, इन्दौर
 ३३ श्री नालचन्द्रजी मोहनलालजी कोठारी, गाठन
 ३४ श्री हीरालालजी पन्नालालजी चौपटा, अजमेर
 ३५ श्री मोहननालजी पारसमलजी पगारिया,
 बगलौर
 ३६ श्री भवरोमलजी चोरडिया, मद्रास
 ३७ श्री भवरलालजी गोठी, मद्रास
 ३८ श्री जालमचन्द्रजी रिषबचन्द्रजी बाफना, भागरा
 ३९ श्री धेवरचन्द्रजी पुष्टराजजी भुरट, गोहाटी
 ४० श्री जवरचन्द्रजी गेलटा, मद्रास
 ४१ श्री जटायमलजी सुगनचन्द्रजी, मद्रास
 ४२ श्री पुष्टराजजी विजयराजजी, मद्रास
 ४३ श्री चामलजी सुराणा ट्रस्ट, मद्रास
 ४४ श्री लूणारणजी रिषबचन्द्रजी लोढ़ा, मद्रास
 ४५ श्री गूरजमलजी मज्जाराजजी मेहता, पोपल
- सहयोगी सदस्य
- १ श्री देवकरणजी श्रीचन्द्रजी डासी, मेहतासिटी
 २ श्रीमती द्यनोबाई विनायकिया, ब्यावर
 ३ श्री प्रामचन्द्रजी नाहटा, जोधपुर
 ४ श्री भवरलालजी विजयराजजी बांकरिया,
 विहनीपुरम
 ५ श्री भवरनालजी चौपटा, ब्यावर
 ६ श्री विजयराजजी रतननालजी पत्त, ब्यावर
 ७ श्री बी गजराजजी चोरडिया, सेतम
- ८ श्री फूलचन्द्रजी गौतमचन्द्रजी बांठठ, पाली
 ९ श्री के पुष्टराजजी बाफना, मद्रास
 १० श्री स्वरराजजी जाधराजजी भूषा, दिन्नी
 ११ श्री मोहनलालजी मगलचन्द्रजी पगारिया, राधपुर
 १२ श्री नयमलजी मोहननालजी लणिया, चण्डावन
 १३ श्री भवरलालजी गौतमचन्द्रजी पगारिया,
 कुणालपुरा
 १४ श्री उत्तमचन्द्रजी मांगीलालजी, जोधपुर
 १५ श्री मूलचन्द्रजी पारध, जाधपुर
 १६ श्री मुमेरमनजी मेडतिया, जोधपुर
 १७ श्री गणेशमलजी तैमीचन्द्रजी टांटिया, जोधपुर
 १८ श्री उदयराजजी पुष्टराजजी सचो, जाधपुर
 १९ श्री बादरमलजी पुष्टराजजी बट, बापुर
 २० श्रीमती सुदरबाई गोठी W/o श्री ताराचन्द्रजी
 गोठी, जोधपुर
 २१ श्री रायचन्द्रजी मोहनलालजी, जोधपुर
 २२ श्री धेवरचन्द्रजी स्वरराजजी, जोधपुर
 २३ श्री भवरलालजी माणकचन्द्रजी सुराणा, मद्रास
 २४ श्री जयरोलालजी प्रमरचन्द्रजी काठारा, ब्यावर
 २५ श्री माणकचन्द्रजी किशतलालजी महाशिवी
 २६ श्री मोहननामजी गुलाबचन्द्रजी पत्त, ब्यावर
 २७ श्री जतराजजी जयराजलालजी धारोवाल, राधपुर
 २८ श्री माहनलालजी चम्पानालजी गाठी, जोधपुर
 २९ श्री तैमीचन्द्रजी बाटलिया महता, जोधपुर
 ३० श्री ताराचन्द्रजी केवलचन्द्रजी बांरिट, जोधपुर
 ३१ श्री बामूल एण्ड व०, जोधपुर
 ३२ श्री पुष्टराजजी सोडा, जोधपुर
 ३३ श्रीमती सुगनोबाई W/o श्री मिश्रीमानजी
 साठ, जोधपुर
 ३४ श्री बच्छराजजी सुराणा, जोधपुर
 ३५ श्री हरचन्द्रजी महता, जोधपुर
 ३६ श्री देवराजजी लामचन्द्रजी मडतिया, जोधपुर
 ३७ श्री बनकराजजी मदनराजजी गोतिया,
 जोधपुर
 ३८ श्री धेवरचन्द्रजी पारसमनजी टांटिया, जोधपुर
 ३९ श्री मांगीलालजी चोरडिया, कुचेरा

- ४० श्री सरदारमलजी सुराणा, भिलाई
 ४१ श्री श्रोकचदजी हेमराजजी सोनी, दुग
 ४२ श्री सूरजकरणजी सुराणा, मद्रास
 ४३ श्री धीमूलालजी लालचदजी पारख, दुर्ग
 ४४ श्री पुखराजजी वोहरा, (जैन ट्रांसपोर्ट क)
 जोधपुर
 ४५ श्री चम्पालालजी सकलेचा, जालना
 ४६ श्री प्रेमराजजी मोडालालजी कामदार,
 बगलोर
 ४७ श्री भवरलालजी मृधा एण्ड स'स, जयपुर
 ४८ श्री लालचदजी मोतीलालजी गादिया, बगलोर
 ४९ श्री भवरलालजी नवरत्नमलजी साखला,
 मेट्टूरपालियम
 ५० श्री पुखराजजी छल्लाणी, करणगुल्ली
 ५१ श्री आसकरणजी जसराजजी पारख, दुग
 ५२ श्री गणेशगलजी हेमराजजी सोनी, भिलाई
 ५३ श्री भ्रमृतराजजी जसव'तराजजी मेहता,
 मेडतासिटी
 ५४ श्री घेंवरचदजी किशोरमलजी पारख, जोधपुर
 ५५ श्री मागीलालजी रेखचदजी पारख, जोधपुर
 ५६ श्री मुन्नीलालजी मूलचदजी गुलेच्छा, जोधपुर
 ५७ श्री रतनलालजी लखपतराजजी, जोधपुर
 ५८ श्री जीवराजजी पारसमलजी कोठारी, मेडता
 सिटी
 ५९ श्री भवरलालजी रिखवचदजी नाहटा, नागीर
 ६० श्री मागीलालजी प्रवासचन्दजी रूणवास, मसूर
 ६१ श्री पुषराजजी वोहरा, पीपलिया कला
 ६२ श्री हरवचदजी जुगराजजी वाफना, बगलोर
 ६३ श्री चन्दनमलजी प्रेमचदजी मोदी, भिलाई
 ६४ श्री भीवराजजी वाघमार, कुचेरा
 ६५ श्री तिलाकचदजी प्रेमप्रकाशजी, भ्रजमेर
 ६६ श्री विजयलालजी प्रेमचदजी गुलेच्छा,
 राजनादगाँव
 ६७ श्री रावतमलजी छाजेड, भिलाई
 ६८ श्री भवरलालजी डूगरमलजी वाकरिया,
 भिलाई
 ६९ श्री हीरालालजी हस्तीमलजी देशलहरा, भिलाई
 ७० श्री वद्व'मान स्थानकवामी जैन श्रावकसध,
 दल्ली-राजहरा
 ७१ श्री चम्पालालजी बुद्धराजजी वाफणा, व्यावर
 ७२ श्री गगारामजी इद्रचदजी वोहरा, कुचेरा
 ७३ श्री फतेहराजजी नेमीचदजी कर्णावट, कलकत्ता
 ७४ श्री बालचदजी धानधन्दजी भुरट,
 कलकत्ता
 ७५ श्री सम्पतराजजी कटारिया, जोधपुर
 ७६ श्री जवरीलालजी शातिलालजी सुराणा
 बोलारम
 ७७ श्री कानमलजी कोठारी, दादिया
 ७८ श्री पन्नालालजी मोतीलालजी सुराणा, पाली
 ७९ श्री माणकचदजी रतनलालजी मुणात, टगला
 ८० श्री चिम्मनसिंहजी मोहनसिंहजी लोडा, व्यावर
 ८१ श्री रिद्धकरणजी रावतमलजी भुरट, गौहाटी
 ८२ श्री पारसमलजी महावीरचदजी वाफना, गोठन
 ८३ श्री फकीरचदजी कमलचदजी श्रीश्रीमाल,
 कुचेरा
 ८४ श्री मांगीलालजी मदनलालजी चोरडिया, भरूदा
 ८५ श्री सोहनलालजी लूणकरणजी सुराणा, कुचेरा
 ८६ श्री धीमूलालजी, पारसमलजी, जवरीलालजी
 कोठारी, गोठन
 ८७ श्री सरदारमलजी एण्ड कम्पनी, जोधपुर
 ८८ श्री चम्पालालजी हीरालालजी वागरेचा,
 जोधपुर
 ८९ श्री पुखराजजी कटारिया, जोधपुर
 ९० श्री इद्रच'दजी मुकन्दच'दजी, इन्दौर
 ९१ श्री भवरलालजी वाफणा, इन्दौर
 ९२ श्री जेठमलजी मोदी, इन्दौर
 ९३ श्री बालच'दजी भ्रमरच'दजी मोदी, व्यावर
 ९४ श्री कुन्दनमलजी पारसमलजी भडारी, बगलोर
 ९५ श्रीमती कमलाकवर ललवाणी घमपतनी श्री
 स्व पारसमलजी ललवाणी, गोठन
 ९६ श्री भ्रसेचदजी लूणकरणजी भण्डारी, कलकत्ता
 ९७ श्री सुगनचन्दजी सचेती राजनादगाँव

- २२ श्री मागरमलजी नौरतमलजी पीचा, मद्रास
 २३ श्री मोहनराजजी मुखनरदजी बालिया,
 प्रहमदाबाद
 २४ श्री बैरागीमलजी जवरोलालजी तलेसरा, पानी
 २५ श्री रतनचदजी उतमचन्दजी मोदी, ब्यावर
 २६ श्री धर्मोन्दजी भागचदजी बाहरा, नूठा
 २७ श्री द्यागमलजी हेमराजजी लोढा, डाडीलोहारा
 २८ श्री गृणचदजी दर्नाचदजी पटारिया, बेल्सारी
 २९ श्री मूलनरजी मुजागमनजी सचेती, जोधपुर
 ३० श्री सांभरचदजी बोयरा, मद्रास
 ३१ श्री भवरलालजी मूलचदजी सुराणा, मद्रास
 ३२ श्री बादलचदजी जुगराजजी मेहता, इन्दौर
 ३३ श्री लालचदजी मोहनलालजी मोठारी, गोंठन
 ३४ श्री हीरालालजी पद्मालालजी चौपडा, धनमेर
 ३५ श्री मोहलालजी पारसमलजी पगारिया,
 बगलोर
 ३६ श्री भवरमलजी चोरडिया, मद्रास
 ३७ श्री भवरलालजी गोठी, मद्रास
 ३८ श्री जालमचदजी रिधमचदजी बाफना, प्रागरा
 ३९ श्री धवरचदजी पुधराजजी भुरट, गोहाटी
 ४० श्री जवरचन्दजी गेलडा, मद्रास
 ४१ श्री जहापमलजी सुगाचदजी, मद्रास
 ४२ श्री पुधराजजी विजयराजजी, मद्रास
 ४३ श्री चामलजी सुगाणा इन्द, मद्रास
 ४४ श्री सृणवरणजी रिधमचदजी सोडा, मद्रास
 ४५ श्री सूरजमलजी सज्जनराजजी मेहता, षोप्पल
 सहयोगी सवस्य
 १ श्री देवरणजी श्रीचदजी डामी, मडतसिटी
 २ श्रीमती छगतीबाई विनारणिया, ब्यावर
 ३ श्री पूरानरदजी ताहटा, जोधपुर
 ४ श्री भवरलालजी विजयराजजी पारिया,
 वित्तीपुरम
 ५ श्री भवरलालजी चौपडा, ब्यावर
 ६ श्री विजयराजजी रतानालजी चतर, ब्यावर
 ७ श्री बी गजराजजी चोरडिया, सेमम
 ८ श्री कूलचदजी गौतमचन्दजी बांठेड, पासा
 ९ श्री ने पुधराजजी बाफना, मद्रास
 १० श्री रूपराजजी जाधराजजी मूपा, इन्ती
 ११ श्री मोहनलालजी मगलचदजी पगारिया, रायपुर
 १२ श्री नयमलजी मोहनलालजी लणिया, बध्वावन
 १३ श्री भयरलालजी गौतमचन्दजी पगारिया,
 कुसालपुरा
 १४ श्री उतमचदजी मागोलालजी, जाधपुर
 १५ श्री मूलचदजी पारण, जोधपुर
 १६ श्री सुमेरमनजी मेडतिया, जाधपुर
 १७ श्री गणेशमलजी नेमोचदजी टाटिया, जोधपुर
 १८ श्री उदयराजजी पुधराजजी सपता, जोधपुर
 १९ श्री बादरमलजी पुधराजजी बट, पागुर
 २० श्रीमती सुदरबाई गाठी W/o श्री ताराचरा
 गोठी, जोधपुर
 २१ श्री रामचदजी मोहनलालजी, जोधपुर
 २२ श्री धेवरचदजी रूपराजजी, जोधपुर
 २३ श्री भवरलालजी माणचदजी सुराणा, मद्रास
 २४ श्री जवरोलालजी धमराजजी बांठारी, ब्यावर
 २५ श्री माणनरदजी तानलालजी, महागिरी
 २६ श्री मोहनलालजी गुलाबचदजी चतर, ब्यावर
 २७ श्री जमराजजी जवरोलालजी धारीवान, जोधपुर
 २८ श्री माहनलालजी चम्पानालजी गोठी, जोधपुर
 २९ श्री गोमिचदजी बाबलिया महता, जोधपुर
 ३० श्री ताराचराजी केयमचदजी बाणपट, जगपुर
 ३१ श्री राममल एण्ड ब०, जोधपुर
 ३२ श्री पुधराजजी सांभ, जोधपुर
 ३३ श्रीमती सुगतीबाई W/o श्री मिश्रीनालजी
 साद, जोधपुर
 ३४ श्री बच्छराजजी सुराणा, जोधपुर
 ३५ श्री हरचदजी महता, जोधपुर
 ३६ श्री देवराजजी लामचदजी मडतिया, जोधपुर
 ३७ श्री बनवराजजी मदनराजजी गालिया,
 जोधपुर
 ३८ श्री धवरराजजी पारसमलजी टाटिया, जोधपुर
 ३९ श्री मांगीनालजी पारडिया, कुपेरा

- ४० श्री सरदारमलजी सुराणा, भिलाई
 ४१ श्री भोकरचदजी हेमराजजी सोनी, दुग
 ४२ श्री सूरजकरणजी सुराणा, मद्रास
 ४३ श्री भूसूलालजी लालचदजी पारख, दुग
 ४४ श्री पुखराजजी बोहरा, (जन ट्रासपोट क)
 जोधपुर
 ४५ श्री चम्पालालजी सकलेचा, जालना
 ४६ श्री प्रेमराजजी मोठालालजी कामदार,
 बंगलोर
 ४७ श्री भवरलालजी मूथा एण्ड सस, जयपुर
 ४८ श्री लालचदजी मोतीलालजी गादिया, बंगलोर
 ४९ श्री भवरलालजी नवरस्तमलजी साखला,
 मेट्टूपालियम
 ५० श्री पुखराजजी छल्लाणी, करणगुल्ली
 ५१ श्री आसकरणजी जसराजजी पारख, दुग
 ५२ श्री गणेशगलजी हेमराजजी सोनी, भिलाई
 ५३ श्री भ्रमृतराजजी जसवन्तराजजी मेहता,
 मेहतासिटी
 ५४ श्री धररचदजी किशोरमलजी पारख, जोधपुर
 ५५ श्री मागीनालजी रेखचदजी पारख, जोधपुर
 ५६ श्री मूसीलानजी मूलचदजी गुलेच्छा, जोधपुर
 ५७ श्री रतनलालजी लखपतराजजी, जोधपुर
 ५८ श्री जीवराजजी पारसमलजी कोठारी, मेहता
 सिटी
 ५९ श्री भवरलालजी रिषवचदजी नाहटा, नागौर
 ६० श्री मागीलालजी प्रकाशचदजी रूणवाल, मंसूर
 ६१ श्री पुषराजजी बोहरा, पीपलिया कला
 ६२ श्री हरचदजी जुगराजजी बाफना, बंगलोर
 ६३ श्री चन्दनमलजी प्रेमचदजी मोदी, भिलाई
 ६४ श्री भीवरराजजी बाधमार, कुचेरा
 ६५ श्री तिलोचचदजी प्रेमप्रकाशजी, भ्रजमेर
 ६६ श्री विजयलालजी प्रेमचदजी गुलेच्छा,
 राजनादागाँव
 ६७ श्री रावतमलजी छाजेड, भिलाई
 ६८ श्री भवरलालजी डूगरमलजी बाकरिया,
 भिलाई
 ६९ श्री हीरालालजी हस्तीमलजी देशलहरा, भिलाई
 ७० श्री वद्धमान स्थानकवासी जैन श्रावकसध,
 दल्ली-राजहरा
 ७१ श्री चम्पालालजी बुद्धराजजी बाफणा, व्यावर
 ७२ श्री गगारामजी इन्द्रचदजी बोहरा, कुचेरा
 ७३ श्री फतेहराजजी नेमीचदजी कर्णावट, कलकत्ता
 ७४ श्री बालचदजी धानचदजी भुरट,
 कलकत्ता
 ७५ श्री सम्पतराजजी कटारिया, जोधपुर
 ७६ श्री जवरोलालजी शातिलालजी सुराणा,
 बोलारम
 ७७ श्री कानमलजी कोठारी, दादिया
 ७८ श्री पन्नालालजी मोतीलालजी सुराणा, पाली
 ७९ श्री माणकचदजी रतनलालजी मुणात, टगला
 ८० श्री चिम्मनसिंहजी मोहनसिंहजी लोढा, व्यावर
 ८१ श्री रिद्धकरणजी रावतमलजी भुरट, गौहाटी
 ८२ श्री पारसमलजी महावीरचदजी बाफना, गौठन
 ८३ श्री फकीरचदजी कमलचदजी श्रीश्रीमाल,
 कुचेरा
 ८४ श्री मांगीलालजी मदनलालजी चोरडिया, मंसूर
 ८५ श्री सोहनलालजी लूणकरणजी सुराणा, कुचेरा
 ८६ श्री धोसूलालजी, पारसमलजी, जवरोलालजी
 कोठारी, गौठन
 ८७ श्री सरदारमलजी एण्ड कम्पनी, जोधपुर
 ८८ श्री चम्पालालजी हीरालालजी बागरेचा,
 जोधपुर
 ८९ श्री पुखराजजी कटारिया, जोधपुर
 ९० श्री इन्द्रचदजी मुकन्दचदजी, इन्दौर
 ९१ श्री भवरलालजी बाफणा, इन्दौर
 ९२ श्री जेठमलजी मोदी, इंदौर
 ९३ श्री बालचदजी भ्रमरचदजी मोदी, व्यावर
 ९४ श्री बुन्दनमनजी पारसमलजी भडारी, बंगलोर
 ९५ श्रीमती बमलाकवर ललबाणी धर्मपत्नी श्री
 स्व पारसमलजी ललबाणी, गौठन
 ९६ श्री भ्रष्टेचदजी लूणकरणजी भण्डारी, कलकत्ता
 ९७ श्री सुगनचदजी सचेतो राजनादागाँव

- १८ श्री प्रकाशचदजी जैन, भगतपुर
- १९ श्री कृपालचदजी रिग्बचदजी सुराणा,
बोनारम
- १०० श्री सहस्रीचदजी धर्माचदजी श्रीश्रीमाल,
कुचेरा
- १०१ श्री गूदष्टमचजी चम्पालालजी, गाठन
- १०२ श्री तेजराजजी बोठारी, मांगनियावास
- १०३ मन्मतराजजी चौरडिया, मद्रास
- १०४ श्री धर्मरचदजी छाजेड, पादु बही
- १०५ श्री जुगराजजी धाराजजी थरमेचा, मद्रास
- १०६ श्री पुष्कराजजी नाहरगलजी सलवाणी, मद्रास
- १०७ श्रीमती कनकादेवी व निमलादेवी, मद्रास
- १०८ श्री दुलेराजजी भवरतालजी बोठारी,
कुपालपुर
- १०९ श्री भवरतालजी मागीनालजी वेणाना, डेहू
- ११० श्री जीवराजजी भवरतालजी चौरडिया,
भरदा
- १११ श्री मोनीनालजी दातिलालजी रूपवाल,
हरमालाव
- ११२ श्री चांदमनजी धनराजजी मोदी, धजमेर
- ११३ श्री रामप्रमथ पानप्रमथ मेन्द्र, चन्द्रपुर
- ११४ श्री भूरमनजी दुलीचदजी बोण्डिया,
मेडतामिटी
- ११५ श्री मोहनलालजी धारोवाल पाली
- ११६ श्रीमती रामकवरबाई धमपती श्री चांदमन
लोडा, बम्बई
- ११७ श्री मागीनालजी उत्तमचदजी बाफणा, बेल्पोर
- ११८ श्री साचालालजी बाफणा, धीरगाबाद
- ११९ श्री भीमचन्दजी भाणकचदजी घाबिया,
(बुढाली), मद्रास
- १२० श्रीमती मनोपकृष्णर धमपती श्री चम्पालालजी
सघवी, कुचेरा
- १२१ श्री सोहनालजी मोजतिया, पांमना
- १२२ श्री चम्पालालजी भण्डारी, बलबसा
- १२३ श्री भीमचन्दजी गणगलजी चोपरी,
धुलिया
- १२४ श्री पुष्कराजजी विंगललालजी तावड़,
सिबदराबाद
- १२५ श्री मिनीलालजी गजजनलालजी बटारिया
सिबदराबाद
- १२६ श्री यदुमान स्थानवरासी अत थापक तप,
बगडीनगर
- १२७ श्री पुष्कराजजी पारसमलजी सलवाणी,
बिलाटा
- १२८ श्री टी. पारसमलजी चौरडिया, मद्रास
- १२९ श्री मोनीलालजी घागूलालजी बोहरा
एण्ड क, बगलोर
- १३० श्री सम्पतराजजी सुराणा, मायाड □□

